but, to our great regret, we found that such a treatment would increase the bulk of the book too much, otherwise it could not contain all that was highly desirable from all considerations. We have seen a few grammars written in that way, and they are good so far as they go; but unfortunately they don't (perhaps they cannot) go far enough. They have to confine themselves to very elementary principles, not at all sufficient for the present needs of the High Classes.

We are fully alive to some of the defects that have crept in in spite of ourselves, and we shall be highly thankful if those gentlemen who may do us the honour of seeing or using the book, take the trouble of pointing out any mistakes *occasioned by our oversight*, inexperience, or error of judgment. Any suggestions to improve the book will always receive our best consideration.

PREFACE TO THE THIRD EDITION.

In this Edition, some additions and alterations have been made *in matter* as well as in *arrangement*. These have been mainly suggested and recommended by some of the most experienced Sanskrit Teachers in the Punjab.

The main body of the work is now divided into two Parts. The First Part deals with Sandhi, Declension, Numerals, Gender, Government, Indeclinables, Nominal Affixes, and Compounds, while the Second contains Conjugations, Derivative Verbs, Verbal Derivatives, etc.

Another noticeable change is that the Rules have been separated from the body of the book and given in foot-notes. All the rules given are simple translations of the Sutras of Panini, which have also been inserted this time and which may be used either as helps to memory or to clear away any ambiguity of translation, or, at the *discretion* of the teacher, may *not be used at all*. There is some difference of opinion as to the necessity of these Rules. Some Teachers like to have them, while others would have no rules of any sort, but mere declensions and conjugations. It is to accommodate both of these

be very glad to profit by any corrections and suggestions that may be sent to us.

Lastly, we offer our most sincere thanks to all those able Pandits, who have favoured us with their valuable criticism. We are especially indebted to Principal Raghubar Dayal, who was kind enough to spare time to go over the greater portion of the work and to make some very important suggestions.

The Authors.

तृतीय संस्करण

में कतिपय महानुभाव संस्कृताध्यापकों के अनुरोध और संमति से कुछ विशेष परिवर्तन, विषय तथा क्रम में, किये गये हैं। जिन में से मुख्य यह है — सभी नियमों के साथ पाणिनि-सूत्र रख दिये हैं। कि यदि रुचि हो तो उन से भी सहायता ले सकते हैं। नाम-प्रकरण और धातु-प्रकरण के सब नियम निकाल कर टिप्पणी-रूप में पृष्ठ के पाद पर पाणिनि-सूत्रों सहित, रख दिये हैं। इससे हमारा अभिप्राय यह है कि यदि अध्यापक महोदय आवश्यक अथवा उचित समझें तो इन नियमों का पठनपाठन में उपयोग करें। यदि समयाभाव अथवा छात्रों की योग्यता के विचार से नियमों पर ध्यान न देना चाहें, तो न सही, इस में कोई हानि नहीं॥

हम उन सज्जनों के अनुगृहीत हैं जिन्हों ने इस पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिये अपनी अमूल्य सम्मति से कृतार्थ किया है। आशा है कि ऐसे महानुभाव पूर्ववत् कृपा करते रहेंगे। और इस की त्रुटियों के निकालने अथवा इस को किसी अन्य प्रकार से अधिकोपयोगी बनाने के लिये सूचना देते रहेंगे।

तृतीय की ही संशोधित आवृत्ति है। केवल एक परिशिष्ट बढ़ाया गया है। यह इसलिए कि १९१० के मिडिल परीक्षार्थियों के लिए पूर्वार्द्ध में आर्धधातुक विभक्तियों में से केवल लृट् (second future) ही नियत किया है। अतः उन छात्रों और अध्यापकों के सुभीते के लिए जो आर्धधातुकों में से लृट् का ही पढ़ना पढ़ाना पर्याप्त समझें, केवल लृट् का उदाहरण इस परिशिष्ट में पृथक् भी दे दिया है। परन्तु उचित तो यही प्रतीत होता है कि सब आर्धधातुक विभक्तियों को पढ़ा जाए और लृट् पर विशेष ध्यान दिया जाए। क्योंकि पाठ्य-पुस्तक हितोपदेशादि में जो अन्य आर्धधातुकों के रूप मिलते हैं उनका यथोचित ज्ञान ऐसा किए बिना न हो सकेगा। अतः यह परिशिष्ट केवल उनके लिए है जो लृट् से अन्य आर्धधातुकों का साधारण ज्ञान प्राप्त करना भी उचित नहीं समझते। वे उत्तरार्द्ध के ११-२२ पाठों को छोड़ कर, इसे ही पढ़ सकते हैं॥

The grass is green
The rose is red,
This book is mine
Till I am dead
Do not steal this book for fear of st
Look down and owner's name.

विषयानुक्रमणिका

पूर्वार्द्ध

:-संख्या पृष्ठ-संख्या

-वर्णमाला ... १
वर्णों के उच्चारणस्थान २
परिभाषा ३
-सन्धिप्रकरणम् ... ५
स्वरसन्धिः ... ,,
व्यञ्जनसन्धिः ... ७
विसर्गसन्धि ... १०
णत्वविधिः ११
पत्वविधिः १२
प्रश्न १२-१३
-नामप्रकरणम् ... १४
अकारान्त-पुंलिंग ... १५
इकारान्त-पुंलिंग ... १७
ईकारान्त-पुंलिंग ... २०
उकारान्त-पुंलिंग ... ,,
ऊकारान्त-पुंलिंग ... २१
[illegible]

पाठ-संख्या पृष्ठ-संख्या

३—औकारान्त-पुंलिंग ... २४
Exercise 1. ... २५
४—आकारान्त-स्त्रीलिंग २६
ईकारान्त-स्त्रीलिंग ... २७
,, ऊकारान्त-स्त्रीलिंग ३०
इकारान्त ३०
उकारान्त ३१
ऋकारान्त ३१
ओकारान्त ३२
औकारान्त ... ... ,,
Exercise II. ३३
५ अकारान्त-नपुंसक ... ३५
,, इकारान्त-नपुंसक ... ३६
,, उकारान्त-ऋकारान्त-नपुं ,,
Exercise III. ... ३८
६—सर्वनाम ४०
पुंलिंग ... ... ,,
स्त्रीलिंग ४१
नपुंसकलिंग ... [illegible]

७ प्रथम भाग—
,, चकारान्त ... ५२
,, जकारान्त ... ५३
,, तकारान्त; दकारान्त ५४-५
धकारान्त (नाम) ... ५५
,, इन्+अन्त ... ५६
,, मकारान्त ... ५७
,, रकारान्त ... ,,
,, शकारान्त ... ५८
षकारान्त ... ५९
सकारान्त ... ,,
हकारान्त ... ६१
Exercise V. ... ६४
८–व्यञ्जनान्त-दूसरा भाग ६७
चकारान्त पुंलिंग ... ,,
नपुंसकलिंग ... ६८
अत् (शत्) अन्त ... ६९
मत्—अन्त ... ७१
वत्+अन्त ... ७२
अन्+अन्त ... ७३
इन्+अन्त ... ७७
पकारान्त ... ७८
यकारान्त ... ७९
शकारान्त ... ७९
हकारान्त ... ८३
Exercise VI. ... ८४
९–संख्यावाचक ... ८७
,, पूरणसंख्यावाचक ९१
,, संख्यावाचकक्रियाविशे० ९५
Exercise VII. ... ९५
१०–स्त्रीप्रत्ययाः ... ९७
Exercise VIII. ... ९९
११–लिंग-प्रकरणम् ...१००
,, पुंलिंग ... ,,
,, स्त्रीलिंग ...१०२
,, नपुंसक ...१०३
१२–कारकप्रकरणम् ...१०४
,, कर्ता (१) ... ,,
,, कर्म (२) ... ,,
,, द्विकर्मक-धातु ...१०६
,, करण (३) ...१०७
सम्प्रदान (४) ...१०९
,, अपादान (५) ...१११
,, अधिकरण (७) ...११३
,, सम्बन्ध (६) ...११५
Exercise IX. ... ,,
१३–अव्ययाः ...११८
,, उपसर्ग ... ,,
,, निपात ...११९

१४-विशेषण ...१३०
Exercise X. ...१३३
१५-तद्धित-प्रत्यय ...१३४
तद्धितान्त ... ,,
Exercise XI.
१६-समास
,, सर्वसमासविधि १४५
Exercise XII. ...१४६

उत्तरार्द्ध ।

१७-धातुप्रकरणम् ... १
,, सार्वधातु प्र० ... ४
,, भ्वादिगण (१) ... ,,
दिवादिगण (४) ... १२
,, तुदादिगण (६) ... १४
,, चुरादिगण (१०) ... १८
Exercise XIII. ... २०
१८-सार्वधा०-अदादि (२) २२
,, जुहोत्यादि (३) ... ३५
,, स्वादि (५) ... ४०
,, रुधादि (७) ... ४३
,, तनादि (८) ... ४७
,, क्र्यादि (९) ... ५१
Exercise XIV. ... ५७
१९-आर्धधातुकप्रकरण ६०
,, भ्वादि (१) ६३
Exercise XV ... ८६
२०-आर्धधातुक०दिवादि(४)८८
,, ,, तुदादि (६) ९२
,, ,, चुरादि (१०) ९५
Exercise XVI. ...१००
२१-आर्धधातुक०अदादि(२)१०२
,, ,, जुहोत्यादि (३) १०६
,, ,, स्वादि (५) १०८
Exercise XVII. १०९
२२-आर्धधातुकरुधादि(७)१११
,, ,, तनादि (८) ११२
,, ,, क्र्यादि (९) ११३
Exercise XVIII. ११५
२३-प्रेरणार्थक (णिजन्त Causal) ११७

Exercise XIX १२१
२४-इच्छार्थद्योतिका(सन्नन्त)१२३
(A) Exercise XX. १२५
,, नामधातु(Nominals)१२७
(B) Exercise XX. १२६
२५ कृदन्त १३०
,, शत्रन्त(Pr.Act.Part.) ,,
,, भविष्यत्कृदन्त (Fu. Part.) १३२
,, क्तान्त,क्तवत्वन्त क्त्वान्त१३३
,, तुमुन्नन्त(Infinitive)१३८
,, विधि-कृदन्त (Pot. Pass. Part.) १४०
,, कर्त्रर्थ-कृ० (Nouns of Agency.)
,, भाववाचक. (Abst Nouns.)
Exercise XXI.
२६-प्रयोगाः (Voices)
कर्मवाच्य (Passive)
,, ,, द्विकर्मक
भाववाच्य(Impersonal)
Exercise XXII.
परिशिष्ट-धातु-उदाहरण
APPENDIX
Examination Papers
Sanskrit-English Glossary.

---

* सूचना—शुद्धिपत्र पूर्वार्द्ध के अन्त में दिया है। कुछ अशुद्धियां तो ऐसी हैं जहां मशीन के चलते चलते अक्षर अथवा स्वर-चिन्ह ऊपर या नीचे के टूट गए हैं। सुयोग्य अध्या... पकों से निवेदन है कि, इनको शुद्ध करके पाठ आरम्भ करावें।

मैनुअल आफ़ संस्कृत-ग्रामर

का प्रथम भाग पञ्जाब शिक्षाविभाग सरक्युलर नं० १६ तारीख २१-४-१९१७ के अनुसार मिडल श्रेणियों में पढ़ाने के लिए अनुज्ञात है। मैट्रिकुलेशन के लिए नियत जो " मैनुअल " है उस की तृतीया वा चतुर्थी आवृत्ति में कुछ विशेष परिवर्तन कई माननीय अध्यापकों के अनुरोध से किए गए हैं, यथा सभी नियमों के साथ पाणिनि-सूत्र दिए हैं जो समझने और स्मरण करने में अतीव सहायक होते हैं, नाम-प्रकरण और धातु-प्रकरण के सभी नियम सूत्रों सहित टिप्पणि (नोटों) में रख दिए हैं कि यदि उनका प्रयोग कोई अध्यापक महाशय आवश्यक अथवा उचित न जानें तो उनको निस्सन्देह छोड़दें, सब उदाहरण पूर्ण कर दिए हैं, इत्यादि। इस प्रथम भाग में भी उसी प्रकार परिवर्तन और संशोधन करके अब नई आवृत्ति प्रस्तुत है। इसमें विशेष गुण यह है कि यदि मिडल श्रेणियों में यह प्रथम भाग पढ़ायाजाय तो "फोर्थ हाई" में आने से पूर्व ही छात्रों ने उसी व्याकरण का बहुत सा अंश पढ़ लिया होगा जो उन्होंने मैट्रिकु-लेशन परीक्षा के लिए अवश्य पढ़ना है। और इस प्रकार दो वर्षों के स्थान में अधिक वर्ष मैट्रिकुलेशन व्याकरण के अभ्यास में लगा कर सुख से कृतकार्य होसकेंगे। और सब प्रकार से भी यह प्राथमिक भाग मिडल श्रेणियों के लिए अत्यन्त उपयोगी माना गया है और अनेक स्कूलों में प्रयुक्त है॥

यदि संस्कृताध्यापक वा हेडमास्टर महोदय इस प्रथम भाग का नमूना लेना चाहें तो केवल अर्ध मूल्य (पांच आने) के स्टाम्प भेजने की कृपा करें। पुस्तक Post paid भेजा जायगा।

मिलने कापता—

दासब्रदरस

बुकसेलरस, अनारकली, लाहौर।

36

शब्दों की सूची.

(i) अजन्ताः

1 ज्ञान
2 नारि
3 मधु
4. वरि
5. आपदि
6 आदि
7 दधि

Pronouns

सर्व
अन्य
पूर्व
द्वितीय
तद्
एतद्
किम्
इदम्
अदस्
युष्मद्
अस्मद्

3. हलन्त

पयोमुच् 62
वाच्

सुग्
परिव्राज्
विश्वसृज् 54
मरुत्
सरित् 55
जगत्
विपद्
वीरुध् 55
शार्ङ्गिन् 56
भाविन्
ककुभ् 57
गिर् 57
तादृश् 58
दिश्
विश्
द्विष् 59
त्विष्
चन्द्रमस्
मनस् 60
हविस्
आशिस्
मधुलिह् 61
दुह्
उपानह् 62

पूर्वार्द्धम्

प्रथमः पाठः ।

वर्णमाला ।

वर्णों के दो प्रकार हैं । स्वर (vowels) और व्यञ्जन (Consonants) ॥

अ इ उ ऋ ऌ ह्रस्व (short) स्वर हैं। अन्य सब दीर्घ स्वर हैं

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व
श ष स ह

व्यञ्जन कहलाते हैं ॥

क से म तक पच्चीस वर्णों को पांच पांच के पांच वर्गों में विभक्त किया हुआ है। क से ङ तक को कवर्ग कहते हैं, च से ञ तक को चवर्ग, ट से ण तक को टवर्ग, त से न तक को तवर्ग और प से म तक को पवर्ग कहते हैं ॥

इन पांचों वर्गों (क से म तक पच्चीस वर्णों) को स्पर्श कहते हैं ।

य र ल व अन्तःस्थ (semi-vowels) कहलाते हैं ॥

श ष स ह ऊष्म (sibilants) कहलाते हैं ॥

वर्णों के उच्चारण-स्थान

अ, आ, कवर्ग, ह् और विसर्ग ये कण्ठ्य (Gutturals) हैं, क्योंकि ये कण्ठ में बोले जाते हैं ॥

इ, ई, चवर्ग, य और श् ये तालव्य (Palatals) हैं, क्योंकि ये तालु में बोले जाते हैं ॥

ऌ, तवर्ग, ल् और स् ये दन्त्य (Dentals) हैं क्यों
दांतों में बोले जाते हैं ॥

उ, ऊ, पवर्ग ये ओष्ठ्य (Labials) हैं, क्योंकि ये
में बोले जाते हैं ॥

ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, ये अपने २ स्थान में नासिक
सहायता से ही बोले जाते हैं, इस लिये अनुनासिक (N
भी कहलाते हैं ॥

अनुस्वार भी नासिका में बोले जाने के कारण अनुन
कहलाता है ॥

ए (=अ+इ) और ऐ को कण्ठतालव्य कहते हैं, क
ये कण्ठ और तालु में बोले जाते हैं ॥

ओ (=अ+उ) और औ को कण्ठौष्ठ्य कहते हैं, क्यों
कण्ठ और ओष्ठ में बोले जाते हैं ॥

व् को दन्तौष्ठ्य कहते हैं, क्योंकि यह दन्त और ओष
बोला जाता है ॥

वर्णोच्चारण-प्रकोष्ठः

उच्चारण स्थान	स्पर्श				अनुनासिक	अन्तःस्थ	ऊष्म	ह्रस्वस्वर	दीर्घस्वर
कण्ठ	क	ख	ग	घ	ङ	...	ह	अ	आ
तालु	च	छ	ज	झ	ञ	य	श	इ	ई
मूर्धन्	ट	ठ	ड	ढ	ण	र	ष	ऋ	ॠ
दन्त	त	थ	द	ध	न	ल } व	स	ऌ	
ओष्ठ	प	फ	ब	भ	म		...	उ	ऊ
कण्ठ-तालु	...	...	...	...	...	...	...	...	ए ऐ
कण्ठौष्ठ	...	...	...	...	...	...	...	...	ओ औ

इन सब ही वर्णों को पाणिनि ने अष्टाध्यायी में चौदह सूत्रों में नीचे दिये हुये क्रम से विभक्त किया है—

(१) अ इ उ (ण्), (२) ऋ ऌ (क्), (३) ए ओ (ङ्), (४) ऐ औ (च्), (५) ह य व र (ट्), (६) ल (ण्), (७) ञ म ङ ण न (म्), (८) झ भ (ञ्), (९) घ ढ ध (ष्), (१०) ज ब ग ड द (श्), (११) ख फ छ ठ थ च ट त (व्), (१२) क प (य्), (१३) श ष स (र्), (१४) ह (ल्) ॥

जहां कहीं किसी सूत्र में ह्रस्व स्वर दिया है उसी से उसी प्रकार के दीर्घ स्वर का भी बोध हो जाता है ॥ यथा—अ इ उ (ण्) सूत्र में अ आ, इ ई, उ ऊ का बोध होता है ॥

प्रत्येक सूत्र के ( ) में रखे हुये अन्तिम वर्ण के बिना किसी एक अन्य वर्ण से किसी अन्य सूत्र ( ) में रखे हुए अन्तिम वर्ण पर्यन्त प्रत्याहार कहलाता है। उस प्रत्याहार का नाम इन दो वर्णों से रक्खा जाता है। यथा—अ इ उ (ण्) के अ से ऐऔ (च्) के च् पर्यन्त अच् प्रत्याहार कहलाता है ॥

प्रत्येक सूत्र के अन्त में जो वर्ण ( ) में दिया है उस का ग्रहण उन वर्णों में नहीं होता जिन का बोध उस प्रत्याहार से होता है ॥

परिभाषा (TECHNICAL TERMS)

१—अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा ॥ अन्त्य वर्ण से पूर्व वर्ण उपधा (Penultimate) कहलाता है ॥ यथा—दण्डिन् में इ की उपधा संज्ञा है ॥

२—अदेङ् गुणः ॥ ह्रस्व अ, ए, ओ, (अर्, अल्,) गुण

२—वृद्धिरादैच् ॥ दीर्घ आ, ऐ, औ, (आर्, आल्,) वृद्धि कहलाते हैं ॥

४—यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् ॥ किसी शब्द के अन्त में प्रत्यय जोड़ने से पहिले जो उस शब्द का रूप होता है, उसे अङ्ग (Base) कहते हैं ॥

५—इग्यणः सम्प्रसारणम् ॥ यण् (य, व, र, ल,) के स्थान में जो इक् (इ, उ, ऋ, लृ,) क्रम से होते हैं, वे सम्प्रसारण कहलाते हैं ॥

६—सुडनपुंसकस्य, शि सर्वनामस्थानम् ॥ पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग की विभक्तियों के पहिले पांच वचन और नपुंसकलिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन 'सर्वनामस्थान' कहलाते हैं ।

७—यचि भम् ॥ सर्वनामस्थान से भिन्न जितनी स्वरादि विभक्तियें और यकारादि प्रत्यय हैं 'भ' कहलाते हैं ॥

८—(क) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ॥ सर्वनामस्थान और भ से भिन्न सब विभक्तियें 'पद' कहलाती हैं ॥

(ख) सुप्तिङन्तं पदम् ॥ विभक्ति जिस शब्द के अन्त में हो उसे 'पद' कहते हैं ॥

द्वितीयः पाठः ।

सन्धि-प्रकरणम् ।

परः सन्निकर्षः संहिता ॥ ऐसे दो वर्णों के मेल को सन्धि या संहिता कहते हैं जिन के बीच में कोई अन्य वर्ण न हो॥ सन्धि तीन प्रकार की होती है :—

अच् सन्धि—अच् के परे अच् हो,

हल् सन्धि— { हल् के परे हल् हो, वा हल् के परे अच् हो,

विसर्ग सन्धि—विसर्ग के परे हल् हो, वा अच् हो.

अच् (स्वर) संधिः ।

१—अकः सवर्णे दीर्घः ॥ अक्* से परे यदि समान स्वर हो ो दोनों के स्थान में उसी तरह का दीर्घ स्वर हो जाता है ॥ था—देव+अर्णवः=देवार्णवः, गिरि+ईशः=गिरीशः, मही+द्रः=महीन्द्रः, लक्ष्मी+ईशः=लक्ष्मीशः, पितृ+ऋणम्=पितॄणम् ॥

२—आद्गुणः ॥ अ वा आ से परे यदि इक् में से कोई र्ण हो तो दोनों के स्थान में गुण हो जाता है ॥ यथा—उप+द्रः=उपेन्द्रः, गण+ईशः=गणेशः, गङ्गा+उदकम्=गङ्गोदकम्, हा+ऋषिः=महर्षिः, तव+ऌकारः=तवल्कारः ॥

---

* अ इ उ (ऋ), अ ऌ (क) ॥

३—वृद्धिरेचि ॥ अ या आ से परे यदि एच् में से कोई वर्ण हो तो दोनों के स्थान में वृद्धि होती है ॥ यथा—तथा+एतत्=तथैतत्, जल+ओघः=जलौघः ॥

४—इको यणचि ॥ इक्* से परे यदि कोई अच् हो तो इक् को क्रम से यण् हो जाता है ॥ यथा—यदि+अपि=यद्यपि, सरयू+अम्बु=सरय्वम्बु, पितृ+आज्ञा=पित्राज्ञा, लृ+आकृतिः=लाकृतिः ॥

५—एचो ऽयवायावः ॥ एच्† से परे यदि अच् हो तो एच् को क्रम से अय्, अव्, आय्, आव्, हो जाते हैं ॥ यथा—ने+अनम्=नयनम्, भो+अति=भवति, पौ+अकः=पावकः ॥

६—एङः पदान्तादति ॥ पदान्त एङ् से परे यदि ह्रस्व अ हो तो अ का लोप होकर उस के स्थान में ऽ चिन्ह कर दिया जाता है ॥ यथा—हरे+अत्र=हरेऽत्र, प्रभो+अनुगृहाण=प्रभोऽनुगृहाण ॥

७—लोपः शाकल्यस्य॥ पदान्त अय्, अव्, आय्, आव् के य् या व् का विकल्प से लोप हो जाता है, यदि परे अश् हो। यथा—हरे+एहि=हरयेहि—हरएहि, विष्णो+एहि=विष्णवेहि—विष्णएहि, श्रियै+उत्सुकः=श्रियायुत्सुकः—श्रियाउत्सुकः, गुरौ+अपि=गुरावपि—गुराअपि ॥

८—ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥ द्विवचन के अन्त में यदि ई, ऊ, या ए हो तो उस की प्रगृह्य संज्ञा होती है। (प्रगृह्य की किसी के साथ सन्धि नहीं होती) यथा—कवी+इमौ=कवी इमौ, गुरू+आगतौ=गुरू आगतौ, लते+इमे=लते इमे ॥

९—अदसोमात् ॥ अदस् शब्द के म् के साथ यदि ई या

* इ उ (ऋ), ऋ लृ (क) । † ए ओ (ङ) ऐ औ (च) ॥

क हो तो उसकी प्रगृह्य संज्ञा होती है ॥ अमी+अश्वाः=अमी अश्वाः, अमू+आसाते=अमूआसाते ॥

हल् (व्यञ्जन) सन्धिः ।

१०—स्तोः श्चुना श्चुः ॥ स् या तवर्ग के पहिले या पीछे यदि श् या चवर्ग हो तो स् को श् या तवर्ग को क्रम से चवर्ग हो जाता है ॥ यथा—महत्+चक्रम्=महच्चक्रम, तद्+जयः= तज्जयः, महान्+जयः=महाञ्जयः, यज्+नः=यज्ञः, हरिस्+शेते= हरिश्शेते ॥

११—ष्टुना ष्टुः ॥ स या तवर्ग के पहिले या पीछे यदि ष् या टवर्ग हो तो, स् का ष् या तवर्ग को क्रम से टवर्ग हो जाता है ॥ यथा-तत्+टीका=तट्टीका, तद्+डिण्डिमः=तड्डिण्डिमः, इष्+ तः=इष्टः, पष्+थः=पष्ठः ॥

१२—तोर्लि ॥ तवर्ग के परे यदि ल् हो तो तवर्ग को ल् हो जाता है ॥ यथा—तत्+लाभः=तल्लाभः । न् को अनुनासिक ल् होता है, अर्थात् ल् से पहिले स्वर पर (अर्धानुस्वार) लगा दिया जाता है ॥ यथा—भवान्+लिखति=भवाँल्लिखति ॥

१३—झलां जश्झशि ॥ झल् के परे यदि झश् हो तो झल् को जश् होता है, अर्थात् जिस वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो उसको उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है ॥ यथा—लभ्+ धा=लब्धा ॥

१४—खरि च ॥ झल् के परे यदि खर् हो तो झल् को चर् हो जाता है, अर्थात् वर्ग के तीसरे अक्षर को उसी वर्ग का पहिला अक्षर हो जाता है ॥ यथा—दृषद्+सु=दृषत्सु ॥

१५—झलां जशोऽन्ते ॥ पदान्त में झल् के परे यदि अच्

हो तो. झल् को जश् हो जाता है, अर्थात् जिस वर्ग का पहिला वर्ण हो उसी वर्ग का तीसरा वर्ण उसे हो जाता है॥ यथा—दिक्+अन्तः=दिगन्तः, परिव्राट्+गच्छति=परिव्राड्-गच्छति, दूरात्+आगतः=दूरादागतः॥

१६—झयो होऽन्यतरस्याम्॥ झय् के परे यदि ह् हो तो ह् के स्थान में उस से पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा वर्ण विकल्प से हो जाता है॥ यथा—दिक्+हस्ती=दिक्+घस्ती=दिग्घस्ती (१३)—दिग्हस्ती, तत्+हितम्=तत्+धितम्=तद्धितम्—तद्-हितम्, अप्+हरणम्=अप्+भरणम्=अब्भरणम्—अब्हरणम्॥

१७—मोऽनुस्वारः॥ पदान्त म् के परे यदि हल् हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है॥ यथा—हरिम्+वन्दे=हरिं वन्दे, कष्टम्+सहते=कष्टं सहते॥

१८—वा पदान्तस्य॥ पदान्त अनुस्वार के परे यदि यय् हो तो यय् के वर्ग का पांचवां वर्ण विकल्प से हो जाता है॥ यथा—किम्+करोषि=किं+करोषि (१७)=किङ्करोषि—किंकरोषि, नदीम्+तरति=नदीं तरति (१७)=नदीन्तरति—नदीं तरति, शत्रुम्+जहि=शत्रुं जहि=शत्रुञ्जहि—शत्रुं जहि॥

१९—नश्चापदान्तस्य झलि॥ अपदान्त न् वा म् के परे यदि झल् हो तो न् वा म् को अनुस्वार हो जाता है॥ यथा—दन्+शनम्=दंशनम्, रम्+स्यते=रंस्यते॥

२०—अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः॥ अपदान्त अनुस्वार के परे यदि यय् हो तो अनुस्वार को यय् के वर्ग का पांचवां वर्ण हो जाता है॥ यथा—गम्+ता=गंता (१९)=गन्ता, आशम्+कते=आशंकते (१९)=आशङ्कते॥

२१—तोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा॥ पदान्त यर् के परे यदि अनुनासिक हो तो यर् को उसी वर्ग का अनुनासिक

विकल्प से हो जाता है ॥ यथा—दिक्+नागः=दिङ्नागः-दिग्नागः (१५), मधुलिट्+मत्तः=मधुलिण्मत्तः—मधुलिड्मत्तः (१५), जगत्+नाथः=जगन्नाथः—जगद्नाथः ॥

परन्तु यदि मय या मात्र प्रत्यय परे हो तो यर् को अनुनासिक सदा होता है ॥ यथा—चित्+मात्रम्=चिन्मात्रम्, चित्+मयम्=चिन्मयम् ॥

२२—उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ॥ उद् उपसर्ग के परे स्था या स्तम्भ् धातुओं के स् का लोप हो जाता है ॥ यथा—उद्+स्थानम्=उद्+थानम्=उत्थानम् (१४), उद्+स्तम्भनम्=उद्+तम्भनम्=उत्तम्भनम् ॥

२३—शश्छोऽटि ॥ झय् के परे यदि श् हो तो श् को छ् हो जाता है, यदि उस के परे अम् हो ॥ यथा—तद्+श्रुत्वा=तच्+श्रुत्वा (१०)=तच्छ्रुत्वा, निन्दन्+शठः=निन्दञ्+शठः (१०)=निन्दञ्छठः ॥

२४—छे च ॥ ह्रस्व स्वर के परे यदि छ् हो तो छ के पहिले त् लगाया जाता है ॥ यथा—वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया ॥

२५—पदान्ताद्वा ॥ पदान्त दीर्घ स्वर के परे यदि छ हो तो त् विकल्प से लगाया जाता है ॥ यथा—लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया—लक्ष्मीछाया ॥

२६—ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् ॥ ह्रस्व स्वर के परे यदि ङम् (ङ्, ण्, न्) हो तो उस को द्वित्व हो जाता है यदि परे अच् हो ॥ यथा—प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण्+ईशः=सुगण्णीशः, धावन्+अश्वः=धावन्नश्वः ॥

२७—नश्छव्यप्रशान् ॥ पदान्त न् के परे यदि छव् हो तो न् को अनुस्वार और स् हो जाता है, परन्तु प्रशान् में इन्द

नहीं होता ॥ यथा—कस्मिन्+चित्=कस्मिस्+चित्=कस्मिंश्चित् (१०), चलन्+टिट्टिभः=चलंस्+टिट्टिभः=चलंष्टिट्टिभः (११), हसन्+तरुः=हसंस्तरुः ॥

२८—ससजुषो रुः ॥ पदान्त स् और सजुष् शब्द के ष् को रु (र्) हो जाता है ॥

२९-खरवसानयोर्विसर्जनीयः ॥ र् अवसान में हो वा उसके परे खर् हो तो र् को विसर्ग हो जाता है ॥ यथा—राम+स्=राम+र् (२८)=रामः, पुनर्=पुनः, प्रातर्+फलति=प्रातः फलति ॥

विसर्ग सन्धिः।

३०—विसर्जनीयस्य सः ॥ विसर्ग के परे यदि खर् हो तो विसर्ग को स् हो जाता है ॥ यथा—पूर्णः+चन्द्रः=पूर्णस्+चन्द्रः =पूर्णश्चन्द्रः, (१०) भीतः+त्रसति=भीतस्+त्रसति=भीतस्त्रसति (११), उन्नतः+तरु=उन्नतस्तरुः ॥

३१—वा शरि ॥ विसर्ग के परे यदि शर् हो तो विसर्ग को विकल्प से स् हो जाता है ॥ यथा—रामः+शेते=रामस्+शेते =रामश्शेते (१०)—रामः शेते, घटाः+षट्=घटास्+षट्=घटाष्षट् (११)-घटाः षट्, प्रथमः+सर्गः=प्रथमस्सर्गः-प्रथमः सर्गः॥

३२—अतो रोरप्लुतादप्लुते, हशि च ॥ विसर्ग के पहिले यदि ह्रस्व अ हो और परे ह्रस्व अ वा हश् हो तो विसर्ग को उ हो जाता है ॥ यथा—देवः+अब्रवीत्=देव+उ+अब्रवीत्= देवोऽब्रवीत् (२), शिवः+वन्द्यः=शिव+उ+वन्द्यः=शिवोवन्द्यः ॥

३३—विसर्ग के पूर्व यदि अ या आ के बिना कोई स्वर हो और परे अश् हो तो विसर्ग को र् हो जाता है ॥ यथा-हरिः+ अयम्=हरिरयम्, तैः+उक्तम्=तैरुक्तम्, भानुः+गच्छति=भानु-

३४—रो रि ॥ र् के परे यदि र् हो तो पूर्व र् का लोप हो जाता है ॥

३५—ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥ लुप्त ढ् या र् के पूर्व ह्रस्व अण् को दीर्घ हो जाता है ॥ यथा—पुनर्+रक्ष=पुनः+रक्ष (३४) =पुनारक्ष, हरिः+रक्षति=हरिर्+रक्षति (३३) =हरि रक्षति (३४)=हरीरक्षति ॥

३६—भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि ॥ अ, आ, भो, भगो, अघो के परे यदि विसर्ग हो तो विसर्ग का (विसर्ग को य् हो कर उस का) लोप हो जाता है यदि परे अश् हो; लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती ॥ यथा—रामः+आगतः=राम आगतः, देवः+उवाच=देव उवाच, भोः+देवदत्त=भो देवदत्त, देवाः+यान्ति=देवायान्ति, (पदान्त विसर्ग से पूर्व और परे यदि ह्रस्व अ हो तो विसर्ग को उ हो जाता है, देखो (३२) ॥

३७—एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ॥ सः या एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है यदि परे हल् हो ॥ यथा—सः+देवः=सदेवः, एषः+रामः=एषरामः ॥

णत्व-विधि ।

३८—रषाभ्यां नो णः समानपदे; ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् ॥ ऋ, र् या ष् के परे न् को ण् हो जाता है, यदि ऋ, र् या ष् और न् एक ही पद में हों ॥ यथा—मातृ+नाम्=मातृणाम्, नृ+नाम्=नृणाम् ॥

३९—पदान्तस्य ॥ पदान्त न् को ण् नहीं होता ॥ यथा—रामान्, पितॄन् ॥

४०—अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि ॥ अट्, कवर्ग, पवर्ग, आङ्, नुम् (अनुस्वार), यदि ऋ, र्, ष् और न् के मध्य में भी हों तो न् को ण् हो जाता है ॥ यथा—रामायणम्, कृपणः, बृंहणम् ।

षत्व-विधिः ।

४१—आदेशप्रत्यययोः ॥ इण् या कवर्ग के परे यदि आदेश या प्रत्यय का स् हो तो उसे ष् हो जाता है ॥ यथा—नरेषु, चतुर्षु, दिक्षु ॥

४२—नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि ॥ अनुस्वार, विसर्ग या शर्, इण् आदि और स् के मध्य में भी हों तो स् को ष् हो जाता है ॥ यथा—हवींषि, ज्योतिःषु, धनुःषु ॥

प्रश्न

(१) नीचे लिखों में सन्धिच्छेद करो:—

तथैव, मनोरथः, यत्रैव, चेन्मतोऽहम्, शरच्छशी, क्वित्व, प्राङ्मुखस्योपरि, उद्गीजसा, स्मृतिरन्वगच्छत्, पुनश्चेदम्, वदतः, मातरत्र, तल्लुनाति, प्राङ्मुखः, उद्घोषथः, अन्नमद्यम्, परिव्राडागतः, महच्छत्रम्, विपज्जालम्, तद्धितम्, एतट्टङ्कुरः, राजपदौकसे, रमान्नुवाच, धावंश्छागः, मीमांसते, प्राजिघ्रति, उत्थितः, वागौदार्य्यम्, गागेय, दिग्धस्ती, मधुकम्, दृष्ट्वद्रूपः, षण्णम्, प्रत्याङ्मुखः, तन्नीरम्, नरोऽयम् अतीतो-मासः, नरइव, क एषः, धीरसौ, दुर्मीभिः, धामोद्दरतः, दत्ताग्रजाः, आगत्य, नीरोगः, स देवः, मो जनमेजय, पत्रधावनि, पधूत्तरः, अध्यायः, मतैक्यम्, महर्षिः, गौत्वोत्सवम्, मधक्षु, पित्रिष्क्रा, रूपनम्, विनायकः, गयोः, सत्र आगच्छ, धियामुत्सकः, धीपत्नी, मधु मद्वौ ।

(२) नीचे लिखों में सन्धि करोः——

वेदः+अधीतः+मया, महान्+लाभः, मुनीन्+त्रायस्व, ॅतवन्+एव, लिपन्+थुत्कारम्, प्रभो+अनुमन्यस्व, गम्+ यम्, वप्+धः, विधे+इमे, भवत्+मतम्, ताराः+उदिताः, वतः+अयम्, पितः+आगम्यताम्, शम्भुः+राजते, गोः+ र्मु, मार्गम्+चलति, मनः+रञ्जनम्, भोः+उमापते, अप्+ सः, महत्+धनम्, तरु+छाया, गुरुम्+नमति, निः+रसः, कुम्+हस्ती, दिक्+शोभितम्, बृहत्+ललाटम्, धावन्+ शः, याच्+ना, साधु+आगतौ, रवौ+अस्तम्+इते, परि- द्+राजते, विद्वन्+शोभसे, अनु+अयः, भौ+उकः, शश+ ङ्कः, पयः+असौ, पयः+पश्यति, कुतः+आगतः, द्विपत्+ रा+अच्छ्रजत्, सः+चित्+यजमानः, कल्प+अन्तेषु+ पि, यदि+अस्ति+अत्र, रत्नैः+महा+अर्हैः+तुतुषुः+नदेवाः+ च+अपि+असुराः, निः+चित+अर्थात्+विरमन्ति ॥

(३) नीचे लिखे पदों को शुद्ध करोः—

मूर्द्धया, छन्दांपि, देवाण्, रक्षेषु, हर्वेतौ, राम अब्रवीत्, हाश्वघः, पयोनृपः, सोऽगाद, धावितौ द्वाणः; पुमोऽपि, नरेष, पोवाच, नृपासन, रमाषु, चतुर्सु, दुर्णयः ॥

तृतीयः पाठः ।

संस्कृत भाषा में जितने शब्द हैं उन्हें तीन हिस्सों में बांटा हुआ है, (१) नाम (Declinable Substantives), (२) धातु (Verbal roots,) (३) अव्यय (Indeclinables)

नाम-प्रकरणम् ।

नाम—उच्चारण (Declensions of Substantives) ॥

नामों के तीन लिङ्ग होते हैं, पुंलिङ्ग (Masculine), स्त्रीलि (Feminine), नपुंसकलिङ्ग (Neuter) ॥

प्रत्येक लिङ्ग में नाम के आगे सात विभक्तियें आती हैं प्रत्येक विभक्ति के तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन बहुवचन ॥

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्रथमा	सु (स्)	औ	जस् (अस्)	Nominativ
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अस्)	Accusative.
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस्	Instruments
चतुर्थी	ङे (ए)	,,	भ्यस्	Dative.
पंचमी	ङसि (अस्)	,,	,,	Ablative.
षष्ठी	ङस् (अस्)	ओस्	आम्	Genitive.
सप्तमी	ङि (इ)	,,	सुप् (सु)	Locative.

जिस नाम के अन्त में अच् (स्वर) आता है उसे अजन्त (स्वरान्त) और जिस के अन्त में हल् (व्यञ्जन) आता है उसे हलन्त (व्यञ्जनान्त) कहते हैं ॥

अजन्त (स्वरान्त) नाम

पुंलिङ्ग (masculine)

अकारान्त

अकारान्त नामों के लिये विभक्तियों के यह रूप बन जाते हैं:—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्	औ	अस्
द्वितीया	म्	औ	अन्
तृतीया	इन	भ्याम्	ऐस्
चतुर्थी	य	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	आत्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	स्य	योस्	आम्
सप्तमी	इ	योस्	सु

सम्बोधन में वे ही विभक्तियां होती हैं जो प्रथमा में, इस लिये सम्बोधन पृथक् दिखाई नहीं ।

राम (a proper name)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय१	रामाभ्याम् १	रामेभ्यः १
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम् १	रामेभ्यः २

१—[illegible]

२—[illegible]

षष्ठी	रामस्य	रामयोः [3]	रामाणाम् [4]
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु [2]
सम्बोधन	राम [5]	रामौ	रामाः

नीचे दिये हुए नामों का उच्चारण (declension) भी पुंलिङ्ग में राम शब्द की तरह करना चाहिये ॥

नृप	राजा,	a king	अश्व	घोड़ा,	a horse.
पुत्र	पुत्र,	a son.	वृक्ष	वृक्ष,	a tree.
पवन	वायु,	wind.	हस्त	हाथ,	the hand.
जन	मनुष्य,	a man.	पुरुष	आदमी,	a man.
कोश	खजाना,	a treasure.	कूर्म	कछुवा,	a tortoise.
ग्राम	गाँव,	a village	समुद्र	समुद्र,	the sea.
किङ्कर	नौकर,	a servant.	आदेश	आज्ञा,	command.
स्तेन	चोर,	a thief.	बिडाल	बिल्ला	a cat.
देह	शरीर,	the body	गज	हाथी,	an elephant.
अगद	औषध,	medicine.	दास	नौकर,	a servant.
शिष्य	शिष्य,	a pupil.	जनक	पिता,	father.
स्वर्ग	स्वर्ग,	heaven.	भार	बोझ,	a burden.

३—ओसि च ॥ अकारान्त अङ्ग के अन्तिम अ को ए हो जाता है, यदि परे ओस् हो ॥ यथा—राम+ओस्=रामे+ओस्=राम्+अय्+ओस् (१) =रामयोः (१८, ३१)॥

४—नामि ॥ अङ्ग + अन्त अङ्ग के अन्तिम स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि नाम् परे हो ॥ यथा—राम+आम्=रामनाम्=रामानाम् (४०)॥

५—एङ् ह्रस्वात् सम्बुद्धेः ॥ एङ्+अन्त और ह्रस्व+अन्त अङ्ग के परे सम्बोधन की एकवचन विभक्ति का लोप हो जाता है ॥

...त ...ध	बुद्धिमान पुरुष, a wiseman.		पाद	पाँव,	the foot.
...द	बादल,	a cloud	योध	योद्धा,	a warrior.
...र	मनुष्य,	a man.	शर	बाण,	an arrow.
...र्ख	मूर्ख,	a fool.	नाश	नाश,	disappearance.
...व	पशु,	an animal.	व्याघ्र	शेर,	a tiger.
...वर	परमात्मा,	God.	बाल	बालक,	a child.

इकारान्त

...कारान्त नामों के लिये विभक्तियों के यह रूप बन जाते हैं ॥

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
...मा	म्	०	अस्
...तीया	म्	०	न्
...तिया	ना	भ्याम्	भिस्
...र्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
...चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
...ठी	अस्	ओस्	नाम्
...मी	औ	ओस्	सु

कवि (a poet)

...मा	कविः	कवी १	कवयः ३
...तीया	कविम्	कवी १	कवीन् १

१—प्रथमा द्विवचन और द्वितीया के द्विवचन और बहुवचन में इका... या उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के इ वा उ को दीर्घ हो जाता है ॥

३—... [illegible]

तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये ८	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः ९	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः ९	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ १०	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	कवे ११	कवी	कवयः

सखि (a friend)

प्रथमा	सखा १२, १३, १४	सखायौ १६	सखायः

८—घेर्ङिति ॥ इकारान्त वा उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के अन्तिम इ वा उ को गुण हो जाता है, यदि परे चतुर्थी पञ्चमी वा षष्ठी का एक वचन हो ॥

९—ङसिङसोश्च ॥ इकारान्त वा उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के परे पञ्चमी और षष्ठी के एक वचन अ का लोप हो जाता है ॥ यथा—कवि+अस्=कवे+अस्=कवेः (१८, १९) ॥

१०—अच्च घेः ॥ इकारान्त वा उकारान्त शब्दों के इ वा उ को अ हो जाता है, यदि परे सप्तमी एकवचन की विभक्ति हो ॥ यथा—कवि+औ=कव+औ=कवौ ॥

११—ह्रस्वस्य गुणः ॥ इक्-अन्त अङ्गों के अन्तिम ह्रस्व स्वर को गुण होता है, यदि परे सम्बोधन का एक वचन हो ॥

१२—अनङ् सौ ॥ सखि की इ को अन् हो जाता है; यदि परे प्रथमा एकवचन की विभक्ति (स्) हो ॥

१३—सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ ॥ न्+अन्त अङ्गों के उपध स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि परे सम्बोधन भिन्न सर्वनामस्थान विभक्ति हो ॥

१४—न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य ॥ न् यदि शब्द के अन्त में हो के परे कोई पद विभक्ति हो तो न् का लोप हो जाता है ॥

अचो ञ्णिति अजन्त अङ्गों के अच को वृद्धि होजाती है, यदि [illegible]

द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः १६	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः १६	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	सखे	सखायौ	सखायः

पति (a husband)

पति शब्द का सर्वनामस्थान विभक्तियों में कवि की तरह उच्चारण होता है और शेष विभक्तियों में सखि की तरह ॥

प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	,,	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	,,	,,
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	,,	पतिषु
सम्बोधन	पते	पती	पतयः

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण कवि की तरह होगा ॥

अरि	शत्रु,	an enemy.	व्याधि	रोग,	disease.
अग्नि	आग,	fire.	*नृपति	राजा,	a king.
ऋषि	ऋषि,	a sage.	अतिथि	[illegible],	a guest.

१६—ख्यत्यात्परस्य ॥ सखि वा पति शब्द के परे यदि ङस् (पञ्च॰

विधि	भाग्य,	fate.	पाणि	हाथ,	the hand.
रवि	सूर्य,	the sun.	बलि	बलि,	an offering.
कलि	कलह,	strife	मणि	रत्न,	a jewel.
हरि	व्यक्ति-नाम, विष्णु, इन्द्र		सारथि	रथवान,	a charioteer.
असि	तलवार,	a sword.	यति	योगी,	an ascetic.
कपि	बन्दर,	a monkey.	अधिपति	स्वामी,	maste
गिरि	पर्वत,	a mountain.	राशि	ढेर,	a hea

ईकारान्त

ईकारान्त नामों की विभक्तियों में कोई परिवर्तन नहीं होता

सुधी (a wise man)

	एक व०	द्विवच०	बहुवच०
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ १६	सुधियः १
द्वितीया	सुधियम् १८	सुधियौ १६	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	प्रथमा की तरह		

उकारान्त

उकारान्तों की वे ही विभक्तियाँ हैं जो इकारान्तों की।

भानु (the sun)

प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः

१६—न भूसुधियोः॥ भू का सुधी के ऊ का ई को क्रम से उव् या इय् होता है, यदि परे स्वरादि विभक्ति हो॥

द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	भानो	भानू	भानवः

नियमों के लिये देखो (कवि)॥

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण 'भानु' की तरह होगा॥

इषु	बाण,	an arrow.
तरु	वृक्ष,	a tree.
बिन्दु	बून्द,	a drop.
इन्दु	चन्द्र,	the moon.
बन्धु	सम्बन्धी,	a relative.
पशु	पशु,	a beast.
वायु	पवन,	the wind.
शम्भु	शिव,	the god Shiva.
प्रभु	मालिक,	a lord.
बाहु	भुजा,	an arm
पांसु	धूलि,	dust.
परशु	कुल्हाड़ा,	an axe.
गुरु	आचार्य,	a preceptor.
शिशु	बालक,	an infant.
शत्रु	वैरी,	an enemy.
मनु	मनुस्मृति का कर्ता,	Manu, the Hindu legislator.
विष्णु	विष्णु,	the god Vishnu.
मृत्यु	मृत्यु,	death.
विभु (वि०)	व्यापक,	allpervading.
बहु (वि०)	बहुत,	many
सूनु	पुत्र,	a son
मृदु (वि०)	कोमल,	soft.
गुरु (वि०)	भारी,	heavy.
तनु (वि०)	छोटा, अल्प,	small.
लघु (वि०)	छोटा,	small, little.
साधु	सज्जन,	a good man.

ऊकारान्त

स्वयम्भु (self-born)

प्रथमा	स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ *	स्वयम्भुवः

* न भू सुधियोः

द्वितीया	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृतीया	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभिः
चतुर्थी	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
पञ्चमी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
षष्ठी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुवाम्
सप्तमी	स्वयम्भुवि	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भूषु
सम्बोधन	स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः

ऋकारान्त

ऋकारान्त नामों के लिये विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं॥

	एक व०	द्वि वच०	बहु व०
प्रथ० सम्बो०	०	औ	अस्
द्वितीया	अम्	औ	न्
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	अस्	ओस्	नाम्
सप्तमी	इ	ओस्	सु

पितृ (father)

प्रथमा	पिता १७	पितरौ १८	पितरः

१७—ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च ॥ ह्रस्व ऋकारान्त शब्दों के अन्तिम ऋ को प्रथमा के एक वचन में अन् होजाता है ॥ पितान् (सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ)=पिता (नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य) ॥

१८—ऋतोङिसर्वनामस्थानयोः ॥ ह्रस्व ऋकारान्त शब्द के परे यदि सप्तमी एक वचन वा सर्वनामस्थान विभक्ति हो तो ऋ को गुण (अर्) हो

द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन् १६
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः २०	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः १०	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	पितः	पितरौ	पितरः

६८२८

दातृ (a giver)

प्रथमा	दाता	दातारौ २१	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	शेष पितृकी तरह

नीचे लिखे ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों का उच्चारण दातृ के तरह होगा॥

त्वष्टृ विश्वकर्मा, the architect of gods.	नप्तृ पौत्र, दौहित्र, a grandsor
भर्तृ स्वामी, husband, master	वक्तृ (वि॰) बोलनेवाला, a speak
कर्तृ (वि॰) करनेवाला, a doer.	श्रोतृ (वि॰) सुननेवाला, a heare
गन्तृ (वि॰) जानेवाला, a goer.	स्रष्टृ (वि॰) उत्पन्न करने वाला, the creator
द्रष्टृ (वि॰) देखने वाला, a seer.	होतृ हवन करने वाला, a sacrificial priest

द्वेष्टृ (वि०) शत्रु, a hater. | जेतृ (वि०) जीतनेवाला, a conqueror.
रक्षितृ (वि०) रक्षक, a defender. | सवितृ सूर्य, the sun.
अध्येतृ पढ़ने वाला, a reader.

ओकारान्त—

[illegible] परिवर्तन नहीं होता ॥

गो (a bull)

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	गौः	गावौ	गावः

औकारान्त

ग्लौ (the moon)

प्रथमा	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वितीया	ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लावः
तृतीया	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
चतुर्थी	ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
पञ्चमी	ग्लावः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
षष्ठी	ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्

सप्तमी	ग्लावि	ग्लावोः	ग्लौषु
सम्बोधन	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः

EXERCISE I.

(क) दासोग्रामायभारं नयति ॥
हरिः पाणिनाग्निं स्पृशति ॥
मूर्खाः स्वीयानपराधान् छादयन्ति ॥
ईश्वरः पापान् अपि क्षमते ॥
गुरूणामादरश्छात्राणां परमोधर्मः ॥
ग्लौराकाशे शुक्ले पक्षउदयते ॥
बहवो नास्तिका ईश्वरं संसारस्य धर्तारं न मन्यन्ते ॥
अगदेन मनुष्याणां व्याधयो नश्यन्ति ॥

कथयो नृपाणां गुणान् व
यन्ति ॥
लोके सुधियो दुर्लभाः ॥
विपरीतेषु दिवसेषु स्वी
बन्धवोपि विमुखा भवन्ति
भारता तण्डुलैर्भिनातीव तुष्य
संसारस्य कर्तारं प्राञ्जलि
नामि ॥
रवेः प्रकाशः ग्रीष्म आल्हाद
न भवति ॥
सारथीरामस्याश्वं ग्रामाद् ग्
नयति ॥

(ख) रोग मनुष्य को दुःख देते हैं
छात्र परिश्रम से पाठ पढ़ते हैं ॥
— कृष्ण दण्ड से चोर को पीटता है ॥
बहुत से पक्षि वृक्ष पर बैठे हैं ॥
बच्चे धूलि से खेलते हैं ॥
सब भाइयों में हरि का आचार श्रेष्ठ है ॥
मृग मांस नहीं खाते ॥
राम विनय से अध्यापक को प्रणाम करता है ॥

बुद्धिमान् लोगों को शुभ
पर ले जाते हैं ॥
पिता के भाई को पि
कहते हैं ॥
संसार में पिता और पु
भी धन के लिये कलह
जाता है ॥
अर्जुन बाहु के पराक्रम
शत्रुओं को जीतता है ॥

चतुर्थः पाठः ।

स्वरान्त

स्त्रीलिङ्ग (Feminine)

आकारान्त

आकारान्त शब्दों के लिये विभक्तियों के ये रूप बन जायेंगे॥

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	०	ई	अस्
द्वितीया	म्	ई	अस्
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	अस्	ओस्	नाम्
सप्तमी	आम्	ओस्	सु
सम्बोधन	०	ई	अस्

शाला (a place)

प्रथमा	शाला	शाले	शालाः
द्वितीया	शालाम्	शाले	शालाः
तृतीया	शालया २४	शालाभ्याम्	शालाभिः
चतुर्थी	शालायै २५	शालाभ्याम्	शालाभ्यः
पञ्चमी	शालायाः २५	शालाभ्याम्	शालाभ्यः
षष्ठी	शालायाः २५	शालयोः २४	शालानाम्

---

२४ आङि चापः—सम्बुद्धौ ॥ स्त्रीलिङ्ग के आकारान्त शब्दों के अन्तिम आ को ए हो जाता है, परे यदि तृतीया और सम्बोधन का एकवचन, षष्ठी और सप्तमी का द्विवचन हो ॥

सप्तमी	शालायाम् २५	शालयोः १४	शालासु
सम्बोधन	शाले १४	शाले	शालाः

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण भी शाला की तरह होगा।

आज्ञा	आज्ञा,	command.	शोभा	सौन्दर्य,	beauty.
कथा	कहानी,	a story	लता	बेल,	a creeper.
कन्या	लड़की,	a daughter	लज्जा	लज्जा,	shame, modesty.
कला	हुनर,	an art.	भार्या	स्त्री,	a wife.
गङ्गा	गङ्गा नदी,	the Ganges.	प्रजा	सन्तान, प्रजा,	progeny, subjects.
चिन्ता	चिन्ता,	anxiety.	प्रमदा	युवति,	a young woman.
देवता	देवता,	a deity.	ललना	स्त्री,	a woman.
पाठ+शाला	पाठशाला,	a school.	छाया	छाया,	shade.
व्यथा	दुःख, पीड़ा,	pain.	तृष्णा	तृष्णा,	thirst.
प्रभा	रोशनी,	light.	निशा	रात्रि,	night.
क्रीडा	खेल,	play.	शिला	पत्थर,	a stone.
जरा	बुढ़ापा,	old age.	रथ्या	बाजार,	a street.
क्षमा	क्षमा,	forgiveness.	विद्या	विद्या,	knowledge.
माला	माला,	a garland.			

ईकारान्त

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	•	औ	अस्
द्वितीया	म्	औ	ईस्

शेष आकारान्तों की तरह

---

२५ साधारणतः स्त्रीलिङ्ग के आकारान्त शब्दों के अन्त में [illegible] ए, आम् [illegible] और [illegible]

नदी (a river)

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै २६	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः २६	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि २७	नद्यौ	नद्यः

स्त्री (a woman)

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ २८	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्-स्त्रीम् २९	स्त्रियौ	स्त्रियः-स्त्रीः २९
तृतीया	स्त्रिया २८	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै २८	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः

२६—आण्नद्याः ॥ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में आ जोड़ा जाता है, यदि चतुर्थी, पञ्चमी और षष्ठी के एक वचन की विभक्ति परे हो । यथा—नदी+ए=नदी+आ+ए=नदी+ऐ=नद्यै ॥

२७—अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ॥ सम्बोधन के एक वचन में ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्तिम ई को ह्रस्व हो जाता है ॥

२८—स्त्रियाः ॥ स्त्री शब्द के अन्तिम ई को इय् हो जाता है, यदि परे कोई स्वरादि विभक्ति हो ॥ यथा—स्त्री+अस् (ष० एक०)=स्त्री + आ+ (आण्नद्याः)=स्त्रिय्+आस्=स्त्रियाः ॥

२९—वाम्शसोः ॥ स्त्री की ई को इय् विकल्प से होता है, यदि परे के एकवचन और बहुवचन की विभक्ति हो ॥ (द्वितीया के एकवचन

पञ्चमी	स्त्रियाः २८	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः २८	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि	स्त्रियौ	स्त्रियः

श्री * (the goddess of wealth)

प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै-श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः-श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः-श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्
सप्तमी	श्रियाम्-श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	श्रीः	श्रियौ	श्रियः

नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण नदी की तरह होगा ॥

कुमारी अविवाहिता बालिका, a virgin.	मही पृथिवी, the earth.
नटी नटी, an actress.	दासी नौकरानी, a maid.
जननी माता, a mother.	महिषी रानी, a crowned queen.
सखी } सहचरी } सहेली, a female-companion.	पुरी शहर, a town.
	इन्द्राणी इन्द्र की स्त्री, the

नारी स्त्री, a woman. | * लक्ष्मी लक्ष्मी देवी, the goddess of fortune.
पत्नी भार्या, a wife |

ऊकारान्त †

वधू (a young woman)

प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	वधु	वध्वौ	वध्वः

इकारान्त

‡ मति (intellect)

प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः

* प्रथमा एक वचन लक्ष्मीः ॥

† इस के प्रथमा एक वचन में स् विभक्ति होती है, शेष उदाहरण नदी की तरह होगा, नदी में ई को य् होता है, यहां पर ऊ को व् होता है ॥

‡ मति का द्वितीया बहु वचन और तृतीया एकवचन नदी की तरह होगा; चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एक वचनों में मति का एक नदी की तरह और दूसरा हरि की तरह, और शेष उदाहरण हरि की तरह ॥

तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै-मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः-मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः-मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्-मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	मते	मती	मतयः

उकारान्त

* धेनु (a cow)

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै-धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः-धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः-धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्-धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो	धेनू	धेनवः

ऋकारान्त

मातृ, स्वसृ, दुहितृ, आदि स्त्रीलिङ्ग के ऋकारान्त शब्दों के द्वितीया बहुवचन में मातॄः स्वसॄः, दुहितॄः [illegible] शेष बनते हैं, और उच्चारण रीति [illegible]

द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	मातः	मातरौ	मातरः

स्वसृ (a sister)

प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	शेष मातृ की तरह

ओकारान्त, औकारान्त

स्त्रीलिङ्ग में ओकारान्त और औकारान्त शब्दों का उच्चारण सर्वथा पुंलिङ्ग की तरह होगा ॥

गो (a cow)

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	इत्यादि

नौ (a boat)

प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	नावौ	इत्यादि

नीचे लिखे इकारान्त और ऋकारान्त शब्दों का उच्चारण मति और मातृ की तरह होगा ।

भूमि	पृथिवी,	the earth.	बुद्धि	बुद्धि,	talent.
अनुरक्ति	प्रेम,	love.	भक्ति	भक्ति,	devotion.
नीति	नय,	politics.	भूति	ऐश्वर्य,	prosperity.
मुक्ति	मोक्ष	absolution.	जाति	जाति,	caste.

मूर्ति मूर्ति an image.	दुष्कृति दुष्टकर्म, a wicked action.
कांति शोभा, splendour.	रात्रि रात्रि, night.
प्रकृति प्रजा, स्वभाव, subjects, disposition.	वसति वासस्थान, the place of residence.
कीर्ति यश, fame	धृति धैर्य, courage.
प्रतिकृति नक़ल, an image	वृत्ति पेशा, avocation.
रति भोग, sensual pleasure.	स्मृति स्मरण, remembrance.
कृति काम, action	स्तुति प्रशंसा, praise.
गति चाल, gait.	सुकृति अच्छा काम, good action.
सृष्टि संसार, creation.	यातृ भर्ता के भाई की स्त्री, husdand's brother's wife.
श्रुति सुनना, hearing.	दुहितृ पुत्री, a daughter.
रज्जु रस्सी, a rope.	ननान्दृ ननान (भर्ता की बहिन) husband' s sister.
उपकृति उपकार, benefit.	
प्रीति प्रेम, love.	

EXERCISE II.

(क) यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपालयामि देवम् ॥

... सकलास्वपि सीता ... तस्य प्रिया यथा शान्ता ॥

...ता मारुता मुक्त्यै देवानां ...ीः पूजयन्ति ॥

... प्रतिकूले बुद्धिरपि नश्यति ॥

बुद्धेरेवायं प्रमादो यदसम्मतानां कृतीनामपि सम्भवः ॥

श्रुतौ शूद्राणां नाधिकार इति बहूनां ब्राह्मणानां सम्मतिः ॥

धेनुभ्यः संसारस्य प्रभूतोपकृतिर्भवति ॥

माता भ्राता पिता याता स्वसारो दुहिता तथा ।

(ख) वृद्धावस्था में भी मनुष्यों की तृष्णा नहीं जाती ॥

प्रायः विद्या और लक्ष्मी एक पुरुष में नहीं रहतीं ॥

व्यापार दास वृत्ति से अच्छा है ॥

श्रुति और स्मृति में ईश्वर की प्राप्ति के उपाय हैं ॥

सुशीला की सास उससे बहुत स्नेह करती है ॥

गङ्गा और यमुना का सङ्गम प्रयाग के समीप होता है ॥

मति कैकेयी की आज्ञा से राम अयोध्या से चित्रकूट पहुंचा ॥

अच्छे पुरुषों का यश भूमि पर फैलाता है ॥

चन्द्र की कान्ति रात्रि में आनन्द देती है ॥

पञ्चमः पाठः ।

नपुंसकलिङ्ग (Neuter)

अकारान्त

अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के परे विभक्तियों के रूप बन जाते हैं ॥

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	म्	ई	आनि
द्वितीया	म्	ई	आनि
सम्बोधन	०	ई	आनि

शेष पुंलिङ्ग की तरह ।

ज्ञान (knowledge)

प्रथमा	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वितीया	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
सम्बोधन	ज्ञान	ज्ञाने	ज्ञानानि

शेष उच्चारण राम की तरह ।

इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के परे विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं ॥

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०द्वि०सम्बो०	०	ई	इ
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्

इकारान्त
वारि (water)

प्रथ० द्विती०	वारि	वारिणी २०	वारीणि*
सम्बोधन	वारि-वारे २१	वारिणी २०	वारीणि
तृतीया	वारिणा २०	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु

उकारान्त
मधु (honey)

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	इत्यादि वारि की तरह

ऋकारान्त
कर्तृ (a doer)

प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
तृतीया	कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	इत्यादि वारि की तरह

२०—इकोऽचि विभक्तौ ॥ इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त नपुंसक लिङ्ग के शब्दों के अन्त में न् लगाया जाता है यदि परे कोई स्वरादि विभक्ति हो ॥

* वारि+इ=वारिन्+इ=वारीणि (सर्वनाम स्थाने चासम्बुद्धौ)

२१—नपुंसक लिङ्ग में इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त शब्दों के अन्तिम स्वर को विकल्प से गुण होजाता है, यदि परे सम्बोधन के एक-व की विभक्ति हो ॥

अस्थि (a bone)

प्र० द्वि० सं०	अस्थि	अस्थिनी	अस्थीनि
तृतीया	अस्थ्ना ३३	अस्थिभ्याम्	अस्थिभिः
चतुर्थी	अस्थ्ने	अस्थिभ्याम्	अस्थिभ्यः
पञ्चमी	अस्थ्नः	अस्थिभ्याम्	अस्थिभ्यः
षष्ठी	अस्थ्नः	अस्थ्नोः	अस्थ्नाम्
सप्तमी	अस्थ्नि-अस्थनि ३४	अस्थ्नोः	अस्थिषु

अक्षि (the eye)

प्र० द्वि० सं०	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	इत्यादि अस्थिकी त

दधि (curd)

प्र० द्वि० सं०	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः

इत्यादि अस्थि की तरह ॥

सुरभि (वि०	सुगन्धित,	fragrant.	गोत्र	वंश	famil
रत्न	मणि,	a jewel.	इन्धन	बालन,	fue
चक्र	चक,	a wheel.	दातृ	देनेवाला,	a give
			मधु	शहद,	hone

३३—अस्थि-दधि-सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ॥ अस्थि को अस्थन्, अ को अक्षन् और दधि को दधन् हो जाता है, यदि परे तृतीया एकवचन लेकर कोई स्वरादि विभक्ति हो ॥

३४—अल्लोपोऽनः ॥ अन्-अन्त शब्दों के अन् के अ का लोप हो जा है, यदि परे भ विभक्तियें हों ॥

३५— [illegible]

अश्रु	आँसू,	a tear	सुख	सुख,	happiness.
वसु	धन,	wealth	हृदय	दिल,	the heart.
विष	ज़हर,	poison	पद	कदम,	a step.
वस्त्र	कपड़ा,	cloth	धान्य	अनाज,	corn.
नगर	शहर,	a town	तृण	घास,	grass.
तत्त्व	सचाई,	truth	पाप	पाप,	sin.
सुवर्ण	सुवर्ण,	gold.	कुसुम	फूल,	a flower.
मांस	मांस	flesh.	पुष्प	,,	,,
नख	नख,	a nail.	आसन	स्थान,	a seat.
पुण्य	पुण्य,	merit	आकाश	आकाश,	the sky.
यन्त्र	यन्त्र,	a machine	उद्यान	बाग़,	a garden.
कमल	कमल,	a lotus.	कल्याण	सुख,	happiness.
गृह	गृह.	a house	क्षेत्र	खेत,	a field.
जल	पानी,	water	भोजन	भोजन,	food.
दुःख	दुःख,	misery	मौन	चुप,	silence.
धन	धन,	wealth.	राज्य	राज्य,	kingdom.
नेत्र	आंख,	the eye.	वैर	शत्रुता,	enemity.
फल	फल,	a fruit.	वचन	वाक्य,	a saying.
मित्र	मित्र,	a friend.	नयन	आंख,	the eye.
मुख	मुख,	the month.			

EXERCISE III.

(क) मूर्खो सुखानि परित्यजति मधुनानि च निषेवते ॥ कासारेषु सुरभीणि कमलानि ...

आलस्येन नराणां सञ्चितमपि धनं नश्यति उद्यमेन च वर्धते ॥ रथाः यन्त्राणि च चक्रैश्चलन्ति॥ ...

तेन च अवकेन मुखं नेत्रे च
ालयस्व ॥

छत्रस्य अश्रूणि नयनाभ्यां
पोलयोरपतन् ॥

ष्टानां हृदयं परकीयस्य दुःख-
य श्रवणेन न कदापि द्रवति ॥

खानि पशूनां भोजनम्, धान्यं
मनुष्याणां, फलानि च कपी-
नाम् ॥

भारते जना मृतानामस्थीनि
गङ्गाजले क्षिपन्ति ॥

मूर्खा अक्षिभ्यामेव पश्यन्ति
बुधास्तु ज्ञानेनाऽपि ॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥

) ज्ञान का फल सुख होता है ॥

उस धूर्त का वृत्त सुनने से
हृदय कांपता है ॥

घर की सब वस्तु उसने
बाहिर फेंक दी ॥

पाप सदा निन्दनीय है, और
पुण्य प्रशंसनीय ॥

मन के बल से सब कार्य्य सिद्ध
होजाते हैं ॥

पुस्तक को जल और तेल से
बचाओ (रक्ष्) ॥

चन्दन से मुख इतना सुन्दर
नहीं होता जितना मधुर वचनों
से ॥

जब मैंने देखा तो देवदत्त की
आंखों से आंसू बह रहे थे ॥

षष्ठः पाठः ।

सर्वनाम (Pronouns)

४२—अव्यय और धातु से भिन्न किसी शब्द की द्विरुक्ति न करने के लिये जो उस शब्द की जगह दूसरा शब्द प्रयुक्त होता है, उसे सर्वनाम कहते हैं ॥

४३—सर्वनाम के लिंग और वचन वे ही होते हैं, जो उस शब्द के हैं, जिस के स्थान में, वह प्रयुक्त हुआ हो॥ यथा-रामः गृहमगच्छत, परं तस्य (रामस्य) पुस्तकानि अत्रैव वर्तन्ते॥ इस वाक्य में राम की द्विरुक्ति को दूसरे वाक्य में न करने के लिये 'रामस्य' के स्थान में 'तस्य' का प्रयोग हुआ है ॥

मुख्य सर्वनाम यह हैं:—

सर्व (all)	कतर (which of two?)	तृतीय (third)
उभ (both)	कतम (which of many?)	तद् (that)
उभय (both)	पूर्व (eastern)	एतद् (this)
अन्य (other)	पर (another)	यद् (which)
अन्यतर (either)	अवर (lower)	किम् (which?
इतर (other)	दक्षिण (right, southern)	इदम् (this,
डतर (that of two)	उत्तर (left, northern)	अदस् (that)
डतम (that of many)	अपर (another)	युष्मद् (you)
कतर (which of two)	स्व (one's own)	अस्मद् (we)
कतम (which of many)	द्वितीय (second)	

पुंलिङ्ग में सर्व शब्दों की विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं ॥

प्रथमा	अः	औ	ए
द्वितीया	अम्	औ	आन्

तृतीया	इन	भ्याम्	ऐस्
चतुर्थी	स्मै	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	स्मात्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	स्य	ओस्	नाम्
सप्तमी	स्मिन्	ओस्	सु
सम्बोधन	०	औ	ई

सर्व (all)

प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	सर्व	सर्वौ	सर्वे

स्त्रीलिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग में सर्वनामों की विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं

प्रथमा	०	ई	अस्
द्वितीया	म्	ई	अस्
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	स्यै	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	स्यास्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	स्यास्	ओस्	साम्

सर्व

प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया *	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै ३५	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः ३५	सर्वाभ्याम	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः ३५	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सम्बोधन	सर्वे	सर्वे	सर्वाः

नपुंसकलिङ्ग में सर्वनामों की विभक्तियों के ये रूप बनजाते।

प्रथमा-द्वितीया	म्	ई	आनि

शेष पुंलिङ्ग की तरह

प्रथमा-द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष पुंलिङ्ग की तरह

तीनों लिङ्गों में उभ और उभय शब्दों का उच्चारण सर्व की तरह होगा, परन्तु उभ द्विवचन में प्रयुक्त होता है और उभय एकवचन और बहु वचन में ॥

उभ (both)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	उभौ	उभे	उभे

* आङि चापः ॥

३५—सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च ॥ सर्वनामों के परे यदि स्त्रीलिङ्ग की ए, अस् (पञ्च॰ षष्ठी—एक वचन) आम् विभक्तियें हों तो विभक्ति के पूर्व स्या जोड़ा जाता है और सर्वनाम का अन्तिम आ ह्रस्व होजाता है ॥ यथा—सर्वा+ए=सर्वा+स्या+ए=सर्वास्यै=सर्वस्यै ॥ (इस पुस्तक में विभक्तियों के रूप स्या के साथ जोड़ कर दिये हुए हैं) ॥

द्वितीया	उभौ	उभे	उभे
तृतीया	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पञ्चमी	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयोः	उभयोः	उभयोः
सप्तमी	उभयोः	उभयोः	उभयोः

उभय (both)

	पुंलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग	
प्रथमा	उभयः	उभये	उभया	उभयाः
द्वितीया	उभयम्	उभयान्	उभयाम्	उभयाः
		इत्यादि		इत्यादि

नपुंसकलिङ्ग

प्र० द्वि० उभयम् उभयानि, शेष पुंलिङ्ग की तरह।

इसी तरह अन्य, अन्यतर, इतर, ततर, ततम, यतर, यतम, कतर, कतम का उच्चारण भी सर्व की तरह होगा। केवल नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा एकवचन के इन के रूप क्रम से अन्यत्, अन्यतरत्, इतरत्, ततरत्, ततमत्, यतरत्, यतमत् कतरत्, कतमत् होंगे ॥

नोट—पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, और स्व (अपना) शब्दों के पुंलिङ्ग में प्रथमा बहुवचन और चतुर्थी, पञ्चमी सप्तमी-एकवचन में दो दो रूप होंगे, एक सर्व की तरह और दूसरा राम की तरह ॥

पूर्व (eastern)

पुंलिङ्ग

प्रथमा	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे-पूर्वाः
द्वितीया	पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्

तृतीया	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
चतुर्थी	पूर्वस्मै-पूर्वाय	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
पञ्चमी	पूर्वस्मात्-पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
सप्तमी	पूर्वस्मिन्-पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु
सम्बोधन	पूर्व	पूर्वौ	पूर्वे-पूर्वाः

स्त्रीलिङ्ग में पूर्व आदि शब्दों का उच्चारण सर्वा की तरह होग

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा-द्वितीया	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि

शेष पुंलिङ्ग की तरह।

इसी तरह 'पर' आदि का उच्चारण भी करना।

तीनों लिङ्गों में द्वितीया और तृतीया के चतुर्थी-पञ्चमी सप्तमी एकवचन में दो दो रूप होंगे, एक सर्व की तरह और दूसरा राम की तरह। शेष विभक्तियों में इसका उच्चारण राम की तरह होगा॥

द्वितीय (second)

	पुंलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
चतुर्थी	द्वितीयस्मै—द्वितीयाय	द्वितीयस्यै—द्वितीयायै
पञ्चमी	द्वितीयस्मात्—द्वितीयात्	द्वितीयस्याः—द्वितीयायाः
सप्तमी	द्वितीयस्मिन्—द्वितीये	द्वितीयस्याम्—द्वितीयायाम्

[illegible] इसी तरह तृतीय का उच्चारण भी होगा, [illegible]

[illegible]—(क) नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा एक वचन से लिया है, [illegible] और [illegible] के अन्तिम द् का लोप होकर क्रम से त, [illegible]

[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] के [illegible] [illegible] है [illegible] पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

और य बन जाते हैं, फिर उनका उच्चारण सर्व की तरह तीनों लिङ्गों में होगा।

(ख) तद् आदि आठ सर्वनामों का सम्बोधन नहीं होता ॥

तद् (that)

पुंलिङ्ग

प्रथमा	सः*	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग।

प्रथमा	सा *	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा-द्वितीया तत् ते तानि, शेष पुंलिङ्ग की तरह।

एतद् (this)

पुंलिङ्ग

प्रथमा एषः एतौ एते इत्यादि तद् की तरह।

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा एषा एते एताः इत्यादि तद् की तरह

* सः, सा [illegible]

द्वितीया	अमुम्	अमू ४४	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः ४५
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा-द्वितीया अदः अमू अमूनि, शेष पुंलिङ्ग की तरह। युष्मद् और अस्मद् का उच्चारण तीनों लिङ्गोंमें समान होता है

४३—अदसोऽसेर्दादुदोमः ॥ अद के द् को म् होजाता है और आगे के ह्रस्व वा दीर्घ स्वर को क्रम से ह्रस्व वा दीर्घ उ हो जाता है यदि परे प्रथमा एक वचन से अन्य कोई विभक्ति हो। अदस्+औ=अद+औ=अदौ=अमौ=अमू।

४४—एत ईद् बहुवचने। अदस् के द् के परे ए को ई हो जाता है फिर द् को म् होता है, यदि परे कोई बहुवचन की विभक्ति हो॥ अदस्+ ... =अमी॥

युष्मद् (you)

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्—त्वा	युवाम्—वाम्	युष्मान्-वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्-ते	युवाभ्याम्-वाम्	युष्मभ्यम्-वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव—ते	युवयोः—वाम्	युष्माकम्-वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् (we)

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्—मा	आवाम्-नौ	अस्मान्-नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्-मे	आवाभ्याम्-नौ	अस्मभ्यम्-नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम-मे	आवयोः-नौ	अस्माकम्-नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

EXERCISE IV

(1) नैतद् बोधामः कतरस्तयो- र्धीरयोर्जयकरः ॥

अधिगच्छसि कतमेन प्रदेशेन गतः स धूर्तः ? ॥

अस्मिंल्लोके यद्यदाचरति जनः स फलमनुष्मिंल्लोकेऽनुभवति ॥

केचिद् तत्र शब्दाः सन्ति यतमः पश्यन्ति निरर्थं पङ्- स्तस्मा इदं सुवर्णपदकं प्रयच्छ ॥

यस्य, प्रभाते प्रभृति, अप- गच्छन्ति ते ज्ञाना यं त्वं मृत- मेव मन्यसे ॥

धनविभव नरं स्वजन्धवोऽपि परित्यजन्ति विपुलानन्दे सर्वे ॥

विषयार्तः, पुनरहादः शास्त्रैः प्रतिषिद्धः इन्द्रियैः, दीर्घदिनः

प्रथम भाग

चकारान्त

पुंलिङ्ग

पयोमुच्

प्र० स०	पयोमुक्-ग् ४६,४७,४८,	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वितीया	पयोमुचम्	पयोमुचौ	पयोमुचः
तृतीया	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
चतुर्थी	पयोमुचे	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
पञ्चमी	पयोमुचः	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
षष्ठी	पयोमुचः	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
सप्तमी	पयोमुचि	पयोमुचोः	पयोमुक्षु

स्त्रीलिङ्ग

वाच्

प्रथमा-सम्बोधन	वाक्-ग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः

पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु

जकारान्त

पुंलिङ्ग

ऋत्विज्

प्रथमा-सम्बोधन	ऋत्विक्-ग्	ऋत्विजौ	ऋत्विजः
द्वितीया	ऋत्विजम्	ऋत्विजौ	ऋत्विजः
तृतीया	ऋत्विजा	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भिः
चतुर्थी	ऋत्विजे	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भ्यः
पञ्चमी	ऋत्विजः	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भ्यः
षष्ठी	ऋत्विजः	ऋत्विजोः	ऋत्विजाम्
सप्तमी	ऋत्विजि	ऋत्विजोः	ऋत्विक्षु

स्त्रीलिङ्ग

स्रज्

प्रथमा	स्रक्—ग्	स्रजौ	स्रजः
द्वितीया	स्रजम्	स्रजौ, इत्यादि ऋत्विज् की तरह ॥	

नपुंसक लिङ्ग

प्र० द्वि० सं०	असृक्-ग्	असृजी	असृञ्जि ४८

शेष पुंलिङ्ग की तरह

परिव्राज् (a sage)—

के 'स्' (प्रथमा एकवचन) का परिणाम—ट्,

४८—नपुंसकस्य झलचः ॥ झल्+अन्त वा अच्+अन्त नपुंसकलिङ्ग के शब्दों के अन्तिमस्वर के आगे न् जोड़ा जाता है, यदि परे सर्वनामस्थान विभक्ति हो। (द्वितीया बहुवचन 'इ' भी सर्वनामस्थान माना गया है)। असृज्+इ=असृ+न्+ज्+इ=असृञ्जि (स्तोःश्चुना श्चुः) ॥

पञ्चमी	वीरुधः	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्यः
षष्ठी	वीरुधः	वीरुधोः	वीरुधाम्
सप्तमी	वीरुधि	वीरुधोः	वीरुत्सु*

इन्-अन्त

पुंलिङ्ग

शशिन् (the moon)

प्रथमा	शशी ५०	शशिनौ	शशिनः
द्वितीया	शशिनम्	शशिनौ	शशिनः
तृतीया	शशिना	शशिभ्याम्	शशिभिः
चतुर्थी	शशिने	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
पञ्चमी	शशिनः	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
षष्ठी	शशिनः	शशिनोः	शशिनाम्
सप्तमी	शशिनि	शशिनोः	शशिषु
सम्बोधन	शशिन्	शशिनौ	शशिनः

नपुंसकलिङ्ग

भाविन्

प्र० द्वि० सम्बो० भावि भाविनी भावीनि ५१

शेष शशिन् की तरह ।

---

* खरि च ॥

५०—सौ च ॥ जिनके अन्त में इन् या हन् हो और पूषन्, अर्यमन् शब्दों के उपधा-स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि परे सु (प्रथ०एकव०) हो ॥ शशिन्+सु=शशीन् (इन्हन्पूषार्यम्णां दीर्घः०) शशीन्=शशी (नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य) ॥

५१—इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ॥ इन्+अन्त, हन्+अन्त, पूषन् और अर्यमन् शब्दों के उपधा-स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि परे शि (द्विती० सम्बो०—बहुवचन) हो ॥

मकारान्त

स्त्रीलिङ्ग

ककुभ् (a direction)

मा-सम्बोध॰	ककुप्-ब्	ककुभौ	ककुभः
ीया	ककुभम्	ककुभौ	ककुभः
ीया	ककुभा	ककुब्भ्याम्	ककुब्भिः
र्थी	ककुभे	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्यः
चमी	ककुभः	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्यः
	ककुभः	ककुभोः	ककुभाम्
मी	ककुभि	ककुभोः	ककुप्सु

रकारान्त

स्त्रीलिङ्ग

गिर् (speech)

ा	गीः ५२	गिरौ	गिरः
ाया	गिरम्	गिरौ	गिरः
या	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
र्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
मी	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
	गिरः	गिरोः	गिराम्
ी	गिरि	गिरोः	गीर्षु
धन	गीः	गिरौ	गिरः

१—र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ॥ रकारान्त या वकारान्त शब्दों के उपधा दीर्घ हो जाता है, यदि परे पद विभक्ति, या (प्र॰ए॰) हो या हो ॥ गिर्+सु=गिर्=गीर्=गीः (खरवसानयोः विसर्जनीयः)॥

शकारान्त
पुंलिङ्ग।

तादृश् (like that)

प्रथमा-सम्बोधन	तादृक्-ग् ४३	तादृशौ	तादृशः
द्वितीया	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
तृतीया	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
चतुर्थी	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पञ्चमी	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
षष्ठी	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
सप्तमी	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु

दिश् (a direction)
स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा-सम्बो० दिक्-ग् दिशौ दिशः इत्यादि, तादृश् की तरह

नपुंसकलिङ्ग

प्र० द्वि० स० तादृक्-ग् तादृशी * तादृंशि, शेष पुंलिङ्ग की तरह

विश् (the class of vaishyas)
पुंलिङ्ग

प्रथमा-सम्बो०	विट्-ड् †	विशौ	विशः
द्वितीया	विशम्	विशौ	विशः
तृतीया	विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः
चतुर्थी	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः

४३- क्विन्प्रत्ययस्य कुः ॥ जिस शब्द के अन्त में क्विन् प्रत्यय आता हो उस के अन्तिम वर्ण को कवर्ग हो जाता है, यदि परे कुछ न हो, अथवा झल् हो ॥

* नपुंसकस्य झलचः ॥

† [illegible]

पञ्चमी	विशः	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
षष्ठी	विशः	विशोः	विशाम्
सप्तमी	विशि	विशोः	विट्सु

षकारान्त

द्विष् (an enemy)

पुंलिङ्ग

प्रथमा सम्बो०	द्विट्-ड्	द्विषौ	द्विषः
द्वितीया	द्विषम्	द्विषौ	द्विषः
तृतीया	द्विषा	द्विड्भ्याम्	द्विड्भिः
चतुर्थी	द्विषे	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
पञ्चमी	द्विषः	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
षष्ठी	द्विषः	द्विषोः	द्विषाम्
सप्तमी	द्विषि	द्विषोः	द्विट्सु

त्विष् (lustre)

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा-सम्बो० त्विट्-ड् त्विषौ त्विषः, इत्यादि द्विष की तरह।

सकारान्त

चन्द्रमस् (the moon)

पुंलिंग

प्रथमा	चन्द्रमाः १८	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः

१८—अत्वसन्तस्य चाधातोः ॥ धातु भिन्न अत्+अन्त वा अस्+अन्त शब्दों के उपधा स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि परे प्रथमा एक वचन की विभक्ति हो ॥ चन्द्रमस्+स्=चन्द्रमास्=चन्द्रमास् (हल्ङ्याभ्यो: ६)=चन्द्रमाः (खरवसानयोः विसर्जनीयः)

तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम् *	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमःसु
सम्बोधन	चन्द्रमः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः

नपुंसकलिङ्ग

मनस् (the mind)

प्रथ० द्वि० सम्बो० मनः　मनसी　मनांसि ‡

शेष चन्द्रमस् की तरह ।

हविस् (an offering thrown in the fire)

प्रथ० द्विती० सम्बो०　हविः　हविषी　हवींषि

तृतीया　हविषा　हविर्भ्याम्　हविर्भिः

स्त्रीलिङ्ग

आशिस् (a blessing)

प्रथमा—सम्बो०	आशीः **	आशिषौ	आशिषः
द्वितीया	आशिषम्	आशिषौ	आशिषः
तृतीया	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
चतुर्थी	आशिषे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः

* [illegible]

** [illegible]

‡ [illegible]

[illegible]

पञ्चमी	आशिषः	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
षष्ठी	आशिषः	आशिषोः	आशिषाम्
सप्तमी	आशिषि	आशिषोः	आशीःषु

हकारान्त

मधुलिह् (a bee)

पुंलिङ्ग

प्रथमा-सं०	मधुलिट्-ड् १६	मधुलिहौ	मधुलिहः
द्वितीया	मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः
तृतीया	मधुलिहा	* मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः
चतुर्थी	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
पञ्चमी	मधुलिहः	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
षष्ठी	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
सप्तमी	मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिट्सु †

पुंलिङ्ग

दुह् (one who milks)

प्रथमा-सम्बो०	धुक्-ग् १७, १८	दुहौ	दुहः
द्वितीया	दुहम्	दुहौ	दुहः
तृतीया	दुहा	धुग्भ्याम्	धुग्भिः

१६—हो ढः । ह् को ढ् होता है, यदि परे झल् हो या कुछ न हो ॥ मधुलिह्+स्=मधुलिढ्=मधुलिड्=मधुलिड्-ट् (वावसाने, झलां जशोऽन्ते)॥

* हो ढः, झलां जश् झशि । खरि च ॥

१७—दादेर्धातोर्घः ॥ दकारादि धातु के अन्तिम ह् को घ् हो जाता है, यदि परे झल् हो ॥

१८—एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः ॥ एक स्वर वाले झष् + अन्त धातु के बश् को भष् हो जाता है, यदि परे स्, ध्व या कुछ न हो ॥ दुह्+स्=दुघ्=दुघ्=धुघ्=धुग्-क् (वावसाने, झलां जशोऽन्ते) ॥

चतुर्थी	दुहे	धुग्भ्याम्	धुग्भ्यः
पञ्चमी	दुहः	धुग्भ्याम्	धुग्भ्यः
षष्ठी	दुहः	दुहोः	दुहाम्
सप्तमी	दुहि	दुहोः	धुक्षु

स्त्रीलिङ्ग

उपानह् (a shoe)

प्रथमा-सम्बो०	उपानत्-द् ५६	उपानहौ	उपानहः
द्वितीया	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः
तृतीया	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
चतुर्थी	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
पञ्चमी	उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
षष्ठी	उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
सप्तमी	उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु

भिषज् (पु०) वैद्य, a physician
स्रज् (स्त्री०) माला, a garland.
असृज् (न०) रुधिर, blood.
सम्राज् (पु०) चक्रवर्ती राजा, an emperor.
विभ्राज् (पु०) प्रकाशमान, shining.
हरित् (वि०) हरा, सब्ज रंग, of green colour.
दृषद् (त) द् (स्त्री०) पत्थर, a rock.
युयुध् (पु०) योद्धा, a warrior.
क्षुध् (स्त्री०) क्षुधा, hunger.
आपद् (स्त्री०) विपद्, misfortune.
जगत् (न०) संसार, the world.
भूभृत् (पु०) राजा, पर्वत, a king, a mountain.

---

* झलां जशोऽन्ते । खरि च । मादेशप्रत्यययोः ॥

५६—नहो धः ॥ नह् के ह् को ध् हो जाता है, यदि परे झल्—आदि विभक्ति हो या कुछ न हो ॥

प्रतिपद्, (स्त्री०) प्रतिपदा, the first day of the moon.

मृद् (स्त्री०) मट्टी, the earth

विद्युत् (स्त्री०) बिजली, the lightning.

वियत् (न०) आकाश, the sky.

सम्पद् (स्त्री०) ऐश्वर्य, prosperity.

सुहृद् (पु०) मित्र, a friend.

धनिन् (वि०) धनवान्, a rich man.

हस्तिन् (पु०) हाथी, an elephant.

स्रग्विन् (वि०) मालाधारी, wearing a garland.

दण्डिन् (वि०) दण्डधारी, one having a stick.

अपराधिन् (वि०) अपराधी, guilty.

सुखिन् (वि०) सुखी, happy.

क्षयिन् (वि०) कम होता हुआ decreasing.

पक्षिन् (पु०) पक्षी, a bird.

प्राणिन् (पु०) जीव, a creature.

प्रियवादिन् (वि०) प्रिय बोलने वाला, sweet-speaker.

यशस्विन् (वि०) यशवाला, famous.

मायाविन् (वि०) कपटी, deceitful.

अनुजीविन् (पु०) सेवक, a servant.

मेधाविन् (वि०) बुद्धिमान्, a talented person.

योगिन् (पु० संन्यासी, an ascetic.

शिखरिन् (पु०) पर्वत, a mountain.

शूलिन् (पु०) शिव, the god Shiva.

स्वामिन् (पु०) मालिक, a master.

धुर् (स्त्री०) धुरा, a yoke.

पुर् (स्त्री०) पुर, a town.

द्वार् (स्त्री०) द्वार, a gate.

दृश् (स्त्री०) आंख the eye.

स्पृश् (पु०) स्पर्श करने वाला, touching.

त्वादृश् (वि०) तुम जैसा, like you.

एतादृश् (वि०) इस जैसा, like this.
मादृश् (वि०) मुझ जैसा, like me.
भवादृश् (वि०) आप जैसा, like you.
धनुस् (न०) धनुष, a bow
अर्चिस् (स्त्री०) ज्वाला, a flame.
तमस् (न०) अन्धकार, darkness.
तेजस् (न०) दीप्ति, गर्मी, light, heat.
चक्षुस् (न०) नेत्र, the eye.
छन्दस् (न०, वेद, the Veda
तपस् (न०) तपस्या, religious austerity.

रजस् (न०) धूलि, dust.
वचस् (न०) वचन, speech.
वनौकस् (वि०) वनवासी, one dwelling in a forest.
वयस् (न०) आयु, a
वासस् (न०) वस्त्र, a clot
वेधस् (पु०) ब्रह्मा, the crea
शिरस् (न०) सिर, the hea
सरस् (न०) तालाब, a tank
दिवौकस् (पु०) देवता, a god
दुर्वासस् (पु०) एकऋषि, a sag
नभस् (न०) आकाश, the sky
पयस् (न०) जल water.
यशस् (न०) यश, fame.
रक्षस् (न०) राक्षस, a demon.

EXERCISE V.

(क) सतां कीर्तिर्दिक्षु प्रसरति। विरक्ता मनुजाः परिव्राजः भवेयुरिति शास्त्राणामाज्ञा ॥ भिषजां सान्निपातिके रुचिप्रजा-विर्भवति ॥ शशिनः प्रभा नेत्रयोरानन्दं करोति ॥ [illegible] पूर्वं भिक्षवो भूत्वा इदप्रस्थान्[illegible] वनं-र्यामपरान् [illegible] ॥

चन्द्रमसस्त्विषो मनांस्याह्लादयन्ति यावदेव हवींषि प्रास्यन्ति होतारः, तावदेव तस्याग्निरधिकं वर्धते ॥ सरित्सु भागीरथीं सर्वश्रेष्ठां वर्णयन्ति, भूभृत्सु चाद्रिमालयम् इयदि निषण्णो गुरुः शिष्येभ्यः धर्मगुणादिवाद ॥ भिषक् यावदेव पिबति विषौषधिं तावदेवास्य भूमण्डलं [illegible] प्रकाश

कामिनामपि काचिद्विजय-
काङ्क्षिणां धीमतां विचारणे
योऽधुनाकर्षति ॥

युधे युते रामस्ताभिश्च राजपुर-
निकाशीपुरराजकुमारोऽपतत् ॥

परस्परं संघर्षात् काचित्ता सेना
सहसा पुष्पाद्यपतत् ॥

अपराधिषु मातापुत्रयोः कुर्वन्ति
योगिनः ॥

बाल ! अनेकानि सुखदानि

स्वमकरोदतः काचित्
मा जगम [illegible]

ततस्ते विहगाः वधुर्यां [illegible]
मत्यकाम [illegible]

भयसामर्थ्यात् तांश्च नीकस —
अपि पुत्र [illegible]

यथा इन्द्रायां पतिपदि [illegible]
विरथे भमध लगानि [illegible]
सुखायामिदं सर्वे [illegible]

कुम्भकारः मृदः पिण्डात् [illegible]
घटं रचयति कुर [illegible]

सेवति यस्य न दर्पो विपदि विषादो रतो न औदार्यम् ।
तं भुवनत्रयतिलकं प्रसौति कश्चित् सुतं जगति ॥
मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं नतु गच्छति ॥
यद्भावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा ॥
धर्मो हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम् ।
विपत् सन्निहिता तस्य स नरः शत्रुनन्दन ॥
मनसा चिन्तितं कर्म वचसा न प्रकाशयेत् ॥
परिणतवयसोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ॥
मर्त्ये बन्धुता न हि सुचि मनो यदस्ति साधनं किम् ॥

(ग) इस प्रकार के सब पुरुष
यदि साथी बन जायें तो भला
ऐसे कहाँ दरवाजे हो सकते हैं ॥

को उस वर्ष तो कपटी सुख [illegible]
अपने पुर को छोड़ गया ॥
जिसे तालाब पर उसने [illegible]

धार्मिमार्गेषु कश्चिदविज्ञप्र-
याहृहियंत्रे धोमृतां चित्तानि
यथेष्टमाकर्षन्ति ॥

त्वमकरोरतः स्वादिष्टां परं
भाजनमसि ॥

नृपे मृते समस्तामेव राजपुर-
मेकाकी एवराजकुमारोऽपठत् ॥

ततस्ते विहगाः चक्षुषोर्विषय-
मत्यकाम्यन् ।

परस्परं संघर्षात् स्वाधिष्ठां तेषां
प्रणयः पुष्पाण्यपतन् ॥

स्वसामर्थ्यादेतोर्दयौकस—
मपि पूज्यः ॥

अपराधिषु प्राणिषु दयां कुर्वन्ति
योगिनः ॥

यथा कृष्णायां प्रतिपदि चन्द्र
बिम्बं क्रमशः स्फाति तथैव
शुक्लायामिदं वर्धते ॥

वत्स ! अनेकानि सुखस्यानि

कुम्भकारः मृदः पिण्डात् घट
घटेषेच्छति कुरुते ॥

सम्पदि यस्य न हर्षो विपदि विषादो रणे न धीरत्वम् ।
तं भुवनत्रयतिलकं प्रसौति कापि सुतं जगति ॥
मनस्वी म्रियते काम कार्पण्यं ननु गच्छति ॥
यद्भावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा ॥
धर्मी दाता गुणग्राही स्वामी दुःखेन लभ्यते ॥
सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम् ।
विपत् सन्निहिता तस्य स नरः शत्रुनन्दनः ॥
मनसा चिन्तितं कार्यं वचसा न प्रकाशयेत् ॥
अभितनयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ॥
स्नानं चेतसा च किं शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ॥

(ग) इस प्रकार के सब पुरुष
यदि दासी बन जायें तो स्वर्ग
जैसे यहां पदार्थ हो सकते हैं ॥
अब हम यहां बस किए।

जो उड़ गये तो कबूतर शुभांक
अपने पुर को लौट गया ॥
लिखे तालाब पर जल से पत्र
भी रहा है ॥

एतादृश् (वि०) इस जैसा, like this.
मादृश् (वि०) मुझ जैसा, like me.
भवादृश् (वि०) आप जैसा, like you.
धनुस् (न०) धनुष, a bow
अर्चिस् (स्त्री०) ज्वाला, a flame.
तमस् (न०) अन्धकार, darkness.
तेजस् (न०) दीप्ति, गर्मी, light, heat.
चक्षुस् (न०) नेत्र, the eye.
छन्दस् (न०) वेद, the Veda
तपस् (न०) तपस्या, religious austerity.
रजस् (न०) धूलि, dust
वचस् (न०) वचन, speech.
वनौकस् (वि०) वनवासी, one dwelling in a forest.
वयस् (न०) आयु, age.
वासस् (न०) वस्त्र, a cloth.
वेधस् (पु०) ब्रह्मा, the creator
शिरस् (न०) सिर, the head.
सरस् (न०) तालाब, a tank.
दिवौकस् (पु०) देवता, a god.
दुर्वासस् (पु०) एक ऋषि, a sage.
नभस् (न०) आकाश, the sky.
पयस् (न०) जल water.
यशस् (न०) यश, fame.
रक्षस् (न०) राक्षस, a demon.

EXERCISE V.

(क) सतां कीर्तिर्दिक्षु प्रसरति। चन्द्रमा ... मनांस्याह्लादयति।
विरक्ता मनुजाः परिव्राजः भवेयुः। य... ... भास्यन्ति
...रिति शास्त्रयामासा॥ ... तस्यार्चिरधिकं
...के सज्जिमसा· ... वर्धते॥
... र्थां सर्वं श्रेष्ठं
... चहिमाजयमूः
... गुरुः शिष्येभ्यः
धर्ममुपादिशत्॥
... विशति विप्रोषित
भूमण्डलं सह·

...र्मिर्नागांपुं काश्चिदधिजल-
...ह्रदिवसे श्रोतृणां चित्तानि
यथेप्समाकर्षन्ति ॥
...स्मिन् गृहे समस्तामेव राजपुर-
...कानी पयराजकुमारोऽवदत् ॥
...स्तरं संयच्छेत् स्वामिनां सेवा
...भ्यः पुष्पाण्यपतन् ॥
...राधिपुमार्गेषु दयां कुर्वन्ति
योगिनः ॥
...! अनेकानि दुष्कृत्यानि

त्यमकरोस्तः स्वामिनां परं
मानमर्हसि ॥
तस्मिन् विहगाः मधुरं गीतमन-
न्यत्रागम्यन् ।
स्वनामस्वर्णदिनां ईर्ष्यया —
मपि पूज्यः ॥
यथा ह्यस्यां पतिपदि चन्द्र
बिम्बं कमल सचानि तथैव
दुह्रायामिदं पर्वतं ॥
कुम्भकारः मृदा पिण्डात् घट
पदेषण्डानि कुरुते ॥

[illegible] ... न [illegible] विवादो [illegible] न [illegible] ।
[illegible] कानिचित् गुणं जानाति ॥
[illegible] काम [illegible] गच्छन्ति ॥
[illegible] न [illegible] ।
[illegible] दुःखेन [illegible] ॥
[illegible] न [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] न [illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible] है ॥
[illegible] है ॥
[illegible] ॥

मट्टी के पात्र जैसे सुन्दर होते हैं वैसे पत्थर के नहीं ॥

योगी सदा शिव की भक्ति में आसक्त रहते हैं ॥

स्वामी अपराधी सेवकों को सदा दण्ड दें ॥

कृष्ण प्रतिपद् को प्रायः सब नक्षत्र आकाश में चमकते हैं ॥

दुर्वासा और दूसरे वनवासी मुनि देवों के पास गये ॥

गुरु ने शिष्यों को यह वचन कहा—जो शास्त्रों के वचन

मन से पालते हैं, वही संपू
अवस्था में यश पाते हैं ॥

तप से मनुष्य का तेज बढ़ता है

राम ने राक्षसों के सिर का
दिये ॥

जो बादल गर्जते हैं वह बरसते नहीं ॥

जिनकी वाणी मधुर होती है जगत् में वही सुखी रहते हैं ॥

नदी पर्वत से निकल कर स्थल में आती है ॥

अष्टमः पाठः।

हलन्त (व्यञ्जनान्त) नाम

दूसरा भाग

दूसरे भाग के प्रत्येक शब्द के अङ्ग (base) के तीन रूप न जाते हैं ॥

एक रूप......सर्व नामस्थान विभक्तियों के पूर्व,
दूसरा ...... भ विभक्तियों के पूर्व,
तीसरा ...... पद विभक्तियों के पूर्व.

प्रत्येक शब्द के उच्चारण के पूर्व उसके तीन अङ्ग दिये ये हैं और उन अङ्गों के साथ उचित विभक्ति जोड़ने से प्रायः स शब्द के रूप बन जाते हैं ॥

चकारान्त
पुंलिङ्ग
प्राच् (eastern)

र्व नामस्थान............ प्राञ्च्
.... प्राच्
द.................. प्राग् (सत॰ बहुवचन-प्राक्)।

थमा-सम्बो॰ प्राङ् ६०, ६१ प्राञ्चौ प्राञ्चः

६०—उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ॥ धातु भिन्न जिन शब्दों के त में उक् (उ, ऋ ऌ) का लोप हुआ हो (यथा मत्, वत्, मतृ), वा जिन अन्त में अच् हो उन के अन्तिम स्वर के आगे न् जोड़ा जाता है, यदि र्व नामस्थान विभक्तियें हो ॥

६१—संयोगान्तस्य लोपः ॥ शब्द के अन्त में यदि कोई संयुक्त र्ण हों तो अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है ॥ प्राच्+स्=प्राच्=प्रान्+च्= ञ्च् (स्तोःश्चुनाश्चुः) प्राञ्च्=प्राङ् (क्विन्प्रत्ययस्य कुः) ॥

प्रथमा—सम्बो०	गच्छन् *	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम् †	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथ० द्विती० सम्बो० गच्छत् गच्छन्ती गच्छन्ति

शेष पुंलिङ्ग की तरह।

पुंलिङ्ग

ददत् (giving)

सर्वनामस्थान	...	ददत्
भ	...	ददत्
पद	...	ददद् (सप्त० बहु०, ददत्

प्रथमा०—सम्बो०	ददत् ६४	ददतौ	ददतः
द्वितीया	ददतम्	ददतौ	ददतः
तृतीया	ददता	ददद्भ्याम्	ददद्भिः
चतुर्थी	ददते	ददद्भ्याम्	ददद्भ्यः
पञ्चमी	ददतः	ददद्भ्याम्	ददद्भ्यः
षष्ठी	ददतः	ददतोः	ददताम्
सप्तमी	ददति	ददतोः	ददत्सु

* उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः † झलां जश् झशि ॥

६४—नाभ्यस्ताच्छतुः ॥ अत्+अन्त (शतृ+अन्त) शब्द यदि किसी ने द्वित्व कर बनाया गया हो तो उसकी उपधा में (उगिदचां सर्व

नपुंसकलिङ्ग

प्रथ० द्विती० सम्बो० ददत्—द् ददती ददति-न्ति ६४

मत् (मतुप्)+अन्त

नपुंसकलिङ्ग

धीमत् (a talented man)

सर्वनामस्थान ... धीमन्त

भ ... धीमत्

पद ... धीमद् (सत०बहु, धीमत्)

प्रथमा	धीमान् ६६	धीमन्तौ	धीमन्तः
द्वितीया	धीमन्तम्	धीमन्तौ	धीमतः
तृतीया	धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भिः
चतुर्थी	धीमते	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
पञ्चमी	धीमतः	धीमद्भ्याम्	धीमद्भ्यः
षष्ठी	धीमतः	धीमतोः	धीमताम्
सप्तमी	धीमति	धीमतोः	धीमत्सु
सम्बो०	धीमन्	धीमन्तौ	धीमन्तः

नपुंसकलिङ्ग

प्रथ० द्विती० सम्बो० धीमत् धीमती धीमन्ति

शेष पुंलिङ्ग की तरह।

६४—[illegible]

६६—[illegible]

वत् (वतुप्)+अन्त

पुंलिङ्ग

गुणवत् (meritorious)

प्रथमा	गुणवान्	गुणवन्तौ	गुणवन्तः
द्वितीया	गुणवन्तम्	गुणवन्तौ	गुणवतः
तृतीया	गुणवता	गुणवद्भ्याम्	गुणवद्भिः

शेष धीमत् की तरह।

नपुंसकलिङ्ग

प्र० द्वि० सम्बो० गुणवत्—द् गुणवती गुणवन्ति

पुंलिङ्ग

महत् (great)

सर्वनामस्थान		महान्त्	
भ		महत्	
पद		महद् (सप्त० बहु०, महत्)	
प्रथमा	महान् १७	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृतीया	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
चतुर्थी	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पञ्चमी	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
षष्ठी	महतः	महतोः	महताम्
सप्तमी	महति	महतोः	महत्सु
सम्बोधन	महन्	महान्तौ	महान्तः

१ [illegible]

नपुंसकलिङ्ग

प्र० द्वि० सम्बो०	महत्—द्	महती	महान्ति

शेष पुंलिङ्ग की तरह ।

अन्+अन्त

पुंलिङ्ग

राजन् (a king)

सर्वनामस्थान		...	राजान्
भ		...	राज्ञ्
पद		...	राज
प्रथमा	राजा ईद	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः*
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्†	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि—राजनि‡	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	राजन्	राजानौ	राजानः

पुंलिङ्ग

आत्मन् (the self, soul)

सर्वनामस्थान	...	आत्मान्

ईद—सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ ॥ नकारान्त शब्दों के उपधा—स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि परे सम्बोधन एकवचन भिन्न सर्वनामस्थान विभक्तियें हों ॥ राजन्+स्=राज न्+स्=राजान्=राजा । नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य) ॥

* अल्लोपोऽनः ॥ राजन्+अस्=राज्न्+अस्=राज्ञ्+अस् (स्तोः श्चुना श्चुः)=राज्ञः

† नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य. ‡ विभाषा ङिश्योः ॥

प्र	...	आत्मन्	
पद	...	आत्म	
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	आत्मन्	आत्मानौ	आत्मानः

नपुंसक लिङ्ग

नामन् (name)

प्र० द्वि० सम्बो०	नाम	० नामनी-नाम्नी	नामानि

कर्मन् (an action)

प्र० द्वि० सम्बो०	कर्म	कर्मणी	कर्माणि

शेष आत्मन् की तरह।

पुंलिङ्ग।

युवन् (a young man)

सम्बोधन	...	युवन्	
भ	...	यून्	
पद		युव	
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	युवानौ	यूनः

[illegible]

तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	युवन्	युवानौ	युवानः

पुंलिङ्ग

श्वन् (a dog)

सर्वनामस्थान	...	श्वान्	
भ	...	शुन्	
पद	...	श्व	
प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः*
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पञ्चमी	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
षष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	शुनोः	श्वसु
सम्बोधन	श्वन्	श्वानौ	श्वानः

पुंलिङ्ग

मघवन् (the god Indra)

सर्वनामस्थान	...	मघवान्	*

[illegible] लोप हो जाता है) ॥ युवन्+अस्=यु उ अन्+अस्=यु उ न्+ [illegible]=यूनः (अकः सवर्णे दीर्घः) ॥

* श्वयुवमघोनामतद्धिते ॥ श्वन् + अस् = श् उ अन् + अस्= [illegible]

भ	...	आत्मन्	
पद	...	आत्म	
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	आत्मन्	आत्मानौ	आत्मानः

नपुंसक लिङ्ग

नामन् (name)

प्र० द्वि० सम्बो० नाम * नामनी-नाम्नी

कर्मन् (an action)

प्रथ० द्विती० सम्बो० कर्म कर्मणी कर्मा

शेष आत्मन् की त

पुंलिङ्ग।

युवन् (a young man)

सर्वनामस्थान .... युवान्

भ .... यून्

पद .... युव

प्रथमा	युवा	युवानौ	युवान
		युवानौ	यून

१ अन् के पूर्व यदि प्रसारण ...

... * विक...

... और इस...

पञ्चमी	वृत्रघ्नः	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्य
षष्ठी	वृत्रघ्नः	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्
सप्तमी	वृत्रघ्नि	वृत्रघ्नोः	वृत्रहसु
सम्बोधन	वृत्रहन्	वृत्रहणौ	वृत्रहणा

नपुंसकलिङ्ग

अहन् (the day)

प्रथ० द्विती०	अहः ७३	अह्नी—अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना *	अहोभ्याम्	अहोभि
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्य
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्य
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि—अहनि †	अह्नोः	अहः
सम्बोधन	अहन्—अह ७४	अह्नी—अहनी†	अहानि

इन्+अन्त

पुंलिङ्ग

पथिन् (a road)

सर्वनामस्थान	...	पन्थान् (प्र० एक० पन्था
भ	...	पथ्
पद	...	पथि

७३—अहन् ॥ अहन् शब्द के न् को र् हो जाता है, यदि पो
पर विभक्ति हो ॥

* अल्लोपोऽनः ॥ † विभाषा ङिश्योः ॥

[illegible]

भ		मघोन्	
पद		मघव	
प्रथमा	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वितीया	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः[*]
तृतीया	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
चतुर्थी	मघोने	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
पञ्चमी	मघोनः	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
षष्ठी	मघोन	मघोनोः	मघोनाम्
सप्तमी	मघोनि	मघोनोः	मघवसु
सम्बोधन	मघवन्	मघवाना	मघवानः

पुंलिङ्ग

वृत्रहन् (the killer of Vritra)

सर्वनामस्थान	...	वृत्रहण् (प्रथमा एक व०	
भ	...	वृत्रघ्न्	
पद	...	वृत्रह	
प्रथमा	वृत्रहा[†]	वृत्रहणौ[71]	वृत्रहणः
द्वितीया	वृत्रहणम्	वृत्रहणौ	वृत्रघ्नः[72]
तृतीया	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः
चतुर्थी	वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः

* श्वयुवमघोनामतद्धिते ॥ मघवन् + अस् = मघ उ अन् + =मघ उन् + अस् =मघोन् + अस् (आद्गुणः) = मघोनः ॥

† सौ च ॥

७१—हन्तेरत्पूर्वस्य ॥ हन् के न् को ण् होजाता है यदि न् के पूर्व अ

७२—हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ॥ हन् के ह् को घ् हो जाता है यदि ह् साथ ही अव्यवहित न् हो ॥ वृत्रहन्+अस्=वृत्र ह् न् +अस् (अल्लोपोऽन =वृत्रघ्नः ॥

पञ्चमी	वृत्रघ्नः	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्य
षष्ठी	वृत्रघ्नः	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम
सप्तमी	वृत्रघ्नि	वृत्रघ्नोः	वृत्रहसु
सम्बोधन	वृत्रहन्	वृत्रहणौ	वृत्रहण

नपुंसकलिङ्ग

अहन् (the day)

प्रथ० द्विती०	अहः ७३	अह्नी—अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना *	अहोभ्याम्	अहोभि
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम
सप्तमी	अह्नि—अहनि †	अह्नोः	अहः
सम्बोधन	अहन्—अह ७४	अह्नी—अहनी †	अहानि

इन्+अन्त

पुंलिङ्ग

पथिन् (a road)

सर्वनामस्थान	...	पन्थान (प्र० एक० पन्था
भ	...	पथ्
पद	...	पथि

७३—अहन् । अहन् शब्द के न् को र् हो जाता है, यदि प
पद विभक्ति हो ॥

* अल्लोपोऽनः ॥ † विभाषा ङिश्योः ॥

प्रथमा—सम्बो०	पन्थाः७४	पन्थानौ ७५	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः ७७
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु

स्त्रीलिङ्ग

अप् (water, केवल बहुवचन में होता है)

प्रथमा—सम्बो०	आपः *
द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः ७८
चतुर्थी	अद्भ्यः
पंचमी	अद्भ्यः
षष्ठी	अपाम्
सप्तमी	अप्सु

७४—पथिमथ्यृभुक्षामात् ॥ पथिन्, मथिन् और ऋभुक्षिन् के न् को आ और थ् को न्थ् हो जाता है यदि परे प्रथमा एक वचन की विभक्ति हो ॥

७५—इतोऽत्सर्वनामस्थाने, थोन्थः ॥ पथिन्, मथिन् और ऋभुक्षिन् के इ को अ और थ् को न्थ् हो जाता है, यदि परे सर्वनामस्थान विभक्तियें हों ॥ पथिन्+अम्=पन्थन्+अम्=पन्थानः (सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ) ॥

७७—भस्य टेर्लोपः ॥ पथिन्, मथिन् और ऋभुक्षिन् के इन् का लोप हो जाता है, यदि परे भ विभक्तियें हों ॥

* अप्-तृन्-तृच्-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षत्तृ-होतृ-पोतृ-प्रशास्तॄणाम् ॥

७८—अपो भि ॥ अप् के प् को द् हो जाता है, यदि परे भकारादि विभक्ति हो ॥

वकारान्त
स्त्रीलिङ्ग
दिव् (the sky, heaven)

सर्वनामस्थान	...	दिव् (प्रथ० एकव०, द्यौः)	
भ	.	दिव्	
पद	...	द्यु	
प्रथमा—सम्बो०	द्यौः ७६	दिवौ	दि
द्वितीया	दिवम्	दिवौ	दि
तृतीया	दिवा	द्युभ्याम् ८०	द्यु
चतुर्थी	दिवे	द्युभ्याम्	द्यु
पंचमी	दिवः	द्युभ्याम्	द्यु
षष्ठी	दिवः	दिवोः	दि
सप्तमी	दिवि	दिवोः	द्यु

सकारान्त
पुंलिङ्ग
दोस् (an arm)

सर्वनामस्थान	...	दोष् (प्रथमा-एकव०, दोः)	
भ	.	दोष्—दोष्ण्	
पद	...	दोष—दोर्	
प्रथ० सम्बो० दोः		दोषौ*	दोषः
द्वितीया दोषम्		दोषौ	दोषः-दो

७६—दिवऔत् ॥ दिव् के व् को औ हो जाता है, यदि परे
सम्बोधन के एकवचन की विभक्ति हो ॥

८०—दिवउत् ॥ दिव् के व् उ होजाता है, यदि पर पद विभ

* पद्दन्नोमास्हृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु ॥

तृतीया	दोषा-दोष्णा	दोर्भ्याम्-दोषभ्याम्	दोर्भिः-दोषभिः
चतुर्थी	दोषे-दोष्णे	दोर्भ्याम्-दोषभ्याम्	दोर्भ्यः-दोषभ्यः
पंचमी	दोषः-दोष्णः	दोर्भ्याम्-दोषभ्याम्	दोर्भ्यः-दोषभ्यः
षष्ठी	दोषः-दोष्णः	दोषोः-दोष्णोः	दोषाम्-दोष्णाम्
सप्तमी	दोषि-दोष्णि	दोषोः-दोष्णोः	दोःषु-दोषसु

पुंलिङ्ग

पुमस् (a man)

सर्वनामस्थान	...	पुमान्स् (प्रथमा एकव०, पुमान्)	
भ	...	पुंस्	
पद	...	पुम्	
प्रथमा	पुमान् नर	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
चतुर्थी	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
पंचमी	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
षष्ठी	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सं०	पुमन्	पुमांसौ	पुमांसः

कोई विभक्ति हो (इस में बहुत से और शब्द भी हैं जिनके रूप बदल जाते हैं, परन्तु उनकी यहां आवश्यकता न होने से उनका परित्याग किया गया है) ॥ दोष् + अस् = दोषः, वा, दोषन् + अस् = दोष्न् + अस् (अल्लोपोऽनः)=दोष्णः (रषाभ्यां नो णः समानपदे) ॥

८०—पुंसोऽसुङ् ॥ पुमस् को पुमसु हो जाता है यदि परे सर्वनामस्थान विभक्ति हो ॥ पुमस्+सु=पुमसु+सु=पुमस् = पुमन्स् (उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः)=पुमान्स् (सान्तमहतः संयोगस्य)=पुमान् (संयोगान्तस्य लोपः) ॥

...+अन्त, एयस्+अन्त

पुंलिङ्ग

श्रेयस् (better)

सर्वनामस्थान	...	श्रेयांस्	
...	...	श्रेयस्	
पद	...	श्रेयो (सप्तमी बहुव०,श्रेयस्सु)	
प्रथमा	श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः
द्वितीया	श्रेयांसम्	श्रेयांसौ	श्रेयसः
तृतीया	श्रेयसा	श्रेयोभ्याम्*	श्रेयोभिः
चतुर्थी	श्रेयसे	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभ्यः
पञ्चमी	श्रेयसः	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभ्यः
षष्ठी	श्रेयसः	श्रेयसोः	श्रेयसाम्
सप्तमी	श्रेयसि	श्रेयसोः	श्रेयस्सु
सम्बोधन	श्रेयन्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः

नपुंसकलिङ्ग

प्रथम॰ द्विती॰ सम्बो॰	श्रेयः	श्रेयसी	श्रेयांसि †

शेष पुंलिङ्ग की तरह

वस्+अन्त

पुंलिङ्ग

विद्वस् (a learned man)

सर्वनामस्थान	...	विद्वांस्	
...म	...	विदुष्	
पद	...	विद्वद् (सप्त० बहुव० विद्वत्सु)	
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः

मूर्तिमत् (वि०) मूर्तिमान्, having a form
यशस्वत् (वि०) यशस्वी, famous.
श्रीमत् (वि०) ऐश्वर्यवान्, prosperous.
मूर्धन् (पु०) शिर, the head
सद्मन् (न०) घर, a house
सीमन् (स्त्री०) सीमा (हद), a boundary
प्रेमन् (पु०न० स्नेह, affection.
हेमन् (न०) सुवर्ण, gold.
अश्मन् (पु०) पत्थर, a stone.
लघिमन् (पु०) छोटापन, littleness
ब्रह्मन् (पु०) जगत् उत्पन्न करने वाला, the creator.
महिमन् (पु०) बड़ाई, greatness.

अग्मिवस् (वि०) जो आ चुका one who has gone
निर्गीयस् (वि०) जो लेकर गया one who has carried
यवीयस्, छोटा, younger
अध्युषिवस् (वि०) जो रह चुका one who has dwelt
कनीयस् (वि०) छोटा, younger
बलीयस् (वि०) बलवान्, stronger
ज्यायस् (वि०) बड़ा, elder
गरीयस् ,, भारी, heavier
प्रेयस् (वि०) प्रियतर, dearer
महीयस् ,, बड़ा, greater
श्रेयस् ,, उत्तम, superior
सुदिव् ,, अच्छा दिन, a fair day

EXERCISE VI

(क) ब्रह्मचर्यस्य समाप्तेः प्राक् नोद्वाहं कुर्यात् जनः इत्यत्र भाष्यं मनीषिणां च सम्मतिः ॥
हेम्नः विशुद्धिं श्यामिकां याऽग्नावेव संजायते ॥
धीमन्तो गुणवन्तश्च जगति ... यशस्वन्तो वर्तन्ते ॥

भीमः पराक्रमेऽन्येभ्यो गरीयान्, यतोऽसावखिलान् द्विषो दोर्भ्यामिव ददार ॥
इति श्रुत्वा मे स्मोदः सीमानमतिक्रामिष्यति ॥
मेघवर्णेन राज्ञा यावन्ति वस्तूनि कर्पूरद्वीपादानीतानि

इति कर्मणि प्रवृत्तिः ॥ | आयुष्मान् भव वत्स ॥
न खलु धीमतां कश्चिद- | ... दुःख
विषयो नाम ॥ | ... महान्त ॥

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥
महान् महत्स्वेव करोति विक्रमम् ।
परोऽपि हितवान् बन्धुर्बन्धुरप्यहितः परः ॥
कलिपर्वतता सार्धं ... यथा ॥
बलवानपि निस्तेजाः कस्य नाभिभवास्पदम् ॥
धनवान् बलवाँल्लोके सर्वः सर्वत्र सर्वदा ॥
विद्यते हि नृशंसेभ्यो भयं गुणवतामपि ॥
प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते जन्तुः ॥
सौजन्यं यदि किं निजैः सुमहिमा यद्यस्ति किं मंड
तक्षकेणापि दष्टस्य आयुर्मर्माणि रक्षति ॥
सत्स्कृतिः कथय किं न करोति पुमान् ॥
यात्यधोऽधो व्रजत्युच्चैर्नरः स्वैरेव कर्मभिः ॥
वृथा यदि क्रियते राजा तत्किं नाश्नात्युपानहम्
अतस्तः कार्यदोषांश्च नैव जानात्यपण्डितः ॥
लोको वहति किं राजन् मूर्ध्ना दग्धुमिन्धनम् ।

(ख) पराधीन पुरुषों को स्वप्न में | यह सुन सारथी कहता है (सा
भी सुख कहाँ ? | धनवान् पुरुष को ही
भगवन्, मैं प्रणाम करती हूं । | लोक बुद्धिमान् समझते
गार्गी, आयुष्मती हो ! ? | धर मार्ग ऊंचा नी ...
सब पशुओं में कुत्ते का | पर आप ... रथ नहीं ...

पुरुष केवल बल से बलवान् नहीं होते किन्तु बुद्धि से भी ॥ इस संसार में बड़ाई या छोटाई अपने कर्मों से ही होती है ॥

मेरा सौभाग्य है कि यह शुभ दिन मैंने देखा ॥

उस सभा में जो बैठे हुवे हैं वह सब मूर्ख हैं ॥

उसे बाघ देखे (दृश्यम) देखकर सब [illegible] उस की ओर भागे ।

भारत में बैतों [illegible] [illegible] (अधिक [illegible] [illegible] ॥

हस्ति का बड़ा भाई केवल एक है परन्तु छोटे बहुत (भूयस्) हैं ।

उस सभा में पश्चिम और उत्तर के लोक अधिक थे ॥

अपने अच्छा (सम्यक्) नहीं किया ॥

सूर्य की गरमी से पर्वतों के पत्थर तप जाते हैं ॥

राम बड़े भाई को अधिक प्रिय है (प्रेयस्) ॥

पशु (तिर्यञ्च) राजमार्ग से पूर्व दिशा की ओर जाते हैं ॥

दक्षिण में मन्दिरों की संख्या अधिक है ॥

नवमः पाठः ।

संख्या वाचक शब्द (Numerals)

संख्या वाचक शब्दों के दो भेद हैं, संख्या वाचक (Cardinals) और पूरण (Ordinals).

Cardinals

१ एक	६ षष्	२० विंशति	७० सप्तति
२ द्वि	७ सप्तन्	३० त्रिंशत्	८० अशीति
३ त्रि	८ अष्टन्	४० चत्वारिंशत्	९० नवति
४ चतुर्	९ नवन्	५० पञ्चाशत्	१०० शत
५ पञ्चन्	१० दशन्	६० षष्टि	१००० सहस्र

४७—दशन् से शत पर्यन्त यदि दो दशकों के मध्य की संख्या बनानी हो तो उन दोनों में न्यून दशक के पूर्व एक आदि संख्या जोड़ी जाती है ॥

यथा—षड्विंशत्, चतुःसप्तति, नवनवतिः ॥

नव दश (९+१०), नवविंशति (९+२०) आदि की जगह एकोनविंशति (२०—१), एकोनत्रिंशत् (३०—१) आदि भी प्रयुक्त होते हैं ॥ यथा—नवचत्वारिंशत्=एकोनपञ्चाशत्, नव सप्ततिः=एकोनाशीतिः ॥

* एक (केवल एक वचन में) (one)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	[illegible]
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	[illegible]

* एक का अर्थ[illegible]

पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्
सम्बोधन	एक	एके

यदि एक का अर्थ (कुछ) हो तो इसका उपयोग बहुवचन में भी हो सकता है* ।

द्वि [[illegible]] (केवल द्विवचन में)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	शेष पुंलिङ्ग की तरह
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	

त्रि ([illegible])

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	शेष—
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	पुंलिङ्ग की तरह
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	

* [illegible]

[illegible]

षष्ठी	त्रयाणाम् ८८	तिसृणाम्	
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	

चतुर् (four)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः*	चतस्रः†	चत्वारि*
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पञ्चन् (five)

पञ्चन् से नवदशन् पर्यन्त शब्दों का तीनों लिङ्गों में समान उच्चारण होता है ॥

प्रथमा	पञ्च ८९	चतुर्थी	पञ्चभ्यः	सप्तमी	पञ्चसु
द्वितीया	पञ्च	पञ्चमी	पञ्चभ्यः		
तृतीया	पञ्चभिः	षष्ठी	पञ्चानाम्		

षष् (six)

प्रथमा	षट्—ड्	चतुर्थी	षड्भ्यः	सप्तमी	षट्सु
द्वितीया	षट्—ड्	पञ्चमी	षड्भ्यः		
तृतीया	षड्भिः	षष्ठी	षण्णाम्		

८८—त्रेस्त्रयः ॥ त्रि को त्रय् हो जाता है यदि पर आम् हो ॥

*चतुरनडुहोरामुदात्तः ॥ †त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ॥

८९—षड्भ्यो लुक् ॥ पञ्चन् से नवदशन् पर्यन्त शब्दों के पर प्रथमा और द्वितीया विभक्ति का लोप हो जाता है ॥

*ज्ञी जशोऽन्ते, पाणिनि ॥

अष्टन् (eight)

प्रथमा	अष्टौ—अष्ट ६०, ६१	पञ्चमी	अष्टाभ्यः—अष्टभ्यः
द्वितीया	अष्टौ—अष्ट	षष्ठी	अष्टानाम्
तृतीया	अष्टाभिः—अष्टभिः	सप्तमी	अष्टासु—अष्टसु
चतुर्थी	अष्टाभ्यः—अष्टभ्यः		

सप्तन्, नवन्, और दशन् से नवदशन् पर्य्यन्त शब्दों का उच्चारण पञ्चन् की तरह होगा ॥

४८—ति+अन्त (विंशति, षष्टि, सप्तति अशीति और नवति) शब्दों का उच्चारण मति की तरह सदा स्त्रीलिङ्ग और एकवचन में होगा ॥

इसी तरह त्+अन्त (त्रिंशत्, चत्वारिंशत् और पञ्चाशत्) शब्दों का उच्चारण भी सरित् की तरह सदा स्त्रीलिङ्ग और एकवचन में होगा ॥

विंशति (twenty)

प्रथमा	विंशतिः	पंचमी	विंशतेः—विंशत्याः
द्वितीया	विंशतिम्	षष्ठी	विंशतेः—विंशत्याः
तृतीया	विंशत्या	सप्तमी	विंशतौ—विंशत्याम्
चतुर्थी	विंशतये—विंशत्यै		

इसी प्रकार षष्टि, सप्तति, अशीति और नवति का भी उच्चारण करना ॥

४९—विंशत्यादि संख्यावाचक शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग और

६०—अष्टन का विभक्ती ॥ अष्टन् को विकल्प से 'अष्टा' हो जाता है, जो परे कोई विभक्ति हो ॥

६१—अष्टाभ्य औश ॥ अष्टा से परे [illegible]

एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं ॥ यथा—विंशतिर्ब्राह्मणाः, विंशतिः कमलानि, विंशतिः स्त्रियः ।

इन्हीं विंशत्यादि शब्दों का प्रयोग नीचे लिखे अर्थ में एकवचन और बहुवचन में भी होता है ॥ यथा—विंशतिर्ब्राह्मणानाम् (The twenty (score) of Brahmans), विंशती नारीणाम् (two twenties of women) ॥

पूरण संख्यावाचक (Ordinals)

एक	के क्रम से	प्रथम	first
द्वि		द्वितीय	second
त्रि		तृतीय	third
चतुर्		चतुर्थ	fourth
षष्		षष्ठ	sixth पूरण होंगे ॥

४०—पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन् और दशन् के न् के स्थान में म हो जाता है ॥

यथा—पञ्चमः, सप्तमः, अष्टमः, नवमः, दशमः ॥

एकादशन् से नवदशन् पर्यन्त शब्दों के अन्तिम न का लोप हो जाता है ॥ यथा—एकादशः, द्वादशः, इत्यादि ॥

४१—विंशति से आगे सब पूरण संख्यावाचक शब्दों के अन्त में तम जोड़ने से बन जाते हैं ॥ यथा—विंशतितमः, द्वात्रिंशत्तमः ॥

४२—विंशति से आगे पूरण बनाने की एक अन्य रीति यह है कि—

(क) विंशति के ति और व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्तिम व्यञ्जन का लोप हो जाता है ॥

(ख) यदि, सप्तति, अशीति और नवति आदि पष्ट्यादि संख्या के अन्त में हो तो अन्तिम इ को अ हो जाता है

अन्यथा (यदि षष्टि आदि असमस्त हों) तो उनके पूरण केवल तम लगा कर बनते हैं ॥ यथा—चतुष्षष्टः, द्व्यशीतितः, षष्टितमः।

द्वितीय और तृतीय से अन्य पूरण संख्यावाचक शब्दों का उच्चारण तीनों लिङ्गों में नामों की तरह होगा ॥

५३—प्रथम, द्वितीय और तृतीय के स्त्रीलिङ्ग रूप क्रम से प्रथमा, द्वितीया और तृतीया होंगे ॥ शेष सब पूरणों के अन्त में ई जोड़ कर स्त्रीलिङ्ग रूप बन जाते हैं ॥

यथा—चतुर्थी, पञ्चमी, नवमी ॥

Cordinals	Ordinals
एकः-का-कम्	प्रथमः* मा-मम्।
द्वौ, द्वे, द्वे	द्वितीयः-या-यम्।
त्रयः, तिस्रः, त्रीणि	तृतीयः-या-यम्।
चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि	चतुर्थः—र्थी—र्थम्।
पञ्च	पञ्चमः—मी-मम्।
षट्	षष्ठः-ष्ठी-ष्ठम्।
सप्त	सप्तमः-मी-मम्।
अष्ट-अष्टौ	अष्टमः-मी-मम्।
नव	नवमः— ,, — ,,।
दश	दशमः— ,, — ,,।
एकादश	एकादशः—शी-शम्।
द्वादश १२	द्वादशः— ,, — ,,।
त्रयोदश	त्रयोदशः—शी—शम्।

* अथवा बहुवचन में इसके अग्र-अग्रमः, रूप होते हैं।

१ कभी कभी इस की एक दो रूप हो जाता है ॥

[illegible]

चतुर्दश — चतुर्दश—,,—,,

पञ्चदश — पञ्चदशः—शी—शम् ।

षोडश — षोडशः—शी—शम् ।

सप्तदश — सप्तदशः— ,,—,, ।

अष्टादश — अष्टादशः—शी—शम् ।

{ नवदश — नवदशः—शी-शम् ।
{ एकोनविंशतिः — एकोनविंशतितमः-मी-मम् ।

विंशतिः — विंशतितमः-मी-मम् ।

एकविंशतिः — एकविंशतितमः-मी-मम् or एकविंशः-शी-शम् ।

द्वाविंशतिः — द्वाविंशतितमः-मी-मम् or द्वाविंशः-शी-शम् ।

त्रयोविंशतिः* — त्रयोविंशतितमः-मी-मम् or त्रयोविंशः-,,-,, ।

चतुर्विंशतिः — चतुर्विंशतितमः-मी-मम् or चतुर्विंशः-,,-,, ।

षड्विंशतिः — षड्विंशतितमः-मी-मम् or षड्विंशः-,,-,, ।

अष्टाविंशतिः — अष्टाविंशतितमः-मी-मम् or अष्टाविंशः-,,—,, ।

{ नवविंशतिः — नवविंशतितमः-मी-मम् or नवविंशः-,,—,, ।
{ एकोनत्रिंशत् — एकोनत्रिंशत्तमः-मी-मम् or एकोनत्रिंशः-,,-,, ।

त्रिंशत् — त्रिंशत्तमः-मी-मम् ।

द्वात्रिंशत् — द्वात्रिंशत्तमः-मी-मम् or द्वात्रिंशः-,,—,, ।

त्रयस्त्रिंशत्* — त्रयस्त्रिंशत्तमः-मी-मम् or त्रयस्त्रिंशः-,,—,, ।

चतुस्त्रिंशत् — चतुस्त्रिंशत्तमः-मी-मम् or चतुस्त्रिंशः-,,—,, ।

षट्त्रिंशत् — षट्त्रिंशत्तमः-मी-मम् or षट्त्रिंशः-शी—शम् ।

अष्टात्रिंशत् — अष्टात्रिंशत्तमः-मी-मम् or अष्टात्रिंशः-,,—,, ।

{ नवत्रिंशत् — नवत्रिंशत्तमः-मी-मम् or नवत्रिंशः-शी-शम् ।
{ एकोनचत्वारिंशत् — एकोनचत्वारिंशत्तमः-मी-मम् or एकोनचत्वारिंशः-,,—,, ।

---

* त्रेस्त्रयः ॥ अर्थात् किसी संख्या के पूर्व त्रि को त्रयः होजाता है ॥

चत्वारिंशत् चत्वारिंशत्तमः-मी-मम् or चत्वारिंशः-शी-शम्।

पञ्चाशत् पञ्चाशत्तमः-मी-मम् or पञ्चाशः-शी-शम्।

{ द्वाषष्टिः ६३
  द्विषष्टिः द्विषष्टितमः—मी-मम् or द्विषष्टः—ष्टी-ष्टम्

सप्ततिः सप्ततितमः—मी—मम

अशीतिः अशीतितमः—,,—,

एकाशीतिः एकाशीतितमः—मी—मम् or एकाशीतः—ती—तम्।

नवतिः नवतितमः-,,—,, ।

शतम् शततमः—मी—मम् ।

नवनवति पर्य्यन्त संख्या में से कोई संख्या यदि शत संख्या के साथ जुड़ी हो तो शत से न्यून संख्या शत से पहले लगाई जाती है और दोनों संख्याओं के मध्य में 'आधिक' वा 'उत्तर' (+) लगाया जाता है ॥ यथा —११२=द्वादश+(अधिक) शतम्=द्वादशाधिकशतम् (१००+१२), ४५८=अष्टपञ्चाशदधिकचतुःशतम्=(४००+५८) ॥

अगर संख्या में अङ्क बढ़ते जायें तो प्रत्येक दश या शत आदि संख्या के साथ अधिक वा उत्तर लगा दिया जायेगा। ७२४५=पञ्चचत्वारिंशदधिक-पञ्चशताधिक-सप्तसहस्रम्=(४५+५००+७०००); ८६६५७=सप्तपञ्चाशदुत्तर-षट्शतोत्तर-षडशीतिसहस्रम्=(५७+६००+८६०००); ९३२१७४=चतुःसप्तत्यधिक-पञ्चशताधिक-द्वात्रिंशत्सहस्राधिक-नवलक्षम्

६३ विनाश चत्वारिंशत्प्रभृतौ संख्याम् ॥ चत्वारिंशत, पञ्चाशत, षष्टि सप्तति और नवति के पूर्व [illegible]

(७४+५००+३२०००+१००,०००); ५६७८६०३=त्र्योधिकचतु-ष्टन्नवशतोत्तर-अष्टसप्ततिसहस्रोत्तर-षट्पञ्चाशल्लक्षम्= (३ +६००=७८००० +५६०००००) ॥

इनके पूरण (ordinals) इनके अन्त में केवल 'तम' लगाने से बन जाते हैं ॥

संख्या वाचक-क्रिया विशेषण
(ADVERBS OF FREQUENCY)

एक का सकृत् (once), द्वि का द्विः (twice), त्रि का त्रिः (thrice), चतुर् का चतुः (four times), संख्या वाचक क्रिया विशेषण है ॥

५४--चतुर् के आगे यदि किसी संख्यावाचक शब्द का पौनःपुन्य (frequency) के अर्थ में प्रयोग करना हो तो उसके अन्त में 'कृत्वस्' लगाया जाता है ॥ यथा—पञ्चकृत्वः, दशकृत्वः, विंशतिकृत्वः इत्यादि ॥

यदि किसी संख्यावाचक शब्द का प्रकारार्थक क्रिया-विशेषण बनाना हो तो उसके अन्त में धा¹ लग जाता है ॥ यथा--द्विधा, चतुर्धा, षोढा, नवधा इत्यादि ॥

(ख) गुणवाचक-क्रियाविशेषण संख्या के आगे शः लगाने से बनता है ॥ यथा—द्विशः, त्रिशः, इत्यादि ॥

EXERCISE VII.

(क) न्यायो, वैशेषिकं, सांख्यं योगो मीमांसा, वेदान्त इति षड्दर्शनानि ॥

धर्मार्थं चतुर्णां फलानां मध्ये रमे रोचने तत्त्वं गृहाण, यच्च

रामाय प्रतिभाति सोऽपि तद्-गृह्णातु मधारिष्ट च द्वे मे देहि ॥

तिसृषु कन्यास्वियं भावयें धेष्ठा ॥

पञ्चाशतेऽनाथेभ्यो रामः प्रत्य-हमन्नं ददाति ॥

---

¹ ईदृशक्रियार्थे धा ॥

चत्वारिंशत् चत्वारिंशत्तमः-मी-मम् or चत्वारिंशः-शी-शम्।

पञ्चाशत् पञ्चाशत्तमः-मी-मम् or पञ्चाशः-शी-शम्।

{ द्वाषष्टिः ६२ / द्विषष्टिः } द्विषष्टितमः—मी-मम् or द्विषष्टः—ष्टी-ष्टम्

सप्ततिः सप्ततितमः--मी--मम्

अशीतिः अशीतितमः—,,—,

एकाशीतिः एकाशीतितमः—मी—मम् or एकाशीतः—ती—तम्।

नवतिः नवतितमः-,,—,, ।

शतम् शततमः - मी—मम् ।

नवनवति पर्य्यन्त संख्या में से कोई संख्या यदि शत संख्या के साथ जुड़ी हो तो शत से न्यून संख्या शत से पहले लगाई जाती है और दोनों संख्याओं के मध्य में 'अधिक' या 'उत्तर' (+) लगाया जाता है ॥ यथा — ११२=द्वादश + (अधिक) शतम्=द्वादशाधिकशतम् (१००+१२), ४८८=अष्टाशीत्यधिकचतुःशतम्= ४००+८८) ॥

जब संख्या में अङ्क बढ़ते जायें तो प्रत्येक शत वा सहस्र आदि संख्या के साथ अधिक या उत्तर लगा दिया जावेगा [illegible] नाधिक-सहस्रद्वयम्= (२०००+१००+७०-७१); [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

७४+५००+३१०००+६००,०००); ५६७८६९३=त्रयोविंशत्यु-
त्तरशतोत्तर-अष्टसप्ततिसहस्रोत्तर-षट्पञ्चाशतलक्षम्= (२३
००=७८०००+५६०००००) ॥

इनके पूरण (ordinals) इनके अन्त में केवल 'तम' लगाने
बन जाते हैं ॥

संख्या वाचक-क्रिया विशेषण
(ADVERBS OF FREQUENCY)

एक का सकृत् (once), द्वि का द्विः (twice), त्रि का त्रिः
thrice), चतुर् का चतुः (four times), संख्या वाचक क्रिया
विशेषण हैं ॥

५४—चतुर् के आगे यदि किसी संख्यावाचक शब्द का
तात्पर्य (frequency) के अर्थ में प्रयोग करना हो तो उसके
न्त में 'कृत्वस्' लगाया जाता है ॥ यथा—पञ्चकृत्वः,
षट्कृत्वः, विंशतिकृत्वः इत्यादि ॥

यदि किसी संख्यावाचक शब्द का प्रकारार्थक क्रिया-
विशेषण बनाना हो तो उसके अन्त में 'धा' लग जाता है ॥
था—द्विधा, चतुर्धा, षोढा, नवधा इत्यादि ॥

(ख) गुणवाचक-क्रियाविशेषण संख्या के आगे शः लगाने
बनता है ॥ यथा—द्विशः, त्रिशः, इत्यादि ॥

EXERCISE VII.

क) न्यायो, वैशेषिकं, सांख्यं
योगो मीमांसा, वेदान्त इति
षड्दर्शनानि ॥

धर्माणां चतुर्णां फलानां मध्ये
मो देवेभ्य तत्वं पृष्ठवा, यथ

रामाय प्रतिमानि सोऽपि तद्-
गृहाणु भवादीषं च द्वे मे देहि ॥
मिसपु कन्यास्विय भावयं
धेहा ॥
पञ्चाशतेऽभ्यो रामः ग्रन्थ-
दमनं ददाति ॥

---

* इन्होंने देवों का ॥

५७—उगितश्च ॥ (घ) जिन प्रत्ययों के अन्तिम उ का लोप हुआ हो—यथा मत्, वत्, क्तवत्, वस्, ईयस्, अन्त वालों के परे । यथा - श्रीमती, विद्यावती, कृतवती, बुद्धिमती, हेतवती, विद्वस्-विदुषी, प्रेयसी, श्रेयसी ।

(ङ) जिन प्रत्ययों के अन्तिम ऋ का लोप हुआ हो—यथा शत्रन्त कृदन्तों के परे । परन्तु त् के पूर्व 'न्' आगम भ्वादि, दिवादि, चुरादि, णिजन्त, सन्नन्त और नामधातु में अवश्य, तुदादि, अदादि, और आकारान्त अदादि में विकल्प से होता है; शेष (अदादि, जुहोत्यादि, तनादि और रुधादि में कदापि नहीं होता । यथा भवत्-भवन्ती, गच्छत्-गच्छन्ती, पश्यन्ती, सहन्ती, दीव्यन्ती, नश्यन्ती, त्यजन्ती, मुह्यन्ती, चोरयन्ती, चिन्तयन्ती, भक्षयन्ती, कथयन्ती, चिकीर्षत्-चिकीर्षन्ती, मुमूर्षन्ती, पुत्रीयन्ती, तपस्यन्ती, तुदती-न्ती, इच्छती-न्ती, पृच्छती-न्ती, क्रीणती-न्ती, गृह्णती-न्ती, याती-न्ती, स्नाती-न्ती, भाती-न्ती, अदती, रुदती, जुह्वती, ददती, कुर्वती, रुन्धती ।

५८—(च) स्यदन्त कृदन्तों के परे । यहां न् का आगम विकल्प से होता है । यथा-भविष्यती-न्ती, करिष्यती-न्ती, दास्यती-न्ती ।

५९—इन्द्र आदि कतिपय शब्दों के परे 'आनी' (आन् + ई) लगता है । यथा-इन्द्राणी, भवानी, रुद्राणी, वरुणानी, मातुलानी (मातुली, वा), क्षत्रियाणी (क्षत्रिया, वा), उपाध्यायानी (उपाध्याया, वा)।

६०—वोतो गुणवचनात् ॥ उकारान्त गुणवाचक विशेषणों (adjectives of quality) के परे ई विकल्प से लगता

५. [illegible]

६१–इकारान्त या ईकारान्त विशेषणों के परे कोई स्त्री प्रत्यय नहीं लगता ॥ यथा शुचिः, सुधीः ।

ये निपातन सिद्ध हैं—

मनुष्य	मानुषी	श्वन्	शुनी
मत्स्य	मत्सी	राजन्	राज्ञी
युवन्	युवति / युवती / यूनी	पति	पत्नी
		श्वशुर	श्वश्रू

EXERCISE VIII

१ (क) मम कनिष्ठा पुत्री घटकां दृष्ट्वातीव मोदते ॥

सीता दण्डकेषु तपस्विनीभिः मैत्रीमचकार ॥

अत्रापि बहवः शाक्यः विदुष्यः आसन् ॥

तस्या युवत्याः गतिं पश्यत ॥

कथं मनोहारिणीयं युवती दृश्यते ॥

सिंहः प्रतिवत्सरं शावकः जायते ॥

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥

यह कन्या बहुत लज्जावती और बुद्धिमती है ॥

वो कल रह रही थी। मेरे उपाध्याय की स्त्री विदुषी है ॥

शहर एक स्त्रियों में चतुर होती है ॥

उस कुत्ते ने एक कुत्ती को ... में ... दिया है ॥

रघु की रानी का ... इसी से समाप्त हुआ ॥

कोयल का स्वर बहुत मधुर होता है ॥

रात जगी हुई इस कन्या ...

(घ) जो कि (=इ) प्रत्ययांत हों; यथा निधिः, विधिः, ...दधिः, व्याधिः।

(ङ) जितने स्वर्ग, पर्वत, वृक्ष, हस्त, कपाट, ओष्ठ, गण्ड (cheek), बाहु, दांत, सर्प, मीन, केश, नख, स्तन, ध्वनि, ...मुद्र, खड्ग, याग, यज्ञ, शत्रु, मनुष्य देव, दैत्य, पशु पक्षि, ...ग, मेघ, मण्डूक, चोर, वर्ण, (colour), वानर, रस, ...ल्क्षप, पङ्क (mud), पाषाण (stone), तण्डुल (rice) ...हंकार, आदि के समानार्थ (synonyms) हैं।

(च) दाराः (a wife), गृहाः (home), असवः ...(life), लाजाः (fried rice), और अक्षताः (whole ...ce) केवल बहुवचनांत और पुंलिङ्ग हैं।

...ही नियम श्लोकबद्ध नीचे दिये जाते हैं।

घञन्ताः पुंसि विज्ञेया भवन्ताश्च तादृशाः।
वर्जयित्वा पदं पर्वं भयं लिङ्गं तथापि च॥ १॥
इमबन्ता नडन्ताश्च याञायन्तं तथा मताः।
किमन्यियान्ताः सर्वे च पुंसि चायेता निपुणा॥ २॥
स्वर्गपर्याय पर्यायिया योनिया च त्रिविष्टपम्।
सर्वे पुंसि सपर्याया वृक्ष-पर्वत-वाचिनः॥ ३॥
हस्त-कपोलौष्ठ-गण्डादि-बाहु-केश-नख-स्तना।
मनुष्यो दानवो देवो सर्प-पाषाण-तण्डुलाः॥ ४॥
मीनाध्वनि-यज्ञ-दन्त-पशु-पक्षि-मृगादयः।
पुंस्येव शत्रु-ध्वन्यर्थो ध्वनन्ना मेघ-वाचका॥ ५॥
चोर-मण्डूक-वर्णानां वाद्य-वानरयोस्तथा।
... पुंसि नामानि तथत॥ ६॥
...लाजाक्षतासवः॥]

आपः सुमनसो वर्षा अप्सरस् सिकताः समाः ।
एते स्त्रियां बहुत्वे स्युरेकत्वेऽप्युत्तरत्रयम् ॥]

नपुंसकलिङ्ग

६४ ये शब्द प्रायः सब नपुंसक लिङ्ग होते हैं—

(क) जिन के अन्त में भाववाचक क्त, अन, त्व, ष्यञ् (य), यक् (य), यत्, ढय प्रत्यय हों ॥ यथा–गीतं, हसितं, हसनं, गमनं, शुक्लत्वं, कृष्णत्वं, शौक्ल्यं, कार्ष्ण्यं, स्तेयं, आधिपत्यं, मौण्ड्यं, कापेयम् ।

(ख) जिनके अन्त में तव्य, अनीय, य कृत्यप्रत्यय हों ॥ यथा–कर्तव्यं, करणीयं, कार्यम् ।

(ग) जिनके अन्त में तय, अय प्रत्यय हों; यथा द्वितयं, द्वयं, त्रितयं, चतुष्टयम् ।

(घ) जितने वन, अङ्गन (court-yard) छिद्र, हिम, जल, गृह, धनुष, मांस, रुधिर, अस्थि, मुख, नेत्र, धन, बल, फल, पुष्प, पत्र, सुख, दुःख, लवण, व्यञ्जन (condiment or sauce) अनुलेपन, पुरीष, वस्त्र, आभरण (ornament), अन्न, पीयूष, नृत्य, गीत, वाद्य, स्थान, भेषज, उदर, हृदय, आदि के समानार्थ हों ॥

[भावे क्तानप्रत्ययान्ताः ष्यञ्यञ्यविरामकाः ।
यण्ढय-तयानीय-तव्य-यान्ता नपुंसके ॥
क्लीवे छिद्राङ्गणारण्य-गृह-चाप-हिमोदकम् ।
मांसास्थि-रुधिरं वित्तं मुखाक्षि-हृदयं बलम् ॥
पत्रं फलं च पुष्पं च व्यञ्जनं चानुलेपनम् ।
पुरीष-वस्त्रान्न-रण-पीयूषाभरणानि च ॥
भेषजोदर-गीतानि नृत्य-दुःख- सुखानि च ।
लवणास्पद-वाद्यानि तत्पर्यायाणि प्रायशः ॥

द्वादशः पाठः ।

कारक-प्रकरणम् (GOVERNMENT.)

वाक्य में क्रिया से अन्य नाम के सम्बन्ध को कारक कहते हैं, जहां पर किसी नाम का क्रिया के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता उसे कारक नहीं कहते; इस लिए षष्ठी को कारक नहीं माना जाता क्योंकि इससे क्रिया के साथ किसी सम्बन्ध का ज्ञान नहीं होता; परन्तु एक नाम के दूसरे नाम से सम्बन्ध का बोध होता है । संस्कृत में छ (६) कारक होते हैं—कर्ता—(Subject), कर्म (Object), करण (Instrumental), सम्प्रदान (Dative), अपादान (Ablative) और अधिकरण (Locative) ॥

कर्ता (Subject)

६६—स्वतन्त्रः कर्ता ॥ जो स्वतन्त्र हो क्रियायोचित व्यापार करता है वह कर्ता होता है; कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है । यथा—बालकाः क्रीडन्ति, नरा गच्छन्ति ।

६६—इस के अतिरिक्त प्रथमा का प्रयोग और तरह भी होता है । प्रातिपदिकार्थ-लिङ्ग-परिमाण-वचनमात्रे प्रथमा ॥ यथा—किसी शब्द के अविकृत रूप (crude form), लिंग (gender), परिमाण (measure), और वचन (number) के बोध के लिये प्रथमा (nominative) विभक्ति प्रयुक्त होती है ॥ यथा—देवः, ज्ञानम्, तटः, तटी, तटम्, द्रोणो व्रीहिः, एकः, द्वौ, बहवः ॥

कर्म (Object)

ापार का फल (effect) जिस में रहता है यह कर्म होता
; कर्म में द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है ॥ यथा—मक्षी-
रे पश्यति ।

६८—सकर्मक धातुओं के साथ कर्म अवश्य आता है ॥
था—पुष्पाण्यवचिनोति; गोपी दधि विक्रीणाति ।

६९—कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ॥ अकर्मक धातुओं के साथ
ो कर्म का प्रयोग होता है, यदि उस कर्म से किसी मार्ग या
ाल का बोध हो जिस में कोई व्यवधान (break) न पाया
ाये ॥ यथा—तत्र त्रीन् दिवसान् न्यवसत्, क्रोशं गिरि
थितः । परन्तु मासस्य द्विरधीते और क्रोशस्यैकदेशे पर्वतः
न वाक्यों में काल और मार्ग में व्यवधान है, अतः काल
ाचक और मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया नहीं होती ॥

७०—गत्यर्थ धातुओं के योग में स्थानबोधक शब्दों मे
द्वितीया या चतुर्थी का प्रयोग होता है ॥ यथा—नगरं, नगराय
ा गच्छति ।

७१—अधिशीङ्स्थासां कर्म ॥ शी, स्था और आस
धातुओं के साथ अधि के योग से द्वितीया का प्रयोग होता
है ॥ यथा—स शिलापट्टमधिशेते, अर्जुनो गोत्रमिदोऽधितष्ठौ
हरिः वैकुण्ठमध्यास्ते ।

७२—अभि-नि-विशश्च ॥ विश् धातु के साथ अभि+नि के
योग से द्वितीया का प्रयोग होता है ॥ यथा-अभिनिविशते
सन्मार्गम् ।

७३—उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु द्वितीया
अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रति-योगेऽपि ॥ उभयत
(दोनों ओर), उपर्युपरि (ऊपर), अधोऽधः (नीचे), धिक्
(धिक्कार), अभितः-परितः-सर्वतः (चारों ओर), समया

निकषा (समीप), हा (शोक), प्रति (ओर), अन्तरा (मध्य में) अन्तरेण (बिना उद्दिश्य) इन शब्दों के योग में द्वितीया प्रयुक्त होती है । यथा- उभयतो नदीं वृक्षा वर्तन्ते उपर्युपरि लोकं हरिः अधोऽधः लोकं पातालम्; धिग् दानं दुर्जनान् ये परनिन्दारताः; अभितः-परितः सर्वतः ग्रामं प्रदक्षिणां कृतवान्; निकषा-समया सौधमिदं निहितं मया धनम्; हा नास्तिकं यः ईश्वरसत्तां न मनुते; गतोऽसौ विदेशान् प्रति; कोऽयस्त्वामन्तरेण शक्तः प्रतिकर्तुम् ।

७४— * कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ॥ अति (उत्कृष्ट superior to) अनु (पीछे, निकृष्ट, after, inferior to), अभि (समीप, close to), उप (समीप, निकृष्ट, near, inferior to)-इन उपसर्गों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है ॥ यथा-अति देवान् कृष्णः; जपमनु प्रावर्षत्; उप शूरं न ते वृत्तम्; हरिमभि वर्तते ॥

द्विकर्मकधातु ।

७५—अकथितञ्च ॥ संस्कृत में कुछ ऐसे भी धातु हैं जिनके साथ दो कर्मों का प्रयोग हो सकता है, उनमें से एक कर्म मुख्य या प्रधान (direct) और दूसरा गौण या अप्रधान (indirect) कहलाता है; वक्ता की इच्छा से गौण (indirect) कर्म किसी ऐसे कारक में भी बदला जा सकता है जिसका अर्थ वहाँ सङ्गत हो सके । द्विकर्मक धातु ये हैं :—

दुह्याच्-पच्-दण्ड्-रुधि-प्रच्छि-चि-ब्रू-शासु-जिमन्थ्-मुषाम् । नी-हृ-कृष्-वहः इत्येते धातवः स्युर्द्विकर्मकाः ॥

यह और इन्हीं अर्थों के अन्य धातु द्विकर्मक होंगे ॥

—धाति (बलेः) याचते वसुधाम्; गां (गोः) दोग्धि पयः;

तण्डुलान् (तण्डुलैः) ओदनं पचति; नृपः चौरं (चौराय) शतं दण्डयति; व्रजम् (व्रजे) अवरुणद्धि गाम्; माणवकं (माणवकात्) पन्थानं पृच्छति; वृक्षम् (वृक्षात्) अवचिनोति फलानि; माणवकं (माणवकाय) धर्मं ब्रूते-शास्ति; शतं जयति देवदत्तम् (देवदत्तात्); अमृतम् समुद्रं (समुद्रात्) अमथ्नन्; देवदत्तं (देवदत्तात्) शतं मुष्णाति; ग्रामम् (ग्रामाय) अजां नयति-हरति-कर्षति-वहति ॥

करण (Instrumental).

७६—साधकतमं करणम् ॥ जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है उस में करण होता है ॥ यथा—गदयाघुनैव दुर्योधनस्योरू संचूर्णयामि, रामो बाणेन वालिनं हतवान् ।

७७—कर्तृकरणयोस्तृतीया । कर्मवाच्य क्रिया के साथ कर्ता में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त होती है ॥ यथा—अविजानता मया हतमेतत् ।

७८—प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् ॥ इन अर्थों में भी करण प्रयुक्त होता है ॥ यथा—प्रकृत्या चारुः; गोत्रेण गार्ग्यः; सुखेन—विषमेण याति; विधना तां विवाहितवान् ॥

७९—अपवर्गे तृतीया ॥ मार्ग या समय बोधक शब्दों में तृतीया का प्रयोग होता है यदि उस समय या मार्ग में कार्य समाप्त होगया हो ॥ यथा—अह्ना क्रोशेन वानुवाकोऽधीतः। परन्तु यदि कार्य समाप्त न हुआ हो तो द्वितीया प्रयुक्त होगी ॥ मासमधीतो नायातः

८०—येनाङ्गविकारः ॥ शरीर के किसी अङ्ग में यदि विकार पाया जाय तो अङ्ग वाचक शब्द में तृतीया होती है ॥ यथा—अक्ष्णा काणः; कर्णाभ्यां बधिरः, शिरसा खल्वाटः; पृष्ठेन कुब्जः।

८१—इत्थंभूतलक्षणे ॥ किसी लक्षण के द्वारा यदि किसी

यथा–किं मां संकुध्यसि, मास्मान् नित्यमभिद्रुह ॥

९६—प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ॥ श्रु धातु के यदि प्रति और आ उपसर्ग लगे हों और उसका अर्थ प्रति करना हो तो जिस के साथ प्रतिज्ञा की जाती है उस चतुर्थी होती है ॥ यथा–प्रतिशृणोय काकुत्स्थस्ते विप्रप्रतिक्रियाम् ॥

९७—क्लृपि संपद्यमाने ॥ क्लृप् (to result in, tend to, be adequate to) या इन्हीं अर्थों के अन्य जन्, सं+पद् आदि धातुओं के योग में फल (result) वाच शब्दों में चतुर्थी होती है ॥ यथा–त्वं कल्पसेऽना रक्षणाय; व्याधये कल्पते-जायते- संपद्यतेऽपथ्यम्

९८—नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च ॥ नम स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा शब्दों के योग में चतुर्थी विभ होती है ॥ यथा—नमः गुरवे; स्वस्ति प्रजाभ्यः; अग्नये स्वा

९९—अलम् और इसी अर्थ के अन्य प्रभुः, समर्थ शक्तः आदि शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है ॥ यथ अलं मल्लः मल्लाय; शक्तोऽहमस्मै कार्याय ।

१००—कथ्, ख्या, शंस्, चक्ष्, नि+विद् आदि जिन अर्थ कहना (to tell) हो, या प्र+हि, वि+सृज् आदि जिन का अर्थ भेजना हो उन के योग में, जिसे कहा जाये जिस की ओर भेजा जाये उस में चतुर्थी होती है ॥ यथा कथयामि ते (तुभ्यम्) भूतार्थम्; आख्याहि मे (मह्यं रामभद्रस्य ... मे (मह्यम्) ... विश्वविख्यातकीर्ति धीमते ...

अपादान (ABLATIVE)

१०१—ध्रुवमपायेऽपादानम् ॥ जिस स्थान पुरुष वा वस्तु [से] वियोग (separation) हो उसे अपादान कहते हैं; अपादान में [पञ्च]मी विभक्ति होती ॥ यथा—अश्वात् पतति, गृहादागच्छति ।

१०२—जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् ॥ जुगुप्सा ([a]bhorrence), विराम (cessation), प्रमाद (neglig[en]ce) अर्थ के धातुओं के योग में पञ्चमी होती है ॥ यथा—स [पा]पात् जुगुप्सते, विरमत्यस्मात् साहसात्, स्वधर्मात् प्रमाद्यति ।

१०३—भीत्रार्थानां भयहेतुः, वारणार्थानामीप्सितः ॥ भय ([f]ear), निवारण (preventing) अर्थ के धातुओं के योग [में] जिस से भय, लज्जा वा निवारण करना हो उस में पञ्चमी [हो]ती है ॥ यथा—स मृत्योरपि न बिभेति स रामाद् जिह्रेति; [य]वेभ्यो गां निवारयति ।

१०४—*जनिकर्तुः प्रकृतिः ॥ जन् (to be produced) [औ]र ऐसी अर्थ के अन्य धातुओं के योग में जिस से उत्पत्ति [हो] उस में पञ्चमी विभक्ति होती । यथा—गोमयाद्वृश्चिको जायते; कामात्क्रोधोऽभिजायते; हिमवतो गङ्गा प्रभवति ।

१०५—यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी ॥ यदि किसी [स्था]न वा काल से किसी अन्य स्थान वा काल का परिमाण (measure) करना हो तो जिस से परिमाण करना हो उस में [पञ्च]मी होती है ॥ यथा—वनाद् ग्रामो योजनम्; कार्त्तिक्या [आग्र]हायणी (the full moon day of मार्गशीर्ष) मासे ।

---

* उत्पत्यर्थ धातुओं के योग में जिस के उत्पत्ति होती है उस में प्रायः [पञ्च]मी भी होती है ॥ यथा—[illegible] ॥

१०६—अन्यारादितरर्ते दिक् शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते ॥ अन्य, इतर, इसी अर्थ के अन्य शब्द या आरात् ऋते व दिशावाचक शब्दों के योग में पञ्चमी होती है ॥ यथा—मित्रादन्य इतरो वा न कोऽपि मां त्रातुं क्षमः; आरादेव वनात् मुखात् मे गृहम्; श्रमादृते विद्या न भवति; (ऋते के योग में द्वितीया विभक्ति भी आती है ॥ यथा—(ज्ञानमृते न सुखम्) प्राक् पुरुषपुरात् मृतसरः प्रत्यक् तु गान्धारदेशः।

१०७—प्रभृति, आरभ्य, बहिः, अनन्तरम् ऊर्ध्वम् परम् आदि शब्दों के योगों में पञ्चमी होती है ॥ यथा—ततः प्रभृति आरभ्य मया त्यक्तं सुरापानम्; ग्रामाद्बहिरेकं सुरम्यं देवायतनम्; विवाहादनन्तरं स जगाम काशीम्; भाग्यायत्तमतः परम्।

१०८—कारण या हेतुबोधक शब्दों के साथ पञ्चमी होती है ॥ यथा—गो मानुषाणां वधात् मया महद् पापं कृतम्; पर्वतो वह्निमान्, धूमवत्वात्।

१०९—आङ्मर्यादावचने, पञ्चम्यपाङ्परिभिः ॥ पर्यन्त (as far as), व्यापकता (including, pervading,) अर्थ में पञ्चमी होती ॥ यथा—आमुक्तेः संसारः, आ सकलात् ब्रह्म।

११०—पृथग् विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् ॥ पृथक्, बिना नाना शब्दों के योग में द्वितीया, तृतीया, और पञ्चमी होती है ॥ यथा—नाना (without) नारीं निष्फला लोकयात्रा; पृथक्-विनेश्वरात् कृपया न मुक्तिः।

१११—प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ॥ यदि कोई वस्तु दूसरी वस्तु से बदली (exchange) जाये तो जिस से बदली जाती है उस में पञ्चमी होगी ॥ यथा—तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् ॥

अधिकरण (LOCATIVE)

११२—आधारोऽधिकरणम्, सप्तम्यधिकरणे च ॥ कर्ता जिस में या जिस पर व्यापार करता है उसे आधार या अधिकरण कहते हैं; अधिकरण में सप्तमी होती है ॥
यथा—स्थाल्यामोदनं पचति, आसने उपविशति ॥

११३—यतश्च निर्धारणम् ॥ समुदाय में से किसी एक व्यक्ति या वस्तु के चुनाव को निर्धारण कहते हैं; निर्धारण में समुदायवाचक शब्द में षष्ठी या सप्तमी होती है ॥
यथा—नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः; गच्छतां-गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः ॥

११४—स्निह्, अनुरञ्ज्, अभिलष्, रम्, और इन्हीं अर्थों के अन्य धातुओं के किसी रूप के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा—पिता पुत्रे स्निह्यति, न खलु तापस-कन्यायां ममाभिलाषः; असद्वृत्तौ राज्ञि जनता नानुरज्यते; रहसि रतिरस्य यते ॥

११५—यस्य च भावेन भावलक्षणम् ॥ यदि एक कार्य का काल उस से भिन्न दूसरे कार्य के काल से जाना जाए तो उस दूसरे कार्य के कर्ता में सप्तमी होती है और उस कर्ता का विधेय (Predicate) कृदन्त होता है, जिस की लिङ्ग विभक्ति और वचन में समता (Concord) उस कर्ता से होती ॥ यथा—पुत्रे मृते स प्राव्राजीत्। इस वाक्य में पुत्र की मृत्यु के काल से उस के सन्यासी होने के काल का बोध होता है; अतः पुत्र में सप्तमी हो कर उसके साथ कृदन्त 'मृत' (Predicate) में भी सप्तमी है; इस को (Locative absolute) कहते हैं; इस की तुल्यता अङ्गरेज़ी में (Nominative absolute) से है ॥

(२) षष्ठी चानादरे ॥

ऐसे वाक्य में जब अपवीरणा (disregard) का भाव है तो षष्ठी हो जाती है ॥ यथा—पश्यतो गुरोः निषेधातिक्रमः कृतः; पश्यतोऽपि मे श्येनेनापहृतः शिशुः; इस को (Genitive absolute) कहते हैं। (३) सप्तमी और षष्ठी (Locative and Genitive absolute) दोनों का प्रयोग जब (when) यद्यपि (although) आदि अर्थों में भी होता है ॥ यथा—प्रलपति-प्रलपतो वा पुत्रे-पुत्रस्य वा, गृहमत्यजत्; एवं तयोः परस्परं वदतोः सोऽनुपतस्थे; तस्मिन्-तस्य वा सान्त्वयति सान्त्वयतो वाऽपि साऽरोदीत् । (४) केवल सप्तमी एव या मात्र के साथ ज्योंहीं (as soon as) के अर्थ में प्रयुक्त होती है। यथा—प्रविष्टमात्रे एवाचार्ये छात्रास्तूष्णीमासत ॥

सम्बन्ध (Genitive)

११६—षष्ठी शेषे ॥ जब किसी वस्तु वा व्यक्ति का दूसरी वस्तु वा व्यक्ति से कोई सम्बन्ध हो तो उस सम्बन्ध को प्रकाश करने के लिये षष्ठी का प्रयोग होता है ॥ यथा-जनकस्य दुहिता दशरथस्य पुत्रं परिणिनाय; राज्ञः पुरुषः स्तेनमदण्डयत्।

११७—कृत्यानां कर्तरि वा ॥ विध्यर्थकृदन्त (तव्य, य, अनीय-प्रत्यय शब्दों) के साथ कर्म में षष्ठी या तृतीया होती है ॥ यथा—मया-मम वा सेव्यो हरिः ।

११८—तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ॥ तुल्य शब्दों के योग में उस शब्द में षष्ठी वा तृतीया होती है जिस से तुलना करनी हो ॥ यथा—मात्रा-मातुर्वा सदृशेयं कन्या ॥

EXERCISE IX

(क) मन्दोत्सुक्योऽस्मि नगर-गमनाय्प्रति ॥ | विशते ॥ क [illegible]

कादम्बरीनामेय

श्रेयोमदेन गर्वितम् ॥
विद्यामहेतोः कतिप-
सानातिष्ठत् ॥
वटुः; कदाचिदस्म-
न्तःपुरेभ्यः कथयेत् ॥
खलु दुर्विनीतोऽन्येषां
दोषप्रकाशनाय ॥
तव दोषः, माधोः
य संपद्यते नासार्थः॥
तेनास्मजन्मन आर-
त्युपर्य्यन्तं सर्वमेव
वृत्तमाचष्टे ॥
यान् वेदवसतदे-
ाधिकं तस्मै देयम् ॥
या राजानं आत्म-
स्यसूयन्ति सचि-
ुष्यन्ति हितवादिने॥
तस्मै स्वसुरचन्ति-
न्दर्याः प्रदानम् ॥

मल बहुप्रलापेन ॥
कृतमातिविषादेन ! अनित्येऽत्र
संसारे ईदृश्येव दशा नराणाम्।
किं बहुना, यत् करिष्यते तत्
श्रूयताम् ॥
स्वस्ति ते, साधयामो वयम् ॥
नास्ति जीवनादन्यदभिमततर-
मिह जगति जन्तूनाम् ॥
विरमातिप्रसङ्गात् ॥
कर्ममार्गात् भक्तिमार्गः श्रेयान्,
श्रेष्ठस्तु सर्वेषु ज्ञानमार्गः ॥
न किञ्चिदप्यसाध्यं महीपती-
नाम्, तेषामकार्यमपि कर्तव्य-
म्, अद्रष्टव्यमपि द्रष्टव्यम्,
अश्रोतव्यमपि श्रोतव्यम् ॥
पुत्र, त्वयि दुहितरि स्थितायां
किमेवं युज्यते यत् सर्वे पार्थि-
वा मया सह विग्रहं कुर्वन्ति ॥
एष मे जनकास्तिष्ठति, स परं
स्निग्धो मयि ॥

ं तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा ॥
ोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः ॥
ष्णुना सदृशो वीर्ये, क्षमया पृथिवीसमः ॥
र्तनादुत्तमं श्रेयस्तदभावे सदप्यसत् ॥
रिमञ्जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवतु ॥

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः ।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः ॥
सङ्गात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥

(ख) मैंने रात्रि वहां व्यतीत की, परन्तु उसे नेत्रों से नहीं देखा ॥
बिना यत्न के कोई काम नहीं हो सकता ॥
राम तुझसे यही प्रश्न प्रतिदिन पूछता है ॥
यह वाष्ठ पांच हाथ लम्बा है ॥
हरिश्चन्द्र ने धर्म पालन के लिये अपने आप को बेचकर विश्वामित्र को धन दिया ॥
राजा ने अपने प्रधान सेनापति को कुछ कह कर युद्धक्षेत्र में भेज दिया, क्योंकि वह शत्रुओं के पराजय के लिये समर्थ था ॥
उन के निवारण करते हुये भी उसने मद्यपीना न छोड़ा ॥
मुझे आम (आम्र) इतने अच्छे नहीं लगते (रुच्) जितने अंगूर (द्राक्षा) धर्मदत्त को स्वादु लगते हैं (स्वद्) ॥
उसने आसन पर बैठकर [अधि + आस्] अपने दोनों ओर मन्त्रियों को बिठाया ॥
विद्वत्ता में यह बृहस्पति से भी बढ़ कर है , अति+शी) ॥
इन विलापों का अब कोई प्रयोजन नहीं; अपने कुटुम्ब के साथ घर को जाओ ।
यह मैंने पांच सौ रुपयों पर मूल्य लिया है ॥
पिता राम से क्रुद्ध होने लगा ॥
ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं ॥
पिता छोटे पुत्र से अधिक प्रेम करता है क्योंकि वह बुद्धि में सब से श्रेष्ठ है ॥
गुरु के उस विषय पर पाठ पढ़ाते, एक शिष्य ने उठ कर प्रश्न किया ॥

(ग) नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त (—) स्थानों को पूर्ण
[illegible] जिन शब्दों के [illegible]

(अस्मद्)दुःखस्त्वं कथं (लोक-
पाद) न विभेषि ॥

याम् (—)न कोऽप्येनत् माध-
यितुं क्षमः ॥

ामम् (—) आनो लक्ष्मणः ॥

ीता (निवारयत्) मापि पा-
दपेषु रामेण (–) वनं ययौ ॥

ते (श्रम)कार्यसिद्धिर्दुष्करा ॥

या (विद्या) सुखं लभ्यते
न तथा (धन) ॥

यपाद) वापं मई (अपराध)
विना येतैश्चानीतः॥

यः (ईश्वर) न कोरि माम्
(इदम्)कष्टात् उद्धर्तुं क्षमः ॥

येनागाद् (...) देवे यावत्
पर्व संपद्यते ॥

र्पि जानामि यत्र कन (–)न
. कदाप्येवं विचास्ये इति ॥

भीम पदार्थाः (–) दोष्माभिय
मस्तानामप्यत्म निपातमाय ॥

मयप्रदत्तं संदेशं मे (काव्यां) ॥

मद् (मयद्) रोचते सदेव
संपादिवे ॥

(नूपुर) रक्तमणमया भीमन्
कुपरदेभ्यश्च सुवर्णम् ॥

यादवैः कृष्णा (पुत्रीवत्)
ह्रीतः ॥

यो (धर्म) प्रमाद्यति स (लोक)
निन्द्यते ॥

तस्मै ईश्वराय(–) येनेदं सकल
जगत्सृष्टम् ॥

कुतः (अस्मद्) विप्रः (रक्षितृ)
स्यापि विद्यमाने ॥

कुमारं (नेतृ) कन्याऽर्हतो
जातुभिः (—) पूर्वं कृतवान् ॥

(–) नदीम् कूलाः वर्तन्ते ॥

धिक (तद्) ये सतोऽपि
(कुपथ) यान्ति ॥

इन्द्रनस्थम् (इदम्) प्रेषयत
(यतुर् राजन) ॥

(दशरथ) सुतः राम. (भार-
द्वाज) आश्रमं प्राप्य, (एक
रिपन) तत्र न्यवसत् ॥

नर्मदा (स्वर्ण, पत्र निवासः
(जन) मनुष्यत्वे न वर्तन्ते ॥

(तद् राजन्) न तथानुरक्ताः
प्रजा यथा (तद् पुत्र) ॥

(सिंहासन) आरुह्य न नाधि-
प मादिदेश ॥

कौरवेभ्यः मोक्षः (—) कश्चि
शक्तिदायां पाण्डवः ॥

मनु (तद्) गच्छति सुतः ।
(स्वमात्र) सायः लोकैः

त्रयोदशः पाठः ।

अव्ययाः (INDECLINABLES)

जो शब्द सब लिङ्ग, विभक्ति, और वचन में समान ही रहते हैं वे अव्यय हैं * ॥

अव्यय दो प्रकार के हैं:—

(१) उपसर्ग (Prepositions) और

(२) निपात (Particles, Adverbs and Conjunctions)

११६—उपसर्ग वे अव्यय हैं जो शब्द के पूर्व संयुक्त हो कर प्रयुक्त होते हैं और इन के संयोग से धातु का साधारण अर्थ प्रायः भिन्न हो जाता है ॥ † यथा गच्छति-जाता है, परन्तु अधिगच्छति-जानता है, और संगच्छते-मिलता है ॥

उपसर्ग ये हैं—प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप ॥

निपात ।

उपसर्गों से भिन्न सब अव्यय निपात कहलाते हैं । निपातों की संख्या बहुत अधिक है । अतः उन में से कतिपय अति प्रसिद्ध, अर्थ और प्रयोग सहित, ‡ यहां दिये जाते हैं ॥

---

* सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

† उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते । प्रहाराहारसंहार-विहार-परिहारवत् ॥

‡ अतः 'च', 'सर्वदा', आदि सरल अव्ययों के प्रयोग नहीं दिये

अधुना=अब (at present, now) अधुना सवि पलायितुमक्षम: ॥

अनन्तरम्= after, immediately after, अनन्तरं पुन गतोऽमृगः पार्श्वमृक्षः ॥

अनवरतम्=अजस्रम् (incessantly); अनवरतमधीते

अन्तर्=अन्दर, मध्य में । जलान्तर्गतचन्द्रचपलं जीवि खलु देहिनाम् ।

अन्तरा=(१) मध्य में (between); अन्तरा त्वां च मां कमण्डलुः । (२) विना । (without, except); न च प्रयोग न मन्तरा स स्वप्नेऽपि चेष्टते ।

* अन्तरेण=(१) विना (without, except); पुरुषका मन्तरेण न किंचित्सिध्यति ।

अन्यत्र=और स्थ न में;विना । मलयमन्यत्र चन्दनं न प्ररोहति।

अन्यथा=(१) अन्य प्रकार से (otherwise); भावि चेत् तदन्यथा ।

(२) मिथ्या (falsely); न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति ।

अन्यदा=अन्य काल में । अन्यदा समागम्यताम् ॥

अन्येद्युः=on the other day, on the following day

अपरेद्युः=on the following day.

अपि=(१) यद्यपि (although, even if); निःसृतोऽ प्यसौ पुनः प्रविशति; (२) भी (also, even'; इदमपि कर्तुम (३) प्रश्न (to put a question) अपि तपो वर्धते । (४) आशा, (to express hope); अपि जीवेत्स ब्राह्मणशिशु

अभितः=चारों ओर (around); राजानमभितः परिजनाः तिष्ठ

---

* (२) regarding, with respect to; किं ममान्तरेण निरूपति देवमाधवः ॥

मर्मोद्घाम्=बार बार, सतै प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णम्।
अयि, अये, अरे=संबोधनार्थक।
अलम्=(१) पर्याप्त (adequate, sufficient for), तस्यालमेश क्षुधितस्य तृप्त्यै। (२) निवारण (away with, no more of), अलमतिविस्तरेण, अलं रुदित्वा।
अवश्यम्=Surely, of course; necessarily. अवश्यमेव पतिष्यत्येतत् पक्वं फलम्।
अविरतम्=अनवरतम्।
अहह=अहहा=अहो=विस्मय, दया, शोक, प्रशंसा।
आरभ्य=From, since; अमुम आरभ्य।
आशु=शीघ्र। सजीवमेव शूद्रयमाशु गच्छति सान्वयः।
इतः=(१) यहाँ; इतो निषीद। (२) यहाँ से; इतः स देवः प्रत्यर्थीः।
इति=(१) किसी के वाक्य को उसी स्वरूप में वर्णन करने के लिये (वाक्यान्त में) " " (inverted commas) के सदृश, यथा—स कथयति गृहं गन्तुमिच्छामीति।
(२) समाप्ति (Conclusion), इति प्रथमोऽध्यायः।
(३) हेतु (Because, as), पंडितोऽस्मीति पृच्छामि।
इत्थम्=इस प्रकार से। इत्थं मयालोचितम्।
इदानीम्=अधुना।
इव=(१) सदृश (Like), कमलमिव मुखम्। (२) उत्प्रेक्षा (as if, it were) मृगानुसारिणं साक्षात्पश्यामीव पिनाकिनम्।
इह=यहाँ, इस लोक में। नतिरिह नरायामीदृशी॥
ईषत्=किंचित् (a little, slightly), ईषत्पाण्डु।
उच्चैः=ऊपर, ऊँचा। विपुलोच्चैः स्थेयम्॥
उत=(१) या (or) विष्णुरुत शिवः सेव्यः। (२) सन्देह (doubt, uncertainty), रज्जुरियमुत सर्पः।

उपरिष्टात्=ऊपर (above, further on).

ऋते=विना (Without, except), ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः

एकदा=एक समय में (once upon a time).

एकपदे=अकस्मात्; अयमेकपदे तया वियोग उपनतः ।

एव=केवल (only, alone); स एव मयाहूतः; (२) वही (the same) तदेव एअयटीवमन् ।

एवम्=इत्थम्, एवं कुरु ।

कथम्=(१) किसी प्रकार; कथमात्मानं विनोदयामि । (२) विस्मय (surprise); कथं मामेवोद्दिशति ।

कथमपि=कठिनता से (somehow, with great difficulty); कथमप्युत्थाय ।

किंचित्-ईषत् (a little, somewhat); किंचिद्विहस्यार्थपति वमावे ।

किम्=(१) क्यों; तन्नैव किं न चपले प्रलयं गतासि ।

(२) निन्दा; स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम् ।

(३) कितना अधिक (how much more), कितना न्यून (how much less), उ, उत वा पुनः के संयोग से; एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ।

किमुत=या (whether-or), किमुत रज्जुः किमुत सर्पः ।

किल=निश्चयसे (verily, indeed); मत्यूहः सर्वतिर्यगनामुत्थापः प्रथमः किल ।

कुतः=कहाँ से; ईदृग्विनोदः कुतः ।

कृतम्=निवारणार्थ (Enough, no more) कृतं सन्देहेन ।

कृते=लिये (for the sake of); राज्यस्य कृते ।

केवलम्=(merely, soley,) केवलमिदमेव पृच्छामि ।

न केवलम्—अपि (तु)=(not only—but); न केवलं यो
तोऽपमाद्रते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक्।

क=(१) कहां, क्वास्तेऽसौ महापापः। (२) अन्तर, भेद
(great difference, incongruity); तपः क वत्से क च
वकं वपुः।

खलु=(१) निश्चय (certainly); न खल्वनिर्जित्य
हं कृती भवान्। (२) निवारणार्थ (prohibition)
तु कृत्वा।

च=और (and); यह वाक्य के आदि में नहीं प्रयुक्त हो
कता।

चिरम् चिरस्य, चिराय=चिर काल तक (for a long
time); चिरस्य भूतले धावति।

चिरात्, चिरेण=चिरकाल पीछे (after a long time);
दा चिरेण नयनाभिमुखीबभूव।

चेत्=यदि; लोभश्चेदगुणेन किम्।

जातु=कभी (ever); न जातु कामः कामानामुप-
गेन शाम्यति।

झटिति=शीघ्र।

तत्=(१) इसलिये; राजपुत्रा वयं तद्विग्रहं श्रोतुं नः
तूहलमस्ति। (२) तब (then, in that case); यदि ते
हरकुतूहलं तत्कथयामि।

ततः=(१) अनन्तर (afterwards); ततस्तेनोक्तम्।
(२) वहां से (thence); ततो ह्यमृतं प्राप्यते।
(३) इस कारण (therefore); यतेविद्वांस्ततो मान्यः॥
ततस्ततः=फिर क्या (what next). ततः किम्॥

तथा=(१) इस प्रकार (so); तथा मां वंचयित्वा।
(२) स्वीकार (yes); तथेति निष्क्रान्तः।

तथापि=तोभी (nevertheless,yet); यद्यपि दुष्प्र चरितं तथापिदं न क्षन्तव्य ।

तथाहि=उदाहरणार्थ (for instance); तथाहि सत्यासन् परार्थफला गुणाः ।

तदा, तदानीम्=तब। तदा स निष्क्रान्तः.

तावत्=(१) सब से पूर्व (first of all); इतस्तावत् गम्यताम् । (२) अन्तरे (in the meanwhile धैर्यमवलम्बस्व, अहन्तावत् राजाज्ञया सर्वमेव कार्यं साधयामि ।

तु=परन्तु (but); अहन्तु नापारयं तमवलोकयितुम्
तूर्णम्, त्वरितम्=शीघ्र ;

दिवा=दिन में (in the day-time)

दिष्ट्या=भाग्य से (fortunately); दिष्ट्या महाराजो विजयेन वर्धते।

दूरम्, दूरात् दूरे, दूरेण=दूर । दूरमपसर।

द्राक्, द्रुतम्=शीघ्र । द्रुतं तं प्रवेशय ।

धिक् निन्दा (shame, fie), धिक् त्वाम् ।

न, नहि, नो=नहीं (a negative particle).

नक्तम्=रात को (by night); नक्तंचरः ।

ननु=(१) निश्चय से (certainly); न नन्वयं दोषः ।
(२) वितर्क (introducing an objection); ननु म नान्येव वृश्चिकादिशरीराणि गोमयादीनां कार्याणीति उच्यं

नमस्=नमस्कार; नमः परमात्मने ।

नाना=(१) manifold, various; नानाविधा जनाः ।
(२) बिना; नाना नारीं निष्फला लोकयात्रा ।

नाम=(१) नाम वाला (by name, named); तस्

ग्रणो नाम मित्रमासीत्। (२) निश्चय से (indeed); मया जितम्। (३) कदाचित् (probably, perhaps); ष्यति युद्धं नाम।

निकषा=समीप; लंकां निकषा रावणं हनिष्यति।

नितान्तम्=अधिक (exceedingly); नितान्तं रुदतः।

नित्यम्=always; नित्यं स्नात्वा भुञ्जीत।

नीचैः=नीचे; नीचैर्गच्छति।

नु=संशय (doubt); स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु।

नूनम्=निश्चय से; नूनं मन्ये न दोषस्तव।

परतः, परस्तात्=परे (beyond, after); ततः परतो नुरमरत्वम्।

परम्=(१) परे (after); कालमात्परं मृतः।
(१) अधिक (very much); परं दुःखितोऽस्मि।
(२) परन्तु (but); सर्वे शास्त्रपारगाः परं बुद्धिरहिताः।

परश्व=the day after to-morrow, अद्य, श्वो वा श्वो वा सर्वं भविष्यति।

परारि=the year before last; परारि गतः पिता।

परितः=चारों ओर (all round); परितः पतन्ति दुष्कृतं पदः।

परुत्=last year; परुत् कन्या संजाता।

परेद्यवि, परेद्युः=(the other day); पुत्रो जातः परेद्यवि।

पश्चात्=पीछे; पश्चाद्गच्छति। लक्ष्मी पुरा बुद्धिमती पश्चात्॥

पुनः=फिर; पुनः पठ।

पुरस्, पुरतः, पुरस्तात्=आगे (before),

पुरा=पूर्वकाल में (formerly); आसीत्पुरा रावणो नाम राक्षसः।

पूर्वम् = before: मासात्पूर्वम्। पूर्वं दृष्टो मयायम्।

पूर्वेद्युः = on the former day.

पृथक् = अलग (separately, severally); [illegible] पृथक् पृथक्।

प्रत्युत = on the contrary, rather; नायं [illegible] महाप्रसादः।

प्रभृति = से, from, since; शैशवात्प्रभृति।

प्रातः = in the morning. प्रातरुत्थातव्यम्।

प्रायः, प्रायशः, प्रायेण = generally, as a rule; [illegible] गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापदः।

बहिः = बाहिर (out of, outside); ग्रामाद्बहिर्निर्गतः [illegible]

बहुशः = बहुतबार (repeatedly, abundantly).

भृशम् = अतीव: भृशं ताडितः।

मनाक् = किञ्चित् (a little); मनाग्विहस्य [illegible]।

मा, मास्म = न: मा भैषीः; [illegible] मास्म [illegible]।

मिथः = परस्पर (mutually); [illegible] मिथः [illegible]।

मिथ्या = (१) असत्य: मिथ्योक्तं त्वया। (२) [illegible] (in vain): मिथ्यैव श्रमः।

मुधा = मिथ्या।

मुहुः = पुनः। मृषा = [illegible]

यत् = (१) क्योंकि (because); किं शेषस्य भरव्यथा [illegible] [illegible] न [illegible] यत्। (२) कि (that); किं [illegible] [illegible] [illegible]।

यस्मात् = (१) क्योंकि (because); [illegible] [illegible] [illegible] यत्। (२) जिस से (whom, from whom); [illegible]।

यथा=(१) जैसे (as, just as); यथाज्ञापयति देवः।

(२) ता कि (so that) त्वं दर्शय तं चौरसिंहं यथा व्यापादयामि।

यथा–तथा=(१) जैसा–वैसा (as–so); यथा वृक्षस्तथा फलम्।

(२) कि (so—that); तथा त्वरा विधेया यथैतत्कार्यमचिरेण निष्पद्येत। (३) क्योंकि (since-therefore, because-so); यथायं प्रचण्डो नभस्वांस्तथा तर्कयामि आगतः पक्षिराजः। (४) उतना-जितना (as much as, so much-as); न तथा बाधते शीतं यथा बाधति बाधते।

यथा यथा-तथा तथा=ज्यों ज्यों-त्यों त्यों (the more-the more, the less-the less); यथा यथा यौवनमतिचक्राम तथा तथा महानवर्धतास्य सन्तापः; यथा यथा मृतपुत्रं न चिन्तयिष्यसि तथा तथा तव दुःखं शममेष्यति।

यदा=(१) जब (when); यदा सर्वे गमिष्यन्ति तदा किं करिष्यसि। (२) जब कभी (whenever); यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

यदि=if; शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्।

यद्यपि=although; यद्यपि एते न पश्यन्ति।

यावत्=(१) पर्यन्त (as far as, up to); गृहं यावदनुसरति।

(२) अभी (just); तद्यावद्गृहिणीमाहूय संगीतकमनुतिष्ठामि।

यावत्—तावत्=(१) जब तक—तब तक (so long—as, as long—as) यावद्राजपुत्रो मयि विन्यस्तः तावदहं प्रजानुरक्षाः करिष्यामि, (२) जब तक, पर्यन्त (till); सूत, तावद्रथं स्थापय यावदवतरामि।

(१) यद—when—then; यावदसौ पाण्य ... गिरीशं तं सायकेनायतेनाकिरो ईशः ।

युगपत्=एक ही काल में (at the same time) युगपदाहूताः सर्वमित्रोदासीनाः ।

येन=(१) कि, ताकि (that, so that); तस्य ... प्रजामि येन विश्वस्तो भवति । (२) क्यों (why, wherefore); शृणु येन न दृश्यन्ते नराधिपाः ।

रे=A vocative particle, रे रे चातक, शृणु ।

वरं—न=better—than, वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानां सुपगमः । वरं मौनं कार्यं नच वचनमुक्तं यदनृतम् ।

वा=(१) अथवा (or); रामो गोविन्दो वा गच्छतु । (२) विकल्प से (optionally; except) ... विना दयाग्निः; विना वातं वृक्षः पतितः ।

वृथा, देखो मिथ्या; वृथा वदसि; वृथा ते श्रमः ।

वै=indeed; व्यासो वै धर्मज्ञः ।

शनैः=slowly, gently. धर्मं संचिनुयाच्छनैः ।

शश्वत्=(ever, perpetually). शश्वत्कल्याणं माचरेत्

श्वस्=कल, (to-morrow); श्वो गन्ता कुमारः ।

सकृत्=एकबार (once); सकृत्कन्या प्रदीयते ।

सततम्, संततम्=सदा (always, constantly).

सदा=always; धनं सदा यच्छति याचकेभ्यः ।

सद्यस्=शीघ्र(instantly, at once) सद्यो हतः समुत्तस्थं

सपदि=शीघ्र । सपदिकृतं कर्म सुखकरं भवति ।

समक्षम्=सामने (in the presence, before one's eyes

समम्=(१) युगपत् (at the same time); समं ... हयं तेन । (२) साथ (with, together with

हरिणीभिः समं मिथस्त्याति।

समन्ततस्, समन्तात्=परितः (all around).

सम्प्रति=अधुना।

सम्यक्=(१) भले प्रकार (well, properly); सम्यगयमाह।
(२) पूर्णता से (wholly, completely); सम्यगन्धोऽसौ।

सर्वतः=परितः।

सर्वथा=सब प्रकार से (in all ways, by all means).

सर्वदा=always.

सह=साथ, शशिना सह याति कौमुदी।

सहसा=अचानक, अविवेक से (suddenly, rashly).
सहसा विदधीत न क्रियाम्। पुष्पं सहसा पपात।

साकम्=सह।

साक्षात्=सम्मुख (visibly); साक्षात्कार।

साम्प्रतम्=सम्प्रति।

सायम्=In the evening.

सार्धम्=सह।

सुष्ठु=भलेप्रकार (well, excellently); सुष्ठु खल्विदमुच्यते

स्थाने=(१) यथोचित (Properly, justly); स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यति। (२) instead of; हर्षस्थाने [illegible]।

चतुर्दशः पाठः ।

विशेषण ।

१२०—दो पुरुष या पदार्थों में से यदि एक [illegible] गुण की अपेक्षा न्यून या अधिक हों तो वहां तुलनावाचक वि[illegible] (comparative) का प्रयोग होगा ॥

१२१—दो से अधिक पुरुष या पदार्थों में यदि [illegible] गुण सब की अपेक्षा उत्तम हों तो वहां अतिशयवाचक ([illegible] orlative) का प्रयोग होता है ॥

१२२—प्रायः विशेषण के अन्त में 'तर' लगा कर तु[illegible] चक बनता है और 'तम' लगाने से अतिशयवाचक [illegible] ।यथा—लघुतरः, लघुतमः । तस्मात् अयं वृक्षः लघुतर[illegible] लघुतमः अयं वृक्षः ॥

१२३—उपसर्ग (preposition), संज्ञा (noun) और [illegible] अव्ययों के अन्त में भी तर और तम लगाये जाते हैं ॥ यथा उत्+तर=उत्तरः, उत्+तम=उत्तमः, अति+तर=अतितर[illegible] तम=अतितमः, पाचक+तर=पाचकतरः, पाचक+तम=[illegible] उच्चैस्+तर=उच्चैस्तरः, उच्चैस्तमः ॥

१२४—क्रिया और अव्ययों के भी अन्त में इन[illegible] तराम् और तमाम् लग जाते हैं ॥ यथा—पच[illegible] पचतितमाम्, उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम्, किंतराम्, सुतरा[illegible]

१२५—जब अव्ययों के अन्त में 'तर' या 'तम' लगाये [illegible] हैं तो वे विशेषण बन जाते हैं और यदि तराम् वा तमाम् [illegible] दिये जावें तो क्रियाविशेषण (adverb) बन जाते हैं ॥ यथा [illegible] उच्चैस्तरा (higher), उच्चैस्तराम् (more highly) ॥

१२६—केवल गुणवाचक विशेषणों (adjectives of qua-) के अन्त में तुलना (comparative) में 'ईयस्' और शय (superlative) में 'इष्ठ' लगाये जाते हैं ॥

१२७—'ईयस्' और 'इष्ठ' के पहिले शब्द के अन्त के स्वर और यदि शब्द के अन्त में व्यंजन हो तो उस व्यंजन और से पहिले स्वर दोनों का लोप हो जाता है ॥ यथा —लघु+ स्=लघीयस्, * लघु+इष्ठ=लघिष्ठ, महत्+ईयस्=महीयस्, त्+इष्ठ=महिष्ठ, बलिन्+ईयस्=बलीयस्, बलिन्+इष्ठ=बलिष्ठ ॥

१२८—ईयस् और इष्ठ लगाने से कुछ शब्दों में विशेष वर्तन हो जाते हैं ॥

१२९—ईयस् और इष्ठ से पहिले पृथु, मृदु, भृश, दृढ़ र परिवृढ शब्दों में 'ऋ' का 'र' हो जायेगा ॥ यथा— +ईयस्=प्रथु+ईयस्=प्रथीयस् (१२७), प्रथिष्ठ, म्रदीयस् म्रदिष्ठ ॥

पंचदशः पाठः ।

तद्धित-प्रत्यय (Nominal affixes)

१३१-संस्कृत में (क्रिया से अन्य) भिन्न २ शब्द बनाने लिये जो नाम या धातु के आगे प्रत्यय (affixes) लगाये जाते हैं, उन्हें दो भागों में बांटा गया है * कृत् और 'तद्धित'॥

१३२-जिन प्रत्ययों को धातु से अन्य शब्दों के आगे लगाकर इन से अन्य नाम या अव्यय बनाये जाते हैं, उन्हें 'तद्धित' प्रत्यय कहते हैं और जो शब्द 'तद्धित' प्रत्यय और 'शब्द' के योग से बनाये जाते हैं उन्हें 'तद्धितान्त' (Nominal derivatives) कहते हैं ॥ यथा-दाशरथिः, वैयाकरणः, माधुर्यम् ॥

तद्धितान्त (Nominal Derivatives).

१३३-'अ' 'य' 'इक' 'एय' और 'त्य' आदि प्रत्ययों के पूर्व शब्द के पहिले स्वर में वृद्धि हो जाती है ॥ यथा-वसुदेव+अ=वासुदेवः, दशरथ+इ=दाशरथिः ॥

१३४-किसी प्रत्यय के आदि 'स्वर' या 'य' से पूर्व शब्द के अन्तिम—

(क) 'अ,' 'आ,' 'इ,' 'ई,' का लोप होता है ॥ यथा-सुजन+य=सौजन्यम्; गङ्गा+एय=गाङ्गेयः; दिति+य=दैत्यः ॥

(ख) 'उ,' 'ऊ,' को गुण होता है ॥ यदु+अ=यादवः ॥

(ग) 'ओ,' या 'औ' को 'अव्' या 'आव्' होता है यदि परे य हो ॥ यथा-मधु+य=माधव्यः ॥

१३५-समस्त (Compounded) शब्दों में कभी २ दोनों

* इनमें कृत्प्रत्यय उत्तरार्द्ध में दिये हैं ॥

शब्दों के प्रथम स्वर में वृद्धि हो आती है ॥ यथा—सुहृद्—सौहार्दम्; सुभग—सौभाग्यम्; अग्निमरुत्—आग्निमारुतम् ॥

१३६—यदि शब्द में प्रथम स्वर से पूर्व किसी उपसर्ग का 'य' या 'व' हो तो वृद्ध करने से पहिले ही 'य' को 'इय' और 'व' को 'उव' होता है ॥ यथा—व्याकरण+अ=व्+इय्+आकरण+अ=वियाकरण=वैयाकरण; न्याय+इक=न्+इय्+आय+इक=नियायिक=नैयायिकः, स्वर+अ=सौवरः ॥

१३७—शब्द के अन्त के 'न्' का लोप होता है, यदि कोई प्रत्यय परे हो ॥ यथा—युवन्+त्व=युवत्वम्, राजन्+क=राजकम् ॥

१३८—यकारादि या स्वरादि प्रत्यय परे हो तो शब्द के अन्त के 'न्' और 'उपधा स्वर' दोनों का लोप होता है ॥ यथा—आत्मन्+य=आत्म्यम्, आत्मन्+ईय=आत्मीयम् ॥

अ—सगरस्य अपत्यं (पुत्रः)=सागरः, पृथा—पार्थः—रघु=राघवः, पंचालानां स्वामी=पांचालः, व्याकरणमधीते=वैयाकरणः, मुनेः भावः (होना) मौनम्; यौवनम्, सौहार्दम्, देवस्य अयं=दैवः, ग्रैष्मः; नैशः; काकानां समूहः=काकम्; बाकम्, मायूरम् ॥

आमह—पितुः पिता=पितामहः; मातामहः ॥

आयन—दक्षस्यापत्यम्=दाक्षायणः, गार्ग्यायणः, रामनधिकृत्य कृतम्=रामायणम् ॥

इ—दक्षस्य अपत्यम्=दाक्षिः; दाशरथिः, वैयासकिः ॥

इक—तर्कम् अधीते—वेत्ति वा=तार्किकः, नैयायिकः, कायेन कृतम्, कायिकम्, मानसिकम्, वाचनिकम्; मासेन दीयते=मासिकम्; पाक्षिकम्; धर्मं चरति=धार्मिकः; नावा तरति=नाविकः, शकटेन चरति शाकटिकः, पथिकः, अस्ति

अनुज्ञ ॥

...स्य भावः = गौरवम्, ...रवम्, अभावम्, मानुष्यम्,
।

(१) भाव बेशा बताने के लिये यथा–मनुष्यस्य भावः =
...त्व, ...ता, मनुष्यत्व, गुरुत्व, गुरुता । (२) 'समूह'
... यथा–ग्रामाणां समूहः = ग्रामता, जनता, बन्धुता ॥
अन्येन प्रकारेण = अन्यथा, उभयथा, सर्वथा ।
...का विचार = एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, शतधा दि
...मादौ भवः = आदिम, मध्यम ॥
...पुरुषस्य विकारः = पुरुषमयः दारुणा निर्मित =
...धूमेन व्याप्तम्–धूममयम् ।
... ...–...र, ...परायां गतु = ...वत् ।
...र = ...र–...र, ...त्ते ...हे ॥

मत्

–'नाम' के अन्त में '...' (possession) अर्थ में
...जाता है ॥ यथा–... = ...र, ...,
...॥

वत्

–(क) परन्तु यदि 'नाम' के 'अन्त' या 'उपधा' में
...या दीर्घ 'अ' हो तो 'मत्' की जगह 'वत्' हो
... यथा–विद्यावत्, लक्ष्मीवत्, यशस्वत्, भास्वत्,

...प्रथम खण्ड, पृष्ठ ६३
...मतोऽयवादिभ्यः ।

दृश-श

१४०—दृश (पुं०,न०स्त्री०), दृश (पुं०न०), दृशी (स्त्री० किसी सर्वनाम के अन्त में 'जैसा' (like) अर्थ में लगाये जा हैं, सर्वनाम के अन्तिम वर्ण को 'आ' होजाता है, परन्तु 'इद को 'ई', 'किम्' को 'की', युष्मद् को 'त्वा' और अस्मद् को 'मा हो जाते हैं। यथा - तादृक-तादृशः-शम्-शी, मादृक-मादृश त्वादृक्-त्वादृशः, मयादृक्-मयादृशः, यादृक्-यादृशः, कीदृक् कीदृशः ईदृक-ईदृशः ॥

च्वि ।

१४१ —अभूततद्भावे च्वि ॥ 'कृ' 'भू' या 'अस्' धातु की क्रिया या अन्य कृदन्त रूपों से पहिले किसी 'नाम' या 'अव्यय' से परे 'सदृश बनाना' (to make like) या 'सदृश होना' (to become like) के अर्थ में च्वि प्रत्यय लगाया जाता है फिर उस का लोप हो जाता है ॥

१४२-नाम के अन्त में यदि—

(क) 'अ' वा 'आ' हो तो उसे 'ई' हो जाता है।

(ख) यदि 'इ' या 'उ' हो तो उसे दीर्घ हो जाता है।

(ग) 'ऋ' हो तो उसे 'री' हो जाता है।

(घ) नाम के अन्तिम 'न्' और 'मनस' 'अरुस्' 'चक्षुस्' 'चेतस्' 'रहस्' और 'रजस्' के अन्तिम 'स्' का लोप होजायगा यथा-अधनं धनं करोति=धनी करोति, अपुत्रं पुत्रं करोति=पुत्री करोति, अगङ्गा गङ्गा भवति=गङ्गीभवति, धनीभवति, प्रस्वीकरोति, स्वीकृतम्, शुचीभूतम्, मात्रीकरोति, पटूभवनम्, दिवाभू-ता, विधिवीभूतम्, चक्षूकृत्य, चेतीकृत्य, उन्मनीभवति ॥

(क) अस्य च्वौ ॥ (ख) च्वौ च ॥ (ग) रीङृतः ॥
(घ) अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च ॥

[illegible] सात् [illegible]
, जब सकल परिणाम (complete change) हो ॥
[illegible]सात् भवति (is completely changed to
भस्मसात्करोति (completely reduces to ashes),
पद्यते (जलीभवति) लवणम् ॥

EXERCISE XI.

[illegible]हाविद्वानपि रावणः
[illegible]ऽपहरणे महादोष-
[illegible]िति तस्य नास्ति-
कतैव प्रकाशते ॥
[illegible]समुदाये वाचालता

[illegible]रेण विदो गाङ्गेय
[illegible] सुतो युधिष्ठिराया-
[illegible]पदेशांश्चकार ॥
[illegible]वसोऽसौ विनातपत्रं
[illegible] मा बहिर्गच्छ ॥
[illegible]यिकाः, वार्षिकाः,
[illegible]श्च सुहृतयः तथा
[illegible]वे ॥
[illegible]चित् दैनिकं, तथा
अन्ये पाक्षिकं बहु-

वश्च मासिकं वेतनं यच्छन्ति ॥
दुःखं त्रिविधं आध्यात्मिकम्,
आधिदैविकम्, आधिभौतिकञ्च ॥
एकेनापि खलेन महाननर्थः
संभावितुं शक्यः किमुत खलिन्यः
कश्चिदध्वनीन आतपेन क्रान्तः
पथि वृक्षच्छायायां विश्राम्यति।
मद्यं सर्वथा त्याज्यम् ॥
धूममयमिदं गृहं तदत्र निवासो
नोचितः ॥
प्रियतमस्य पुण्डरीकस्य मरणेन
सशोकया महाश्वेतया तिर-
स्कृता विषयाः, दूरीकृतो बन्धु-
जनोऽङ्गीकृतमरण्येऽवस्थानम् ॥
तां तजनां धात्रीभावेन कल्प-
यामास ॥

[illegible]वनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता ।
[illegible]कमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥
[illegible] निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या ॥

शब्दों में जो सम्बन्ध होते हैं वह कई प्रकार के होते हैं, अतः सम्बन्ध-भेद के अनुसार समासों के पृथक् २ विभाग हैं जिन में ये मुख्य हैं—द्वन्द्वसमास (Copulative compounds), तत्पुरुषसमास (Determinative compounds), कर्मधारयसमास (Appositional compounds), द्विगुसमास (Numeral compounds.), बहुव्रीहि-समास (Relative or Attributive compounds), अव्ययीभावसमास (Indeclinable or Adverbial compounds).

१४४—जब शब्दों को मिलाया जाये तो प्रत्येक शब्द के अन्त में जो विभक्ति असमस्त दशा में हो उसका समास में लोप हो जाता है। फिर समस्त पद के अन्त में उचित विभक्ति लगाई जाती है ॥ यथा—रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ, पीतानि अम्बराणि यस्य स पीताम्बरः ॥

१४५—किसी प्रत्यय के स्वर के पूर्व यदि अ, आ, इ वा ई हो तो अ आदि का लोप हो जाता है ॥ यथा—सुगन्ध+इ = सुगन्धिः, सुमेधा+अस् = सुमेधाः, उपगिरि+अ = उपगिरम् ॥

१४६—समास के मध्य में यदि किसी शब्दों के अन्त में न् हो तो उस 'न्' का लोप हो जाता है ॥ यथा—राजन्+पुत्रः = राजपुत्रः ॥

१. द्वन्द्व-समास (Copulative).

१४७—चार्थे द्वन्द्वः ॥ द्वन्द्व समास वह है जो ऐसे दो अथवा दो से अधिक शब्दों में हो जिन का सम्बन्ध 'च' (and) से प्रकट होता है ॥ यथा—हरिश्च हरश्च हरिहरौ; रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च = रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः; देवाश्च गन्धर्वाश्च मानुषाश्च उरगाश्च राक्षसाश्च = देवगन्धर्वमानुषोरगराक्षसाः ॥

जाये जाय, तो समस्तपद द्विवचनान्त होता है ॥

१४९-(ख) यदि शब्द दो से अधिक हों, अथवा भिन्न वचन हों तो बहुवचनान्त होता है ॥

१५०-(ग) परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ॥ जो अन्त के शब्द लिङ्ग हो वही समस्तपद का भी लिङ्ग होता है ॥ यथा-च कुशश्च=लवकुशौ: पार्वती च परमेश्वरश्च = पार्वतीपर-रौ, हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च=हेमन्तशिशिरवसन्ताः ।

१५१-(घ) आनङृतो द्वन्द्वे ॥ द्वन्द्वसमास में यदि एक ऋ-न्त शब्द जो विद्यासम्बन्ध या योनिसम्बन्ध (blood-ationship) का वाचक हो, किसी अन्य ऋकारान्त या 'पुत्र' के पूर्व स्थित हो, तो उस पूर्वपद के 'ऋ' के स्थान में 'आ' जाता है ॥ यथा-होता च पोता च=होतापोतारौ, माता च ॥ च=मातापितरौ, पिता च पुत्रश्च=पितापुत्रौ ।

१५२-जिस द्वन्द्व समास से किसी समुदायविशेष अर्थात् हार (a complex idea or an aggregate) का बोध उस को समाहारद्वन्द्व समास कहते हैं, और यह सर्वदा सक लिङ्ग और एकवचन में प्रयुक्त होता है, समाहारद्वन्द्व शब्दों में सदा होता है जिन के नीचे लिखे अर्थ हों—

(१) द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् ॥ जीवों के अङ्ग, सेना विभाग,

(२) जातिरप्राणिनाम् ॥ निर्जीव द्रव्य ।

(३) क्षुद्रजन्तवः ॥ क्षुद्रजन्तु (कीटादि) ॥

(४) येषाञ्च विरोधः शाश्वतिकः ॥ वह पशु जिन में सहज र हो, इत्यादि ॥ यथा-पाणी च पादौ च एषां समाहारः=पा-

पाणिपादम्, दन्ताश्च ओष्ठश्च एषां समाहारः=दन्तोष्ठम्, रथिकाश्च अश्वारोहाश्च एषां समाहारः=रथिकाश्वारोहम्, यूकाश्च लिक्षाश्च एषां समाहारः=यूकालिक्षम्, अहिश्च नकुलश्च अनयोः समाहारः=अहिनकुलम्, उलूकाश्च काकाश्च एषां समाहारः=काकोलूकम् ॥

१५३–द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे ॥ जिस द्वन्द्व में यदि अन्तिम शब्द के अन्त में चवर्ग का वर्ण, द, ष या ह हो तो उसके आगे 'अ' लगाया जाता है ॥ यथा–वाक् च त्वक् च=वाक्त्वचम्, त्वक् च स्रक् च=त्वक्स्रजम्, शमी च दृषद् च=शमीदृषदम् ॥

२. तत्पुरुष (Determinative)

१५४–तत्पुरुषसमास ऐसे दो पदों में होता है जिनमें से पहिला पद दूसरे पद के अर्थ की व्यवस्था अथवा निर्धारण करता है ॥ यथा–राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः इसमें दूसरे पद 'पुरुष' से पुरुषमात्र का बोध होता है परन्तु पूर्वपद 'राज्ञः' के साथ संयोग से राजा के पुरुष का ही बोध होता है और किसी का नहीं ॥

१५५–तत्पुरुष समास के ऐसे सम्बन्ध को प्रकट करने के लिये पूर्वपद द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्ति में हो सकता है, अतः इन विभक्तियों के अनुसार इस समास का नाम भी द्वितीया-तत्पुरुष, तृतीया-तत्पुरुष इत्यादि होता है ॥

द्वितीया-तत्पुरुष ।

१५६–द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः । श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न, [illegible] इत्यादि

शब्दों के साथ [illegible] पूर्वपद का समास होता है।
इसमें [illegible] सोपम् [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] ॥

१४७ [illegible] पद किसी [illegible]
[illegible] के साथ [illegible] [illegible]
समास होता [illegible] ( ) का
वाचक हो [illegible] [illegible]
[illegible] ॥

तृतीया-तत्पुरुष।

१४८ - पूर्वसदृश[illegible] [illegible] ॥ पूर्व
सदृश, सम, ऊन, [illegible] मिश्र, [illegible]
इत्यादि शब्दों के साथ [illegible] पूर्वपद का समास होता है॥
यथा मासेन पूर्वः=मासपूर्वः। पित्रा सम:=पितृसमः, मासेन
ऊनम्=मासोनम्, [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible], गुडमिश्रः॥

१४९ - कर्तृकरणे कृता बहुलम्॥ कृदन्त पदों (verbal
derivatives) के साथ उसे तृतीयान्त पूर्वपदों का समास
होता है जिस से कर्त्ता या करण का बोध हो यथा [illegible]
हत:=[illegible], हरिणा त्रात:=हरित्रात, [illegible] छिन्न:=[illegible]
छिन्न:, [illegible] ॥

चतुर्थी-तत्पुरुष।

१५० - चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः॥ अर्थ, बलि,
हित, सुख, रक्षित आदि शब्दों के साथ चतुर्थ्यन्त पूर्वपद का
समास होता है॥ यथा - द्विजाय अयं=द्विजार्थः * (सूपः),

* यह समास [illegible] के विग्रहवाक्य (expound or analysis)

द्विजाय इदम्=द्विजार्थम् (जलम्), देवेभ्यो बलिः=देवबलिः, भूतेभ्यो हितं=भूतहितं गुरवे रक्षितम्=गुरुरक्षितम् ॥

१६१ - वह पद जो किसी साधनवस्तु अर्थात् प्रकृति का वाचक हो, ऐसे चतुर्थ्यन्त पूर्वपद के साथ समस्त होता है जो उसी साधनवस्तु से बनता हो ॥ यथा कुण्डलाय हिरण्यम्=कुण्डलाहिरण्यम्, यूपाय दारु=यूपदारु ॥

पञ्चमी-तत्पुरुष।

१६२ पञ्चमी भयेन ॥ भय, भीत, भीति, भी आदि शब्दों के साथ पञ्चम्यन्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा—चोरात् भयम्=चोरभयम्, व्याघ्रात् भीतः=व्याघ्रभीतः, व्याघ्रभीतिः ॥

१६३ - अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ॥ कुछ स्थानों में अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित, अपत्रस्त शब्दों के साथ पञ्चम्यन्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा सुखात् अपेतः=सुखापेतः, स्वर्गात् पतितः=स्वर्गपतितः, तरङ्गेभ्य अपत्रस्तः=तरङ्गापत्रस्तः।

षष्ठी-तत्पुरुष।

१६४ साधारणतया बहुत से शब्दों के साथ षष्ठ्यन्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा—राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः, नद्याःजलम्=नदीजलम्, शिवस्य मन्दिरम्=शिवमन्दिरम्, गुरोः उपदेशः=गुरूपदेशः।

में ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं जो समास में विद्यमान नहीं होते, अथवा जिन समासों का विग्रहवाक्य ठीक बनता ही नहीं, नित्य समास कहलाते हैं। 'द्विजाय अयं' द्विजार्थः' समास का विग्रहवाक्य है, इस में अर्थ शब्द विद्यमान नहीं, परन्तु समास, 'द्विजार्थः,' में है, अतः 'द्विजार्थः' समास है।

१६४—न निर्धारणे ॥ जब षष्ठी का अर्थ निर्धारण (specification) हो तो समास नहीं हो सकता ॥ यथा—नृणां द्विजः श्रेष्ठः, सतां षष्ठः, मनुष्याणां क्षत्रियः शूरः ॥

१६६—तृजकाभ्यां कर्तरि, याजकादिभिश्च ॥ याजक, पूजक, अध्यापक, होतृ, भर्तृ आदि शब्दों को छोड़ कर अन्य कर्त्रर्थ कृदन्त पदों का जिन के अन्त में 'अक' या 'तृ' हो समास नहीं होता ॥ यथा—अपां स्रष्टा, घटस्य कर्त्ता, ओदनस्य पाचकः, इत्यादि ऐसे ही रहते हैं । परन्तु, ब्राह्मणयाजकः, देवपूजकः, अग्निहोता, भूभर्ता, इत्यादि में समास हो जाता है ॥

१६७ - पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ॥ जब पूर्व, अपर, अधर, और उत्तर आदि के साथ षष्ठयन्त पद का समास हो तो पूर्वादि पहिले रक्खे जाते हैं ॥ परन्तु समस्तपद षष्ठ्यन्त-पद का एक देश (a part) होना चाहिये ॥

रात्राह्नाहाःपुंसि ॥ रात्रि को रात्र और अहन् को अन्ह हो जायगा और उनका प्रयोग पुंलिङ्ग में ही होगा ॥ यथा—पूर्वं कायस्य=पूर्वकायः, पूर्वं रात्रेः=पूर्वरात्रः, मध्यम् रात्रेः=मध्यरात्रः, पूर्वम् अन्हः=पूर्वाह्णः ।

सप्तमी-तत्पुरुष ।

१६८ - सप्तमीशौण्डैः, सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च ॥ शौण्ड, धूर्त, प्रवीण, पटु, पण्डित, कुशल, निपुण, चपल, सिद्ध, शुष्क, पक्व, आदि शब्दों के साथ सप्तम्यन्त पूर्वपद का समास होता है ॥ यथा—अक्षेषु शौण्डः=अक्षशौण्डः, वाचि पटुः=वाक्पटुः, सभापण्डितः, आतपशुष्कः, स्थाल्यां पक्वः=स्थालीपक्वः ॥

१६९—जब 'अधि' सप्तम्यन्त पूर्व पद के साथ समस्त हो तो अधि के आगे ईन प्रत्यय लगता है ॥ यथा—ईश्वरे अधि=

ईश्वराधीनः, दैवे अधि=दैवाधीनः राज्ञि अधि=राजाधीनः ॥

अलुक्-तत्पुरुष ।

१७० साधारणतया जिन पदों का समास होता है, उनकी विभक्ति का लोप हो जाता है, फिर केवल समास के अन्त में विभक्ति लगती है परन्तु कुछ ऐसे भी समास हैं जिन के पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता । उन के मुख्य उदाहरण तृतीया से लेकर यथाक्रम यह हैं:

तृतीया ओजसाकृतम्, अञ्जसाकृतम्, जनुषान्धः, पुंसानुजः, आत्मनातृतीयः, आत्मनापञ्चमः ।

चतुर्थी परस्मैपदम्, परस्मैभाषा, आत्मनेपदम् ।

पञ्चमी स्तोकान्मुक्तः, अल्पान्मुक्तः, अन्तिकादागतः, दूरादागतः, कृच्छ्रादागतः ।

षष्ठी चौरस्यकुलम्, देवानांप्रियः, वाचोयुक्तिः, पश्यतोहरः, दिवोदासः, दिवस्पतिः, वाचस्पतिः, शुनःशेपः, दास्याःपुत्रः ।

सप्तमी—गेहेशूरः, पात्रेकुशलः, युधिष्ठिरः, हृदिस्पृक्, कण्ठेकालः, स्तम्बेरमः, कर्णेजपः, खेचरः, पङ्केरुहम्, कुशेशयम्, जलेशयम्, सरसिजम्, शरदिजः ॥

नञ्-तत्पुरुष ।

१७१ नञ् ॥ नञ् अर्थात् न, जिस का अर्थ 'निषेध', 'नहीं' (negation) है, बहुत से पदों के साथ समस्त होता है, और इस समास को नञ्तत्पुरुष कहते हैं ।

नलोपो नञः ॥ समास में 'न' को व्यञ्जनों के पूर्व 'अ' हो जाता है ॥

॥ और स्वरों के पूर्व 'अन्' ॥

यथा—न ब्राह्मणः=अब्राह्मणः, न सत्=असत्, न अश्वः=अनश्वः।

३-कर्मधारयसमास

(Appositional compound)

१७२—'पर्वतः मेघ इव श्यामः' (पर्वत मेघ की तरह काला है) इस वाक्य में पर्वत की उपमा (comparison) मेघ से की गई है, इस से प्रकट है कि पर्वत भी श्याम है, और मेघ भी श्याम है और उनका जो साधारण गुण श्याम वर्ण है, वही उपमा का हेतु है, अतः ऐसे गुण को साधारण धर्म (common quality) कहते हैं, और जिस की उपमा की जाये उस को उपमेय (the object of comparison) कहते हैं, और जिस के द्वारा किसी की उपमा की जाए, उसे उपमान (the standard of comparison) कहते हैं॥ यथा—पर्वत यहां उपमेय है, और 'मेघ' उपमान है। एवं 'पुरुषः व्याघ्र इव शूरः' इस वाक्य में 'पुरुषः' उपमेय है 'व्याघ्रः' उपमान है, और 'शूरः' उपमेय और उपमान दोनों के साधारण धर्म को प्रकट करता है।

१७३—उपमानानि सामान्यवचनैः॥ वह पद जो उपमा में साधारण धर्म को प्रकट करते हैं, उपमानवाचक पूर्व पदों के साथ समस्त होते हैं। ऐसे समास को उपमानपूर्वपदकर्मधारय कहते हैं॥ यथा—घनइव श्यामः=घनश्यामः, हिममिव शिशिरम् =हिमशिशिरम्॥

१७४—उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे॥ उपमानवाचक पदों के साथ उपमेयवाचक पूर्वपदों का समास होता है, जिस को उपमानोत्तरपदकर्मधारय कहते हैं॥ यथा—पुरुषो व्याघ्र इव=पुरुषव्याघ्रः, मुखं कमलमिव=मुखकमलम्, करः पल्लव इव=करपल्लवः॥

१७५—विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ॥ बहुत से विशेष्यों का विशेषण पूर्वपदों के साथ समास होता है, जिससे विशेषणपूर्व पदकर्मधारय कहते हैं ॥ यथा—नीलमुत्पलम्=नीलोत्पलम्, कृष्णः सर्पः=कृष्णसर्पः, गभीरो नादः=गभीरनादः ॥

१७६—कु (अव्यय) का बहुत से शब्दों के साथ कर्मधारय समास होता है।

को कत्तत्पुरुषेऽचि ॥ स्वरादि शब्दों के पूर्व कु को कत् हो जाता है ॥ कुत्सितः पुरुषः=कुपुरुषः ; कुत्सितः पुत्रः=कुपुत्रः ; कुत्सितमन्नम्=कदन्नम् ; कुत्सितोऽश्वः=कदश्वः।

ईषदर्थे ॥ ईषत् (थोड़ा, छोटा) अर्थ में कु को 'का' होता है ॥ यथा—ईषज्जलं=काजलम्, ईषत् पुरुषः=कापुरुषः ॥

१७७—दो क्तान्त शब्दों (Past passive participle) का, जिन में से पहिला पहिले किये काम को, और दूसरा उसके पीछे किये कार्य को प्रकट करता है, कर्मधारय समास होता है, जब कि दोनों कार्य एक ही व्यक्ति ने किये हों ॥ यथा—आदौ गृहीतः पश्चान्मुक्तः=गृहीतमुक्तः ; आदौ सुप्तः पश्चादुत्थितः=सुप्तोत्थितः ; पीतप्रतिबद्धः, स्नातानुलिप्तः ॥

४-द्विगुसमास
(Numeral Compound).

१७८—संख्यापूर्वो द्विगुः, द्विगुरेकवचनम् ॥ जिस समास से समाहार (collection or aggregate) का बोध हो, और उसके पूर्व संख्यावाचक शब्द हो उसे द्विगु कहते हैं। द्विगु समास के अन्त में नपुंसकलिङ्ग और एकवचन प्रयुक्त होता है ॥ यथा—चतुर्णां युगानां समाहारः=चतुर्युगम्। त्रिभुवनम् ; त्रयाणां

थां समाहारः=त्रिपथम्; पञ्चानां राशीनां समाहारः=पञ्चराशम्; पञ्चपात्रम्; पञ्चगवम् ॥

१७९—अकारान्त द्विगु कभी कभी ईकारान्त (स्त्रीलिङ्ग) होजाता है ॥ यथा-त्रयाणां लोकानांसमाहारः =त्रिलोकी;सप्तानां शतानां समाहारः=सप्तशती; त्रिशती, शताब्दी; चतुष्पदी ॥

१८०—तद्धित प्रत्ययों के योग से भी द्विगु समास होता है ॥ यथा-षण्णां मातृणामपत्यम् षाण्मातुरः, द्वैमातुरः पञ्चभिः गोभिः क्रीतः=पञ्चगुः ॥

५-बहुव्रीहिसमास
(Attributive compound).

१८१—बहुव्रीहि समास उन दो या अधिक पदों का होता है जो मिल कर किसी अन्य पद का विशेषण हो जाते हैं, और जिनके विग्रहवाक्य में यत् सर्वनाम की प्रथमा से भिन्न कोई न कोई विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है ॥ यथा—पीतं अम्बरं यस्य सः=पीताम्बरः (हरिः); यहां 'पीत' और 'अम्बर' दोनों पद मिल कर, एक अन्य पद 'हरि,' का विशेषण हो गये हैं। कृतं कर्म येन सः कृतकर्मा; दत्तं धनं यस्मै स दत्तधनः वीराः पुरुषाः यस्मिन् स वीरपुरुषः (ग्रामः), चक्रं पाणौ यस्य सः चक्रपाणिः; चन्द्रस्य इव कान्तिः यस्य सः चन्द्रकान्तिः ॥

१८२—निषेधार्थक अव्यय, न (अ, अन्) और उपसर्गों के साथ शब्दों का बहुव्रीहि समास होता है ॥ यथा—उद्गतानि पर्णानि यस्य स उत्पर्णः, विगतं जीवितं यस्य स विजीवितः; निर्गतं धनं यस्य स निर्धनः, अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः अपुत्रः; अस्ति क्षीरं यस्याः सा अस्तिक्षीरा (गौः) (यहां 'अस्ति' अव्यय है) ॥

१८३ तेन सहेतितुल्ययोगे, वोपसर्जनस्य ॥ 'सह' अव्यय का तृतीयान्त शब्दों के साथ बहुव्रीहि समास होता है, और 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है ॥ यथा, पुत्रेण सह= सहपुत्रः वा सपुत्रः ॥

१८४ संख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये॥ अव्ययों, संख्यावाचक शब्दों, और आसन्न, अदूर, अधिक आदि शब्दों का संख्यावाचक शब्दों के साथ बहुव्रीहि समास होता है ॥

१८५ - अन्त्य पद के अन्त के स्वर का, और यदि उसके परे केवल व्यञ्जन हो तो उसका भी, लोप हो जाता है ॥

१८६ - तिविंशतेर्डिति ॥ विंशति के 'ति' का लोप हो जाता है ॥

१८७-त्र्युपाभ्यां चतुरोऽजिष्यते ॥ 'चतुर' के परे केवल 'अ' लगता है, लोप नहीं होता । 'चतुर' और गण में कोई विकार नहीं होता ॥ यथा-दशानां समीपे ये सन्ति ते उपदशाः (about ten), द्वौ वा त्रयो वा = द्वित्राः, द्वे वा त्रीणि वा = द्वित्राणि द्विः आवृत्ता दश = द्विदशाः (ten twice repeated); त्रिदशाः (thrice ten); विंशतेआसन्नाः = आसन्नविंशाः (nearly twenty); त्रिंशतः अदूराः = अदूरत्रिंशाः (not far from thirty); अधिकचत्वारिंशाः (more than forty); त्रयो वा चत्वारो वा = त्रिचतुराः, चतुर्णां समीपे ये सन्ति ते उपचतुराः, उपबहवः, उपगणाः ॥

१८८-नद्यृतश्च ॥ जब बहुव्रीहि समास के अन्त का शब्द ऋकारान्त या स्त्रीलिङ्ग वाचक ईकारान्त या ऊकारान्त हो, तो 'क' प्रत्यय अन्त में लगाया जाता है ॥ यथा-ईश्वरः कर्त्ता यस्य तत् ईश्वरकर्तृकं (जगत्); बहवो नद्यो यस्मिन् स बहुनदीकः [illegible]; रूपवती वधूः यस्य स रूपवद्वधूकः ॥

१८६-जब स्त्रीलिङ्ग वाचक ईकारान्त वा ऊकारान्त को उप आ उत् हो सकता हो तो 'क' नहीं लगता, परन्तु 'स्त्री' के परे 'क' लगता है ॥ यथा-सुष्टु धीः यस्य स सुधीः, परन्तु बहु स्त्रीकः, सस्त्रीकः ॥

१९०-उरःप्रभृतिभ्यःकप् ॥ बहुव्रीहि समास के अन्त में उरस् सर्पिस्, दधि, मधु, शालि (लीं), पुंस्, अनडुह , नौ, लक्ष्मी के परे भी 'क' लगता है ॥ यथा-व्यूढम् उरः यस्य स व्यूढोरस्कः (having an expanded chest); प्रियं सर्पिः यस्य स प्रिय-सर्पिष्कः (fond of ghee), एकपुंस्कः, द्विपुंस्कः, भिन्ननौकः ॥

१९१-आपोऽन्यतरस्याम् ॥ स्त्रीलिङ्ग वाचक आकारान्त शब्दों के अन्त में 'क' विकल्प से लगता है, और आ विकल्प से ह्रस्व हो जाता है जब 'क' परे हो ॥ यथा-बह्व्यः मालाः यस्य स बहुमालः, बहुमालकः-मालाकः ॥

१९२-गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ॥ बहुव्रीहि समास में उद् पूति, सु, सुरभि और उपमान-वाचक पदों से परे गन्ध को गंधि (१४k) हो जाता है ॥ यथा-उद्गतः गंधः यस्य स उद्गन्धिः पूतिगन्धिः, सुरभिगन्धिः, पद्मस्य इव गन्धो यस्य स पद्मगन्धिः ।

१९३-काम और मनस् शब्दों के साथ तुमुन् प्रत्ययान्त पद के समास होने से, तुमुन् का केवल 'तु' रह जाता है ॥ यथा-कर्तुं कामः यस्य सः कर्तुकामः, कर्तुमनाः, गन्तुमनाः, द्रष्टुकामः

६-अव्ययीभाव-समास

(Adverbial compounds).

१९४-अव्ययों और अन्य शब्दों का अव्ययीभाव समास होता है, और वह क्रियाविशेषण (Adverb) की तरह नपुंसक

हरौ = अधिहरि, विष्णोः पश्चात् = अनुविष्णु ।

१९५–अव्ययीभाव-समास में अन्त का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है । 'ए' या 'ऐ' को 'इ' और 'ओ' या 'औ' को 'उ' होता है ॥ यथा–गङ्गायाः समीपम्–उपगङ्गम्, गोः पश्चात्–अनुगु, नाव॒म् अतिक्रान्तं=अतिनु (जलम्) ।

१९६–अनश्च ॥ अन्त के न् का लोप होजाता है, यदि वह 'न्' नपुंसकलिङ्ग वाचक शब्द का हो तो लोप विकल्प से होता है ॥ यथा–राज्ञः समीपम् = उपराजम्, आत्मनि = अध्यात्मम्; उपचर्मम् वा उपचर्म ।

१९७–बहुत से व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त में 'अ' लगाया जाता है । यथा–शरदः समीपम्–उपशरदम्; दिशोर्मध्ये = अपदिशम्

१९८–प्रतिपरसमनुभ्योऽक्ष्णः ॥ अव्ययीभाव समास में पर, सम्, प्रति, अनु, के परे अक्षि को अक्ष हो जाता है । यथा–अक्ष्णः परं = परोक्षम् (निपातसिद्ध); समक्षम्; प्रत्यक्षम्; अन्वक्षम्

१९९–मर्यादा (limit exclusive) और अभिविधि (limit inclusive) के अर्थ में आ (आङ्) अव्यय का पञ्चम्यन्त पद के साथ अव्ययीभाव-समास विकल्प से होता है ॥ यथा-आमुक्ति वा आमुक्तेः (until final liberation) संसारः आमरणम्; आबालं, वा आ बालेभ्य हरिभक्तिः ।

उपपद-समास ।

२००–जब किसी सुबन्त पद (नाम) के पूर्व होने के कारण से ही कोई कृदन्त शब्द बनता है तो उस पद से मिले हुए कृदन्त को उपपद समास कहते हैं, क्योंकि जिस सुबन्त पद के पूर्व होने के कारण धातु में कृत् प्रत्यय होता है, उस को 'उपपद' कहा जाता है । यथा-कुम्भम् करोति इति कुम्भकारः प्रभाकरः

सूत्रकारः; मन्त्रकारः; निशाकरः; हितकरः; जलचरः; धनदः; पादपः द्विजः ॥

एकशेष-समास ।

२०१-(क) जब दो वा अधिक पद एक ही विभक्ति के और समान रूप के (अथवा भिन्न-रूप के परन्तु समान अर्थ के) समस्त हों तो उन में से एक ही शेष रह जाता है, अतः इस को एकशेष समास कहते हैं ।

पुमान् स्त्रिया ॥ जब पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के पद समस्त हों तो पुंलिङ्ग शेष रहता है ।

नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चान्यतरस्याम् ॥ यदि नपुंसकलिङ्ग का कोई पद साथ हो तो वही शेष रहता है । यथा–रामश्च रामश्च = रामौ; देवदत्त, देवदत्तश्च देवदत्तश्च = देवाः; हंसी च हंसश्च = हंसौ; शिवा च शिवश्च = शिवौ ।

२०२-(ख) त्यदादीनि सर्वैः नित्यम् ॥ जब त्यदादि सर्वनाम दूसरे शब्दों के साथ समस्त हों तो सर्वनाम शेष रहते हैं । यथा–सा च स च = तौ; तद् देवदत्तश्च = ते, देवदत्तश्च यज्ञदत्ता च तद् = तानि ।

भिन्न रूप शब्दों के और उदाहरण यह हैं ।

पिता मात्रा ॥ यथा–माता च पिता च = पितरौ (parents);

भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ॥ भ्राता च स्वसा च = भ्रातरौ; पुत्रश्च दुहिता च = पुत्रौ ॥

श्वशुरः श्वश्र्वा ॥ श्वश्रूश्च श्वशुरश्च = श्वशुरौ ॥

सर्वसमास-साधारण-विधिः ।

२०३–ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे ॥ पथिन् शब्द किसी समास के अन्त में हो तो उस को पथ हो जाता है । यथा-पथः समी-

पम्=उपपथम्, दक्षिणस्याः पन्थाः=दाक्षिणापथः, क्षेत्रस्य पन्थाः = क्षेत्रपथः, रम्यः पन्थाः अस्मिन्=रम्यपथम् ॥

२०४-(क) समास के अन्त में अप् हो तो उसके परे अ लग जाता है। यथा—विमला आपः अस्मिन्=विमलापम् ॥

(ख) द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् ॥ अप के अ को ई हो जाता है, यदि उसके पूर्व द्वि, अन्तर या कोई उपसर्ग हो यथा - द्वीपम्, अन्तरीपम्, प्रतीपम् ॥

२०५—राजाहःसखिभ्यष्टच् ॥ तत्पुरुष, कर्मधारय या द्विगु समास के अन्त में यदि राजन्, अहन् या सखि शब्द हो तो उस के परे अ लगाया जाता है और अ से पूर्व अन्तिम अन् या इ का लोप हो जाता है ॥ अङ्गराजः, महाराजः, राजसखः, त्रिसखम् ॥

२०६—आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः ॥ कर्मधारय या बहुव्रीहि समास में महत् को महा हो जाता है यदि वह समास के आदि में हो ॥ यथा महाराजः, महाबाहुः ॥

२०७ बहुव्रीहि समास के अन्त में यदि प्रजा या मेधा शब्द हो तो परे अस् लगाया जाता है और अस् के पूर्व आ का लोप हो जाता है (१५५) । यथा—सुमेधा + अस = सुमेधाः, दुष्प्रजा+अस = दुष्प्रजाः ॥

EXERCISE XII.

(क) यथैव मकूलाधिप- [illegible] मातुलापि [illegible]
जापतत् सर्पकोटरं [illegible] अतः यावच्छि[illegible]
फलानि दशिप ॥ भवति तावत्[illegible]
विश[illegible] रामलक्ष्मणौ कुम्भक- [illegible]
र्णमेघनादौ ॥ [illegible]
[illegible] ते [illegible] तत्र [illegible] ॥

आश्विनस्याद्ये नवरात्रे दुर्गाया महोत्सवः क्रियते ॥

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ ॥

असावैन्द्रजालिकः उपराज-स्य तस्य समक्षमेव प्रभूतमैन्द्र-जालं प्रदर्शितवान् ॥

उद्गन्धीदं कुसुमं न तावदनेन किञ्चिदपि प्रयोजनं साध्यम् ॥

आगमाधिपा धेनुः प्रत्यहमसौ ब्राह्मणेभ्यो यच्छति ॥

मध्याह्ने प्रभाकरतप्तातपतप्तः कश्चिद् द्विजस्तमेव पादप-माश्रितवान् ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते ।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥
तस्यां ब्राह्मणसभायां केचनानुपविष्टा ब्राह्मणा
उपस्थिता अन्ये तु सर्वे शब्दवर्णाः ।
रोगशोकपरीतापबन्धनव्यसनानि च ।
आत्मापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम् ॥
पाण्डवाश्च महात्मानो द्रौपदी च यशस्विनी ।
छलोपयासाः कौरव्य ययुः प्राङ्मुखास्ततः ॥

(४) इन में जो पद " " चिह्न में रखे हैं उन का समास बनाओ :—

आसीत् कश्चिद्राजा शूद्रकोनाम "यस्य शासनं प्रभुतानां नरपतीनां शिरोभिस्समभ्यर्चितं" मासीत् ॥

स "सुप्तस्य शयनस्य तले निपन्नं" विषधरमपश्यत् ॥

"भरतस्याग्रजः, कौशल्यायाः आनन्दस्य वर्धयिता, दशरथस्य 'पुत्रो'" रामः "सीतालक्ष्मणाभ्यां सह" वनं जगाम ॥

"नद्याः समीपे" यत्र बहवः वृक्षाः वर्तन्ते तत्र मां प्रतिपालय ॥

"वाचा, मनसा, कर्मणा" च मया न कदाचिदपि

पाठ' करते हैं।
ल्हाड़े से कटा हुआ' यह 'पथिकों के कष्टका कारण' रहा है॥
ात्रि के मध्य में' यह बालक जस की निद्रा खुल (भग्न) ती' है, 'दुग्धपान के लिये' ा है॥
री 'आंखों के सामने' यह ति और पत्नी ' 'राजा के

पास' अभियोग के लिये उपस्थित हुये॥
'गङ्गा के तट के समीप' 'ऋषियों का आश्रम' था जिस में 'विद्यार्थियों के समूह' वेद पढ़ते थे॥
यह 'धूर्त बालक' 'छात्रों के पुस्तक' चुरा कर बेच देता है।
यह जल 'हिम की तरह शीतल' है॥

शुद्धिपत्रम् (Errata)

पूर्वार्द्ध

	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	७	हस्त	हस्ती
	८	उद	उद्द
	२४	गु	गुण
	६	फैलाता	फैलता
	अन्तिम	मिर्नतेन	निर्मलेन
	२५	पता	पत्ता
	३	tike	like
	१५	तदृशि	तादृशि
	... ७	मधुलिड्ढीः	मधुलिड्ढः
	अन्तिम	प्रकाश	प्रकाशते
	...	प्रत्यक-	प्रत्यक-

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७६	१०	मयवाना	मद्यवाना
८४	११	न्स्यो-	न्येभ्यो-
८५	१	आर्मि-	अमि-
९१	५	दिशति मौ-	दिशती मा
९६	६	रज्जया पथानैमं	रज्ज्वा पथानैमं
१०७	१७	धिवना	धिधिना
११२	६	ज्ञ नमते	ज्ञानमूते
„	६	भूति आ-	प्रभूति-आ-

उत्तरार्द्ध

१	११	लट् और	लट्, लिट्
१६	२१	मच (मुञ्च)	मुच् (मुञ्च
×१७	१७	मध्यम	मध्यम
१७	२५	अमुञ्चध्यम्	अमुञ्चध्वम्
३०	७	उत्तन	उत्तम
३६	८	अचत	अचत्त
४५	१८	दन्वीत्	दन्वीत
४८	१७	तनुते	तनुपे
६२	१	'इ' जोड़ा	'इ' नहीं जो
६३	६	मथ्	कुथ्
११८	२२	ग्रुध	गुध
१२४	२२	+जिह	जिह
१२५	२	भ्रुमुत्सति	बुभुत्सति
१२६	५	भारतवर्षीयः	भारतवर्षीयाः
१४५	१	यच	यच्
१५१	७	भविष्यसि	भविष्यति

उत्तरार्द्धम्।

सप्तदशः पाठः।

धातु-प्रकरणम्।

…, स्था और गम् आदि धातु दश भागों में बांटे गये हैं। …क भाग को गण (Conjugation) कहते हैं उनके नाम … हैं :—

…भ्वादिगण, २ अदादिगण, ३ जुहोत्यादिगण, ४ दिवादि-… स्वादिगण, ६ तुदादिगण, ७ रुधादिगण, ८ तनादिगण, …दिगण, १० चुरादिगण।

…८-धातुओं के परे दस विभक्ति होती हैं, वे ये हैं-

…, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, …र लुङ्; इन में से लट्, लङ्, लुट्, लृट् और लुङ् यह ६ … Tenses) कहे जाते हैं; और लोट्, विधिलिङ्, आशी-…र लृङ् अर्थ (Moods) कहजाते हैं।

…क विभक्ति के दो भाग होते हैं, परस्मैपद और आत्म-… बहुत से धातु ऐसे हैं जिन के आगे केवल परस्मैपद

…जिस गण के पहिले जो धातु है उस के नाम से उस गण का …खा गया है। यथा-भ्वादिगण में पहिला धातु भू है, इसलिये …का नाम भ्वादि है। इसी तरह अदादिगण वह है जिस के पहिले … है और दिवादिगण वह है जिस के पहिले दिव् धातु है, इत्यादि।

प्रत्यय लगाये जाते हैं; उन्हें परस्मैपदी धातु कहते हैं। कुछ ऐसे ऐसे हैं जिन के आगे केवल आत्मनेपद प्रत्यय लगाये जाते हैं; उन्हें आत्मनेपदी धातु कहते हैं। और कई ऐसे भी हैं जिन के आगे दोनों प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें उभयपदी धातु कहते हैं। प्रत्येक भाग में तीन पुरुष होते हैं। यथा-उत्तम पुरुष (1st Person), मध्यम पुरुष (2nd Person) और प्रथम पुरुष (3rd Person)।

उत्तम पुरुष सदा अपने लिये प्रयुक्त होता है। यथा-अहम् गच्छामि, आवाम् गच्छावः, वयम् गच्छामः।

जो पुरुष सामने हो उस को सम्बोधन करके जो कुछ कहा जाता है, वहां मध्यमपुरुष आता है। यथा-त्वं पश्यसि, युवाम् पश्यथः, यूयम् पश्यथ।

जहां पर उत्तम या मध्यम पुरुष नहीं लगाये जा सकें, वहां प्रथम पुरुष रक्खा जाता है। यथा-स भवति, रामः पिबति।

प्रत्येक पुरुष के तीन वचन (number) हैं-
एकवचन (singular), द्विवचन (dual) और बहुवचन (plural).

२०१-इन विभक्तियों में से (क) लट्, लङ्, लोट् और विधिलिङ् को सार्वधातुक (Conjugational tenses) कहते हैं, क्योंकि इन विभक्तियों में भ्वादि और जुहोत्यादिगण के धातुओं से अन्य धातु और विभक्ति के मध्य में एक चिह्न (Conjugational sign) आ जाता है।

(ख) लृट्, लुट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, लिट् और लुङ् को आर्धधातुक (Non-conjugational tenses) कहते हैं।

सार्वधातुक ।

...ses { लट् (वर्त्तमान) Present / लङ् (अनद्यतन भूत) Imperfect } काल

...ds { लोट् (आज्ञा) Imperative / लिङ् (विधि) Potential } अर्थ

आर्धधातुक ।

...es { लुट् (अनद्यतन भविष्यत्) First future / लृट् (भविष्यत्) Second future / लिट् (परोक्ष-भूत) Perfect / लुङ् (भूत) Aorist } काल

...s { लिङ् (आशीः) Benedictive / लृङ् (सङ्केत) Conditional } अर्थ

गण-विकरण ।

	विकरण	गण	विकरण
	अ	जुहोत्यादि	—
...दि	य	स्वादि	नु
	अ	रुधादि	न
	अप	तनादि	उ
	—	क्र्यादि	ना

सार्वधातुक-प्रकरणम्
(Conjugational tenses

परस्मैपद।

लट् (Present tense).

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः
मध्यम पुरुष	सि	थस्	थ
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम
मध्यम पुरुष	हि	तम्	त
प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अम्	व	
मध्यम पुरुष	स्	तम्	
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पुरुष	याम्	याव	
मध्यम पुरुष	यास्	यातम्	
प्रथम पुरुष	यात्	याताम्	

भ्वादि-गण (1st Conjugation)

टि०—कर्तरि शप् ॥ कर्तृवाच्य (active voice) में भ्वादि के धातु और सार्वधातुक विभक्ति के मध्य में शप् (विकरण (conjugational sign) सदा आता है।

भू (होना, to be)

लट् (Present tense)

२११–वर्तमाने लट् ॥ वर्तमान काल में जो काम होता है या हो रहा है उस के लिये धातु के परे लट् की विभक्तियाँ लगाई जाती हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	भवामि १, २	भवावः	भवामः
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति ३

लोट् (Imperative Mood)

२१२–लोट् च ॥ आज्ञा, निमन्त्रण, प्रार्थना, उपदेश आदि अर्थों में धातु के परे लोट् की विभक्तियें लगाई जाती हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम
मध्यम पुरुष	भव ४	भवतम्	भवत
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु ३

१–सार्वधातुकार्धधातुकयोः ॥ इक्–अन्त धातु के अन्तिम इक् को गुण हो जाता है यदि परे सार्वधातुक वा आर्धधातुक विभक्ति हो।

२–अतो दीर्घो यञि ॥ विकरण का ह्रस्व अ दीर्घ हो जाता है, यदि परे यञ्–आदि सार्वधातुक विभक्ति हो। भू+मि=भू+अ+मि=भो+अ+मि=भव्+अ+मि (एचोऽयवायावः)=भवामि।

३–अतो गुणे ॥ विकरण के अ से परे यदि विभक्ति के आदि में अ हो तो दोनों के स्थान में एक अ हो जाता है। भू+अन्ति=भव्+अ+अन्ति=भवन्ति ॥

४–अतो हेः ॥ ह्रस्व अ से परे हि का लोप हो जाता है।

लङ् (Imperfect tense).

२१३-अनद्यतने लङ् ॥ अनद्यतनभूत अर्थ में धातु के परे लङ् विभक्तियें लगाई जाती हैं।

उत्तम पुरुष	*अभवम्*	अभवाव†	अभ
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभव
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभव

विधिलिङ् (Potential Mood).

२१४-विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ॥ आ निमन्त्रण, प्रेरण, प्रार्थना अर्थ में धातु के परे लिङ् की भक्तियें लगाई जाती हैं।

भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादि गणों के धातुओं परे विधि-लिङ् की विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं:-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवच
उत्तम पुरुष	ईयम्	ईव	ईम
मध्यम पुरुष	ईस्	ईतम्	ईत
प्रथम पुरुष	ईत्	ईताम्	ईयु
उत्तम पुरुष	भवेयम्‡	भवेव	भवेम
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवे

पत् (गिरना, to fall)

लट् (Present)

उत्तम पुरुष	पतामि	पतावः	पताम

---

*-लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः ॥ लुङ्, लङ् या लृङ् की विभक्ति के परे होने पर धातु के आदि में 'अ' लगाया जाता है।

* अतो गुणे । † अतो दीर्घो यञि । ‡ आद्गुणः ।

मध्यम पुरुष	पतसि	पतथः	पतथ
प्रथम पुरुष	पतति	पततः	पतन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	पतानि	पताव	पताम
मध्यम पुरुष	पत	पततम्	पतत
प्रथम पुरुष	पततु	पतताम्	पतन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अपतम्	अपताव	अपताम
मध्यम पुरुष	अपतः	अपततम्	अपतत
प्रथम पुरुष	अपतत्	अपतताम्	अपतन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	पतेयम्	पतेव	पतेम
मध्यम पुरुष	पतेः	पतेतम्	पतेत
प्रथम पुरुष	पतेत्	पतेताम्	पतेयुः

इसी प्रकार नीचे लिखे भ्वादिगण के परस्मैपदी धातुओंका उच्चारण भी होगा।

दा (यच्छ्) देना, to give.	पठ् पढ़ना, to read.
पा (पिब्) पीना, to drink.	रक्ष् रक्षा करना, to protect.
गम् (गच्छ्) जाना, to go.	वद् बोलना, to speak.
शुच् (शोच्) १ शोक करना, to bewail.	नम् झुकना, to bend.
	स्था(तिष्ठ्)खड़ा होना, to stand

१—पुगन्त-लघूपधस्य च ॥ जिन धातुओं की उपधा में ह्रस्व स्वर हो उनके ह्रस्व स्वर को या जिन णिजन्त (causal) धातुओं के अन्त में पुं जोड़ा गया हो उनके स्वर को गुण हो जाता है, यदि परे कोई सार्वधातुक या आर्धधातुक विभक्ति हो।

पच् पकाना, to cook.

* क्षि (क्षय्) नाश होना, to waste away.

* जि (जय्) जीतना, to conquer.

* स्मृ (स्मर्) स्मरण करना, to remember.

* सृ (सर्) सरकना, to move.

त्यज् त्यागना, to abandon

वस् रहना, to dwell.

दृश् (पश्य्) देखना, to see

आत्मनेपद ।

लट् (Present tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ए	वहे	महे
मध्यम पुरुष	से	इथे	ध्वे
प्रथम पुरुष	ते	इते	अन्ते

लोट् (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ऐ	आवहै	आमहै
मध्यम पुरुष	स्व	इथाम्	ध्वम्
प्रथम पुरुष	ताम्	इताम्	अन्ताम्

लङ् (Imperfect tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	इ	वहि	महि
मध्यम पुरुष	थास्	इथाम्	ध्वम्
प्रथम पुरुष	त	इताम्	अन्त

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ईय	ईवहि	ईमहि
मध्यम पुरुष	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
प्रथम पुरुष	ईत	ईयाताम्	ईरन्

* सार्वधातुकार्धधातुकयोः ॥

[illegible]

लट् (Present tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवच
उत्तम पुरुष	शिक्षे *	शिक्षावहे	शिक्षाम
मध्यम पुरुष	शिक्षसे	शिक्षेथे	शिक्षध्वे
प्रथम पुरुष	शिक्षते	शिक्षेते	शिक्षन्ते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	शिक्षै	शिक्षावहै	शिक्षाम
मध्यम पुरुष	शिक्षस्व	शिक्षेथाम्	शिक्षध्व
प्रथम पुरुष	शिक्षताम्	शिक्षेताम्	शिक्षन्त

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अशिक्षे †	अशिक्षावहि	अशिक्षामहि
मध्यम पुरुष	अशिक्षथाः	अशिक्षेथाम्	अशिक्षध्वम्
प्रथम पुरुष	अशिक्षत	अशिक्षेताम्	अशिक्षन्त §

विधिलिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	शिक्षेय¶	शिक्षेवहि	शिक्षेमहि
मध्यम पुरुष	शिक्षेथाः	शिक्षेयाथाम्	शिक्षेध्वम्
प्रथम पुरुष	शिक्षेत	शिक्षेयाताम्	शिक्षेरन्

ईक्ष् (देखना, to see)

लट् (Present)

उत्तम पुरुष	ईक्षे	ईक्षावहे	ईक्षामहे

---

* शिक्ष्+इ=शिक्ष्+अ+इ (कर्तरि शप्)=शिक्षे (आद्गुणः) ।

† लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः । ‡ अतो दीर्घो यञि । § अतो गुणे ।

¶ शिक्ष्+ईय=शिक्ष्+अ+ईय=शिक्षेय ॥

मध्यम पुरुष	ईंक्षसे	ईक्षेथे	ईक्ष
प्रथम पुरुष	ईक्षते	ईक्षेते	ईक्ष

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	ईक्षै	ईक्षावहै	ईक्षा
मध्यम पुरुष	ईक्षस्व	ईक्षेथाम्	ईक्ष
प्रथम पुरुष	ईक्षताम्	ईक्षेताम्	ईक्ष

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	ऐक्षे७	ऐक्षावहि	ऐक्षा
मध्यम पुरुष	ऐक्षथाः	ऐक्षेथाम्	ऐक्ष
प्रथम पुरुष	ऐक्षत	ऐक्षेताम्	ऐक्ष

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	ईक्षेय	ईक्षेवहि	ईक्षेमहि
मध्यम पुरुष	ईक्षेथाः	ईक्षेयाथाम्	ईक्षेध्वम्
प्रथम पुरुष	ईक्षेत	ईक्षेयाताम्	ईक्षेरन्

इसी प्रकार नीचे लिखे भ्वादिगण के आत्मनेपदी धातु का उच्चारण भी होगा।

- (वन्द्) नमस्कार करना, to salute.
- त् प्रयत्न करना, to strive.
- ङ् शंका करना, to suspect.
- लाघ् प्रशंसा करना, to praise.
- म्प् काँपना, to tremble.
- ह् सहारना, to bear.
- मुद् (मोद्) प्रसन्न होना, to rejoice.
- शुभ् (शोभ्) शोभा पाना, अच्छा लगना, to be splendid, to become.
- रुच् (रोच्) पसन्द आना, to be liked.

७—आडजादीनाम्, आटश्च ॥ स्वरादि धातुओं के पहिले आ और ता है यदि परे लङ्, लुङ् या लृङ् विभक्ति हो और आ और धातु के आदि स्वर को वृद्धि हो जाती है। ईक्ष+इ=आ+ईक्ष+अ+इ=ऐक्षे॥

भाष् बोलना, to speak	लभ् पाना, to obtain.
सेव् सेवा करना, to serve.	वृत् होना, to be.
रभ् आरम्भ करना, to begin	वृध् बढ़ना, to increase.

उभयपद—भ्वादिगण

परस्मैपद

बुध् (जानना, to know)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	बोधामि *	बोधावः	बोधामः
मध्यम पुरुष	बोधसि	बोधथः	बोधथ
प्रथम पुरुष	बोधति	बोधतः	बोधन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	बोधानि	बोधाव	बोधाम
मध्यम पुरुष	बोध	बोधतम्	बोधत
प्रथम पुरुष	बोधतु	बोधताम्	बोधन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अबोधम्	अबोधाव	अबोधाम
मध्यम पुरुष	अबोधः	अबोधतम्	अबोधत
प्रथम पुरुष	अबोधत्	अबोधताम्	अबोधन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	बोधेयम्	बोधेव	बोधेम
मध्यम पुरुष	बोधेः	बोधेतम्	बोधेत
प्रथम पुरुष	बोधेत्	बोधेताम्	बोधेयुः

* पुगन्त-लघूपधस्य च ।

पुष् पुष्ट करना, to nourish | दिव् (दीव्) चमकना, to shine.

आत्मनेपद—पुष्, (बढ़ना)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवच...
उत्तम पुरुष	पुष्ये	पुष्यावहे	पुष्याम...
मध्यम पुरुष	पुष्यसे	पुष्येथे	पुष्य...
प्रथम पुरुष	पुष्यते	पुष्येते	पुष्य...

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	पुष्यै	पुष्यावहै	पुष्याम...
मध्यम पुरुष	पुष्यस्व	पुष्येथाम्	पुष्यध्व...
प्रथम पुरुष	पुष्यताम्	पुष्येताम्	पुष्यन्ता...

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अपुष्ये	अपुष्यावहि	अपुष्यामहि
मध्यम पुरुष	अपुष्यथाः	अपुष्येथाम्	अपुष्य...
प्रथम पुरुष	अपुष्यत	अपुष्येताम्	अपुष्य...

विधिलिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	पुष्येय	पुष्येवहि	पुष्येम...
मध्यम पुरुष	पुष्येथाः	पुष्येयाथाम्	पुष्येध्...
प्रथम पुरुष	पुष्येत	पुष्येयाताम्	पुष्येर...

इसी प्रकार नीचे लिखे दिवादिगण के आत्मनेपदी धातु... रूपान्तर भी होगा।

1. (जन्) उत्पन्न होना, to be produced | 2. खिद् खिन्न होना, शोक to be...

तुदादिगण (6th Conjugation).

तुदादिगण के ... धातु और सार्वधातुक...

विभक्ति के मध्य में श (अ) विकरण (conjugational sign) रखा जाता है।

परस्मैपद

इष् (इच्छ्) (इच्छा करना, to desire)

लट् (Present)

उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	ऐच्छम्*	ऐच्छाव	ऐच्छाम
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः

इसी प्रकार नीचे लिखे तुदादिगण की परस्मैपदी धातुओंका रूपादि भी होगा।

क्षिप्† फेंकना, to throw.	सृज् उत्पन्न करना, to create.
प्रच्छ् (पृच्छ्) पूछना, to ask.	स्पृश् स्पर्श करना, to touch.

* आडजादीनाम्, आटश्च।

† तुदादिगण के धातु में कहीं पर भी गुण नहीं होता।

आत्मनेपद

मृ (म्रिए) (मरना, to die)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
मध्यम पुरुष	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
प्रथम पुरुष	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै
मध्यम पुरुष	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
प्रथम पुरुष	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
मध्यम पुरुष	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
प्रथम पुरुष	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि
मध्यम पुरुष	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
प्रथम पुरुष	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्

उभयपद

मुच् (मुञ्च्) (छोड़ना, to abandon)

परस्मैपद

लट् (Present)

उत्तम पुरुष	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः
मध्यम पुरुष	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
प्रथम पुरुष	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति

लोट् (I
एकवचन

उत्तम पुरुष	मुञ्चानि		
मध्यम पुरुष	मुञ्च		
प्रथम पुरुष	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम
मध्यम पुरुष	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
प्रथम पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम
मध्यम पुरुष	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
प्रथम पुरुष	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः

आत्मनेपद
लट् (Present)

उत्तम पुरुष	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे
मध्यम पुरुष	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
प्रथम पुरुष	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै
मध्यम पुरुष	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
प्रथम पुरुष	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि
मध्यम पुरुष	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
प्रथम पुरुष	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त

विधि लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	ताडयेय	ताडयेवहि	ताडयेमहि
मध्यम पुरुष	ताडयेथाः	ताडयेयाथाम्	ताडयेध्वम्
प्रथम पुरुष	ताडयेत	ताडयेयाताम्	ताडयेरन्

इसी प्रकार चुरादिगण के नीचे लिखे उभयपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

भूष् अलङ्कृत करना to adorn
भक्ष् खाना to eat.
दण्ड् दण्ड देना to punish.
तुल् (तोल) तोलना to weigh.
स्पृह् इच्छा करना to desire.

EXERCISE XIII.

(क) अलङ्कारा: बालेभ्यः रोचन्ते ॥
शिष्या आचार्यं वन्दन्ते आचार्यस्य (तस्य) प्रसादं च विन्दन्ते ॥
ग्रीष्मे नदाः शुष्यन्ति न च वर्धन्ते ॥
ईश्वरो भक्तानां कामान् पूरयते ॥
दासा अनेकान् क्लेशान् सहन्ते ॥
नृपा ब्राह्मणेभ्योऽर्घमति सृजन्तु ॥
नरा धर्मेणार्थमर्जयन्तु ॥
व्याधो मृग स्पृह स्यत्, परं मृगः सहसा निरगच्छत् ॥
यदा रामोऽयोध्यायाः प्राति इतान्यथा जनाः (नरव) रथमभ्यसरन् ॥
मिथ्या न भाषस्व, सत्यस्यार्थस्य च प्रकाशे न लज्जस्व
रामो भृत्येष्वेवमस्निह्यत् यथ पिता तनयेषु (स्निह्यति)
विवाहस्यावसरे देवदत्तः भद्रः लोकान् न्यमन्त्रयत ॥
कपिञ्जलस्य शापेन सगरस्य सकलाः सूनवोऽध्वंसन्त ॥
क्लेशैरभिभूतोऽपि धर्मं न त्यजेयम् ॥
ईश्वरश्चेदिच्छेद्विषममप्यमृतममृतं वा विषं भवेत् ॥
युद्धे येऽभिजयं [illegible] [illegible]
[illegible]

अल्पोऽप्यग्नेः स्फुलिङ्गः सकलमेव संसारं दहेत् ॥

पुत्राः सुचरितैः पितरौ प्रीणयेयुः ॥

पर्जन्यत्ताद्दूरां मृत्यं न दुःखे योऽनुवर्तते ॥

अर्घं यच्छेद्दरिद्रेभ्यः शिष्टं तीर्थेषु निक्षिपेत् ॥

कूर्म सङ्कोचमाश्रित्य प्रहारानपि मर्षयेत् ।

प्रातःकालेषु नीतिज्ञः उत्तिष्ठेत् कृष्णसर्पवत् ॥

(ख) राम को सुबोध छात्र मानते हैं (दृश) ॥

हरि दुष्ट भृत्यों के अपराध क्षमा नहीं करता ॥

दुष्ट राजा के दण्ड से कांपते हैं।

ग्रामों में गोमय से वृश्चिक उत्पन्न होते हैं ॥

राजा मनुष्यों की भलाई के लिये यत्न करता है (यत्) ॥

भिक्षुक धनिक से चावल मांगते हैं ॥

इस नगर में बहुत धनिक हैं, यदि भिक्षुक धन चाहें, तो उनको मिल जायगा ॥

यदि इस वर्ष भी दुर्भिक्ष रहा तो बहुत लोग मरेंगे ॥

मूर्ख मित्र को अवश्य त्यागना चाहिये ॥

यदि मेरा मनोरथ पूर्ण हो तो मैं तुम को बहुत धन दूंगा ॥

हरि अधिक परिश्रम से पढ़ता रहा ताकि उसे पारितोषिक मिले ॥

छात्रों को प्रातःकाल उठना चाहिये ॥

यदि बालक अपशब्द बोले तो अध्यापक उस को दण्ड दे ॥

तू ने कल का पाठ क्यों नहीं स्मरण किया ॥

तुम ने निरपराधों को क्यों दण्ड दिया ?

आओ, यहां बैठें और ईश्वर के गुण गावें ॥

पहिले पढ़ो और पीछे खेलो ॥

लक्ष्मण ने सीता को वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ दिया ॥

शिष्यों ने गुरु को प्रणाम किया और फिर बैठ गए ॥

अहङ्कार छोड़ो और विद्वान् की सेवा करो ॥

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	ताडयेय	ताडयेवहि	ताडयेमहि
मध्यम पुरुष	ताडयेथाः	ताडयेयाथाम्	ताडयेध्वम्
प्रथम पुरुष	ताडयेत	ताडयेयाताम्	ताडयेरन्

इसी प्रकार चुरादिगण के नीचे लिखे आत्मनेपदी धातुओं का उच्चारण भी होगा ॥

भूष् अलङ्कृत करना to adorn	तुल् (तोल) तोलना to weigh
भक्ष् खाना to eat.	स्पृह् इच्छा करना to desire
दण्ड् दण्ड देना to punish.	

EXERCISE XIII.

(क) भक्तदासाः बालेभ्यः रोचन्ते ॥ शिष्या आचार्यं वन्दन्ते आचार्यस्य (तस्य) प्रसादं च विन्दन्ते ॥ मोक्षे भक्ताः शुष्यन्ति न च वर्धन्ते ॥ ईश्वरो भक्तानां कामान् पूरयते ॥ दासा अनेकान् क्लेशान् सहन्ते ॥ नृपा अधर्मेण [illegible] ([illegible]) [illegible] धर्मेण [illegible] ॥

शिष्या न [illegible], [illegible] स्य च प्रकाशे न [illegible] ॥ रामो [illegible] पिता दशरथ (विलापे) [illegible] देवता [illegible] लोकान् [illegible] ॥ कवि [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible]

*अल्पोऽप्यग्नेः स्फुलिङ्गः सकलमेव संसारं दहेत् ॥

पुत्राः सुचरितैः पितरौ... पेयुः ॥

यर्जयेत्तादृशं मृत्यं न दुःखे योऽनुवर्त्तते ॥

अर्थं यश्छेद्दरिद्रेभ्यः शिष्टं तीर्थेषु निक्षिपेत् ॥

कौर्मं सङ्कोचमाश्रित्य प्रहारानपि मर्षयेत् ।

प्राप्तकालेषु नीतिज्ञः उत्तिष्ठेत् कृष्णसर्पवत् ॥

(ख) राम को सुबोध छात्र भाते हैं (रुच्) ॥

हरि दुष्ट भृत्यों के अपराध क्षमा नहीं करता ॥

दुष्ट राजा के दण्ड से कांपते हैं।

गर्मी में गोमय से वृश्चिक उत्पन्न होते हैं ॥

राजा मनुष्यों की भलाई के लिये यत्न करता है (यत्) ॥

भिक्षुक धनिक से चावल मांगते हैं ॥

इस नगर में बहुत धनिक हैं, यदि भिक्षुक धन चाहें, तो उनको मिल जायगा ॥

यदि इस वर्ष भी दुर्भिक्ष रहा तो बहुत लोग मरेंगे ॥

मूर्ख मित्र को अवश्य त्यागना चाहिये ॥

हरि अधिक परिश्रम से... रहा ताकि उसे पारि... मिले ॥

छात्रों को प्रातःकाल... चाहिये ॥

यदि बालक अपशब्द... अध्यापक उस को दण्...

तू ने कल का पाठ क्यं... स्मरण किया ॥

तुम ने निरपराधी क... दण्ड दिया ?

आओ, यहां बैठें और ... गुण गावें ॥

पहिले पढ़ो और पीछे...

लक्ष्मण ने सीता को ... के आश्रम में छोड़ ...

शिष्यों ने गुरु को प्रण... और फिर बैठ गए ...

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम
मध्यम पुरुष	एधि १३	स्तम्	स्त
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म
मध्यम पुरुष	आसीः १४	आस्तम्	आस्त
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः

इ (जाना, to go)

लट् (Present)

उत्तम पुरुष	एमि १५	इवः	इमः
मध्यम पुरुष	एषि	इथः	इथ
प्रथम पुरुष	एति	इतः	यन्ति

१३–घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥ दा, धा, या अस् के अन्तिमवर्ण को ए हो जाता है, यदि परे हि हो, और द्, ध्, स् के अभ्यास का लोप हो जाता है ॥ अस्+हि=अस्+धि=अए+धि=एधि (श्नसोरल्लोपः) ॥

१४–अस्तिसिचोऽपृक्ते ॥ अस् धातु के आगे ई जोड़ा जाता है, यदि परे त् या स् विभक्ति हो ॥

* श्नसोरल्लोपः ॥

१५–किसी विकारक (strong) विभक्ति के पहिले यदि धातु के में ह्रस्व या दीर्घ स्वर हो या उपधा में ह्रस्व स्वर हो तो उसे गुण है ।

लोट् (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	अयानि*	अयाव	अयाम
मध्यम पुरुष	इहि	इतम्	इत
प्रथम पुरुष	एतु	इताम्	यन्तु†

लङ् (Imperfect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	आयम् ‡	ऐव	ऐम
मध्यम पुरुष	ऐः	ऐतम्	ऐत
प्रथम पुरुष	ऐत्	ऐताम्	आयन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	इयाम्	इयाव	इयाम
मध्यम पुरुष	इयाः	इयातम्	इयात
प्रथम पुरुष	इयात्	इयाताम्	इयुः

हन् (मारना, to kill)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः
मध्यम पुरुष	हंसि	हथः१६	हथ

* इ+आनि=ए+आनि=अयानि ॥ † इ+अन्तु=यन्तु (इकोयणचि) ।
‡ इ+अम्=आ+इ+अम् (आडजादीनाम्)=ऐ+अम्+(आटश्च)=आय्+अम्=आयम् ।

१६–अनुदात्तोपदेशवनति-तनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति ॥ अनुदात्तोपदेश (यम्, रम्, नम्, गम्, हन्, मन्) और वन्, तन् आदि धातुओं के अन्तिम न् का लोप हो जाता है, यदि परे, कोई झल्-आदि अविकारक (weak) विभक्ति हो ॥

प्रथम पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	हनानि	हनाव	हनाम
मध्यम पु०	जहि११	हतम्	हत
प्रथम पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म
मध्यम पु०	अहन्	अहतम्	अहत
प्रथम पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
मध्यम पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
प्रथम पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः

विद् (जानना, to know)

† लट् (Present)

उत्तम पु०	वेद्मि-वेद	विद्वः-विद्व	विद्मः-विद्म

मध्यम पु०	वेत्सि-वेत्थ*	वित्थः-विदथुः	वित्थ-विद
प्रथम पु०	वेत्ति वेद	वित्तः-विदतुः	विदन्ति-विदुः

२० लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	वेदानि विदाङ्करवाणि	वेदाव विदाङ्करवाव	वेदाम विदाङ्करवाम
मध्यम पु०	विद्धि विदाङ्कुरु	वित्तम् विदाङ्कुरुतम्	वित्त विदाङ्कुरुत
प्रथम पु०	वेत्तु विदाङ्करोतु	वित्ताम् विदाङ्कुरुताम्	विदन्तु विदाङ्कुर्वन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अवेदम्	अविद्व	अविद्म
मध्यम पु०	अवेत्-द्-वेः २१	अवित्तम्	अवित्त
प्रथम पु०	अवेत्-द् †	अवित्ताम्	अविदुः२२

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

* स्थरि च ॥

२०-लोट् में विद के प्रत्येक पुरुष में दो दो रूप होते हैं, जिन में एक तो साधारण रीति से बनाया जाता है और दूसरे में धातु के आगे 'आम्' जोड़ कर फिर कृ धातु के रूप लगाये जाते हैं ॥ विद+आम्+करवाणि=विदाङ्करवाणि इत्यादि ॥

२१-दश्च ॥ धातु के पदान्त द् को र् हो जाता है यदि परे स् (लङ् मध्य० एक०) हो ॥ अ+विद्+स्=अवेद्+स्=अवेद् (हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात् इत्यादि)=अवेर्=अवेः (खरवसानयोः विसर्जनीयः) ॥

† अवेद्+त्=अवेद्=अवेत्-द् (वावसाने) ॥

२२-सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ॥ (सिच्) द्वित्व किये हुये धातु (जुहोत्यादिगण के) और विद् से परे अन् को उस् हो जाता है ॥

मध्यम पु०	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
प्रथम पु०	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः

रुद् (रोना, to weep)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	रोदिमि २३	रुदिवः	रुदिमः
मध्यम पु०	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
प्रथम पु०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	रोदानि	रोदाव	रोदाम
मध्यम पु०	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
प्रथम पु०	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम
मध्यम पु०	अरोदः-दीः २४	अरुदितम्	अरुदित
प्रथम पु०	अरोदत्-दीत्	अरुदिताम्	अरुदन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम
मध्यम पु०	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
प्रथम पु०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः

२३—रुदादिभ्यः सार्वधातुके ॥ रुद्, स्वप्, श्वस्, अन्, और धातुओं के अन्त में इ जोड़ा जाता है, यदि परे कोई वल्-आदि सार्वधातुक विभक्ति हो ॥

२४—रुदश्च पञ्चभ्यः ॥ रुद्, स्वप्, श्वस्, अन् और जक्ष् धातुओं के अन्त में ई विकल्प से जोड़ा जाता है, यदि परे त् (लङ्-प्रथम० एक०) वा स् (लङ् मध्य० एक०) हो ॥

जागृ (जागना, to be awake)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तम पु०	जागर्मि	जागृवः	जागृमः
ध्यम पु०	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
थम पु०	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति

लोट् (Imperative Mood)

तम पु०	जागराणि	जागराव	जागराम
ध्यम पु०	जागृहि	जागृतम्	जागृत
थम पु०	जागर्तु	जागृताम्	जाग्रतु

लङ् (Imperfect)

तम पु०	अजागरम्	अजागृव	अजागृम
ध्यम पु०	अजागः*	अजागृतम्	अजागृत
थम पु०	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः†

विधि-लिङ् (Potential Mood)

तम पु०	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम
ध्यम पु०	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
थम पु०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः

पा (पालना, to protect)

लट् (Present)

तम पु०	पामि	पावः	पामः
ध्यम पु०	पासि	पाथः	पाथ
थम पु०	पाति	पातः	पान्ति

* हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ॥

† —जुसि च ॥ धातु के अन्तिम इक् (इ, उ, ऋ, लृ) को गुण हो
[illegible] परे हो ॥

लोट् (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	पानि	पाव	पाम
मध्यम पु०	पाहि	पातम्	पात
प्रथम पु०	पातु	पाताम्	पान्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अपाम्	अपाव	अपाम
मध्यम पु०	अपाः	अपातम्	अपात
प्रथम पु०	अपात्	अपाताम्	अपान्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	पायाम्	पायाव	पायाम
मध्यम पु०	पायाः	पायातम्	पायात
प्रथम पु०	पायात्	पायाताम्	पायुः

या (जाना, to go)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	यामि	यावः	यामः
मध्यम पु०	यासि	याथः	याथ
प्रथम पु०	याति	यातः	यान्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	यानि	याव	याम
मध्यम पु०	याहि	यातम्	यात
प्रथम पु०	यातु	याताम्	यान्तु

२१— [illegible] धातु से [illegible] [illegible] है। ([illegible] धातु के आ का लोप हो जाता है।)

लङ् (Imperfect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	अयाम्	अयाव	अयाम
मध्यम पु०	अयाः	अयातम्	अयात
प्रथम पु०	अयात्	अयाताम्	अयान्-अयुः*

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	यायाम्	यायाव	यायाम
मध्यम पु०	यायाः	यायातम्	यायात
प्रथम पु०	यायात्	यायाताम्	यायुः

स्वप् (सोना, to sleep)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	स्वपिमि †	स्वपिवः	स्वपिमः
मध्यम पु०	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
प्रथम पु०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम
मध्यम पु०	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
प्रथम पु०	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम
मध्यम पु०	अस्वपः-पीः ‡	अस्वपितम्	अस्वपित
प्रथम पु०	अस्वपत्-पीत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्

* लङः शाकटायनस्यैव ॥ † रुदादिभ्यः सार्वधातुके ॥ ‡ अड्गार्ग्यगालवयोः ॥

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम
मध्यम पु०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
प्रथम पु०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः

आत्मनेपद

आत्मनेपद में अदादि आदि छः गणों के धातुओं के परे इन विभक्तियों के यह रूप हो जाते हैं

	द्विवचन	बहुवचन		द्विवचन	बहुवचन
लट्-म०पु०	आथे		लोट्-म०पु०	आथाम्	
,, प्र०पु०	आते	अते	,, प्र०पु०	आताम्	अताम्
लङ्-म०पु०	आथाम्		शेष वेही होंगी जो पीछे भ्वादि		
,, प्र०पु०	आताम्	अत	आदि गणों के लिये आचुकी हैं		

शी (सोना, to lie down)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	शये१७	शेवहे	शेमहे
मध्यम पु०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
प्रथम पु०	शेते	शयाते	शेरते१८

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	शयै	शयावहै	शयामहै
मध्यम पु०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
प्रथम पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्

१७—शीङः सार्वधातुके गुणः ॥ शी धातु की ई को गुण होता है यदि परे कोई सार्वधातुक विभक्ति हो ॥

१८—शीङो रुट् ॥ शी धातु के आगे र् जोड़ा जाता है, यदि परे अ लोट् और लङ् के प्रथम पुरुष की बहुवचन विभक्ति हो ॥

लङ् (Imperfect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तम पु०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि
ध्यम पु०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
थम पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत

विधि-लिङ् (Potential Mood)

तम पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि
ध्यम पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
थम पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्

उभयपद

ब्रू (बोलना to speak)

परस्मैपद

लट् (Present)

तम पु०	ब्रवीमि२९	ब्रूवः	ब्रूमः
ध्यम पु०	ब्रवीषि-आत्थ	ब्रूथः-आहथुः	ब्रूथ
थम पु०	ब्रवीति-आह	ब्रूतः-आहतुः	ब्रुवन्ति३०-आहुः

लोट् (Imperative Mood)

तम पु०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम
ध्यम पु०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
थम पु०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु

२९–ब्रुव ईट ॥ ब्रू धातु के आगे ई जोड़ा जाता है, यदि परे कोई
दि विकारक विभक्ति हो ॥

३०–अचि श्नु-धातु-भ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥ श्नु (विकरण), भ्रू का
धातु के अन्तिम ह्रस्व या दीर्घ इ या उ को क्रम से इय् या उव्
जाता है यदि परे कोई स्वरादि अविकारक विभक्ति हो ॥

लङ् (Imperfect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम
मध्यम पु०	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
प्रथम पु०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम
मध्यम पु०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
प्रथम पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	ब्रुवे*	ब्रूवहे	ब्रूमहे
मध्यम पु०	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
प्रथम पु०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै
मध्यम पु०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
प्रथम पु०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि
मध्यम पु०	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
प्रथम पु०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत

* अचि श्नु-धातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	भुवीय	भुवीवहि	भुवीमहि
मध्यम पु०	भुवीथाः	भुवीयाथाम्	भुवीध्वम्
प्रथम पु०	भुवीत	भुवीयाताम्	भुवीरन्

जुहोत्यादिगण (Third Conjugation)

जुहोत्यादिगण के धातु के परे विभक्ति लगाने से पूर्व धातु में इन नियमों से द्वित्व (reduplication) और अन्य परिवर्तन हो जाते हैं ॥

२१६-एकाचोद्वे प्रथमस्य ॥ धातु के पहिले स्वर या तदभाव में पहिले व्यञ्जन और उसके साथ के स्वर को द्वित्व हो जाता है ॥

(क)ह्रस्वः ॥ अभ्यास (the first repeated part)में दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है ॥

(ख)अभ्यासे चर्च ॥ अभ्यास के झशों को जश और खयों को चर् हो जाते हैं, अर्थात् वर्ग के चौथे वर्ण को तीसरा और दूसरे को पहिला वर्ण हो जाता है ॥ भी=भी + भी=भिभी=बिभी ॥ दा= दा+दा=ददा ॥ धा=धा + धा=धधा=दधा ॥

परस्मैपद

भी (डरना, to fear)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	बिभेमि	बिभीवः-बिभिवः३१	बिभीमः-बिभिमः
मध्यम पु०	बिभेषि	बिभीथः-बिभिथः	बिभीथ-बिभिथ

३१-भियोऽन्यतरस्याम् ॥ भी का ई ह्रस्व हो जाता है विकल्प से,

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	बिभेति	बिभीतः-बिभितः	बिभ्यति११

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम
मध्यम पु०	बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत
	बिभिहि	बिभितम्	बिभित
प्रथम पु०	बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु
		बिभिताम्	

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम
		अबिभिव	अबिभिम
मध्यम पु०	अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत
		अबिभितम्	अबिभित
प्रथम पु०	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः०
		अबिभिताम्	

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम
	बिभियाम्	बिभियाव	बिभियाम
मध्यम पु०	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
	बिभियाः	बिभियातम्	बिभियात
प्रथम पु०	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
	बिभियात्	बिभियाताम्	बिभियुः

११—जुहोत्यादिगण में धातु के [illegible] और अन्त के इ का [illegible] हो जाता है। ७ भियोऽन्यतरस्याम्, सूत्र [illegible]।

उभयपद

दा

परस्मैपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पु०	ददामि	दद्वः३३	दद्मः
पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ
पु०	ददाति	दत्तः*	ददति

लोट् (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पु०	ददानि	ददाव	ददाम
पु०	देहि†	दत्तम्	दत्त
पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु

लङ् (Imperfect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म
पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः३४

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः

श्नाभ्यस्तयोरातः ॥ श्ना (विकरण) और द्वित्व किये हुए धातु के आ का लोप हो आता है, यदि परे कोई अविकारक विभक्ति हो ॥

श्नाभ्यस्तयोरातः, घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥

घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥

३४–उस्यपदान्तात् ॥ अपदान्त अ वा आ से परे यदि उस् हो तो आ का लोप हो आता है ॥

आत्मनेपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	ददे	दद्वहे	दद्महे
मध्यम पु०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
प्रथम पु०	दत्ते	ददाते	ददते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	ददै	ददावहै	ददामहै
मध्यम पु०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
प्रथम पु०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
मध्यम पु०	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
प्रथम पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
मध्यम पु०	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
प्रथम पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्

धा (धारण करना, to hold)

परस्मैपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	दधामि	दध्वः	दध्मः
मध्यम पु०	दधासि	धत्थः ३५	धत्थ
प्रथम पु०	दधाति	धत्तः	दधति

३५—दधस्तथोश्च ॥ धा धातु के द् को ध् हो जाता है, यदि कोई विभक्ति हो जिस के आदि में त्, थ्, स् या ध्व हो ॥ यथा दधा+थः=दध्+थः=धध्+थः= धत्थः (खरि च)॥

लोट् (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	दधानि	दधाव	दधाम
मध्यम पु०	धेहि	धत्तम्	धत्त
प्रथम पु०	दधातु	धत्ताम्	दधतु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अदधाम्	अदध्व	अदध्म
मध्यम पु०	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त
प्रथम पु०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	दध्याम्	दध्याव	दध्याम
मध्यम पु०	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात
प्रथम पु०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	दधे	दध्वहे	दध्महे
मध्यम पु०	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
प्रथम पु०	धत्ते	दधाते	दधते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	दधै	दधावहै	दधामहै
मध्यम पु०	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
प्रथम पु०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि
मध्यम पु०	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
प्रथम पु०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	दधीय	दधीवहि	दधीमहि
मध्यम पु०	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
प्रथम पु०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्

स्वादिगण (Fifth Conjugatio

२२०–स्वादिभ्यः श्नुः ॥ स्वादिगण के धातुओं के परे श्नु विकरण आता है ॥

परस्मैपद

शक् (समर्थ होना, to be able)

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः
मध्यम पु०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
प्रथम पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम
मध्यम पु०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
प्रथम पु०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम
मध्यम पु०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
प्रथम पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्

० अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
ाम पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
यम पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
म पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः

आप् (पाना, to obtain)

लट् (Present)

ाम पु०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः
यम पु०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
म पु०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति

लोट् (Imperative Mood)

ाम पु०	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम
यम पु०	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
म पु०	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु

लङ् (Imperfect)

ाम पु०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम
यम पु०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
म पु०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्

विधिलिङ् (Potential Mood).

ाम पु०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम
यम पु०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
म पु०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः

उभयपद
हि (भेजना, to send forth)
परस्मैपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	हिनोमि	हिनुवः-हिन्वः३६	हिनुमः-हिन्मः
मध्यम पु०	हिनोषि	हिनुथः	हिनुथ
प्रथम पु०	हिनोति	हिनुतः	हिन्वन्ति३७

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	हिनवानि	हिनवाव	हिनवाम
मध्यम पु०	हिनु ३८	हिनुतम्	हिनुत
प्रथम पु०	हिनोतु	हिनुताम्	हिन्वन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अहिनवम्	अहिनुव-अहिन्व	अहिनुम-अहि[illegible]
मध्यम पु०	अहिनोः	अहिनुतम्	अहिनुत
प्रथम पु०	अहिनोत्	अहिनुताम्	अहिन्वन्

विधि-लिङ् (Potential mood)

उत्तम पु०	हिनुयाम्	हिनुयाव	हिनुयाम
मध्यम पु०	हिनुयाः	हिनुयातम्	हिनुयात
प्रथम पु०	हिनुयात्	हिनुयाताम्	हिनुयुः

३६-लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः ॥ स्वरान्त धातु के परे नु (विकर[illegible] के उ का लोप हो जाता है विकल्प से, यदि परे अविकारक विभक्ति व् वा म् हो ॥

३७-हु-श्नुवोः सार्वधातुके ॥ हु धातु और स्वरान्त धातु के परे नु (विकर[illegible] के उ को व् हो जाता है, यदि परे कोई स्वरादि अविकारक विभक्ति हो ॥

३८-उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ॥ विकरण के उ के परे हि [illegible] लोप हो जाता है, यदि नु से पूर्व कोई व्यञ्जन न हो ॥

श्रु (शृ) (सुनना, to hear)

परस्मैपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
त्तम पु०	शृणोमि	शृणुवः-शृण्वः	शृणुमः-शृण्मः
ध्यम पु०	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
थम पु०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति

लोट् (Imperative Mood)

त्तम पु०	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम
ध्यम पु०	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
थम पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु

लङ् (Imperfect)

त्तम पु०	अशृणवम्	अशृणुव-अशृण्व	अशृणुम-अशृण्म
ध्यम पु०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
थम पु०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

त्तम पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम
ध्यम पु०	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
थम पु०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः

धादिगण(Seventh Conjugation)

२२१-रुधादिभ्यः श्नम् ॥ रुधादि गण के धातु में अन्तिम र्ण से पूर्व श्नम् (न) विकरण जोड़ा जाता है। और न के अ ा लोप हो कर न् रह जाता है यदि परे कोई अपित्सार्वधातुक वभक्ति हो (श्नसोरल्लोपः) ॥ रुध्+ति=रुनध्+ति=रुणध्+ति= रुणत्ति (रुणद्धि), रुध्+तः=रुन्ध्+तः ॥

उभयपद

रुध् (रोकना, to obstruct)

परस्मैपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः
मध्यम पु०	रुणत्सि	रुन्द्धः२९	रुन्द्ध
प्रथम पु०	रुणद्धि	रुन्द्धः	रुन्धन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम
मध्यम पु०	रुन्द्धि	रुन्द्धम्	रुन्द्ध
प्रथम पु०	रुणद्धु	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म
मध्यम पु०	अरुणत्-द्	अरुन्द्धम्	अरुन्द्ध
प्रथम पु०	अरुणत्-द्	अरुन्द्धाम्	अरुन्धन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम
मध्यम पु०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
प्रथम पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः

२९—झषस्तथोर्धोऽधः ॥ धा से अन्य किसी धातु के अन्त में व[र्ग के] चौथे वर्ण से परे विभक्ति के त् या थ् को ध् हो जाता है ॥ रुध्+तः=रुन्ध्+तः=रुन्ध्+धः (झलां जश् झशि)=रुन्द्धः ॥

आत्मनेपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे
मध्यम पु०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
प्रथम पु०	रुन्द्धे	रुन्धाते	रुन्धते

लोट् (Imperative mood)

उत्तम पु०	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै
मध्यम पु०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्द्ध्वम्
प्रथम पु०	रुन्द्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि
मध्यम पु०	अरुन्द्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्द्ध्वम्
प्रथम पु०	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि
मध्यम पु०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
प्रथम पु०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्

युज् (जोड़ना, to join)

परस्मैपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः
मध्यम पु०	युनक्षि*	युङ्क्थः†	युङ्क्थ
प्रथम पु०	युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति

* चोः कुः, आदेशप्रत्यययोः॥ † युज्+थः=युन्ज्+थः (श्नसोरल्लोपः)= युन्क्+थः=युङ्क्थः (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः)॥

लोट् (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	युनजानि	युनजाव	युनजाम
मध्यम पु०	युङ्ग्धि*	युङ्क्तम्	युङ्क्त
प्रथम पु०	युनक्तु	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म
मध्यम पु०	अयुनक्-ग्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त
प्रथम पु०	अयुनक्-ग्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम
मध्यम पु०	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात
प्रथम पु०	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे
मध्यम पु०	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे
प्रथम पु०	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	युनजै	युनजावहै	युनजामहै
मध्यम पु०	युङ्क्ष्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्
प्रथम पु०	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्

* चोः कुः, झलां जश् झशि ॥

लङ् (Imperfect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि
मध्यम पु०	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
प्रथम पु०	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि
मध्यम पु०	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
प्रथम पु०	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्

इसी प्रकार भुज् (शासन करना, to rule (परस्मैपद), खाना to eat आत्मनेपद) और भिद् (तोड़ना, to break) का उच्चारण भी होगा ॥

तनादिगण(*Eighth Conjugation*)

३२२-तनादि-कृञ्भ्य उः ॥ तनादि गण के धातुओं के परे उ विकरण जोड़ा जाता है ॥

उभयपद

तन् (विस्तृत करना, to spread)

परस्मैपद ।

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	तनोमि	तनुवः-तन्वः*	तनुमः-तन्मः
मध्यम पु०	तनोषि	तनुथः	तनुथ
प्रथम पु०	तनोति	तनुवः	तन्वन्ति

* [illegible]

लोट् (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	तनवानि	तनवाव	तनवाम
मध्यम पु०	तनु*	तनुतम्	तनुत
प्रथम पु०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु

लङ् (Present)

उत्तम पु०	अतनवम्	अतनुव-अतन्व	अतनुम-अतन्म
मध्यम पु०	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
प्रथम पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम
मध्यम पु०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
प्रथम पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	तन्वे	तनुवहे-तन्वहे	तनुमहे-तन्महे
मध्यम पु०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
प्रथम पु०	तनुते	तन्वाते	तन्वते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै
मध्यम पु०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
प्रथम पु०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्

* उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ॥

लङ् (Imperfect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	अतन्वि	अतनुवहि अतन्वहि	अतनुमहि अतन्महि
मध्यम पु०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
प्रथम पु०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि
मध्यम पु०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
प्रथम पु०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्

कृ (करना, to do)

परस्मैपद ।

लट् (Present)

उत्तम पु०	करोमि	कुर्वः ४०,४१	कुर्मः
मध्यम पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
प्रथम पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	करवाणि	करवाव	करवाम
मध्यम पु०	कुरु*	कुरुतम्	कुरुत
प्रथम पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु

४०-अत उत्सार्वधातुके ॥ कृ को कुर् हो जाता है, यदि परे कोई सकारक विभक्ति हो ॥

४१-नित्यं करोतेः, ये च ॥ कृ धातु के उ (विकरण) का सदा लोप हो जाता है, यदि परे विभक्ति का व्, म् वा य् हो ॥

* उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ॥

लङ् (Imperfect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म
मध्यम पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
प्रथम पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	कुर्याम्	कुर्याव†	कुर्याम
मध्यम पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
प्रथम पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः

आत्मनेपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
मध्यम पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
प्रथम पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	करवै	करवावहै	करवामहै
मध्यम पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
प्रथम पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
मध्यम पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
प्रथम पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत

† वे च॥

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
मध्यम पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
प्रथम पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्

क्र्यादिगण (Ninth Conjugation)

२२३-क्र्यादिभ्यःश्ना ॥ क्र्यादिगण के धातुओं के परे श्ना (ना) विकरण आता है ॥

परस्मैपद

बन्ध् (बध्) (बान्धना, to tie)

लट् (Present)

उत्तम पु०	बध्नामि	बध्नीवः ४२	बध्नीमः
मध्यम पु०	बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ
प्रथम पु०	बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति॰

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम
मध्यम पु०	बधान ४३	बध्नीतम्	बध्नीत
प्रथम पु०	बध्नातु	बध्नीताम्	बध्नन्तु

४२-ई हल्यघोः ॥ ना (विकरण) को ई हो जाता है, यदि परे कोई हलादि अपित्कारक विभक्ति हो ॥

॰ श्नाभ्यस्तयोरातः ॥

४३-हलः श्नः शानज्झौ ॥ क्र्यादिगण के हलन्त धातुओं से परे ना (विकरण) को आन हो जाता है और हि (लोट्-मध्य०एक०) का लोप हो जाता है ॥

लङ् (Imperfect).

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु॰	अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम
मध्यम पु॰	अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत
प्रथम पु॰	अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु॰	बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम
मध्यम पु॰	बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात
प्रथम पु॰	बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः

मुष (मुष्णाति, to steal)

परस्मैपद

लट् (Present)

उत्तम पु॰	मुष्णामि*	मुष्णीवः	मुष्णीमः
मध्यम पु॰	मुष्णासि	मुष्णीथः	मुष्णीथ
प्रथम पु॰	मुष्णाति	मुष्णीतः	मुष्णन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु॰	मुष्णानि	मुष्णाव	मुष्णाम
मध्यम पु॰	मुषाण	मुष्णीतम्	मुष्णीत
प्रथम पु॰	मुष्णातु	मुष्णीताम्	मुष्णन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु॰	अमुष्णाम्	अमुष्णीव	अमुष्णीम
मध्यम पु॰	अमुष्णाः	अमुष्णीतम्	अमुष्णीत
प्रथम पु॰	अमुष्णात्	अमुष्णीताम्	अमुष्णन्

* [illegible]

[illegible]

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	मुष्णीयाम्	मुष्णीयाव	मुष्णीयाम
मध्यम पु०	मुष्णीयाः	मुष्णीयातम्	मुष्णीयात
प्रथम पु०	मुष्णीयात्	मुष्णीयाताम्	मुष्णीयुः

उभयपद

की (खरीदना, to buy)

लट् (Present)

उत्तम पु०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः
मध्यम पु०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
प्रथम पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम
मध्यम पु०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
प्रथम पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम
मध्यम पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
प्रथम पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम
मध्यम पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
प्रथम पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः

आत्मनेपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे
मध्यम पु०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
प्रथम पु०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै
मध्यम पु०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
प्रथम पु०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अक्रीणे	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि
मध्यम पु०	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
प्रथम पु०	अक्रीणीताम्	अक्रीणाताम्	अक्रीणताम्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि
मध्यम पु०	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
प्रथम पु०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्

ज्ञा (जा) (जानना, to know)

परस्मैपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	जानामि	जानीवः	जानीमः
मध्यम पु०	जानासि	जानीथः	जानीथ
प्रथम पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति

लोट् (Imperative Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	जानानि	जानाव	जानाम
मध्यम पु०	जानीहि	जानीतम्	जानीत
प्रथम पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम
मध्यम पु०	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
प्रथम पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम
मध्यम पु०	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
प्रथम पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः

आत्मनेपद

लट् (Present)

उत्तम पु०	जाने	जानीवहे	जानीमहे
मध्यम पु०	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
प्रथम पु०	जानीते	जानाते	जानते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	जानै	जानावहै	जानामहै
मध्यम पु०	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
प्रथम पु०	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अजाने	अजानीवहि	अजानीमहि
मध्यम पु०	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
प्रथम पु०	अजानीत	अजानाताम्	अजानत

विधि-लिङ् (Potential Mood)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	जानीय	जानीवहि	जानीमहि
मध्यम पु०	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
प्रथम पु०	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्

उभयपद

ग्रह् (गृह्) (पकड़ना, to hold)

परस्मैपद

लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः
मध्यम पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
प्रथम पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम
मध्यम पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
प्रथम पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम
मध्यम पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
प्रथम पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम
मध्यम पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
प्रथम पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः

आत्मनेपद
लट् (Present)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे
मध्यम पु०	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
प्रथम पु०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते

लोट् (Imperative Mood)

उत्तम पु०	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै
मध्यम पु०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
प्रथम पु०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्

लङ् (Imperfect)

उत्तम पु०	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि
मध्यम पु०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
प्रथम पु०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत

विधि-लिङ् (Potential Mood)

उत्तम पु०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि
मध्यम पु०	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
प्रथम पु०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्

EXERCISE XIV.

(क) साधवः सुचरितानां फलं स्वर्गेऽश्नुवते ॥

प्राज्ञाः स्वकीयानर्थान् सुखेन साध्नुवन्ति ॥

अधमं कुर्वाणोऽपि फलं नाप्नवम् ॥

दशरथः सरय्वास्तीरे पुत्रेष्टिमतनोत् ॥

यन्निकृष्टं कृत्यं त्वमकरोस्तदधुनापि ते मित्राणां चित्तानि दुनोति ॥

युवामपराधमकुरुतमतो दण्डमर्हथः ॥

सत्वरं धावमानस्य ते गलितमिदं कङ्कणं गृहाणैतत्

प्रत्यहं स्वच्छेन जलेन स्नाहि ॥
रजन्यास्तुरीये यामे घटयो जाग्रति ॥
जठरं केन बिभर्ति केवलम् ॥
परेषां धनं मा मुषाण च वधं कुर्वन्ति तानपि दण्डयन्ति ॥
वाराणस्यां मह्यं द्वानि वस्त्राणि क्रीणीहि ॥
भीमो गदया दुःशासनस्योरू भिन्द्यात् यदि युधिष्ठिरः न निरुन्ध्यात् ॥

नृपः कतमं सचिवेष्वमात्य... नियुञ्ज्यादित्यत्र लोके प्रभूतो विवादो वर्तते ॥
तरुषु मधुरं क्वणन्ति पक्षिणः ... पुरुच शीतलो वाति ... रम्यमिदं स्थानम् ॥
दुर्जनेषु न कोऽपि वि...
आर्या ददातु मे राज... नयनाभ्यनुज्ञा...

यावज्जीवेन तत्कुर्याद्येनामुत्र सुखं वसेत् ॥
तस्माद्धर्मं सहायार्थं नित्यं सञ्चिनुयाच्छनैः ॥
छिनत्ति संशयं शास्त्रे विदुषां सूक्तिभिः सदा ।
मोघहतः कोऽपि धर्माय सर्वमिमेतद्धेतवे ॥
कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणीं कथाम् ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।
प्रविश्य चित्तं भूतानां वेत्सि तेषां शुभाशुभम् ।
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ॥
उभौ तौ न विजानीतः नायं हन्ति न हन्यते ॥

ददतु ददतु गालीर्गालिमन्तो भवन्तः,
वयमपि तदभावात् गालिदानेऽसमर्थाः ।
जगति ददति सर्वे विद्यते यत्तदेव,
न हि शशकविषाणं कोऽपि कस्मै ददाति ॥

(ग) तीव्र वायु गम्भीर समुद्र के जल को भी हिला देता है (सुन . पु) ॥
यहाँ प्रजा भक्त होती है ... पुत्रों से राजा की ... कामी हैं (श्री) ॥

बङ्गाल में लोक प्रायः ओदन खाते हैं (भुज्) ॥
धनवास के अनन्तर रामने सुख से राज्य भोगा (भुज्) ॥
दुरात्मा पाशों से प्रतिदिन अनेक कीड़े मारता है (हिंस्) ॥
पुत्री, धैर्य करो (सम्+आ+श्वस्),मत रुदन करो (रुद्), ईश्वर तेरे कष्टों को काटे (छिद्) ॥
कहते हैं (ब्रू), जो गङ्गा में स्नान करता है (स्ना) उसके पाप दूर हो जाते हैं (अप+या)॥
जो सायंकाल ही सो जाते हैं (स्वप्) और प्रातः नहीं जागते (जागृ) वह रोगी रहते हैं ॥
इन शब्दों को वियुक्त करो (वि+युज्) और इनको मिलाओ (सम्+धा) ॥
पुरुष यदि उद्यम करे (उद्+युज्) तो सब कुछ कर सकता है ॥
जो भूषण मूल्य लिये थे (क्री) उनको किस मूल्य पर बेचा है (वि+क्री) ॥

व्याघ्र जिन जन्तुओं को पकड़ते हैं (ग्रह्) उनको पहले चीरते हैं (दृ) फिर खाते हैं (अश्) ॥
स्वामी जिन नौकरों का तिरस्कार करते हैं (तिरस+कृ), क्या वे नहीं जानते (ज्ञा) कि नौकर भी उनका कार्य खुशी से नहीं करते (कृ) ॥
मुझे यह वस्त्र अच्छा लगता है (प्रति+भा) ॥
जब यह बालक सोता है तो लम्बे सांस लेता है(श्वस्)॥
ईश्वर उनकी रक्षा करता है (पा) जो उसकी शरण लेते हैं ॥
पढ़ने में चित्त लगाओ (अव+धा) ॥
स्वच्छ वस्त्र धारण करो (परि+धा) ॥
जो अनाथों का पालन करते हैं (भृ) वे अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं ॥
कानों को बन्द कर लो (अपि+धा) ॥

नवदशः पाठः ।

आर्धधातुक-प्रकरणम्
(Non-conjugational Tens

परस्मैपद

लुट् (First Future)

	एकवचन	द्विवचन	बहुव
उत्तम पु०	तास्मि	तास्वः	तास्म
मध्यम पु०	तासि	तास्थः	तास्थ
प्रथम पु०	ता	तारौ	तार

* लृट् (Second Future)

उत्तम पु०	स्यामि	स्यावः	स्याम
मध्यम पु०	स्यसि	स्यथः	स्यथ
प्रथम पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति

लिट् (Past Perfect)

उत्तम पु०	अ	व	म
मध्यम पु०	थ	अथुस्	अ
प्रथम पु०	अ	अतुस्	उस्

लुङ् (Aorist)

लुङ् की विभक्तियों के तीन प्रकार हैं ॥ कुछ धातु आगे प्रथम या अन्यों के आगे द्वितीय या तृतीय प्रक विभक्तियें जोड़ कर उनके रूप बनते हैं ॥

प्रथम

उत्तम पु०	अम्	व	म
मध्यम पु०	स्	तम्	त
प्रथम पु०	त्	ताम्	अन्

* यदि लट् की विभक्तियों के पहिले स्य जोड़ा जाये तो विभक्तियें बन जाती हैं ॥

द्वितीय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	इषम्	इष्व	इष्म
मध्यम पु०	ईः	इष्टम्	इष्ट
प्रथम पु०	ईत्	इष्टाम्	इषुः

तृतीय

उत्तम पु०	सम्	स्व	स्म
मध्यम पु०	सीः	स्तम्	स्त
प्रथम पु०	सीत्	स्ताम्	सुः

आशीर्लिङ् (Benedictive Mood)

उत्तम पु०	यासम्	यास्व	यास्म
मध्यम पु०	यास्	यास्तम्	यास्त
प्रथम पु०	यात्	यास्ताम्	यासुः

† लृङ् (Conditional Mood)

उत्तम पु०	स्यम्	स्याव	स्याम
मध्यम पु०	स्यः	स्यतम्	स्यत
प्रथम पु०	स्यत्	स्यताम्	स्यन्

आर्धधातुक विभक्तियों से पहिले धातुओं को तीन भागों में बांटा गया है ॥

१ सेट् (स+इट्), २ अनिट् (अन्+इट्), ३ वेट् (वा+इट्) ॥

२२४-आर्धधातुकस्येड्वलादेः ॥ धातु के अन्त में इ जोड़ा जाता है, यदि परे कोई वल्-आदि आर्धधातुक विभक्ति हो ॥

(क) जिनके अन्त में 'इ' जोड़ा जाता है वे सेट् धातु हैं,

† यदि लङ् की विभक्तियों के पहिले स्य जोड़ा जाये तो लृङ् की विभक्तियें बन जाती हैं ॥

(ख) जिनके अन्त में 'इ' जोड़ा जाता वे अनिट् धातु हैं।

(ग) जिनके अन्त में 'इ' विकल्प से जोड़ा जाता है वे वेट् धातु हैं ॥

*सेट्	सेट्	सेट्
भू (भ्वा० प०)	पत् (भ्वा० प०)	गम् (भ्वा० प
शुच् (भ्वा० प०)	रक्ष् (भ्वा० प०)	वद् (भ्वा० प०
शिक्ष् (भ्वा० आ०)	ईक्ष् (भ्वा० आ०	मुद् (भ्वा० आ
वन्द् (भ्वा० आ०)	यत् (भ्वा० आ०)	शङ्क् (भ्वा० आ
श्लाघ् (भ्वा० आ०)	कम्प् (भ्वा० आ०)	भाष् (भ्वा० आ
रुच् (भ्वा० आ०)	सह् (भ्वा० आ०)	सेव् (भ्वा० आ
बुध् (भ्वा० उ०)	याच् (भ्वा० उ०)	वृत् (भ्वा० आ
वृध् (भ्वा० आ०)	अस् (अदा० प०)	विद् (अदा० प०
रुद् (अदा० प०)	जागृ (अदा० प०)	शी (अदा० आ
ब्रू (अदा० उ०)	श्रम् (दि० प०)	त्रस् (दि० प०)
नृत् (दि० प०)	दिव् (दि० प०)	असु (दि० प०)
दृह् (तु० प०)	तन् (तना० उ०)	मुष् (क्र्या० प०)
ग्रह् (क्र्या० उ०)	सुर (सु० उ०)	भूष् (चु० उ०)
भक्ष् (चु० उ०)	तड् (चु० उ०)	दण्ड् (चु० उ०)
तुल् (चु० उ०)	स्पृह् (चु० उ०)	

अनिट्	अनिट्	अनिट्
दा (भ्वा० प०)	पच् (भ्वा० प०)	पा (भ्वा० प०)
ध्या (भ्वा० प०)	नम् (भ्वा० प०)	क्षि (भ्वा० प०)
जि (भ्वा० प०)	वस् (भ्वा० प०)	स्मृ (भ्वा० प०
सृ (भ्वा० प०)	दृश् (भ्वा० प०)	त्यज् (भ्वा० प

* इस स्थान में वेही धातु दिये गये हैं जिनका उच्चारण

अनिट्	अनिट्	अनिट्
रभ् (भ्वा० आ०)	लभ् (भ्वा० आ०)	हृ (भ्वा० उ०)
नी (भ्वा० उ०)	अद् (अदा० प०)	इ (अदा० प०)
हन् (अदा० प०)	पा (अदा० प०)	या (अदा० प०)
स्वप् (अदा० प०)	भी (जु० उ०)	दा (जु० उ०)
धा (जु० उ०)	क्रुध् (दि० प०)	क्षुध् (दि० प०)
तुष् (दि० प०)	पुष् (दि० प०)	युध् (दि० आ०)
जन् (दि० आ०)	विद् (दि० आ०)	शक् (स्वा० प०)
आप् (स्वा० प०)	हि (स्वा० प०)	श्रु (स्वा० प०)
क्षिप् (तु० प०)	प्रच्छ् (तु० प०)	सृज् (तु० प०)
स्पृश् (तु० प०)	मृ (तु० आ०)	मुच् (तु० उ०)
सिच् (तु० उ०)	रुध् (रु० उ०)	युज् (रु० उ०)
भुज् (रु० उ०)	भिद् (रु० उ०)	बन्ध् (क्र्या० प०)
क्री (क्र्या० उ०)	ज्ञा (क्र्या० उ०)	

वेट्

नश् (दि० प०)

भ्वादिगण (First Conjugation)

परस्मैपद

लुट् (First future)

अनद्यतने लुट् ॥ अनद्यतन भविष्यत् अर्थ में लुट् (First future) का प्रयोग होता है ॥

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	तास्मि	तास्वः	तास्मः
मध्यम पु०	तासि	तास्थः	तास्थ
प्रथम पु०	ता	तारौ (partly cut off)	[illegible]

भू (to be)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः
मध्यम पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
प्रथम पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः

लृट् (Second Future)

लृट् शेषे च ॥ भविष्यत् अर्थ में लृट् (Second Fut... का प्रयोग होता है ॥

उत्तम पु०	स्यामि	स्यावः	स्यामः
मध्यम पु०	स्यसि	स्यथः	स्यथ
प्रथम पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति

भू

उत्तम पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्याम
मध्यम पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
प्रथम पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति

लिट् (Past Perfect)

परोक्षे लिट् ॥ भूत (Past) अर्थ में लिट् (Past P... का प्रयोग होता है ॥

उत्तम पु०	अ	व	म
मध्यम पु०	थ	अथुस्	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

धातु के आगे विभक्ति जोड़ने से पूर्व ही धातु में पीछे (जुहोत्यादि गण में) दिये हुए नियमों से द्वित्व हो जाता है। इस प्रकार अङ्ग (base) बनाकर उसके आगे विभक्तियां जोड़ी जाती हैं।

एकाचो द्वे प्रथमस्य ॥ धातु के आदि में स्वर को, तदभाव में पहिले व्यञ्जन और उसके साथ के स्वर को द्वित्व हो जाता है ॥ यथा—कृ=कृकृ, पत्=पपत् ।

हलादिः शेषः ॥ धातु के आदि में संयुक्त व्यञ्जन हों, तो केवल प्रथम व्यञ्जन और उसके समीप के स्वर को द्वित्व होता है ॥ यथा—स्मृ=स्मृ स्मृ ॥

शर्पूर्वाः खयः ॥ यदि धातु के आदि संयुक्त व्यञ्जनों में पहिला वर्ण कोई शर् (श, ष, स) हो और दूसरा खर् हो तो दूसरे व्यञ्जन और साथ के स्वर को द्वित्व होता है ॥ यथा—स्पृश्=पुस्पृश् ॥

ह्रस्वः ॥ अभ्यास (First repeated part) में दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है ॥

अत् ॥ अभ्यास में भू को भ हो जाता है ॥ यथा-भू=भभू ।

अभ्यासे चर्च ॥ अभ्यास में वर्ग के चौथे वर्ण को तीसरा और दूसरे को पहिला हो जाता है ॥ धा=दाधा, फल्=पफल् ॥

कुहोश्चुः ॥ अभ्यास में कवर्ग को क्रम से चवर्ग और ह् को ज् हो जाता है ॥ यथा-कृ=कृकृ=चकृ=चकृ ॥

भू—बभूव् (base)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	बभूव	बभूविव	बभूविम
मध्यम पु०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
प्रथम पु०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः

लुङ् (Aorist)

लुङ् ॥ भूत अर्थ में लुङ् प्रयुक्त होता है ॥

प्रथम प्रकार

उत्तम पु०	अम्	व	म
मध्यम पु०	स्	तम्	त
प्रथम पु०	त्	ताम्	अन्

भू

उत्तम पु०	अभूवम् ४४	अभूव	अभूम
मध्यम पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत
प्रथम पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्

आशीर्लिङ् (Benedictive Mood)

आशिषि लिङ् ॥ आशीर्वाद अर्थ में आशीर्लिङ् प्रयुक्त होता है

उत्तम पु०	यासम्	यास्व	यास्म
मध्यम पु०	यास्	यास्तम्	यास्त
प्रथम पु०	यात्	यास्ताम्	यासुः

भू

उत्तम पु०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म
मध्यम पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
प्रथम पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः

लृङ् (Conditional Mood)

२२५-लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ ॥ जिस हेतुहेतुमद् (cause and effect) के अर्थ में विधिलिङ् प्रयुक्त होता है उसी अर्थ में लृङ् का प्रयोग होता है. यदि कारण के न हो

४४-भुवो वुक् लुङ्लिटोः ॥ भू के आगे व् जोड़ा जाता है, यदि परे लुङ् वा लिट् की कोई अजादि विभक्ति हो ॥

से कार्य सिद्धि न हुई हो ॥ यथा—सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत् ॥

उत्तम पु०	स्यम्	स्याव	स्याम
मध्यम पु०	स्यः	स्यतम्	स्यत
प्रथम पु०	स्यत्	स्यताम्	स्यन्

भू

उत्तम पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम
मध्यम पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
प्रथम पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्

पत् (to fall)

लुट्-उत्तम पु०	पतितास्मि	पतितास्वः	पतितास्मः
मध्यम पु०	पतितासि	पतितास्थः	पतितास्थ
प्रथम पु०	पतिता	पतितारौ	पतितारः
लृट्-उत्तम पु०	पतिष्यामि	पतिष्यावः	पतिष्यामः
मध्यम पु०	पतिष्यसि	पतिष्यथः	पतिष्यथ
प्रथम पु०	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति

पपत् (base)

लिट्-उत्तम पु०	पपात-पपत[45]	पेतिव[46]	पेतिम

४५—णलुत्तमो वा ॥ धातु की उपधा में अ को वृद्धि (आ) विकल्प से हो जाती है, यदि परे लिट् के उत्तम पुरुष एकवचन की विभक्ति हो।

४६—अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि ॥ जिस धातु के अभ्यास में कोई परिवर्तन न हुआ हो और जिस में कोई संयुक्तवर्ण न हो, उस धातु के अभ्यास का लोप और उपधा में अ को ए हो जाता है, यदि परे उत्तम और प्रथम पुरुष के एकवचन से भिन्न लिट् की कोई विभक्ति हो ॥ पपत्+अतुः=पेत्+अतुः=पेतुः ॥

लुङ्—उत्तम पु०	अपाम्	अपाव	अपाम
आशीर्लिङ्—उ० पु०	पेयासम्	पेयास्व	पेयास
लृङ्—उत्तम पु०	अपास्यम्	अपास्याव	अपास्य
	गम् (to go)		
लुट्—उत्तम पु०	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्म
लृट्—उत्तम पु०	गमिष्यामि५४	गमिष्यावः	गमिष्य
	जगम् (base)		
लिट्—उत्तम पु०	जगाम-जगम	जग्मिव५५	जग्मि
मध्यम पु०	जगमिथ-जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
प्रथम पु०	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
लुङ्—उत्तम पु०	अगमम्	अगमाव	अगमा
आशीर्लिङ्—उ० पु०	गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यास
लृङ्—उत्तम पु०	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्य
	शुच् (to bewail)		
लुट्—उत्तम पु०	शोचितास्मि	शोचितास्वः	शोचितास्म
लृट्—उत्तम पु०	शोचिष्यामि	शोचिष्यावः	शोचिष्य
लिट्—उत्तम पु०	शुशोच	शुशोचिव	शुशोचि

५४—गमेरिट् परस्मैपदेषु ॥ गम् सेट् हो जाता है, यदि परे स्य आदि परस्मैपद की विभक्ति हो ॥

५५—(क) गम-हन-जन-खन-घसां लोपः क्ङित्यनङि ॥ गम्, हन्, जन्, खन् और घस धातुओं के उपधा—अ का लोप हो जाता है, यदि परे स्वादि अधिकारक विभक्ति हो ॥

(ख) ह्मिल्टोर्वे: ॥ सन् (Desiderative) और लिट् के हि के म् को ग् हो जाता है ॥

* गुपस्त्र-अपूरावस्व च ॥

लुङ्-उत्तम पु०	अशोचिषम्	अशोचिष्व	अशोचिष्म
मध्यम पु०	अशोचीः	अशोचिष्टम्	अशोचिष्ट
प्रथम पु०	अशोचीत्	अशोचिष्टाम्	अशोचिषुः

(द्वितीय प्रकार)

आशीर्लिङ्-उ० पु०	शुच्यासम्	शुच्यास्व	शुच्यास्म
लृङ्-उत्तम पु०	अशोचिष्यम्	अशोचिष्याव	अशोचिष्याम

पठ् (to read)

लुट्-उत्तम पु०	पठितास्मि	पठितास्वः	पठितास्मः
लृट्-उत्तम पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

पपठ् (base)

लिट्-उत्तम पु०	पपाठ-पपठ	पेठिव *	पेठिम
लुङ्-उत्तम पु०	अपठिषम्	अपठिष्व	अपठिष्म
वा-उत्तम पु०	अपाठिषम्५६	अपाठिष्व	अपाठिष्म
आशीर्लिङ्-उ० पु०	पठ्यासम्	पठ्यास्व	पठ्यास्म
लृङ्-उत्तम पु०	अपठिष्यम्	अपठिष्याव	अपठिष्याम

वद् (to speak)

लुट्-उत्तम पु०	वदितास्मि	वदितास्वः	वदितास्मः
लृट्-उत्तम पु०	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

उवद् (base)

लिट्-उत्तम पु०	उवाद-उवद५७	ऊदिव५८	ऊदिम

५६-अतो हलादेर्लघोः ॥ जिन धातुओं के आदि में हल् और अन्त में र, ल् से अन्य असंयुक्त हल् हो, उन के उपधा-अ को विकल्प से वृद्धि हो जाती है ॥

५७-लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ॥ वच्, स्वप्, यज्, वप्, वस्, वद्, ग्रह् आदि धातुओं के अभ्यास में य्, व् वा र् को क्रम से इ, उ वा ऋ होता है, यदि परे लिट् की विभक्तियें हों ॥ वद्+अ=ववद्+अ=उवद्+अ=उवाद ॥

५८-वचिस्वपियजादीनां किति ॥ वच्, स्वप्, यज्, वद्, वस्

मध्यम पु०	उवदिथ	ऊदथुः	ऊद
प्रथम पु०	उवाद	ऊदतुः	ऊदुः
लुङ्-उत्तम पु०	अवादिषम्४९	अवादिष्व	अवादि
आशीर्लिङ्-उ० पु०	उद्यासम्	उद्यास्व	उद्यास्म
लृङ्-उत्तम पु०	अवदिष्यम्	अवदिष्याव	अवदिष्य

नम् (to bend)

लुट्-उत्तम पु०	नन्तास्मि	नन्तास्वः	नन्तास्मः
लृट्-उत्तम पु०	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

ननम् (base)

लिट्-उत्तम पु०	ननाम ननम	नेमिव*	नेमिम
लुङ्-उत्तम पु०	अनंसिषम्६०	अनंसिष्व	अनंसिष्म
मध्यम पु०	अनंसीः	अनंसिष्टम्	अनंसिष्ट
प्रथम पु०	अनंसीत्	अनंसिष्टाम्	अनंसिषुः
आशीर्लिङ्-उ० पु०	नंस्यासम्	नंस्यास्व	नंस्यास्म

और वद् के व् या य् को क्रम से उ या इ हो जाता है (लिट् में इ उ होकर फिर द्वित्व होता है) यदि परे कोई लिट् की अपित् विभक्ति, आशीर्लिङ्, कर्मवाच्य, क्त (P. P. Participle), क्तवत् हो ॥ वद्+अतुः=उद्+अतुः=उउद्+अतुः=ऊदतुः ॥

४९—वद-व्रज-हलन्तस्याचः ॥ वद्, व्रज और हलन्त धातुओं के उप स्वर को वृद्धि होजाती है, यदि परे लुङ् की द्वितीय प्रकार की विभक्तियाँ

* अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि ॥

६०—नम्, रमा, पा (to protect, अदा०) या और शा धा और लुङ् के दूसरे प्रकार की विभक्तियों के मध्य में स् जोड़ा जाता है अर्थात् विभक्तियों के रूप ये बन जाते हैं:—सिषम् सिष्व सिष्म, सीः सिष्टम् सिष्ट, सीत् सिष्टाम् सिषुः ॥

लृङ्–उत्तम पु० अनंश्याम् अनंश्याव अनंश्याम

स्था (to stand)

लुट्–उत्तम पु० स्थातास्मि स्थातास्वः स्थातास्मः
लृट्–उत्तम पु० स्थास्यामि स्थास्यावः स्थास्यामः

तस्था (base)

लिट्–उत्तम पु० तस्थौ तस्थिव तस्थिम
मध्यम पु० तस्थिथ तस्थथुः, इत्यादि दा की तरह ।
लुङ्–उत्तम पु० अस्थासिषम् अस्थासिष्व अस्थासिष्म
या–उत्तम पु० अस्थाम् अस्थाव अस्थाम (प्रथमप्रकार)
आशीर्लिङ्–उ० पु० स्थेयासम् स्थेयास्व स्थेयास्म
लृङ्–उत्तम पु० अस्थास्यम् अस्थास्याव अस्थास्याम

पच् (to cook)

लुट्–उत्तम पु० पक्तास्मि पक्तास्वः पक्तास्मः
लृट्–उत्तम पु० पक्ष्यामि पक्ष्यावः पक्ष्यामः

पपच् (base)

लिट्–उत्तम पु० पपाच-पपच पेचिव पेचिम
लुङ्–उत्तम पु० अपाक्षम्* अपाक्ष्व अपाक्ष्म
मध्यम पु० अपाक्षीः अपाक्तम् अपाक्त
प्रथम पु० अपाक्षीत् अपाक्ताम् अपाक्षुः } द्वितीय प्रकार
आशीर्लिङ्–उ० पु० पच्यासम् पच्यास्व पच्यास्म
लृङ्–उत्तम पु० अपक्ष्यम् अपक्ष्याव अपक्ष्याम

क्षि (to waste away)

लुट्–उत्तम पु० क्षेतास्मि क्षेतास्वः क्षेतास्मः
लृट्–उत्तम पु० क्षेष्यामि क्षेष्यावः क्षेष्यामः

---

* अ+पच्+सम्=अपाच्+सम्=अपाक्+सम्=अपाक्+षम्=अपाक्षम् ।

चिक्षि (base)

लिट् -	उत्तम पु०	चिक्षाय-चिक्षय	चिक्षियिव[1]	चिक्षियिम
	मध्यम पु०	चिक्षयिथ-चिक्षेथ	चिक्षियथुः	चिक्षिय
	प्रथम पु०	चिक्षाय	चिक्षियतुः	चिक्षियुः
लुङ् -	उत्तम पु०	अक्षैषम्[2]	अक्षैष्व	अक्षैष्म
	मध्यम पु०	अक्षैषीः	अक्षैष्टम्	अक्षैष्ट
	प्रथम पु०	अक्षैषीत्	अक्षैष्टाम्	अक्षैषुः
आशीर्लिङ्	उ०पु०	क्षीयासम्[3]	क्षीयास्व	क्षीयास्म
लृङ्	उत्तम पु०	अक्षेष्यम्	अक्षेष्याव	अक्षेष्याम

जि (to conquer)

लुट् - जेतास्मि   लृट् जेष्यामि

जिगी (base)

लिट् -	उत्तम पु०	जिगाय-जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम
	मध्यम पु०	जिगयिथ-जिगेथ	जिग्यथुः	जिग्य, [illegible]
लुङ् -	उत्तम पु०	अजैषम्	अजैष्व	अजैष्म
	मध्यम पु०	अजैषीः	अजैष्टम्	अजैष्ट [illegible]

आशीर्लिङ् - जीयासम् ॥   लृङ् - अजेष्यम्

---

[1]-क्षि के इ को इय् हो जाता है यदि परे अजादि (अच्...
विभक्तियें हों ॥

[2]-सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ॥ धातु के अन्त में इक् (इ, ई...
जाता है, यदि परे लुङ् के द्वितीय या तृतीय प्रकार की विभक्तियें हैं...

[3]-अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ॥ धातु का अन्तिम स्वर दीर्घ...
जाता है, यदि परे कृत् और सार्वधातुक से अन्य कोई यकारादि...

स्मृ (to remember)

लुट् - स्मर्तास्मि, लृट् स्मरिष्यामि६४, आशीर्लिङ् - स्मर्यासम्, लृङ् अस्मरिष्यम्।

सस्मृ (base)

लिट् -	उत्तम पु०	सस्मार-सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम
लुङ् -	उत्तम पु०	अस्मार्षम्	अस्मार्ष्व	अस्मार्ष्म
	मध्यम पु०	अस्मार्षीः	अस्मार्ष्टम्	अस्मार्ष्ट
	प्रथम पु०	अस्मार्षीत्	अस्मार्ष्टाम्	अस्मार्षुः

सृ (to move)

लुट्—सर्तास्मि, लृट्—सरिष्यामि, आशीर्लिङ्—क्रियासम्६५, लृङ्—असरिष्यम्, लिट् - ससृ (base),ससार - ससर, लुङ्—असार्षम्। } अनिट्

त्यज (to abandon)

लुट्—त्यक्तास्मि, लृट् - त्यक्ष्यामि, आशीर्लिङ् — त्यज्यासम्, लृङ् - अत्यक्ष्यम्, लिट् - तत्यज् (base) तत्याज - तत्यज, लुङ् - अत्याक्षम्। } अनिट्

वस् (to dwell)

लुट्—वस्तास्मि, लृट् - वत्स्यामि६६, आशीर्लिङ्-उष्यासम्

६४–ऋद्धनोः स्ये ॥ ऋकारान्त और हन् धातु लृट् और लृङ् में सेट् हो जाते हैं॥

६५–रिङ्शयग्लिङ्क्षु ॥ ऋकारान्त धातुओं के अन्त में ऋ को रि हो जाता है, यदि परे य (कर्मवाच्य, passive), श वा आशीर्लिङ्-परस्मैपद में से कोई विभक्ति हो, (परन्तु यदि धातु के आदि कोई संयुक्त वर्ण हो तो ऋ को गुण हो जाता है) (गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः)॥

यथा—स्मर्यासम् ॥

६६–सः स्यार्धधातुके ॥ सकारान्त धातु के अन्तिम स् को त् हो जाता है, यदि परे सकारादि आर्धधातुक विभक्ति हो ॥

मध्यम पु०	स्यथाः	स्येथाम्	स्यध्वम्
प्रथम पु०	स्यत	स्येताम्	स्यन्त

भ्वादिगण (First Conjugation)

आत्मनेपद

लुट् (*First Future*)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	ताहे	तास्वहे	तास्महे
मध्यम पु०	तासे	तासाथे	ताध्वे
प्रथम पु०	ता	तारौ	तारः

शिक्ष् (to learn)

उत्तम पु०	शिक्षिताहे	शिक्षितास्वहे	शिक्षितास्महे
मध्यम पु०	शिक्षितासे	शिक्षितासाथे	शिक्षिताध्वे
प्रथम पु०	शिक्षिता	शिक्षितारौ	शिक्षितारः

लृट् (*Second Future*)

उत्तम पु०	स्ये	स्यावहे	स्यामहे
मध्यम पु०	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
प्रथम पु०	स्यते	स्येते	स्यन्ते
उत्तम पु०	शिक्षिष्ये	शिक्षिष्यावहे	शिक्षिष्यामहे
मध्यम पु०	शिक्षिष्यसे	शिक्षिष्येथे	शिक्षिष्यध्वे
प्रथम पु०	शिक्षिष्यते	शिक्षिष्येते	शिक्षिष्यन्ते

शिशिक्ष् (base)

उत्तम पु०	शिशिक्षे	शिशिक्षिवहे	शिशिक्षिमहे
मध्यम पु०	शिशिक्षिषे	शिशिक्षाथे	शिशिक्षिध्वे
प्रथम पु०	शिशिक्षे	शिशिक्षाते	शिशिक्षिरे

लुङ् (Aorist)

उत्तम पु०	इषि	इष्वहि	इष्महि	[illegible]
मध्यम पु०	इष्ठाः	इषाथाम्	इढ्वम्	
प्रथम पु०	इष्ट	इषाताम्	इषत	

उत्तम पु०	अशिशिक्षिषि	अशिशिक्षिष्वहि	अशिशिक्षिष्महि
मध्यम पु०	अशिशिक्षिष्ठाः	अशिशिक्षिषाथाम्	अशिशिक्षिढ्वम्
प्रथम पु०	अशिशिक्षिष्ट	अशिशिक्षिषाताम्	अशिशिक्षिषत

आशीर्लिङ् (Benedictive Mood)

उत्तम पु०	शिशिक्षिषीय	शिशिक्षिषीवहि	शिशिक्षिषीमहि
मध्यम पु०	शिशिक्षिषीष्ठाः	शिशिक्षिषीयास्थाम्	शिशिक्षिषीध्वम्
प्रथम पु०	शिशिक्षिषीष्ट	शिशिक्षिषीयास्ताम्	शिशिक्षिषीरन्

लृङ् (Conditional Mood)

उत्तम पु०	अशिशिक्षिष्ये	अशिशिक्षिष्यावहि	अशिशिक्षिष्यामहि
मध्यम पु०	अशिशिक्षिष्यथाः	अशिशिक्षिष्येथाम्	अशिशिक्षिष्यध्वम्
प्रथम पु०	अशिशिक्षिष्यत	अशिशिक्षिष्येताम्	अशिशिक्षिष्यन्त

ईक्ष् (to see)

लुट्-उत्तम पु०	ईक्षिताहे	ईक्षितास्वहे	ईक्षितास्महे
लृट्-उत्तम पु०	ईक्षिष्ये	ईक्षिष्यावहे	ईक्षिष्यामहे ।

लिट् (आमन्त, Periphrastic Perfect)

२२६–इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः ॥ (क) जिन धातुओं के आदि में ... स्वर हो, और

(ख) णिजन्त (Causal), स... (Desiderative), चुरा... (10th Conjugation) के ... तुओं के आगे आम् जोड़ा ... है, और धातु में द्वित्व नहीं ...

२२७-उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्, भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ॥ उष, विद्, जागृ, भी, ह्री, भृ और हु धा... के रूप आम् जोड़ने और द्वित्व करने ... (दोनों प्रकार) बनाये जाते हैं ॥

२२८-कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ॥ आम् जोड़ने के पश्चात् परस्मैप... आत्मनेपद के धातुओं के परे कृ (तनादि)... (भ्वादि) या अस (अदा०) धातुओं... परस्मैपद या आत्मनेपद के लिट् के रूप... से जोड़े जाते हैं ॥

यथा—* ईक्ष+आम्+चक्रे (कृ लिट् आत्म०)=ईक्षाञ्चक्रे,
ईक्ष+आम्+आस (अस लिट् आत्म०)=ईक्षामास,
ईक्ष+आम्+बभूवे (भू लिट् आत्म०) ईक्षाम्बभूवे ॥

उत्तम पु०	ईक्षाञ्चक्रे	ईक्षाञ्चकृवहे	ईक्षाञ्चकृमहे
मध्यम पु०	ईक्षाञ्चकृषे	ईक्षाञ्चक्राथे	ईक्षाञ्चकृढ्वे
प्रथम पु०	ईक्षाञ्चक्रे	ईक्षाञ्चक्राते	ईक्षाञ्चक्रिरे

—उत्तम पु०	वेतिषि*	वेतिष्वहि	वेतिष्महि
—शीर्लिङ् उ० पु०	ईतिषीय	ईतिषीवहि	ईतिषीमहि
—उत्तम पु०	वेतिष्ये	वेतिष्यावहि	वेतिष्यामहि

वन्द् (to salute)

लुट्—वन्दिताहे, लृट्—वन्दिष्ये, लिट्—ववन्द् (base), दे, लुङ्—अवन्दिषि, आशीर्लिङ्—वन्दिषीय, लृङ्—अव-ष्ये ॥

यत् (to strive)

लुट्—यतिताहे, लृट्—यतिष्ये, लिट्—येत् (base), येते†, —अयतिषि, आशीर्लिङ्—यतिषीय, लृङ्—अयतिष्ये ॥

शङ्क् (to suspect)

लुट्—शङ्किताहे, लृट्—शङ्किष्ये, लिट्—शशङ्क् (base), शशङ्के, —अशङ्किषि, आशीर्लिङ्—शङ्किषीय, लृङ्—अशङ्किष्ये ॥

श्लाघ् (to praise)

—श्लाघिताहे, लृट्—श्लाघिष्ये, लिट्—शश्लाघ् (base), घे, लुङ्—अश्लाघिषि, आशीर्लिङ्—श्लाघिषीय, लृङ्—घिष्ये ॥

कम्प् (to tremble)

लुट्—कम्पिताहे, लृट्—कम्पिष्ये, लिट्—चकम्प् (base), पे, लुङ्—अकम्पिषि, आशीर्लिङ्—कम्पिषीय, लृङ्—म्पिष्ये ॥

---

* आत्मनेपदीयाम्, आत्मत्व ॥

† अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि ॥

सह् (to bear)

लुट्-उत्तम पु०	सहिताहे ६६	सहितास्वहे	सहितास्म
	सोढाहे७०,७१,७२	सोढास्वहे	सोढास्महे

लृट् – सहिष्ये, लिट्--सेह् (base), सेहे*, लुङ्—असहिषि, आशीर्लिङ्--सहिषीय, लृङ्—असहिष्ये ॥

मुद् (to rejoice)

लुट्। मोदिताहे, लृट्। मोदिष्ये. लिट्—मुमुद् (base). मुमुदे, लुङ्--अमोदिषि, आशीर्लिङ् – मोदिषीय, लृङ् – अमोदिष्ये ॥

शुभ् (to be splendid, to become)

लुट्--शोभिताहे, लृट्—शोभिष्ये, लिट्—शुशुभ् (base), शुशुभे, लुङ् – अशोभिषि, आशीर्लिङ् शोभिषीय, लृङ् – अशोभिष्ये ॥

रुच् (to be liked)

लुट् – रोचिताहे, लृट् – रोचिष्ये, लिट् - रुरुच् (bas रुरुचे, लुङ् अरोचिषि, आशीर्लिङ् - रोचिषीय, लृङ् अरोचिष्ये ॥

लुट् – सेवितासे, लृट् – सेविष्ये, लिट् – सिषेव् (base), सिषेवे, लुङ् – असेविषि, आशीर्लिङ् – सेविषीय, लृङ् – असेविष्ये ॥

रभ (to begin)

लुट्–उत्तम पु०	रब्धाहे†	रब्धास्वहे	रब्धास्महे
लृट्–उत्तम पु०	रप्स्ये‡	रप्स्यावहे	रप्स्यामहे
लिट्–	रेभ् (base), रेभे	रेभिवहे	रेभिमहे
लुङ्–उत्तम पु०	अरप्सि‡	अरप्स्वहि	अरप्स्महि
मध्यम पु०	अरब्धाः७२	अरप्साथाम्	अरब्ध्वम्
प्रथम पु०	अरब्ध	अरप्साताम्	अरप्सत
आशीर्लिङ्–उ० प०	रप्सीय	रप्सीवहि	रप्सीमहि
लृङ्–उत्तम पु०	अरप्स्ये	अरप्स्यावहि	अरप्स्यामहि

लभ् (to get)

लुट्–लब्धाहे, लृट्–लप्स्ये, लिट् लभ् (base), लेभे, लुङ्–अलप्सि, आशीर्लिङ्–लप्सीय, लृङ्–अलप्स्ये ॥

वृत् (to be)

लुट्–वर्तिताहे, लृट्–वर्तिष्ये, लिट्–ववृत् (base), ववृते, लुङ्–अवर्तिषि, आशीर्लिङ्–वर्तिषीय, लृङ्–अवर्तिष्ये ॥

---

† झषस्तथोर्धोऽधः ॥ ‡ खरि च ॥

७२–रभ्, लभ्, युध्, विद्, युज्, दा, धा, मृ और कृ धातुओं से धाः और स्त के स् का लोप हो जाता है ॥

वृध् (to increase)

लुट्-वर्धिताहे, लृट्-वर्धिष्ये, लिट्-ववृध (base), व
लुङ्-अवर्धिषि, आशीर्लिङ् – वर्धिषीय, लृङ्-अवर्धिष्ये ॥

भ्वादिगण (First Conjugation

उभयपदी

बुध् (to know)

परस्मैपद

लुट्—बोधितास्मि, लृट्—बोधिष्यामि, लिट्-बुबुध् (ba
बुबोध, लुङ्—अबोधम् (प्रथम प्रकार)-अबोधिषम् (द्वि
प्रकार), आशीर्लिङ् – बुध्यासम् , लृङ् – अबोधिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—बोधिताहे, लृट् – बोधिष्ये लिट्-बुबुध् (base) बु
लुङ् – अबोधिषि, आशीर्लिङ् – बोधिषीय, लृङ् – अबोधिष्ये

याच् (to beg)

परस्मैपद

लुट्—याचितास्मि लृट्—याचिष्यामि,लिट्—ययाच्(ba
ययाच, लुङ्—अयाचीत्, आशीर्लिङ्—याच्यासम्, लृङ्—अया
चिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—याचिताहे, लृट्—याचिष्ये, लिट्—ययाच् (bas
ययाचे, लुङ् - अयाचिषि, आशीर्लिङ्—याचिषीय, लृङ्—अया
चिष्ये ॥

हृ (to take away)

परस्मैपद

लुट्—हर्तास्मि, लृट्—हरिष्यामि लिट्—जहृ(base) जहार

लुङ्—उत्तम पु० अहार्षम् अहार्ष्व अहार्ष्म
मध्यम पु० अहार्षीः अहार्ष्टम् अहार्ष्ट
आशीर्लिङ्—*ह्रियासम्, लृङ्—अहरिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—हर्ताहे, लृट्—हरिष्ये, लिट्—जह (base), जह्रे ॥
लुङ्—उत्तम पु० अहृषि अहृष्वहि अहृष्महि
मध्यम पु० अहृथाः† अहृषाताम् अहृषत
आशीर्लिङ्—हृषीय, लृङ्—अहरिष्ये ॥

नी (to carry)

परस्मैपद।

लुट्—नेतास्मि, लृट्—नेष्यामि ॥
लिट्—निनी (base) उ० पु० निनाय-निनय निन्यिव निन्यिम
उ० पु० निनयिथ-निनेथः निन्यथु निन्य
लुङ्—उत्तम पु० अनैषम् अनैष्व अनैष्म
मध्यम पु० अनैषीः अनैष्टम् अनैष्ट
आशीर्लिङ्—नेयासम्, लृङ्—अनेष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट् नेताहे, लृट्—नेष्ये ॥

लिट्—निनी (base) उ० पु० निन्ये⊗ निन्यिवहे निन्यिमहे
लुङ्—उत्तम पु० अनैषि अनैष्वहि अनैष्महि

* रिङ् शयग्लिङ्क्षु ॥

† ह्रस्वादङ्गात् ॥ ह्रस्व स्वर से परे लुङ् के तृतीय प्रकार की विभक्तियों के आदि में स् का लोप हो जाता है, यदि परे झल् हो।

⊗ यहाँ पर ई को य होता है ॥

म० पु० अनैष्ठाः अनैषाथाम् अनैढ्वम्
आशीर्लिङ्—नेषीय, लृङ्—अनेष्ये ॥

EXERCISE XV

(क) स्वकृत्यमनुष्ठास्यामि प्राणान् वा त्यक्ष्यामि ॥

यद्यत्ते हितकरं तत्सर्वं कर्तुं यतिष्ये ॥

यदि त्वमेतांश्चेन्न योद्धासि, तदा ते मृत्युरवश्यमेव भविता ॥

यद्ययं स्वामिनमसिना प्रहरिष्यति, तदा महाननर्थो भविष्यति ॥

सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत् ॥

यदि धर्ममत्यक्ष्यद्दुःखमाद् समवर्तिष्यत ॥

तदाहं किं स्वल्पम् कवचागममिति न किञ्चिदश्रासिषम् ।

ओदनं शाकांश्च सूदा अपाक्षुः ।

त्वमात्मनः पूर्वमार्यामन्याशीरन्याश्च पर्यणैषीरिति यद् वदन्ति तत्किं सत्यम् ॥

यदि सत्सङ्गनिरतो भविष्यसि भविष्यसि ।
तथाऽसज्जनगोष्ठीषु पतिष्यसि पतिष्यसि ॥

(ख) पिता पुत्र को देखेगा तो प्रसन्न होगा ॥

कल दुर्गा का उत्सव होगा, इसमें बहुत लोग जायेंगे ॥

यदि वह उस अवसर पर न होता तो जाने क्या हानि होती ॥

वर्षा यदि न होती तो इतने गृह न गिरते ॥

एक वन में कोई ऋषि रहता था ॥

ग्वाला सायंकाल में गाय वापस लाया ॥

उसने मार्ग में एक साँप

विंशः पाठः ।

आर्धधातुक-प्रकरणम् ।

दिवादिगण (Fourth Conjugation)

परस्मैपद

नश् (to perish)

लुट् (First Future)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पु०	७४ नंष्टास्मि	नंष्टास्वः	नंष्टास्मः
	नशितास्मि	नशितास्वः	नशितास्मः
मध्यम पु०	नंष्टासि	नंष्टास्थः	नंष्टास्थ
	नशितासि	नशितास्थः	नशितास्थ
प्रथम पु०	नंष्टा	नंष्टारौ	नंष्टारः
	नशिता	नशितारौ	नशितारः

लृट् (Second Future)

उत्तम पु०	७५ नंक्ष्यामि	नंक्ष्यावः	नंक्ष्यामः
	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

७४—मस्जिनशोर्झलि । मस्ज् और नश् धातु की झलादि में न्, [illegible] आता है, यदि वे लुट् हों । [illegible]
(यह [illegible]) [illegible]
७५—[illegible] आता है, यदि [illegible]
[illegible]
([illegible]) [illegible] ।

मध्यम पु०	नंक्ष्यसि	नंक्ष्यथः	नंक्ष्यथ
	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
प्रथम पु०	नंक्ष्यति	नंक्ष्यतः	नंक्ष्यन्ति
	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति

लिट् (Past Perfect)

नश् (base)

उत्तम पु०	ननाश-ननश	नेशिव*	नेशिम
मध्यम पु०	ननंष्ठ-नेशिथ	नेशथुः	नेश
प्रथम पु०	ननाश	नेशतुः	नेशुः

लुङ् (Aorist)

उत्तम पु०	अनशम्	अनशाव	अनशाम
मध्यम पु०	अनशः	अनशतम्	अनशत
प्रथम पु०	अनशत्	अनशताम्	अनशन्

आशीर्लिङ् (Benedictive Mood)

उत्तम पु०	नश्यासम्	नश्यास्व	नश्यास्म
मध्यम पु०	नश्याः	नश्यास्तम्	नश्यास्त
प्रथम पु०	नश्यात्	नश्यास्ताम्	नश्यासुः

लृङ् (Conditional Mood)

उत्तम पु०	अनंक्ष्यम्	अनंक्ष्याव	अनंक्ष्याम
	अनशिष्यम्	अनशिष्याव	अनशिष्याम
मध्यम पु०	अनंक्ष्यः	अनंक्ष्यतम्	अनंक्ष्यत
	अनशिष्यः	अनशिष्यतम्	अनशिष्यत
प्रथम पु०	अनंक्ष्यत्	अनंक्ष्यताम्	अनंक्ष्यन्
	अनशिष्यत्		

क्रुध् (to be angry)

लुट्-उत्तम पु०	क्रोद्धास्मि*	क्रोद्धास्वः	क्रोद्धास्मः
लृट्-उत्तम पु०	क्रोत्स्यामि†	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः

लिट्—चुक्रुध् (base)

उत्तम पु०	चुक्रोध	चुक्रुधिव	चुक्रुधिम
लुङ्-उत्तम पु०	अक्रुधम्	अक्रुधाव	अक्रुधाम
आशीर्लिङ्-उ०पु०	क्रुध्यासम्	क्रुध्यास्व	क्रुध्यास्म
लृङ्-उत्तम पु०	अक्रोत्स्यम्	अक्रोत्स्याव	अक्रोत्स्याम

शुष् (to dry)

लुट्—शोष्टास्मि, लृट्—शोक्ष्यामि, लिट्—शुशुष् (base), शुशोष, लुङ्—अशुषम् आशीर्लिङ्—शुष्यासम्, लृङ्—अशोक्ष्यम् ॥

श्रम् (to be weary)

लुट्—श्रमितास्मि, लृट्—श्रमिष्यामि, लिट्—शश्रम् (base), शश्राम, लुङ्—अश्रमम्, लृङ्—अश्रमिष्यम् ॥

तुष् (to be pleased)

लुट्—तोष्टास्मि, लृट्—तोक्ष्यामि, लिट्—तुतुष् (base), तुतोष, लुङ्—अतुषम्, आशीर्लिङ्-तुष्यासम्, लृङ्-अतोक्ष्यम् ॥

अस् (to throw)

लुट्—असितास्मि, लृट्—असिष्यामि ॥

लिट्—आस् (base) उ०पु०	आस	आसिव	आसिम
लुङ्—उत्तम पु०	७६ आस्थम्	आस्थाव	आस्थाम

आशीर्लिङ्—अस्यासम्, लृङ्—आसिष्यम् ॥

---

* झषस्तथोर्धोऽधः ॥ † खरि च ॥

७६—अस्यतेस्थुक् ॥ लुङ् में अस् के अन्त में थ् जोड़ा जाता है ॥

पुष् (to nourish)

लुट्—पोष्टास्मि, लृट्—पोक्ष्यामि, लिट्—पुपुष् (base), पुपोष, लुङ्—अपुषम्, आशीर्लिङ्—पुष्यासम्, लृङ्—अपोक्ष्यम् ॥

नृत् (to dance)

लुट्-नर्तितास्मि, लृट्-नर्तिष्यामि, लिट्-ननृत् (base), ननर्त,

लुङ्-उत्तम पु०	अनर्तिषम्	अनर्तिष्व	अनर्तिष्म	द्वितीय प्रकार
मध्यम पु०	अनर्तीः	अनर्तिष्टम्	अनर्तिष्ट	
प्रथम पु०	अनर्तीत्	अनर्तिष्टाम्	अनर्तिषुः	

आशीर्लिङ्—नृत्यासम्, लृङ्—अनर्तिष्यम् ॥

दिव् (to shine)

लुट्—देवितास्मि, लृट्—देविष्यामि, लिट्—दिदिव् (base), दिदेव, लुङ्—अदेविषम्, आशीर्लिङ्—दीव्यासम्७७, लृङ्—अदेविष्यम् ॥

आत्मनेपद

युध् (to fight)

लुट्—उत्तम पु०	योद्धाहे	योद्धास्वहे	योद्धास्महे
लृट्—उत्तम पु०	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

लिट्—

युयुध् (base)

उत्तम पु०	युयुधे	युयुधिवहे	युयुधिमहे	
लुङ्—उत्तम पु०	अयुत्सि	अयुत्स्वहि	अयुत्स्महि	द्वितीय प्रकार
मध्यम पु०	अयुद्धाः	अयुत्साथाम्	अयुद्ध्वम्	
प्रथम पु०	अयुद्ध	अयुत्साताम्	अयुत्सत	

आशीर्लिङ्—उ० पु० युत्सीय युत्सीवहि युत्सीमहि

७७—इकि च॥ रकारान्त और वकारान्त धातुओं के इपधा स्वर को दीर्घ हो जाता है, यदि परे हल् हो ॥

लृङ्—उत्तम पु० अयोत्स्ये अयोत्स्यावहि अयोत्स्यामहि

विद् (to be)

लुट्—वेत्ताहे, लृट्—वेत्स्ये, लिट्—विविद् (base), विविदे,
लुङ्—उत्तम पु० अवित्सि अवित्स्वहि अवित्स्महि
आशीर्लिङ्—वित्सीय, लृङ्—अवेत्स्ये ॥

जन् (to be produced)

लुट्—जनिताहे, लृट्—जनिष्ये,
लिट्— *जज्ञ (base)

उत्तम पु०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे
मध्यम पु०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे †
प्रथम पु०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
लुङ्-उत्तम पु०	अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि
मध्यम पु०	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिढ्वम्
प्रथम पु०	अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत

आशीर्लिङ्—जनिषीय, लृङ्—अजनिष्ये ॥

तुदादिगण (Sixth Conjugation)

परस्मैपद

इष् (to desire)

लुट्—उत्तम पु०	एषितास्मि	एषितास्वः	एषितास्मः
	एष्टास्मि	एष्टास्वः	एष्टास्मः
लृट्—उत्तम पु०	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लिट् — इइष् (base)=इयेष् (strong)=ईष् (weak)

* [illegible]

† [illegible]

‡ [illegible]

उत्तम पु० इयेप७८ ईपिव ईपिम
लुट्— पेपिषम् पेपिष्व पेपिष्म (द्वितीय प्रकार)
आशीर्लिङ्—इष्यासम् इष्यास्व इष्यास्म
लृङ्— पेपिष्यम् पेपिष्याव पेपिष्याम ॥

* क्षिप् (to throw)

लुट्-क्षेप्तास्मि, लृट्-क्षेप्स्यामि, लिट्-चिक्षिप् (base), चिक्षेप,

लुङ्-उत्तम पु०	अक्षैप्सम्	अक्षैप्स्व	अक्षैप्स्म	तृतीय प्रकार
मध्यम पु०	अक्षैप्सीः	अक्षैप्तम्	अक्षैप्त	
प्रथम पु०	अक्षैप्सीत्	अक्षैप्ताम्	अक्षैप्सुः	

आशीर्लिङ्—क्षिप्यासम्, लृङ्—अक्षेप्स्यम्

प्रच्छ् (to ask)

लुट्-प्रष्टास्मि, लृट्-प्रक्ष्यामि, लिट्-पप्रच्छ् (strong), पपृच्छ् (weak) उ० पु० पप्रच्छ पपृच्छिव७९ पपृच्छिम
लुङ्-उत्तम पु० अप्राक्षम् † अप्राक्ष्व अप्राक्ष्म

७८-अभ्यासस्यासवर्णे ॥ अभ्यास (first reduplicated part) के इ को इय् और उ को उव् हो जाता है, यदि परे कोई असमान स्वर हो ॥ इष्+अ=इइप्+अ=इएप्+अ=इयेप ॥

* क्षिप् आत्मनेपद में भी होता है, परन्तु परस्मैपद रूप ही अधिकतर प्रयुक्त होते हैं ॥

७९-ग्रहि-ज्या-वयि-व्यधि-वष्टि-विचति-वृश्चति-पृच्छति-भृज्जतीनां ङिति च ॥ इन धातुओं के य्, व् वा र् को इ, उ वा ऋ क्रम से होते हैं, यदि परे लिट् की अविकारक विभक्तियें, आशीर्लिङ्, क्त, क्त्वा, इत्यादि हो ॥

† अ+प्रछ्+सम्=अप्रश्+सम् (व्रश्चभ्रस्जसृज०)=अप्राश्+सम् (वदव्रजहलन्तस्याचः० सिचिवृद्धिः०)=अप्राष्+सम् (षढोः कः सि)=अप्राक्षम्।

मध्यम पुं० अप्राक्षीः अप्राष्टम् अप्राष्ट
प्रथम पु० अप्राक्षीत् अप्राष्टाम् अप्राक्षुः

आशीर्लिङ् —पृच्छ्यासम्, लङ् —अप्रक्ष्यम् ॥

सृज (to create)

लुट्-स्रष्टास्मि, लृट्-स्रक्ष्यामि, लिट्-ससृज् (base), ससर्ज,
लुङ् – उत्तम पु० अस्राक्षम् अस्राक्ष्व अस्राक्ष्म
आशीर्लिङ्—सृज्यासम्, लङ् – अस्रक्ष्यम् ॥

स्पृश्

लुट्—स्प्रष्टास्मि, लृट् - स्प्रक्ष्यामि, लिट् - पस्पृश् (base), पस्पर्श
लुङ्—उत्तम पु० अस्प्राक्षम् अस्प्राक्ष्व अस्प्राक्ष्म
आशीर्लिङ्—स्पृश्यासम्, लङ्-अस्प्रक्ष्यम् ॥

मृ (to die)

लुट्, लृट्, लिट् और लङ् में परस्मैपदी होता है ॥
लुट् – मर्तास्मि, लृट्—मरिष्यामि*, लिट्—मम्र् (base), ममार
ममर
लुङ्-उत्तम पु० अमृषि अमृष्वहि अमृष्महि
आशीर्लिङ् मृषीय, लृङ् - अमरिष्यम्

उभयपदी

मुच् (to abandon)

परस्मैपद

लुट्-मोक्तास्मि, लृट्-मोक्ष्यामि, लिट्-मुमुच् (base), मुमोच,
लुङ्-उत्तम पु० अमुचम् अमुचाव अमुचाम (प्रथम प्रकार)
आशीर्लिङ्-मुच्यासम्, लृङ्—अमोक्ष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्-मोक्ताहे, लृट्-मोक्ष्ये, लिट्-मुमुच् (base), मुमुचे,

* ऋद्धनोः स्ये ।

लुङ्–उत्तम पु॰ अमुक्षि अमुक्ष्वहि अमुक्ष्महि (तृतीय प्रकार)
आशीर्लिङ्–मुक्षीय, लृङ्–अमोक्ष्यम् ॥

सिच् (to sprinkle)

परस्मैपद

लुट्–सेक्तास्मि, लृट्–सेक्ष्यामि, लिट्–सिषिच् (base) सिषेच
लुङ्–असिचम्, आशीर्लिङ्–सिच्यासम्, लृङ्–असेक्ष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्–सेक्ताहे, लृट्–सेक्ष्ये, लिट्–सिषिच् (base), सिषिचे

लुङ्–उत्तम पु॰ असिचे असिचावहि असिचामहि (प्रथम प्रकार)

वा–उत्तम पु॰ असिक्षि असिक्ष्वहि असिक्ष्महि (तृतीय प्रकार)

आशीर्लिङ्–सिच्यासम्, लृङ्–असेक्ष्ये ॥

*चुरादिगण (Tenth Conjugation)

उभयपदी

चुरादिगण में लुङ् और आशीर्लिङ् (परस्मैपद) से अन्य आर्धधातुक विभक्तियों में भी अय विकरण (conjugational sign) जोड़ा जाता है ॥

चुर् (to steal)

परस्मैपद

लुट् (First Future)

उत्तम पु॰	चोरयितास्मि	चोरयितास्वः	चोरयितास्मः
मध्यम पु॰	चोरयितासि	चोरयितास्थः	चोरयितास्थ
प्रथम पु॰	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः

* चुरादिगण के धातु प्रायः सभी सेट् और उभयपदी होते हैं ॥

लृट् (Second Future)

उत्तम पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः
मध्यम पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
प्रथम पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति

लिट् (Past Perfect)

उत्तम पु०*	चोरयाञ्चकार -चकर	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम
मध्यम पु०	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र
प्रथम पु०	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः
या—उत्तम पु०	चोरयामास	चोरयामासिव	चोरयामासिम
या—उत्तम पु०	चोरयाम्बभूव	चोरयाम्बभूविव	चोरयाम्बभूविम

लुङ्

लुङ् में जुहोत्यादिगण के धातुओं की तरह धातु में द्वित्व हो जाता है । धातु में कुछ अन्य परिवर्तन (change) करने के पश्चात् अङ्ग (base) के परे लुङ् को प्रथम प्रकार की विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं ॥

उत्तम पु०	अचूचुरम्‡०	अचूचुराव†	अचूचुराम

---

* इजादेश्चगुरुमतोऽनृच्छः, कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ॥ चुर्+अय चोर्+अय+आम्=चोरयाम्=चोरयाञ्चकार ॥

‡०—दीर्घोलघोः ॥ लुङ् के अभ्यास (first repeated portion) में यदि ह्रस्व स्वर हो तो वह दीर्घ हो जाता है ॥ चुर्+अङ् चुचुर्+अम् (चङ्परेऽनि द्वित्वम्)=अचुचुर+अम् (लङ्-लुङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः)=अचूचुरम् (दीर्घोलघोः) ॥

† लुङ् में धातु और विभक्ति के मध्य में स्वादिगण की तरह अ ॥

मध्यम पु०	अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत
प्रथम पु०	अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्

आशीर्लिङ् (Benedictive)

उत्तम पु०	चोर्यासम्	चोर्यास्व	चोर्यास्म

लृङ् (Conditional)

उत्तम पु०	अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम

आत्मनेपद

लुट् (First Future)

उत्तम पु०	चोरयिताहे	चोरयितास्वहे	चोरयितास्महे

लृट् (Second Future)

उत्तम पु०	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लृट् (Second Future)

उत्तम पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः
मध्यम पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
प्रथम पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति

लिट् (*Past Perfect*)

उत्तम पु०*	चोरयाञ्चकार —चकर	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम
मध्यम पु०	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र
प्रथम पु०	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः
वा—उत्तम पु०	चोरयामास	चोरयामासिव	चोरयामासिम
वा—उत्तम पु०	चोरयाम्बभूव	चोरयाम्बभूविव	चोरयाम्बभूविम

लुङ्

लुङ् में जुहोत्यादिगण के धातुओं की तरह धातु में द्वित्व हो जाता है । धातु में कुछ अन्य परिवर्तन (change) करने के पश्चात् अङ्ग (base) के परे लुङ् के प्रथम प्रकार की विभक्तियें जोड़ी जाती हैं ॥

उत्तम पु०	अचूचुरम्८०	अचूचुराव†	अचूचुराम

---

* इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः, कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ॥ चुर्+अय=चोर्+अय+आम्=चोरयाम्=चोरयाञ्चकार ॥

८०—दीर्घो लघोः ॥ लुङ् के अभ्यास (first repeated portion) में यदि ह्रस्व स्वर हो तो वह दीर्घ हो जाता है ॥ चुर्+अम्= चचर+अम (एकाचो द्वे प्रथमस्य)=अचचर+अम ([illegible]

मध्यम पु०	अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत
प्रथम पु०	अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्

आशीर्लिङ् (Benedictive)

उत्तम पु०	चोर्यासम्*	चोर्यास्व	चोर्यास्म

लृङ् (Conditional)

उत्तम पु०	अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम

आत्मनेपद

लुट् (First Future)

उत्तम पु०	चोरयिताहे	चोरयितास्वहे	चोरयितास्महे

लृट् (Second Future)

उत्तम पु०	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लिट् (Past Perfect)

उत्तम पु०	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चकृवहे	चोरयाञ्चकृमहे
या उत्तम पु०	चोरयामासे	चोरयामासिवहे	चोरयामासिमहे
या उत्तम पु०	चोरयाम्बभूवे	चोरयाम्बभूविवहे	चोरयाम्बभूविमहे

लुङ् (Aorist)

उत्तम पु०	अचूचुरे	अचूचुरावहि	अचूचुरामहि
मध्यम पु०	अचूचुरथाः	अचूचुरेथाम्	अचूचुरध्वम्
प्रथम पु०	अचूचुरत	अचूचुरेताम्	अचूचुरन्त

आशीर्लिङ् (Benedictive)

उत्तम पु०	चोरयिषीय	चोरयिषीवहि	चोरयिषीमहि

लृङ् (Conditional)

उत्तम पु०	अचोरयिष्ये	अचोरयिष्यावहि	अचोरयिष्यामहि

तड् (to beat)

परस्मैपद

लुट्—ताडयितास्मि, लृट्—ताडयिष्यामि, लिट्—ताडयामास-

लुङ् उत्तम पु० अतीतडम्८१ अतीतडाव अतीतडाम
आशीर्लिङ्—ताड्यासम्, लृङ्—अताडयिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—ताडयिताहे, लृट्—ताडयिष्ये, लिट्—ताडयामासे—
ताडयाञ्चक्रे—ताडयाम्बभूवे
लुङ्—उत्तम पु० अतीतडे अतीतडावहि अतीतडामहि
आशीर्लिङ्—ताडयिषीय, लृङ्—अताडयिष्ये ॥

भूष् (to adorn)

लुट्—भूषयितास्मि, लृट्—भूषयिष्यामि, लिट्—भूषयामास—
भूषयाञ्चकार—भूषयाम्बभूव
लुङ्—अबुभूषम्८२, लृङ्—अभूषयिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—भूषयिताहे, लृट्—भूषयिष्ये, लिट्—भूषयामासे—
भूषयाञ्चक्रे—भूषयाम्बभूवे, लुङ्—अबुभूषे, लृङ्—अभूषयिष्ये ॥

भक्ष् (to eat)

परस्मैपद

लुट्—भक्षयितास्मि, लृट्—भक्षयिष्यामि, लिट्—भक्षयामास
—भक्षयाञ्चकार—भक्षयाम्बभूव, लुङ्—अबभक्षत्, आशीर्लिङ्—
भक्ष्यासम्, लृङ्—अभक्षयिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट् भक्षयिताहे, लृट्—भक्षयिष्ये, लिट् भक्षयामासे—

८१—सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ॥ चुरादि और णिजन्त धातुओं के लुङ् में अभ्यास के ह्रस्व अ को इ हो जाता है, यदि आगे इत में ह्रस्व स्वर हो ॥ अतताड्+अम्=अतिताड्+अम्=अतीतडम् (दीर्घो लघोः) ॥

८२—णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ॥ चुरादि और णिजन्त धातुओं के लुङ् में अभ्यास के दीर्घ स्वर को ह्रस्व हो जाता है ॥

भक्षयाञ्चक्रे—भक्षयाम्बभूवे, लुङ्—अबभक्षम्, आशीर्लिङ्—भक्षयिषीय, लृङ्—अभक्षयिष्ये ॥

दण्ड् (to punish)

परस्मैपद

लुट् दण्डयितास्मि, लृट्—दण्डयिष्यामि, लिट्—दण्डयामास—दण्डयाञ्चकार—दण्डयाम्बभूव, आशीर्लिङ्—दण्ड्यासम्, लुङ्—अददण्डम्, लृङ्—अदण्डयिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—दण्डयिताहे, लृट्—दण्डयिष्ये, लिट्—दण्डयामासे—दण्डयाञ्चक्रे—दण्डयाम्बभूवे, आशीर्लिङ्—दण्डयिषीय, लुङ्—अददण्डे, लृङ्—अदण्डयिष्ये ॥

तुल् (to weigh)

परस्मैपद

लुट् तोलयितास्मि, लृट्—तोलयिष्यामि, लिट्—तोलयामास—तोलयाञ्चकार—तोलयाम्बभूव, लुङ्—अतूतुलम्, आशीर्लिङ्—तोल्यासम्, लृङ्—अतोलयिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—तोलयिताहे, लृट्—तोलयिष्ये, लिट्—तोलयामासे—तोलयाञ्चक्रे—तोलयाम्बभूवे, लुङ्—अतूतुले, आशीर्लिङ्—तोलयिषीय, लृङ्—अतोलयिष्ये ॥

स्पृह् (to desire)

परस्मैपद

लुट्—स्पृहयितास्मि, लृट्—स्पृहयिष्यामि, लिट्—स्पृहयामास—स्पृहयाञ्चकार—स्पृहयाम्बभूव, लुङ्—अपिस्पृहम् ^१, आशीर्लिङ्—स्पृह्यासम्, लृङ्—अस्पृहयिष्यम् ॥

१—[illegible]

आत्मनेपद

लुट्—स्पृहयिताहे, लृट्—स्पृहयिष्ये, लिट्—स्पृहयाम्
स्पृहयाञ्चक्रे—स्पृहयाम्बभूवे, लुङ्—अपिस्पृहे, आशीर्लिङ्—
हयिषीय, लृङ्—अस्पृहयिष्ये ॥

EXERCISE XVI.

(क) यद्ययं दुष्टः तेन योत्स्यते तदाऽत्यनर्थः संपत्स्यते ॥

उत्पत्स्यते तवैकः पुत्रः जनिष्यते चैका कन्या ॥

देवि ! वीरः प्रसवस्ते जन्यात् ॥

असौ पान्थो यदि तं मार्गमप्रक्ष्यत् स सत्वरमेव तमदिक्ष्यत् ॥

स पूर्वं देवानपूपुजत् तदा स्वयमन्नं भक्षयामास ॥

भूयोभूयोऽप्यजीगणं निष्क… परमेकं न्यूनमेवाद्राक्षम्

पुरा राक्षसा महीं स्वर्गलोक… पीडयामासुः ॥

गुरुणाऽऽहूत एवासौ छा… ऽविशत् ॥

शिरोवेदनामामर्पीपिडत् पर… घुनापथस्य प्रयोगादशमत्

यदासाद्वीपिस्तमुपादिक्षत् तत्… मृत्येव सोऽत्याक्षीत् सुर… पानम् ॥

रंस्यन्ते मुनयः सर्वे कथयिष्यन्ति चानिशम् ।
दशग्रीवस्य दुर्नीतेः विनष्टं रक्षसां कुलम् ॥
मरिष्यामि विजेष्ये वा हृताच्चेत्तनया मम ॥

में पहिला वर्ण श्, ष् या स् हो, और दूसरा खय् हो तो, दूसरे वर्ण (खय्) और उसके साथ के स्वर को द्वित्व होता है ॥ स्पृह्+अम्=पस्पृह…
[illegible]

(ख) अभी यदि तू साहस छोड़ेगा तो नष्ट हो जायगा ॥

यदि आप इसके पीछे आयेंगे तो यह आप को मार्ग दिखायेगा (दिए) ॥

राजा की सेना कल उस ग्राम पर आक्रमण करेगी, अतः दोनों दल परस्पर युद्ध करेंगे ॥

यह यदि धन न चुराता तो कारागार में न जाता ॥

जो कुछ मैंने बेसुध होकर कहा गुरु ने क्षमा कर दिया ॥

राम ने मुझ से पूछा "क्या तू घर गया और मेरा सन्देश माता को कह दिया" ॥

दुर्योधन पाण्डवों से द्रोह करता था इसलिये नष्ट होगया ॥

उस भिखारी ने जब आहार भी छोड़ दिया, तो नगर के लोगों ने उसे इस का कारण पूछा ॥

एकविंशः पाठः ।

आर्धधातुक-प्रकरणम्

(NON-CONJUGATIONAL TENSES)

अदादिगण (Second Conjugation)

परस्मैपद

अद् (to eat)

लुट् (First Future)

उत्तम पु०	अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः

लृट् (Second Future)

उत्तम पु०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

लिट् (Past Perfect)

आद् (base)

उत्तम पु०	आद	आदिव	आदिम

लुङ् (Aorist)

उत्तम पु०	अघसम्[८४]	अघसाव	अघसाम (प्रथमप्रकार)

आशीर्लिङ् (Benedictive)

उत्तम पु०	अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म

लृङ् (Conditional)

उत्तम पु०	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

अस् (to be)

आर्धधातुक विभक्तियों के पूर्व अस् (to be) के स्थान में भू हो जाता है, अतः इस के रूप वे ही हैं जो भू के हैं ॥

८४—लुङ्सनोर्घस्लृ ॥ लुङ् या सन्नन्त (Desiderative) में अद् को घस् हो जाता है ।

इ (to go)

लुट्—एतास्मि, लृट्—एष्यामि,

लिट्—			
उत्तम पु०	इयाय-इययः*	ईयिव८५	ईयिम
मध्यम पु०	इययिथ-इयेथ	ईयथुः	ईय
प्रथम पु०	इयाय	ईयतुः	ईयुः

लुङ्—उत्तम पु० अगाम्८६ अगाव अगाम (प्रथम प्रकार)

आशीर्लिङ्—ईयासम् , लृङ्—ऐष्यम् ॥

हन् (to kill)

लुट्—हन्तास्मि, लृट्—हनिष्यामि,†

जघन् (base)

लिट्—			
उत्तम पु०	जघान-जघन	जघ्निव ८७	जघ्निम
मध्यम पु०	जघनिथ-जघन्थ	जघ्नथुः	जघ्न
प्रथम पु०	जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः

लुङ्—अवधिषम्‡, आशीर्लिङ्—वध्यासम्‡, लृङ्—अहनिष्यम् ॥

विद् (to know)

लुट्—वेदितास्मि, लृट्—वेदिष्यामि,

---

* अभ्यासस्यासवर्णे ॥ † ऋद्धनोः स्ये ॥

८५—दीर्घ इणः किति ॥ इ धातु के अभ्यास का इ दीर्घ हो जाता है यदि परे कोई अविकारक (weak) विभक्ति हो । इ+अतुः=इ इ+अतुः=ई इ+अतुः=ईयतुः ।

८६—इणो गा लुङि ॥ लुङ् में इ को गा हो जाता है ॥

८७—अभ्यासाच्च ॥ अभ्यास से परे हन् के ह को घ् हो जाता है ॥ हन्+इ+व=जहन्+इव=जह्न्+इव (गम-हन-जन-खन-घसां लोपः क्ङित्यनङि)=जघ्निव ॥

‡ हनो वध लिङि, लुङि च ॥ आशीर्लिङ् और लुङ् में हन् को वध् हो जाता है ॥

लिट्—उत्तम पु० विदाञ्चकार विदाञ्चकृव विदाञ्चकृम इत्या

वा विवेद विविदिव विविदिम इत्या

लुङ्—उत्तम पु० अवेदिषम् अवेदिष्व अवेदिष्म

आशीर्लिङ्—विद्यासम्, लृङ्—अवेदिष्यम् ॥

रुद् (to weep)

लुट्—रोदितास्मि, लृट्—रोदिष्यामि, लिट्—रुरुद् (base), रुरोद. लुङ्—अरोदिषम्, आशीर्लिङ्—रुद्यासम्, लृङ्—अरोदिष्यम् ॥

जागृ (to be awake)

लुट्—जागरितास्मि, लृट्—जागरिष्यामि,

लिट्—जागराञ्चकार—जजागार (गर) ८८, लुङ्—अजागरिषम्, आशीर्लिङ्—जागर्यासम्, लृङ्—अजागरिष्यम् ॥

पा (to protect)

लुट्—पातास्मि, लृट्—पास्यामि

लिट्—उत्तम पु० पपौ पपिव पपिम

लुङ्—उत्तम पु० अपासिषम् अपासिष्व अपासिष्म

आशीर्लिङ्—पायासम्, लृङ्—अपास्यम् ॥

या (to go)

लुट्—यातास्मि, लृट्—यास्यामि, लिट्—यया (base), ययौ, लुङ्—अयासिषम्, आशीर्लिङ्—यायासम्, लृङ्—अयास्यम् ॥

स्वप् (to sleep)

लुट्—स्वप्तास्मि, लृट्—स्वप्स्यामि,

लिट्— सुष्वप् (base)

उत्तम पु० सुष्वाप-सुष्वप सुषुपिव सुषुपिम

८८—दय-लिट्-जागृभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ दय्, लिट् और जागृ धातुओं के बाद लिट् में विकल्प से आम् लगता है ॥

* [illegible] *

(लुङ्— तीसरा प्रकार

उत्तम पु०	अस्वाप्सम्	अस्वाप्स्व	अस्वाप्स्म
मध्यम पु०	अस्वाप्सीः	अस्वाप्स्तम्	अस्वाप्स्त
प्रथम पु०	अस्वाप्सीत्	अस्वाप्स्ताम्	अस्वाप्सुः

आशीर्लिङ्*—सुप्यासम्, लृङ्—अस्वप्स्यम् ॥

शी (to lie down)

आत्मनेपद

लुट्—शयिताहे, लृट्—शयिष्ये

लिट्—

शिशी (base)

उत्तम पु०	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे

लुङ्—अशयिषि, आशीर्लिङ्—शयिषीय, लृङ्—अशयिष्ये ॥

ब्रू (to speak)

ब्रुवो वचिः ॥ आर्धधातुक विभक्तियों में ब्रू के स्थान में वच् हो जाता है ॥

परस्मैपद

लुट्—वक्तास्मि, लृट्—वक्ष्यामि,

लिट्—उवच् (strong-base), ऊच् (weak-base)

उत्तम पु०	*उवाच-उवच	ऊचिव	ऊचिम
मध्यम पु०	उवचिथ-उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
प्रथम पु०	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः

लुङ्—अवोचम्‡, आशीर्लिङ्—उच्यासम्†, लृङ्—अवक्ष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—वक्ताहे, लृट्—वक्ष्ये, लिट्—ऊच् (base), ऊचे, लुङ्—अवोचे, आशीर्लिङ्—वक्षीय, लृङ्—अवक्ष्ये ॥

---

* लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ॥ † वचिस्वपियजादीनां किति ॥ ‡ [illegible]-अवचम् ॥ वच् धातु के उपधा अ को ओ हो जाता है लुङ् में ॥

जुहोत्यादिगण (Third Conjugation

आर्धधातुक-प्रकरणम्

भी (to fear)

परस्मैपद

लुट् (First Future)

उत्तम पु०	भेतास्मि	भेतास्वः	भेतास्मः

लृट्--- (Second Future)

उत्तम पु०	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

लिट्--- (Past Perfect) बिभी (base)

उत्तम पु०	बिभाय-बिभय	बिभ्यिव	बिभ्यिम
मध्यम पु०	बिभयिथ-बिभेथ	बिभ्यथुः	बिभ्य
वा उ० पु०	बिभयाञ्चकार१०	बिभयाञ्चकृव	बिभयाञ्चकृम

लुङ् (Aorist)

उत्तम पु०	अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म
मध्यम पु०	अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट
प्रथम पु०	अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषुः

आशीर्लिङ् (Benedictive)

उत्तम पु०	भीयासम्	भीयास्व	भीयास्म

लृङ् (Conditional)

उत्तम पु०	अभेष्यम्	अभेष्याव	अभेष्याम

१०—भी-ह्री-भृ-हुवां श्लुवच्च ॥ भी, ह्री, भृ और हु धातुओं ... आम् जोड़ा जाता है और धातु में (जुहोत्यादिगण) की त... द्वित्व भी होता है ॥ भी=बिभी=बिभी+आम्=बिभे+आम्=बिभयाञ्चकार=बिभयाञ्चकार ॥

उभयपदी

दा (to give)

परस्मैपद

लुट्--दातास्मि, लृट्---दास्यामि,

लिट्--- ददा (base)

उत्तम पु०	ददौ	ददिव	ददिम
मध्यम पु०	ददिथ-ददाथ	ददथुः	दद

लुङ्--अदाम्, आशीर्लिङ्--देयासम्, लृङ्--अदास्यम्

आत्मनेपद

लुट्--दाताहे, लृट्--दास्ये लिट्--दद् (base), ददे

लुङ्--उत्तम पु०	अदिषि११	अदिष्वहि	अदिष्महि
मध्यम पु०	*अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिढ्वम्
प्रथम पु०	अदित	अदिषाताम्	अदिषत

आशीर्लिङ्--दासीय, लृङ्--अदास्ये ॥

धा (to hold)

परस्मैपद

लुट्---धातास्मि, लृट्---धास्यामि, लिट्---दधा (base), दधौ, लुङ्--अधाम्, आशीर्लिङ्--धेयासम्, लृङ्--अधास्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्---धाताहे, लृट्---धास्ये, लिट्---दध् (base), दधे, लुङ्--अधिषम्, आशीर्लिङ्--धासीय, लृङ्--अधास्ये ॥

११--स्थाघ्वोरिच ॥ स्था, दा और धा धातुओं के आ को इ हो जाता है, यदि परे लुङ् की आत्मनेपदी विभक्ति हों ॥

* ह्रस्वादङ्गात् ।

स्वादिगण (Fifth conjugation)

शक् (to be able)

लुट् (First Future)

तम पु०	शक्तास्मि	शक्तास्वः	शक्तास्मः

लृट् (Second Future)

तम पु०	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

लिट् (Past Perfect)-शशक् (base)

तम पु०	शशाक-शशक	शेकिव	शेकिम

लुङ् (Aorist)

तम पु०	अशकम्	अशकाव	अशकाम

(प्रथम प्रकार)

आशीर्लिङ् (Benedictive)

तम पु०	शक्यासम्	शक्यास्व	शक्यास्म

लृङ् (conditional)

तम पु०	अशक्ष्यम्	अशक्ष्याव	अशक्ष्याम

आप् (to obtain)

लुट्---आप्तास्मि, लृट्---आप्स्यामि, लिट्---आप् (base), ...आप, लुङ् - आपम् (प्रथम प्रकार) आशीर्लिङ्---आप्यासम्, ...ङ्—आप्स्यम् ॥

हि (to send)

लुट्---हेतास्मि, लृट्---हेष्यामि,

लिट्--- जिघि (base)

तम पु०	जिघाय-जिघय९२	जिघियव	जिघियम

९२-हेरचङि: ॥ हि धातु के ह् को घ् हो जाता है, जब धातु में ...त्व हुआ हो ॥ हि=हि हि=जिहि=जिघि=जिघि+अ=जिघै+अ=जिघाय॥

मध्यम पु०	जिघयिथ-जिघेथ	जिघ्यथुः	जिघ्य
प्रथम पु०	जिघाय	जिघ्यतुः	जिघ्युः
लुङ्--उत्तम पु०	अह्वैषम्	अह्वैष्व	अह्वैष्म
मध्यम पु०	अह्वैषीः	अह्वैष्टम्	अह्वैष्ट
प्रथम पु०	अह्वैषीत्	अह्वैष्टाम्	अह्वैषुः

(द्वितीय प्रकार)

आशीर्लिङ्--ह्रीयासम्, लङ्--अह्वेष्यम् ॥

श्रु (to hear)

लुट्--श्रोतास्मि, लृट्--श्रोष्यामि,

लिट्--

शुश्रु (base)

उत्तम पु०	शुश्राव-शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम
मध्यम पु०	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
प्रथम पु०	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
लुङ्--उत्तम पु०	अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म

(प्रथम प्रकार)

आशीर्लिङ्--श्रूयासम्, लृङ्--अश्रोष्यम् ॥

EXERCISE XVII.

(क) यदाहमस्वाप्से न जाने किमर्थमरोदिषम् ॥

यद्येवमहन्ता सि सुखं नास्यसि ॥

कश्चिन्नृप एकदा मृगयां कर्तुं वनमियाय, तत्र च बहून् मृगानघान ॥

ब्राह्मणैः कार्तवीर्यस्य पुत्रान् पप्रच्छ यूयं किं जघ्न मे जननीमिति । ते प्रोचुः न वयं अघ्निम इति ॥

स सर्पः सर्वानेव मण्डूकाञ्जिघ्र- सोऽथाह एकान्ते च तामाह ॥

स यावज्जीवं ब्राह्मणेभ्योऽन्न- मदात् ॥

मा भैर्वनेऽस्य इदमागच्छति मे माता ॥

यदाहं सुखेनास्वाप्सं, न किं- चिदवेदिषम् ॥

अद्यैव दूतं राजसकाशं प्रहैषिष्म .

स हतभाग्यः यतमानोऽपि धनं नापत् ॥

यद्यधुना शेष्यसे प्रभाते यथा-नाहूतोऽपि जागरिष्यसि ॥

चेत्स्यस्यधुनैव स्वदुष्कृतीनां परिणामम् ॥

अवोचत् कुम्भकर्णस्तं वयं मन्त्रेऽस्मदधाम यत् ।
न त्वं सर्वं तदश्रौषीः फलं तस्येदमागमम् ॥

(ख) जब राम का पिता घर पहुंचा तो वह रोने लगा ॥

ब्रह्मचारी ने पहिले नदी में स्नान किया फिर पुस्तक पढ़ा ॥

उस ने कहा। "मुझे शोक हुआ मैं आप का काम न कर सका" ॥

यदि इस विपत्ति में डर जायेगा तो तेरी मृत्यु होगी ॥

कीचक को भीम ने बिना शस्त्र के ही मार डाला ॥

अनाथों को पालने के लिये ईश्वर आप को धन दे ॥

यदि तू सो जाता तो रोग शीघ्र नष्ट हो जाता ॥

यदि घर जाओगे तो माता को वह वस्तु दे देना ॥

बालक सो जायेगा तो पढ़ेगा नहीं तो वह रोवेगा ॥

जो मैंने सुना था कह दूंगा ॥

द्वाविंशः पाठः ।

उभयपदी

रुध् (to obstruct)

परस्मैपद

लुट्--रोद्धास्मि, लृट्--रोत्स्यामि, लिट्--रुरुध् (base), रुरोध, लुङ्--अरुधम् (प्रथम प्रकार)--अरौत्सम् (तृतीय प्रकार), आशीर्लिङ्--रुध्यासम्, लृङ्--अरोत्स्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्--रोद्धाहे, लृट्--रोत्स्ये, लिट्--रुरुध् (base), रुरुधे, लुङ्--अरुत्सि (तृतीय प्रकार), आशीर्लिङ्--रुत्सीय, लृङ् – अरोत्स्ये ॥

युज् (to unite)

परस्मैपद

लुट्--योक्तास्मि, लृट्--योक्ष्यामि, लिट्--युयुज् (base), युयोज, लुङ्--अयुजम् (प्रथम प्रकार), अयौक्षम् (तृतीय प्रकार), आशीर्लिङ्--युज्यासम्, लृङ्--अयोक्ष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्--योक्ताहे, लृट्--योक्ष्ये, लिट्--युयुज् (base), युयुजे, लुङ्--अयुक्त (तृतीय प्रकार), आशीर्लिङ्--युक्षीय, लृङ्--अयोक्ष्ये ॥

भुज् (to rule)

परस्मैपद

लुट्--भोक्तास्मि, लृट्--भोक्ष्यामि, लिट्--बुभुज् (base), बुभोज, लुङ्--अभौक्षम् (तृतीय प्रकार), आशीर्लिङ् भुज्यासम्, लृङ्--अभोक्ष्यम् ॥

मुंइ (to eat)

आत्मनेपद

लुट्—मोक्ताहे, लृट्—मोक्ष्ये, लिट्—बुभुज (base
बुभुजे, लुङ्—अभुक्त (तृतीय प्रकार), आशीर्लिङ्—भुक्ष
लृङ्—अमोक्ष्ये ॥

भिद् (to break)

परस्मैपद

लुट्—भेत्तास्मि, लृट्—भेत्स्यामि, लिट्—बिभिद् (base
बिभेद, लुङ्—अभिदम् (प्रथम प्रकार)—अभैत्सम् (तृतीय
प्रकार), आशीर्लिङ्—भिद्यासम्, लृङ् अभेत्स्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—भेत्ताहे, लृट्—भेत्स्ये, लिट्—बिभिद् (base),
लुङ्—अभित्त (तृतीय प्रकार), आशीर्लिङ्—भित्सीय,
अभेत्स्ये ॥

तनादिगण (Eighth Conjugation

उभयपदी

तन् (to spread)

परस्मैपद

लुट्—तनितास्मि, लृट्—तनिष्यामि,

लिट्— ततन् (base)

उत्तम पु०	ततान-ततन	तेनिव	तेनिम
लुङ्—उत्तम पु०	अतनिषम्*	अतनिष्व	अतनिष्म
या—उत्तम पु०	अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म

आशीर्लिङ्—तन्यासम्, लृङ्—अतनिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—तनिताहे, लृट्—तनिष्ये, लिट्—तेन् (base), तेने, लुङ्—अतनिषि (द्वितीय प्रकार)

आशीर्लिङ्—तनिषीय, लृङ्—अतनिष्ये ।

कृ (to do)

परस्मैपद

लुट्—कर्तास्मि, लृट्—करिष्यामि,

लिट्—

चकृ (base)

उत्तम पु०	चकार-चकर	चकृव	चकृम
मध्यम पु०	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र
प्रथम पु०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
लुङ्—उत्तम पु०	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म
मध्यम पु०	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
प्रथम पु०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः

आशीर्लिङ्—क्रियासम्, लृङ्—अकरिष्यम् ॥

आत्मनेपद

लुट्—कर्ताहे, लृट्—करिष्ये लिट्—चकृ (base), चक्रे लुङ्—अकृत (तृतीय प्रकार),

आशीर्लिङ्—कृषीय, लृङ्—अकरिष्ये ॥

क्र्यादिगण (Ninth Conjugation)

परस्मैपद

बन्ध (to tie)

लुट्—बन्धास्मि, लृट्—भन्त्स्यामि*, लिट्—बबन्ध् (base), बबन्ध

[illegible]

आत्मनेपद

लुट्—आसाहे, लृट्—आसे, लिट्— आस् (base), आसे. लुङ्—आसि (तृ॰पु॰) आशीर्लिङ्—आसीय, लृङ्—आसिष्ये ॥

ग्रह् (to hold)

लुट्—उत्तम पु॰	ग्रहीतास्मि१२	ग्रहीतास्वः	ग्रहीतास्मः
लृट्—उत्तम पु॰	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः
लिट्—			

जग्रह् (base)

उत्तम पु॰	जग्राह-जग्रह	जगृहिव	जगृहिम
लुङ्—उत्तम पु॰	अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्म
			(द्वि॰ ८॰)

आशीर्लिङ्— गृह्यासम्, लृङ्—अग्रहीष्यम ॥

आत्मनेपद

लुट्—ग्रहीताहे, लृट्—ग्रहीष्ये, लिट्—जगृह् (base) जगृहे. लुङ्—अग्रहीषि, (द्वितीय प्रकार) आशीर्लिङ्—ग्रहीषीय, लृङ्—अग्रहीष्ये ॥

EXERCISE XVIII.

(क) राजन्, गते वर्षाण्यकाल- पूर्वं गृहाभिनिम्नभिन्नदर्शा ...
के राज्यं भुञ्ज्याः ॥ ... रः ततश्च प्रभूतं वस्तुजात-
यातः तस्यामुपास्याहं भोजनं ममोपनीत् ॥
भोक्ष्ये ॥ साधुवृत्तोऽस्माकमाचार्यो यस्मा-

१२—ग्रहोऽलिटि दीर्घः ॥ ग्रह् के इ (इट्) दीर्घ हो जाता है, यदि कोई लिट् भिन्न आर्धधातुक विभक्ति हो ॥

* ... ...

स्वमेतामुत्तमां शिक्षां जगृहिथ।
पूर्वमशस्यं चेदस्य दुश्चरितानि नाहमेतेन कदापि सङ्गतिमकरिष्यम्॥
रामो विक्रेष्यति गृहम्॥
अदयं चेत् कीलके नामंस्य
स ग्लाधिष्यतैव॥
असौ स्वतनयं दुष्कर्मेभ्यः न
हणत्॥

(ख) उस स्त्री ने चोर को हाथ से पकड़ लिया॥
यदि वह गृह में रहता तो कलह को अवश्य रोक देता॥
वह तभी तृप्त होगा जब सारा अन्न खा लेगा॥
हरि एक गृह बेचेगा, जो उसे खरीदेगा उसे बहुत लाभ होगा॥
यदि घोड़े को धुरे में जोड़ोगे तब ही रथ चलेगा॥
उस चोर ने चलते चलते उ
दुष्य के रुपये चुरा लिये
इस लकड़ी को तोड़ोगे त
तुम्हें बली समझूंगा॥
मेरा काम तूने पूरा न
किया॥
इन चावलों को खरीदोगे
देखना उनमें मट्टी न मि
हो॥
उसने राज्य चिरकाल त
भोगा परन्तु देश में क
अशान्ति नहीं फैली॥

त्रयोविंशः पाठः ।

प्रेरणार्थक क्रिया (णिजन्त, Causals)

२२७–जहां पर किसी मनुष्य या पदार्थ की प्रेरणा से कोई काम किसी से करवाया जावे वहां पर प्रेरणार्थक क्रिया वा णिजन्त (Causal) का प्रयोग होता है ॥

२२८–प्रेरण (Causal) अर्थ में धातु से परे अय (णिच्) जोड़ा जाता है ॥

जिस रीति से चुरादिगण (10th Conjugation) के धातुओं के रूप बनाये जाते हैं, उसी तरह प्रेरणार्थक क्रिया के रूप भी बनाये जाते हैं ॥

भ्वादिगण	भ्वादिगण
भू (to be) भावयति–ते	रक्ष (to protect) रक्षयति–ते
पत् (to fall) पातयति–ते	वद् (to tell) वादयति–ते
दा (to give) ९४ दापयति–ते	नम् (to bend) नमयति–ते
पा (to drink) ९५ पाययति–ते	स्था (to stand) स्थापयति–ते
गम् (to go) गमयति–ते	पच् (to cook) पाचयति–ते
शुच् (to bewail) शोचयति–ते	क्षि (to waste away) क्षाद-यति–ते
पठ् (to read) पाठयति–ते	

९४–अर्ति-ह्री-व्ली-री-क्नूयी-क्ष्माय्यातां पुङ्णौ ॥ ऋ, ह्री, व्ली, री, क्नूय, क्ष्माय और आकारान्त धातुओं के आगे प् जोड़ा जाता है, यदि परे अय (णिच) हो ॥

९५–शाच्छा सा ह्वा व्या वे पां युक् ॥ शो, छो, सो, ह्वे, व्ये, वे और पा (to drink) धातुओं के आगे य जोड़ा जाता है, यदि परे अय (णिच) हो ॥

दिवादिगण

जन् (to be produced) जनयति-ते

विद् (to be) वेदयति-ते

तुदादिगण

इष् (to desire) एषयति-ते

क्षिप् (to throw) क्षेपयति-ते

प्रच्छ् (to ask) प्रच्छयति-ते

सृज् (to create) सर्जयति-ते

स्पृश् (to touch) स्पर्शयति-ते

मृ (to die) मारयति-ते

मुच् (to abandon) मोचयति-ते

सिच् (to sprinkle) सेचयति-ते

चुरादिगण

चुर् (to steal) चोरयति-ते

तड् (to beat) ताडयति-ते

भूष् (to adorn) भूषयति-ते

भक्ष् (to eat) भक्षयति-ते

दण्ड् (to punish) दण्डयति-ते

तुल् (to weigh) तोलयति-ते

स्पृह् (to desire) स्पृहयति-ते

अदादिगण

अद् (to eat) आदयति-ते

इ (to go) [98] गमयति-ते

हन् (to kill) [99] घातयति-ते

विद् (to know) वेदयति-ते

रुद् (to weep) रोदयति-ते

जागृ (to be awake) जागरयति-ते

पा (to protect) पालयति-ते

या (to go) यापयति-ते

स्वप् (to sleep) स्वापयति-ते

शी (to sleep) शाययति-ते

ब्रू (to speak) वाचयति-ते

भी (to fear) [100] भीषयति-ते

दा (to give) दापयति-ते

धा (to hold) धापयति-ते

स्वादिगण

शक् (to be able) शाकयति-ते

आप् (to get) आपयति-ते

हि (to send) हाययति-ते

धु (to beat) धावयति-ते

९८-णौ गमिरबोधने ॥ इ के स्थान में गम् हो जाता है णिजन्त में, यदि बोधन अर्थ न हो ॥ बोधन अर्थ में इ का प्रत्याययति (प्रति+इ) बनता है ॥

९९-हनस्तोऽचिण्णलोः ॥ णिजन्त में हन् के ह् को घ् हो जाता है ॥ हन्+णिच्+शप्+ति=हात्+अय+ति=हातयति=घातयति, हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ॥ [illegible]

१००-भियो हेतुभये षुक् ॥ णिजन्त में भी के आगे ष् जोड़ा जाता है ॥

रुधादिगण	कृ (to do) कारयति-ते
रुध् (to obstruct) रोधयति-ते	क्र्यादिगण
युज् (to join) योजयति-ते	बन्ध् (to tie) बन्धयति-ते
भुज् (to eat, to rule) भोजयति-ते	मुष् (to steal) मोषयति-ते
भिद् (to break) भेदयति-ते	क्री (to buy)* क्रापयति-ते
तनादिगण	ज्ञा (to know) ज्ञापयति-ते
तन् (to spread) तानयति-ते	ग्रह (to hold) ग्राहयति-ते

२२९-प्रेरणार्थक (णिजन्त) धातुओं का उच्चारण सर्व प्रक से चुरादिगण के धातुओं की तरह होगा ॥ यथा-बोधयति अबोधयम्, बोधयानि, बोधयेयम्, बोधयाञ्चकार, बोधयितास्मि बोधयिष्यामि, अबोधयिष्यम्, अबूबुधम, बोध्यासम् ॥

२३०-अणिजन्त क्रिया का कर्त्ता णिजन्त में तृतीयान्त हो जाता है, परन्तु कर्म पूर्ववत् द्वितीया में रहेगा, जो प्रेरक होगा वह णिजन्त क्रिया का कर्त्ता बन जावेगा । देवदत्तः ओदनं पचति, यज्ञदत्तः तं प्रेरयति-इति (यज्ञदत्तः) देवदत्तेन ओदनं पाचयति, रामः भार्यां त्यजति पौराः तं प्रेरयन्ति-इति (पौराः) रामेण भार्यां त्याजयन्ति ॥

२३१-जिन धातुओं का अर्थ गति बुद्धि या भक्षण हो, जिन का कर्म कोई शास्त्र (literary work) हो, या जिनका कोई कर्म न हो (अकर्मक), उनका अणिजन्त कर्त्ता णिजन्त में द्वितीयान्त हो जावेगा ॥

---

* क्रीङ्जीनां णौ ॥

अणिजन्त	णिजन्त
पुत्रः गृहं गच्छति	(पिता) पुत्रं गृहं गमयति ।
छात्रा वेदार्थं विदन्ति	(गुरुः) छात्रान् वेदार्थं वेदयति ।
विप्राः भोजनं भक्षयन्ति	(यजमानः) विप्रान् भोजनं भक्षयति ।
बटवोऽष्टाध्यायीम् अधीयते,	(आचार्यः) बटून् अष्टाध्यायीम् अध्यापयति ।
शिशुः शेते,	(माता) शिशुं शाययति ।

२३२-वीं, वह् अद् और खाद् धातुओं का अणिजन्त कर्त्ता णिजन्त में (२३१) से द्वितीयान्त नहीं होता किन्तु तृतीयान्त होता है ॥

भृत्यः भारं नयति-वहति, (स्वामी) भृत्येन भारं नाययति-वाहयति ॥

बटुरन्नमत्ति-खादति, (गुरुः) बटुनाऽन्नमादयति-खादयति ।

(ख) 'दृश्' का अणिजन्त कर्त्ता णिजन्त में द्वितीयान्त होगा ॥

भक्तः हरिं पश्यति	(सः) भक्तं हरिं दर्शयति ॥

EXERCISE XIX.

(क) तदेहि गृहाणेममश्वतारय सलिलसमीपमित्यभिधाय तेनार्यकुमारेण मां सरस्वतीरमनाययत् ॥

मां कतिचित् सलिलबिन्दूनपाययत् ॥

भोजय विप्रान् भोजनम् ॥

आर्यो दापयतु मे वैशम्पायना-नयनाय गमनाभ्यनुज्ञां तातेन ॥

भक्तो हरिस्तोत्रं गायकैर्गापयामास ॥

कृष्णवर्मा पुत्रेण ब्राह्मणेभ्यः प्रत्यहं शतं गा दापयति ।

प्रयत्नः सत्वरमेव नरमभीष्ट-स्थानं प्रापयति ।

ग्रीष्मकाले घर्मोऽङ्गेषु स्वेदं दर्शयति, तृष्णां परिवर्धयति च ॥

तं भुवनत्रयातिगं जनयति जननी सुतं विरलम् ॥

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

यदि सत्याभिसन्धस्त्वं राजन् रामं प्रवासय ॥
कारयामास तेनैव समानद्भुतदर्शनाम् ॥
ततो द्रोणोऽर्जुनं भूयो रणशिक्षामशिक्षयत् ॥
स सेतुं बन्धयामास प्लवङ्गैर्वरुणालये ॥

(ख) माता बालक को दुग्ध पिला रही है और चन्द्र दिखा रही है ॥
द्रौपदी ने कीचक को भीम से मरवा दिया ॥
मुझे राम से दो सौ रुपये दिलाओ ॥
इस बालक को घर पहुंचा दो, आप का बड़ा पुण्य होगा ॥
जो उस ने सुना, मुझे सब ही सुना दिया ॥
राम को घोड़े ने गिरा दिया, उसे फिर ऊपर चढ़ा दो ॥
यदि मैं इससे यह काम न करवा दूं, तो अपना नाम बदल दूंगा (परिवृत्) ॥
गुरु शिष्य को प्रतिदिन प्रातःकाल उठाता है और वेद पढ़ाता है ॥
पहिले सब पुरुषों को बिठा दो (आस), फिर व्याख्यान आरम्भ करादो ॥
बालक को गृह में भिजवा दो कि माता उसे सुला दे ॥

(ग) इन अणिजन्त क्रियायुक्त वाक्यों को णिजन्त क्रियायुक्त वाक्यों में बदलो:-

प्रतिवर्षं तस्या व्याघ्र्या एकः शावकः जायते । स प्रातर्व्यायामस्थानेऽश्वं बध्नाति । शिशवः शीतेनोदकेन स्नान्तु । पंगुरुद्यमवान् गिरिं कष्टेनारोहति । शिशुरास्तरणे शेते । आतुरोऽगदं निरन्तरं पिबेत् । छात्रा विद्यालयेऽधीयते । सूर्योदयात् पूर्वमेव जागर्ति बटुः । स वृक्षेभ्यः पुष्पाणि चिनोति । अग्निर्ज्वलति । उद्यमेन कार्याणि सिध्यन्ति । फलानां भरेण वृक्षशाखा अधो नमन्ति । सुकृतिः कल्याणं पश्यति ॥

चतुर्विंशः पाठः ।

इच्छाद्योतक-क्रिया (सन्नन्त)

Desiderative.

पत् – पित्सति १०१	कॄ – चिकीर्षति-ते १०४
गम् – जिगमिषति १०२	नी – निनीषति-ते
पठ् – पिपठिषति	नश् – निनंक्षति‡
पठ् – पिपठिषति	युध् – युयुत्सते
स्था – तिष्ठासति	प्रच्छ् – पिपृच्छिषति
पच् – पिपक्षति	गृध् – जिगृत्सति
जि – जिगीषति १०३	स्पृश् – पिस्पृक्षति
त्यज् – तित्यक्षति	मृ – मुमूर्षति १०५
घस् – जिघत्सति०	मन् – मिमंसति
दृश् – दिदृक्षति†	अद् – जिघत्सति§
रभ् – रिप्सते	हन् – जिघांसति
लभ् – लिप्सते	विद् – विविदिषति
बुध् – बुबोधिषति-ते	जागृ – जिजागरिषति

१०१–सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् ॥ सन् में मी, मा, दा, धा, रभ्, लभ्, शक्, पत् और पद् धातुओं के स्वर का इस् हो जाता है ॥

१०२–सन्यतः ॥ सन्वत् में अभ्यास के अ को इ हो जाता है ।

१०३–अज्झनगमां सनि ॥ हन्, गम् (इ) और स्वरान्त धातुओं का ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है । सञ्जिगीषति ।

० सः स्यार्धधातुके ॥ † [illegible] ॥

१०४–ऋत इद्धातोः ॥ दीर्घ ऋकारान्त धातु के ॠ को इर् हो जाता है । कृ=कृ कृ=ह कृ=कृ=+[illegible]+स+ति=[illegible]+सति (अज्झनगमां सनि) =[illegible]+सति=चिकीर्+सति (इत्व)=चिकीर्षति ॥ ‡[illegible]

१०५–उदोष्ठ्यपूर्वस्य ॥ यदि धातु के अन्त में दीर्घ ऋ हो और आदि में पवर्ग या व हो तो ऋ को उर् हो जाता है ॥

§ [illegible], सः स्यार्धधातुके ॥

पा—पिपासति	युज्—युयुक्षति-ते
स्वप्—सुषुप्सति*	भुज्—भुभुक्षति-ते
शी—शिशयिषते	भिद्—बिभित्सति-ते
धा—धित्सति-ते	कृ—चिकीर्षति
शक्—शिक्षति	वध्—विभत्सति
आप्—ईप्सति१०६	की—चिक्रीषति
श्रु—शुश्रूषते	ज्ञा—जिज्ञासति
रुध्—रुरुत्सति-ते	ग्रह्—जिघृक्षति

२३४-विभक्ति से रहित यदि किसी धातु के सन्नन्तरूप के आगे 'उ' लगाया जाय तो उसी धातु की इच्छाद्योतक-संज्ञा बन जाती है ॥ यथा-चिकीर्षुः घटम् जिज्ञासुः शास्त्रम्, विपठिषुः वेदान्. यदि यह रूप सकर्मक (trans). धातु का हो तो अवश्य उस के पहिले कोई कर्म (object) होना चाहिये ॥

२३५-यदि 'उ' की जगह 'आ' लगा दें तो उसी धातु से भाववाचक संज्ञा (abstract noun) बन जाती है ॥ यथा—जिगीषा, जिज्ञासा, मुमूर्षा ॥

(A) EXERCISE XX.

(क) प्रभूतवर्षणाद्वृष्ट्या नद्यः हेलमपतय ॥ कूलं पिपतिषति ॥ शिशुरयं सुषुप्सति. ‡शयायामेनं सारमेयो मुमूर्षति, राजमार्गे निधेहि ॥

---

* पतिस्वपियजादीनामिति ॥

१०६-आपज्ञप्यृधामीत् ॥ सन्नन्त में आप्, ज्ञप और ऋध धातुओं के स्वर को ई हो जाता है ॥

‡ जिहीर्षति की तरह ॥ † कूलपो दशौ रूप इच्छावाच्य द्रश्यः ॥

‡ इतिष्या स्यति०, कूलो० रुणो मृ०॥

संसारबन्धनेभ्य आत्मानं मुमोचयिषुस्तत्त्वविदं गच्छेत् ॥
भुवनत्रयस्य प्रभुर्बुभूषुरसौ प्रथमं विदेहान् व्यजिगीषत् ॥
आत्मनः कौशलं दिदर्शयिषुरिन्द्रजालिकः प्रथममिष्टदेवतां प्रतुष्टूषति ॥
कथमसौ मां जिघांसुर्जातः

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः ।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

प्रत्यानिनीषुर्विनदेन रामं प्रायादरण्यं भरतः सपौरः ॥

(ख) आग जलवाना चाहो तो लकड़ी मंगा दो ॥
प्रत्येक पुरुष धन प्राप्त करना चाहता है परन्तु काम कोई नहीं करना चाहता ॥
जो जो बैठना चाहें उन को बिठा दो ॥
जो पढ़ना चाहें उन्हें बहुत परिश्रम करना चाहिये ॥
यदि आप जाना चाहें तो मुझे भी साथ ले चलें मैं भी यह उत्सव देखना चाहता हूं ।
मोक्ष की इच्छावाला वेदान्त पढ़ने की इच्छा करे ॥
जिससे काम कराना चाहो उसका निरादर मत करो ॥

(ग) इन वाक्यों में असन्नन्त क्रियाओं को सन्नन्त में बदलो:—

निर्धनोऽपि धनाढ्यो भवितुमिच्छति । नरः सदा गुणान् ग्रहीतुमिच्छेत्, दोषांश्च त्यक्तुमिच्छेत् । छात्रोऽप्यपराधान् मदगे प्रष्टुमिच्छन् । अहं गीतीः श्रोतुमिच्छामि । घर्मे नरो दिवाऽपि स्वपितुमिच्छति । स विप्रेभ्योऽर्थं दातुमिच्छति । कः यशो लब्धुं नेच्छति । बालकाः पितरौ प्रीणयितुमिच्छन्ति । तेन ताडितः श्वा मर्तुमिच्छति । स तं नाम ज्ञातुमिच्छति । वातस्य वेगेन प्रतिहतः पोतः उदधौ मङ्क्तुमिच्छति ॥

नाम धातु
(Nominal Verbs or Denominatives)

२३६-जो धातु नामों से बनाये जायें वह नामधातु कहलाते हैं। नाम के साथ 'क्यच्' (य) 'क्यङ्' (य) 'काम्यच्' (काम्य) 'णिच्' और 'इ' प्रत्यय (affixes), इच्छा (wish), आचरण (performance), अभ्यास (practising), आदि बहुत से अर्थों में लगाये जाते हैं, इन तरह के धातुओं का उच्चारण भ्वादिगण में होगा॥

क्यच् (य)

२३७-इच्छा अर्थ में किसी नाम के आगे क्यच् (य) लगाया जाता है और फिर उसका उच्चारण परस्मैपद में होगा॥

२३८-क्यच् के पहिले नाम में यह परिवर्तन होंगे।

(क) नाम के अन्त में ह्रस्व या दीर्घ 'अ' को 'ई' हो जाता है॥ यथा-पुत्रं आत्मनः इच्छति=पुत्रीयति, पुत्र+य=पुत्रीय+ति=पुत्रीयति।

(ख) नाम के अन्त के ह्रस्व 'इ' या 'उ' को दीर्घ हो जाता है॥ यथा—कवीयति॥

(ग) नाम के अन्त में 'ऋ' को 'री' हो जाता है। कर्तृ=कर्त्रीयति॥

(घ) नाम के अन्त के 'ओ' या 'औ' को 'अव्' या 'आव्' हो जाता है॥ यथा—नौ+य+ति=नाव्यति, गो+य+ति=गव्यति।

(ङ) नाम के अन्तिम अनुनासिक का लोप हो जायगा॥ यथा—राजन्+य+ति=राजीयति (क)।

कभी कभी क्यच् (य) 'व्यवहार करना' (to treat like) या 'समझना' (to consider) के अर्थ में भी आ जाता है॥

यथा—पुत्रीयति छात्रम् गुरुः (the teacher treats his pupil as a son), प्रासादीयति कुट्यां भिक्षुः (the beggar considers his hut a palace)॥

क्यङ् [य]

२३९-क्यङ् भी क्यच् के अर्थों में ही होगा परन्तु क्यङ् बनाये हुए धातुओं का उच्चारण आत्मनेपद में होगा॥

२४०-(क) इसमें नाम के अन्त में ह्रस्व 'अ' को दीर्घ 'आ' हो जायेगा और दीर्घ आ में कोई परिवर्तन न होगा॥ पुत्रायते कृष्णायते॥

(ख) नाम में शेष वही परिवर्तन होंगे जो क्यच् के पहिले होते हैं॥

२४१-सकारान्त नामों के अन्तिम 'स' को विकल्प से 'आ' होगा॥ यथा-विद्वस्यते-विद्वायते॥

'इ'

२४२-नाम के आगे 'इ' लगाकर 'इ' को गुण हो जायगा॥ यथा-प्रश्न+इ+ति=प्रश्न+इ+अ+ति=प्रश्नयति (questions); मिश्र=मिश्रयति (mixes); लवणयति (mixes salt with)॥

[क्विप्]

२४३-नामों के आगे क्विप् का लोप हो जायगा और नाम में कोई परिवर्तन नहीं होगा॥ यथा-पुत्र+क्विप्+ति=पुत्रति, पितृ+अ+ति=पितरति॥

काम्यच् (काम्य)

२४४-काम्यच् केवल इच्छा अर्थ में आता है॥ यथा-आत्मनः पुत्रम् इच्छति=पुत्रकाम्यति, यशस्काम्यति॥

(B) EXERCISE XX.

(क) प्रश्नयति व्याकरणे छात्रमध्यापकः ॥

औरस आत्मजे मृते भ्रातुःसुतमपि पुत्रीयन्ति भारतवर्षीयाः ॥

लवणयत्योदनं सूदः ॥

आत्मनः कौशलं दर्शयितुम् वारांगना नरीनृत्यते ॥

अमृगायत मारीचो रामस्याग्रे निशाचरः ॥

कथं वाचयसे विद्वन् ममाश्रुत्वा प्रियं वचः ॥

अपवनायत मारुतनन्दनो जनकराजसुतापरिमार्गणे ॥

गुणायन्ते दोषाः सुजनवदने, दुर्जनमुखे गुणा दोषायन्ते ॥

निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते ॥

दुःखायते जनः सर्वः स एवैकः सुखायते ॥

वनौकसस्तपस्यन्ति निर्जने गहने वने ॥

(ख) जहां कोई विद्वान् नहीं होता, वहां मूर्ख ही पंडित बन जाते हैं ॥

यदि किसी बात पर शङ्का हो तो बार बार उसे पूछो ॥

आज कल जिन को काव्य का किञ्चित् भी ज्ञान हो वे भी अपने आप को कवि समझ लेते हैं ॥

नीच सब से वैर करते हैं ॥

वृद्धावस्था में उसने एक अनाथ को अपना पुत्र बना लिया ॥

मैंने बार बार उस का नाम स्मरण किया, परन्तु वह भूल ही गया ॥

जिस को पुत्र नहीं होता वह पुत्र चाहता है, और जिस के धन नहीं होता वह धन चाहता है ॥

चन्दन के पास रखने से साधारण काष्ठ भी चन्दन बन जाता है ॥

पञ्चविंशः पाठः ।

कृदन्त (Verbal Derivatives)

† शत्रन्त (Present Active Participles)

२४५–धातुओं के शत्रन्त रूप बनाने के लिये तीन प्रत्यय हैं- १ अत् (शतृ), २ मान (शानच्) और ३ आन (शानच्) ॥

परस्मैपदी धातुओं के आगे अत् लगाया जाता है ॥

भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादिगण के आत्मनेपदी धातुओं के आगे मान और इनसे भिन्न गणों के धातुओं के आगे आन लगाया जाता है ॥

* जो परिवर्तन या विकार (change) धातु में सा[illegible] विभक्तियों के पूर्व होते हैं वे इन प्रत्ययों के पहिले भी [illegible]

प्रत्यय और धातु के मध्य में गण विकरण (conjug[illegible] sign) जोड़ा जाता है ॥

धातु	P. A. P.	धातु	P. A. P.
भू	भवत्	वस	वसत्
पत्	पतत्	दृश्	पश्यत्
दा	यच्छत्	शिक्ष्	शिक्षमाण
पा	पिबत्	ईक्ष्	ईक्षमाण
गम्	गच्छत्	वन्द्	वन्दमान
शुच्	शोचत्	यत्	यतमान
पठ्	पठत्	शङ्क्	शङ्कमान

† जो अङ्ग (base) किसी धातु का लट् के प्रथम पुरुष [illegible] में बनता है, उसी अङ्ग के परे यदि अत्, मान या आन जोड़ उस धातु का वह शत्रन्त रूप बन जाता है ॥

धातु	P. A. P.	धातु	P. A. P.
रक्ष्	रक्षत्	श्लाघ्	श्लाघमान
वद्	वदत्	कम्प्	कम्पमान
नम्	नमत्	सह्	सहमान
स्था	तिष्ठत्	मुद्	मोदमान
पच्	पचत्	शुभ्	शोभमान
क्षि	क्षयत्	रुच्	रोचमान
जि	जयत्	भाष्	भाषमाण
स्मृ	स्मरत्	सेव्	सेवमान
सृ	सरत्	रभ्	रभमान
त्यज्	त्यजत्	लभ्	लभमान
वृत्	वर्तमान	स्पृह्	स्पृहयत्-स्पृहयमाण
वृध्	वर्धमान	अद्	अदत्
बुध्	बोधत्-बोधमान	इ	यत्
याच्	याचत्-याचमान	हन्	घ्नत्
नी	नयत्-नयमान	विद्	विदत्
हृ	हरत्-हरमाण	रुद्	रुदत्
नश्	नश्यत्	जागृ	जाग्रत्
कुप्	कुप्यत्	पा	पात्
शुष्	शुष्यत्	या	यात्
तुष्	तुष्यत्	स्वप्	स्वपत्
अस्	अस्यत्	शी	शयान
नृत्	नृत्यत्	हु	जुह्वत्-जुह्वान
पुष्	पुष्यत्	भी	बिभ्यत्
दिव्	दीव्यत्	दा	ददत्-ददान
युध्	युध्यमान	धा	दधत्-दधान

धातु	P. A. P.	धातु	P. A. P.
जन्	जायमान	शक्	शक्नुवत्
विद्	विद्यमान	आप्	आप्नुवत्
इष्	इच्छत्	हि	हिन्वत्
क्षिप्	क्षिपत्	श्रु	शृण्वत्
प्रच्छ्	पृच्छत्	रुध्	रुन्धत् रुन्धान
सृज्	सृजत्	युज्	युञ्जत् युञ्जा
स्पृश्	स्पृशत्	भुज्	भुञ्जत्-भुञ्जा
मृ	म्रियमाण	भिद्	भिन्दत्-भिन्दा
मुच्	मुञ्चत् मुञ्चमान	तन्	तन्वत् तन्वान
सिच्	सिञ्चत् सिञ्चमान	कृ	कुर्वत् कुर्वाण
चुर्	चोरयत् चोरयमाण	बन्ध्	बध्नत् बध्नान
तड्	ताडयत् ताडयमाण	मुष्	मुष्णत् मुष्णान
भूष्	भूषयत्-भूषयमाण	क्री	क्रीणत् क्रीणान
भक्ष्	भक्षयत् भक्षयमाण	ज्ञा	जानत् जानान
दण्ड्	दण्डयत् दण्डयमान	ग्रह्	गृह्णत् गृह्णान
तुल्	तोलयत् तोलयमान		

भविष्यत् कृदन्त (*Future Participles*)

भविष्यत् कृदन्त रूप बनाने के लिये दो प्रत्यय (affixes) हैं—स्यत् और स्यमान, जो किस परस्मैपदी धातु का लृट् (भविष्यत्) के प्रथम पुरुष एकवचन में रूप बनता है, यदि इस रूप के अन्तिम इ का लोप करदिया जाय तो वह उस धातु का कृदन्त (भविष्यत् कृदन्त) रूप बन जावेगा, यथा—भू-भविष्यति (प्र॰ए॰), भविष्यत् (भ॰कृ॰), कृ—करिष्यति (प्र॰ए॰), करिष्यत् (भ॰कृ॰), क्री—क्रेष्यति (प्र॰ए॰), क्रेष्यत् (भ॰कृ॰)।

इसी प्रकार आत्मनेपदी धातुओं के प्रथम पुरुष एकवचन

के रूपके अन्त में ते के स्थान में मान लगा देने से उस धातु का भविष्यत् कृदन्त रूप बन सकता है ॥ यथा – जनिष्यते (प्र०ए०) जनिष्यमाण, धा - धास्यते (प्र०ए०), धास्यमान, कृ –करिष्यते (प्र०ए०), करिष्यमाण ॥

क्तान्त (Past Passive Participles)

क्तान्तरूप धातु के परे त (क्त) जोड़ कर बनाया जाता है ॥

(क) क्त के पूर्व अनिट् धातुओं में गुण वा वृद्धि नहीं होते ॥

(ख) सेट्, अनिट् और वेट् धातुओं के परे क्रम से इ आता है, नहीं आता और विकल्प से आता है ॥

क्तवन्त्वन्त (Past Active Participles), और क्त्वान्त (Indeclinable Past Participles) भी इसी प्रकार धातु के परे क्रम से तवत् और त्वा लगाने से बन जाते हैं ॥ धातु में प्रायः वे ही परिवर्तन आदि होते हैं जो त (क्त) के पहिले होते हैं यथा –भू+त=भूत, भू+त्वा=भूत्वा, भू+तवत्=भूतवत्, भू+ति=भूति ॥

धातु	क्तान्त	क्तवत्वन्त	क्त्वान्त
भू	भूत	भूतवत्	भूत्वा
पत्	पतित	पतितवत्	पतित्वा
दा	दत्त १०७	दत्तवत्	दत्त्वा
पा	पीत १०८	पीतवत्	पीत्वा
गम्	गत*	गतवत्	गत्वा

१०७ दो दद् घोः ॥ दा को दद् हो जाता है, यदि परे कोई प्रत्यय हो जिस में क् का लोप हुआ हो ॥

१०८ घु-मा-स्था-गापा-जहातिसां हलि ॥ इन धातुओं के आ को ई होजाता है, यदि परे हलादि प्रत्यय हो जिस में क् का लोप हुआ हो

* गम-हन-जन-घसां लोपः क्ङित्यनङि ॥

धातु	क्तान्त	क्तवत्वन्त	क्त्वान्त
शुच्	शु(शो)चित	शु(शो)चितवत्	शु(शो)चित्वा
पठ्	पठित	पठितवत्	पठित्वा
रक्ष्	रक्षित	रक्षितवत्	रक्षित्वा
वद्	उदित †	उदितवत्	उदित्वा
नम्	नत	नतवत्	नत्वा
स्था	स्थित	स्थितवत्	स्थित्वा
पच्	पक्व १०९	पक्ववत्	पक्त्वा
क्षि	क्षित-क्षीण	क्षित(क्षीण)वत्	क्षित्वा
जि	जित	जितवत्	जित्वा
स्मृ	स्मृत	स्मृतवत्	स्मृत्वा
मृ	मृत	मृतवत्	मृत्वा
त्यज्	त्यक्त	त्यक्तवत्	त्यक्त्वा
वस्	उषित †	उषितवत्	उषित्वा
दृश्	दृष्ट	दृष्टवत्	दृष्ट्वा
शिक्ष्	शिक्षित	शिक्षितवत्	शिक्षित्वा
ईक्ष्	ईक्षित	ईक्षितवत्	ईक्षित्वा
वन्द्	वन्दित	वन्दितवत्	वन्दित्वा
यत्	यतित	यतितवत्	यतित्वा
शङ्क्	शङ्कित	शङ्कितवत्	शङ्कित्वा
श्लाघ्	श्लाघित	श्लाघितवत्	श्लाघित्वा
कम्प्	कम्पित	कम्पितवत्	कम्पित्वा
सह्	सोढ *	सोढवत्	सोढ्वा

† वचिस्वपियजादीनां किति ॥

१०९—पचो वः ॥ पच् से परे त या तवत् के त को व हो, औ

* सहिवहोरोदवर्णस्य, होढः, झषस्तथोर्धोऽधः, ष्टुनाष्टुः, ढोढे

धातु	क्तान्त	क्तवत्वन्त	क्त्वान्त
मुद्	मुदित	मुदितवत्	मुदित्वा
शुभ्	(शो)शुभित	(शो)शुभितवत्	(शो)शुभित्वा
रुच्	(रो)रुचित	(रो)रुचितवत्	(रो)रुचित्वा
भाष्	भाषित	भाषितवत्	भाषित्वा
सेव्	सेवित	सेवितवत्	सेवित्वा
रभ्	रब्ध	रब्धवत्	रब्ध्वा
लभ्	लब्ध	लब्धवत्	लब्ध्वा
वृत्	वृत्त-वर्तित	वृत्तवत्-वर्तितवत्	वृत्वा-वर्तित्वा
वृध्	वृद्ध	वृद्धवत्	वृद्ध्वा
शुध्	शुद्ध	शुद्धवत्	शुद्ध्वा
याच्	याचित	याचितवत्	याचित्वा
नी	नीत	नीतवत्	नीत्वा
हृ	हृत	हृतवत्	हृत्वा
नश्	नष्ट	नष्टवत्	नंष्ट्वा-नष्ट्वा-नशित्वा
क्रुध्	क्रुद्ध	क्रुद्धवत्	क्रुद्ध्वा
शुष्	शुष्क११०	शुष्कवत्	शुष्ट्वा
अस्	अस्त	अस्तवत्	अस्त्वा-असित्वा
नृत्	नृत्त	नृत्तवत्	नर्तित्वा
पुष्	पुष्ट	पुष्टवत्	पुष्ट्वा
दिव्	द्यूत-द्यून१११	द्यूत(न)वत्	द्यूत्वा-देवित्वा
युध्	युद्ध	युद्धवत्	युद्ध्वा

ॐ झषस्तथोर्धोऽधः, स्तरित्व ॥

११०–शुषःकः ॥ शुष् से परे त या तवत् के त को क हो जाता है ॥

१११–दिवोऽविजिगीषायाम् ॥ दिव् से परे त को न हो जाता है यदि अर्थ विजिगीषा (play, gambling) न हो

धातु	क्तान्त	क्तवत्वन्त	क्त्वान्त
जन्	जात	जातवत्	जनित्वा
छिद् *to be*	छिन्न112	छिन्नवत्	छित्वा
दृश्	दृष्ट	दृष्टवत्	दृष्ट्वा
क्षिप्	क्षिप्त	क्षिप्तवत्	क्षिप्त्वा
प्रच्छ्	पृष्ट	पृष्टवत्	पृष्ट्वा
सृज्	सृष्ट	सृष्टवत्	सृष्ट्वा
स्पृश्	स्पृष्ट	स्पृष्टवत्	स्पृष्ट्वा
मृ	मृत	मृतवत्	मृत्वा
मुच्	मुक्त	मुक्तवत्	मुक्त्वा
सिच्	सिक्त	सिक्तवत्	सिक्त्वा
चुर्	चोरित	चोरितवत्	चोरयित्वा*
तड्	ताडित	ताडितवत्	ताडयित्वा
भूष्	भूषित	भूषितवत्	भूषयित्वा
भक्ष्	भक्षित	भक्षितवत्	भक्षयित्वा
दण्ड्	दण्डित	दण्डितवत्	दण्डयित्वा
तुल्	तोलित	तोलितवत्	तोलयित्वा
स्पृह्	स्पृहित	स्पृहितवत्	स्पृहयित्वा
अद्	जग्ध113	जग्धवत्	जग्ध्वा
हृ	हृत	हृतवत्	हृत्वा
हन्	हत	हतवत्	हत्वा

112—रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ॥ र् या द से परे निष्ठा के त् और धातु के अन्तिम द् को न् हो जाता है ॥

* चुरादिगण के धातु और क्त्वा प्रत्यय के मध्य में अय आ जाता है

113—अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ॥ अद् के स्थान में जग्ध् हो जाता है यदि परे त, तवत्, क्त्वा (त्वा) हों ॥

धातु	क्तान्त	क्तवत्वन्त	क्त्वान्त
विद् to know	विदित	विदितवत्	विदित्वा
रुद्	रुदित	रुदितवत्	रुदित्वा
जागृ	जागरित	जागरितवत्	जागरित्वा
पा to protect	पात	पातवत्	पात्वा
या	यात	यातवत्	यात्वा
गुप्	गुप्त *	गुप्तवत्	गुप्त्वा
शी	शयित	शयितवत्	शयित्वा
वच्	उक्त *	उक्तवत्	उक्त्वा
भी	भीत	भीतवत्	भीत्वा
दा	दत्त	दत्तवत्	दत्त्वा
धा	हित ११४	हितवत्	हित्वा
शक्	शक्त	शक्तवत्	शक्त्वा
भा	भात	भातवत्	भात्वा
श्रु	श्रुत	श्रुतवत्	श्रुत्वा
रुध्	रुद्ध	रुद्धवत्	रुद्ध्वा
युज्	युक्त	युक्तवत्	युक्त्वा
मुच्	मुक्त	मुक्तवत्	मुक्त्वा
भिद्	भिन्न *	भिन्नवत्	भित्त्वा
हन्	हत	हतवत्	हत्वा
कृ	कृत	कृतवत्	कृत्वा
बन्ध्	बद्ध	बद्धवत्	बद्ध्वा

* [illegible]

११४-दधातेर्हिः — धा के स्थान में हि हो जाता है, यदि बाद में त, तवत् हो ॥

* रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ॥

धातु	क्तान्त	क्तवत्वन्त	क्त्वान्त
मुष	मुषित	मुषितवत्	मुषित्वा
क्री	क्रीत	क्रीतवत्	क्रीत्वा
ज्ञा	ज्ञात	ज्ञातवत्	ज्ञात्वा
ग्रह	गृहीत	गृहीतवत्	गृहीत्वा

२४६–(क) धातु के पूर्व यदि कोई उपसर्ग हो और अन्त ह्रस्व स्वर हो तो त्वा को त्य हो जाता है ॥

यथा–संश्रुत्य, विस्मृत्य, विजित्य ॥

(ख) धातु के पूर्व यदि कोई उपसर्ग हो और अन्त में दीर्घ स्वर या कोई व्यंजन हो तो त्वा को य हो जाता है ॥

यथा–संभूय, प्रणम्य, विगृह्य ॥

तुमुन्नन्त (Infinitive of Purpose

२४७–धातु के आगे तुम् (तुमुन्) लगाकर उस का तुमुन्नन्त रूप बनाया जाता है ॥ जिस धातु का जो रूप लुट् (Fi future) के प्रथम पुरुष–एकवचन में बनता है, यदि उस में ता की जगह तुम् कर दें (या अंतिम आ की जगह उम् कर दें) तो, वह उस धातु का तुमुन् (तुम्) अन्तरूप बन जाता

गम्–गन्ता (लु०प्र०ए०), गन्तुम्; भू–भविता (लु०प्र०ए० भवितुम्; दृश–द्रष्टा (लु० प्र० ए०)–द्रष्टुम् ॥

भू	भवितुम्	सह	सहितुम्-सोढुम्
पच्	पक्तुम्	मृज्	मार्जितुम्
दा	दातुम्	क्षुभ	क्षोभितुम्
पा	पातुम्	रक्ष	रक्षितुम्
	गन्तुम्	भाष	भाषितुम्

शुभ्	शोभितुम्	सेव्	सेवितुम्
पठ्	पठितुम्	रभ्	रब्धुम्
रक्ष्	रक्षितुम्	लभ्	लब्धुम्
वद्	वदितुम्	वृत्	वर्तितुम्
मन्	मन्तुम्	वृध्	वर्धितुम्
स्था	स्थातुम्	बुध्	बोद्धुम्
पच्	पक्तुम्	याच्	याचितुम्
क्षि	क्षेतुम्	नी	नेतुम्
जि	जेतुम्	हृ	हर्तुम्
स्मृ	स्मर्तुम्	नश्	नंष्टुम्-नशितुम्
मृ	मर्तुम्	रुह्	रोढुम्
स्पृश्	स्प्रष्टुम्	शुष्	शोष्टुम्
वस्	वस्तुम्	तुद्	तोत्तुम्
दृश्	द्रष्टुम्	भक्ष्	भक्षितुम्
लिख्	लिखितुम्	पुष्	पोष्टुम्
कम्प्	कम्पितुम्	दिव्	देवितुम्
चर्	चरितुम्	दुह्	दोग्धुम्
गर्ह्	गर्हितुम्	जन्	जनितुम्
श्लाघ्	श्लाघितुम्	विद् to know	वेत्तुम्
कम्	कमितुम्	वस्	वसितुम्-वस्तुम्
लिप्	लेप्तुम्	दह्	दग्धुम्
सह्	सोढुम्	डी	डयितुम्
सृज्	स्रष्टुम्	कृ	कर्तुम्
क्रुश्	क्रोष्टुम्	क्री	क्रेतुम्
मृ	मर्तुम्	दा	दातुम्
क्रुध्	क्रोद्धुम्	धा	धातुम्

सिच्	सेक्तुम्	शक्	शक्तुम्
चुर्	चोरयितुम्	आप्	आप्तुम्
तड्	ताडयितुम्	हि	हेतुम्
भूष्	भूषयितुम्	श्रु	श्रोतुम्
भक्ष्	भक्षयितुम्	रुध्	रोद्धुम्
दण्ड्	दण्डयितुम्	युज्	योक्तुम्
तुल्	तोलयितुम्	भुज्	भोक्तुम्
स्पृह्	स्पृहयितुम्	भिद्	भेत्तुम्
अद्	अत्तुम्	तन्	तनितुम्
इ	एतुम्	कृ	कर्तुम्
हन्	हन्तुम्	बन्ध्	बन्द्धुम्
विद् to know	वेत्तुम्	मुष्	मोषितुम्
रुद्	रोदितुम्	क्री	क्रेतुम्
जागृ	जागरितुम्	ज्ञा	ज्ञातुम्
पा to protect	पातुम्	ग्रह्	ग्रहीतुम्
या	यातुम्		

विधि-कृदन्त (Potential Passive Participles).

२९८ — (क) विधि कृदन्त रूप बनाने के लिये धातु के आगे तव्य, अनीय और य (यत्, ण्यत्) में से कोई प्रत्यय लगाया जा सकता है ॥

(ख) तव्य और अनीय के पहिले धातु के अन्तिम ह्रस्व वा दीर्घ स्वर या उपधा के ह्रस्व स्वर को गुण हो जाता है ॥ यथा — चि — चेतव्यम्, जि — जेतव्यम्, नी — नयनीयम्, बुध् — बोद्धव्यम् ॥

(ग) तव्य के पूर्व सेट् धातुओं के अन्त में इ जोड़ा जाता है ॥ यथा — वेदितव्यम् ॥

धातु	तव्य	अनीय
भू	भवितव्य	भवनीय
पत्	पतितव्य	पतनीय
दा	दातव्य	दानीय
पा	पातव्य	पानीय
गम्	गन्तव्य	गमनीय
पठ्	पठितव्य	पठनीय
रक्ष्	रक्षितव्य	रक्षणीय
स्था	स्थातव्य	स्थानीय
पच्	पक्तव्य	पचनीय
जि	जेतव्य	जयनीय
स्मृ	स्मर्तव्य	स्मरणीय
त्यज्	त्यक्तव्य	त्यजनीय
दृश्	द्रष्टव्य	दर्शनीय
सह्	सोढव्य	सहनीय
रम्	रन्तव्य	रमणीय
लभ्	लब्धव्य	लभनीय
नी	नेतव्य	नयनीय
हृ	हर्तव्य	हरणीय
युध्	योद्धव्य	योधनीय
विद्	वेदितव्य	वेदनीय
प्रच्छ्	प्रष्टव्य	प्रच्छनीय
सृज्	स्रष्टव्य	सर्जनीय
स्पृश्	स्प्रष्टव्य	स्पर्शनीय
मृ	मर्तव्य	मरणीय
चुर्	चोरयितव्य	चोरणीय

कर्त्तव्यः संचयो नित्यं कर्त्तव्यो नातिसंचयः ॥
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥
गच्छन्त्युन्मार्गयातस्य नेतारः खलु वाच्यताम् ॥
यात्यधोऽधः व्रजत्युच्चैर्नरः स्वैरेव कर्मभिः ।
कूपस्य खनिता यद्वत् प्राकारस्य च कारकः ॥
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥
घातयितुमेव नीचः परकार्यं वेत्ति न प्रसाधयितुम् ॥
पातयितुमेव शक्तिर्नाखोरुद्धर्तुमन्नपिटम् ॥

(ख) जब उस ने हरि को जाने वाला समझा तो उसे कहा " पहिले तुझे घर के कार्य समाप्त कर लेने चाहियें, पीछे जाना चाहिये ॥

जब उस ने जले हुए गृह को देखा, तो चुप रह गया ॥

तुम ने भोजन तो खा लिया है, अब वस्त्र धारण करने चाहियें ॥

जो पुरुष चलते चलते कुछ न कुछ खाते रहते हैं, उनकी अन्न पचने की शक्ति मन्द हो जाती है ॥

इन के बालक उत्पन्न होने हैं, कहीं माता के होने वाला न हो ॥

यह गीत गाने के योग्य है यहां ही ठहरें और मधुर स्वर से गायें ॥

प्रातःकाल होते, इस बालक घर जाकर, पिता के बैठ कर, मधुर २ बातें पुनः लौट कर अपने कार्यों को आरम्भ कि

षड्विंशः पाठः ।

प्रयोगाः (Voices)

३६८—क्रिया के तीन प्रयोग होते हैं। (१) कर्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाववाच्य।

कर्तृवाच्य (Active Voice)

धातुओं के जो रूप भ्वादि आदि दश गणों में पीछे आ चुके हैं वे सबही कर्तृवाच्य क्रियायें हैं॥

वाक्य में कर्तृवाच्य (active voice) क्रिया का कर्त्ता (subject) प्रथमा (nominative) में और कर्म (object) द्वितीया (Accusative) में प्रयुक्त होता है॥

क्रिया के वे ही पुरुष (person) और वचन (number) होते हैं जो कर्त्ता के होते हैं॥

यथा—"रामः ओदनम् भक्ति" इस वाक्य में 'रामः' कर्त्ता का पुरुष प्रथम और वचन एक है, इसलिये क्रिया का भी पुरुष प्रथम और वचन एक है॥

उत्तम पु० अहं ग्रन्थं पठामि, आवां धनं सञ्चिनुवः, वयं दुग्ध-मपिबाम.

मध्यम पु० आचार्यं नमिष्यथ, युवां गिरिं आरोहथ, यूयं धनं [illegible] [illegible]

प्रथम पु० रामः दुग्धं पिबति, बालकौ च [illegible] [illegible] कन्याः पत्रं लिखन्ति

कर्मवाच्य (Passive Voice)

कर्मवाच्य में क्रिया के रूप सार्वधातुक इस प्रकार बनते हैं॥

३६९—सार्वधातुक में कर्मवाच्य और भाववाच्य एक है [illegible]

आगे केवल आत्मनेपद की विभक्तियें प्रयुक्त होती हैं (चाहे यद्यपि परस्मैपदी या उभयपदी क्यों न हो)॥

२६०—सार्वधातुके यक् ॥ कर्मवाच्य और भाववाच्य सार्वधातुक विभक्ति और धातु के मध्य में य आ जाता है (धातु का उच्चारण दिवादिगण के आत्मनेपदी धातुओं के स होता है)॥ यथा—गम्+य+ते=गम्यते, अगम्यत, गम्यता गम्येत ॥

कुछ धातुओं में विशेष परिवर्तन होते हैं, यथा—

२६१–(१) ऋकारान्त धातुओं के अन्तिम ऋ को रि हो जा है ॥ यथा—

क्रियते, अक्रियत, क्रियताम्, क्रियेत ॥

(२) ऋकारान्त धातुओं के आदि में यदि संयुक्त वर्ण तो ऋ को गुण होता है ॥ यथा—

स्मर्यते, अस्मर्यत, स्मर्यताम्, स्मर्येत ॥

(३) (क) वच, वप्, वह, वस, वद्, स्वप्, धातुओं व को उ,

(ख) यज् और व्यध् के य को इ और

(ग) प्रच्छ् और ग्रह के र को ऋ होजाता है ॥

यथा—उह्यते, उच्यते, सुप्यते, इज्यते, गृह्यते ॥

(४) धातु के अन्त में ह्रस्व इ या उ दीर्घ हो जाता है ॥ यथा—जीयते, श्रूयते ॥

---

* गण विकरणों के पूर्व जो धातु में विकार होते हैं, वे कर्मवाच्य या भाववाच्य में नहीं होते, अर्थात् गम् या पा के स्थान में गच्छ या पिब आदि नहीं होते ॥

(१) रिङ्शयग्लिङ्क्षु ॥ (२) गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ॥ (३) वचिस्वपियजादीनां किति ॥ (४) अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ॥

जिन धातुओं की उपधा में अनुनासिक हो उस का लोप हो जाता है ॥ यथा—बन्ध-बध्यते ॥

(६) आकारान्त धातुओं के अन्तिम आ को ई हो जाता है ॥ यथा—दीयते, अदीयत, दीयताम्, दीयेत ॥

(७) ब्रू के स्थान में वच और अस् (to be) के स्थान में भू हो जाता है ॥ यथा ब्रू - उच्यते, अस्-भूयते ॥

आर्धधातुक।

आर्धधातुक विभक्तियों में धातु में कोई परिवर्तन नहीं केवल धातु के आगे आत्मनेपद विभक्तियां आती हैं ॥ दाताहे, दास्ये, ददे इत्यादि ॥

२८२—कर्मवाच्य क्रिया के साथ तृतीयान्त कर्ता (subject) और प्रथमान्त कर्म (object) आता है, और क्रिया के वेही और वचन होते हैं जो प्रथमान्त कर्म के होते हैं ॥ (यदि किसी कर्तृवाच्य (active) वाक्य को कर्मवाच्य में बदलना हो तो प्रथमान्तकर्ता को तृतीयान्त और द्वितीयान्त कर्म को प्रथमान्त कर देना चाहिये ॥ यथा—पुरुषः स्तेनं प्रहरति (active)=पुरुषेण स्तेनः प्रह्रियते ॥

कृदन्त-क्रिया

२८३—(क) क्तवत्वन्त (Past Active Participle) जब क्रिया की तरह प्रयुक्त हो तो कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त होता है। क्रिया के लिङ्ग, विभक्ति और वचन वेही होते हैं जो कर्ता के हों ॥ यथा—छात्रः पाठं पठितवान्, सा स्त्री गृहं गतवती ॥

(ख) क्तान्त (Past Passive Participle) जब क्रिया की तरह प्रयुक्त हो तो कर्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त होता है

(१) घुमास्थागापाजहातिसांहलि ॥ (२) ब्रुवो वचि, अस्तेर्भूः ॥

क्रिया के लिङ्ग, विभक्ति और वचन वे ही होते हैं, जो प्रथमान्त कर्म के हों ॥

यथा—रामेण अन्नं भुक्तं, रामेण ओदनः भुक्तः, मया वचनमुक्तम् ।

(ग) यदि क्तवत्वन्त (P. A. P.) कर्तृवाच्य (Active) कृदन्त-क्रिया को कर्मवाच्य (Passive) में बदलना हो तो उस का क्तान्त (P.P P.) में परिवर्तन होगा ॥ यथा—अहमुत्सवं द्दृ
ष्टवान्—मया उत्सवो दृष्टः ॥ इसीप्रकार क्तान्त क्तवत्वन्त में बदल
है ॥ यथा —मया जलं पीतम् , अहं जलं पीतवान् ॥

द्विकर्मक-धातु ।

२६४—* यदि द्विकर्मक क्रियाओं का कर्तृ-वाच्य (Activ
से कर्मवाच्य (Passive) में बदलना हो तो दुह से लेकर पर्य
धातुओं का अप्रधान द्वितीयान्त कर्म और नी, हृ, कृष और व
धातुओं का प्रधान द्वितीयान्त कर्म प्रथमान्त में बदल जाता है

कर्तृ वाच्य	कर्म वाच्य
स धेनुं पयो दोग्धि	तेन धेनुः(प्र०)पयः(द्वि०)दुह्य
देवाः समुद्रं सुधां ममन्थुः	देवैः समुद्रः सुधां ममन्थे ।
गोपोऽजां ग्रामं नयति	गोपेन अजा ग्रामं नीयते ।
दासो भारं ग्रामं वहति	दासेन भारः ग्रामं उह्यते ।
चौरः धनिकं धनं हरति	चौरेण धनिकः धनं ह्रियते ।

भाव-वाच्य (Impersonal Voice)

२६५—भाववाच्य क्रिया सदा †अकर्मक धातुओं से ही बन
जाती है ॥ क्रिया में वेही परिवर्तन आदि होते हैं जो कर्मवाच्य

---

* गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नी-हृ-कृष-वहाम् ॥

† लज्जा-सत्ता-स्थिति-जागरणं-वृद्धि-क्षय-भय-जीवित-मरणम्
शयन-क्रीडा-रुचि-दीप्त्यर्थं-धातुगणं तमकर्मकमाहुः ॥ अर्थात् जिन धा
तुओं के ये अर्थ हों वह अकर्मक होंगे ॥

यदि स्वामी दुर्गमस्याको राम-
मद्रीं पश्येत् मदास्य हृदयं
स्नेहेनाभिष्यन्देत् ॥
तदाकर्ण्य दमनकश्चिन्तयामास
दुरात्मायं यदि तौ दण्डका-
भ्यां स्वामिनं प्रहरिष्यति
तन्महाननर्थः संपत्स्यते ॥
स दरिद्रेभ्यो धनं दत्तवान् ॥
स मां प्रश्नमेकं पृष्टवान् ॥

सखे कण्टक, किमिन्द्रपुर-
कार्यां स्वामी पानीयम-
पीत्वा सशङ्कितो मन्दं
मन्दमवतिष्ठते ॥
अपि ततः किं विजम्भसे ॥
चरितं ते प्रवेशय ॥
कथारम्भकाले राजपुत्रा ऊचुः
इदानीं सुहृद्भेदं श्रोतुमि-
च्छामः ॥

स्वभावं नैव मुञ्चन्ति सन्तः संसर्गतोऽसताम्।
गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति।
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥

(ग) वह उस चोर से मारा गया
और खण्ड२ किया गया ॥
ब्राह्मण पहिले बुलाये जायँगे
और भोजन खिलाये जायँगे ॥
जिस पुरुष से साधारण शत्रु
नहीं जीते जासकते उस
से इन्द्रिय किस तरह से
दबाये जायँगे ॥

यह मृत देह शीघ्र उठवाया
जाये और श्मशान मे
जलाया जाये ॥
यदि नौकरों से काम कराया जा
तो वे आलसी नहीं रहते
यदि अधिक अन्न उस से न
खाया जाता तो अजीर्ण
रोग कभी उत्पन्न न होता

* धातु-उच्चारण ।

लृट् (Second Future)

† सेट्

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
भू(भव्)	उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
	म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
	प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति

इन धातुओं का उच्चारण भी इसी तरह होगा —

पत्—	उ० पु०	पतिष्यामि	पतिष्यावः	पतिष्यामः
गम्—	उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः
शुच्(शोच्)—	उ० पु०	शोचिष्यामि	शोचिष्यावः	शोचिष्यामः
पठ्—	उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
वद्—	उ० पु०	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः
स्मृ(स्मर्)—	उ० पु०	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः
सृ(सर्)—	उ० पु०	सरिष्यामि	सरिष्यावः	सरिष्यामः
भ्रम्—	उ० पु०	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः
अस्(दि०)—	उ० पु०	असिष्यामि	असिष्यावः	असिष्यामः
मृष्(मर्ष्)—	उ० पु०	मर्षिष्यामि	मर्षिष्यावः	मर्षिष्यामः
दिव्(देव्)—	उ० पु०	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः
हन्(हन्)—	उ० पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

* धातुओं को ऐसे क्रम से रखा गया है, जिस से जिन धातुओं का एक ही प्रकार से उच्चारण हो, वे सभी एक स्थान पर आ जाएँ। इस से छात्रों को अभ्यास करने में सुविधा होगी।

† सेट् या अनिट् के लिये देखो प्रस्तावना पृष्ठ ११, १२।

मृ (मर्)-उ० पु० मरिष्यामि मरिष्यावः मरिष्यामः

हन्- उ० पु० हनिष्यामि हनिष्यावः हनिष्यामः

रुद् (रोद्)-उ० पु० रोदिष्यामि रोदिष्यावः रोदिष्यामः

जागृ (जागर्)-उ० पु० जागरिष्यामि जागरिष्यावः जागरिष्याम

कृ (कर्)-उ० पु० करिष्यामि करिष्यावः करिष्यामः

मुष् (मोष्)-उ० पु० मोषिष्यामि मोषिष्यावः मोषिष्यामः

ग्रह्— उ० पु० *ग्रहीष्यामि ग्रहीष्यावः ग्रहीष्यामः

आत्मने० शिक्ष्-उ० पु० शिक्षिष्ये शिक्षिष्यावहे शिक्षिष्यामहे

म० पु० शिक्षिष्यसे शिक्षिष्येथे शिक्षिष्यध्वे

प्र० पु० शिक्षिष्यते शिक्षिष्येते शिक्षिष्यन्ते

इन धातुओं का उच्चारण भी इसी तरह होता है ॥

ईक्ष्- उ० पु० ईक्षिष्ये ईक्षिष्यावहे ईक्षिष्याम

वन्द्— उ० पु० वन्दिष्ये वन्दिष्यावहे वन्दिष्याम

यत्- उ० पु० यतिष्ये यतिष्यावहे यतिष्याम

शङ्क्- उ० पु० शङ्किष्ये शङ्किष्यावहे शङ्किष्याम

श्लाघ्— उ० पु० श्लाघिष्ये श्लाघिष्यावहे श्लाघिष्या

कम्प्- उ० पु० कम्पिष्ये कम्पिष्यावहे कम्पिष्याम

सह्- उ० पु० सहिष्ये सहिष्यावहे सहिष्याम

मुद् (मोद्)-उ० पु० मोदिष्ये मोदिष्यावहे मोदिष्याम

शुभ् (शोभ्)-उ० पु० शोभिष्ये शोभिष्यावहे शोभिष्याम

रुच् (रोच्)-उ० पु० रोचिष्ये रोचिष्यावहे रोचिष्यामहे

भाष्- उ० पु० भाषिष्ये भाषिष्यावहे भाषिष्यामहे

सेव्- उ० पु० सेविष्ये सेविष्यावहे सेविष्यामहे

---

* ग्रह् में इ दीर्घ हो जाता है (ग्रहोऽलिटि दीर्घः)॥

धातु	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वृत् (वर्त्) —	उ० पु०	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे
वृध् (वर्ध्) —	उ० पु०	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे
जन् —	उ० पु०	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

धातु	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
बुध् (बोध्) —	उ० पु०	बोधिष्यामि	बोधिष्यावः	बोधिष्यामः
" "	उ० पु०	बोधिष्ये	बोधिष्यावहे	बोधिष्यामहे
याच्	उ० पु०	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः
"	उ० पु०	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे
हृ (हर्)	उ० पु०	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः
"	उ० पु०	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे
*चुर् (चोर्) परस्मैपद	उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः
	म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
	प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
आत्मनेपद	उ० पु०	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे
	म० पु०	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
	प्र० पु०	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते

शेष चुरादिगण के धातुओं का उच्चारण भी इसी तरह होगा॥

धातु	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तड् (ताड्) —	उ० पु०	ताडयिष्यामि	ताडयिष्यावः	ताडयिष्यामः
"	उ० पु०	ताडयिष्ये	ताडयिष्यावहे	ताडयिष्यामहे
भूष् —	उ० पु०	भूषयिष्यामि	भूषयिष्यावः	भूषयिष्यामः
"	उ० पु०	भूषयिष्ये	भूषयिष्यावहे	भूषयिष्यामहे
भक्ष् —	उ० पु०	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

---

* चुरादिगण के धातुओं के आगे अय जोड़ा जाता है॥

”	उ० पु०	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे
दण्ड्—	उ० पु०	दण्डयिष्यामि	दण्डयिष्यावः	दण्डयिष्यामः
”	उ० पु०	दण्डयिष्ये	दण्डयिष्यावहे	दण्डयिष्यामहे
तुल (तोल)-	उ० पु०	तोलयिष्यामि	तोलयिष्यावः	तोलयिष्यामः
”	उ० पु०	तोलयिष्ये	तोलयिष्यावहे	तोलयिष्यामहे
स्पृह्—	उ० पु०	स्पृहयिष्यामि	स्पृहयिष्यावः	स्पृहयिष्यामः
”	उ० पु०	स्पृहयिष्ये	स्पृहयिष्यावहे	स्पृहयिष्यामहे

अनिट्

परस्मैपद पा-	उ० पु०	पास्यामि	पास्यावः	पास्य
	म० पु०	पास्यसि	पास्यथः	पास्य
	प्र० पु०	पास्यति	पास्यतः	पास्यं

शेष आकारान्त धातुओं का उच्चारण इसी तरह होगा ॥

पा—	उ० पु०	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः
स्था—	उ० पु०	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः
दा—	उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
या—	उ० पु०	यास्यामि	यास्यावः	यास्यामः
उ० प० धा-	उ० पु०	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः
”	उ० पु०	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे
ज्ञा-	उ० पु०	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः
”	उ० पु०	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

स्मैपद—नश्-	उ० पु०	नंक्ष्यामि	नंक्ष्यावः	नंक्ष्यामः
	म० पु०	नंक्ष्यसि	नंक्ष्यथः	नंक्ष्यथ

	प्र० पु०	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
नद्-उ० पु०	नंद्स्यामि	नंद्स्यावः	नंद्स्यामः
	म० पु०	नंद्स्यसि	नंद्स्यथः	नंद्स्यथ
	प्र० पु०	नंद्स्यति	नंद्स्यतः	नंद्स्यन्ति

पद्-उ० पु०	पद्स्यामि	पद्स्यावः	पद्स्यामः
म० पु०	पद्स्यसि	पद्स्यथः	पद्स्यथ
प्र० पु०	पद्स्यति	पद्स्यतः	पद्स्यन्ति

... प्रकार के शेष धातुओं का उच्चारण भी इसी तरह होगा ॥

त्यज्—	उ० पु०	त्यद्स्यामि	त्यद्स्यावः	त्यद्स्यामः
शद्—	उ० पु०	शद्स्यामि	शद्स्यावः	शद्स्यावः
इ (वच्)-	उ० पु०	वद्स्यामि	वद्स्यावः	वद्स्यामः
पुष्—	उ० पु०	पोद्स्यामि	पोद्स्यावः	पोद्स्यामः
शुष्—	उ० पु०	शोद्स्यामि	शोद्स्यावः	शोद्स्यामः
प्रच्छ्—	उ० पु०	प्रद्स्यामि	प्रद्स्यावः	प्रद्स्यामः
तुद्—	उ० पु०	तोद्स्यामि	तोद्स्यावः	तोद्स्यावः
परस्मैपद-मुच्-	उ० पु०	मोद्स्यामि	मोद्स्यावः	मोद्स्यामः
आत्मनेपद-,,	उ० पु०	मोद्स्ये	मोद्स्यावहे	मोद्स्यामहे
,,	म० पु०	मोद्स्यसे	मोद्स्येथे	मोद्स्यध्वे
,,	प्र० पु०	मोद्स्यते	मोद्स्येते	मोद्स्यन्ते
परस्मै० लिप्-	उ० पु०	सेद्स्यामि	सेद्स्यावः	सेद्स्यामः
आत्म०-	उ० पु०	सेद्स्ये	सेद्स्यावहे	सेद्स्यामहे
परस्मै० युध्-	उ० पु०	योद्स्यामि	योद्स्यावः	योद्स्यामः

आत्म०,, उ० पु०	योक्ष्ये	योक्ष्यावहे	योक्ष्यामहे
परस्मै० भुज-उ० पु०	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः
आत्म० ,, उ० पु०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे
परस्मैपद–क्षि–उ०पु०	क्षेप्स्यामि	क्षेप्स्यावः	क्षेप्स्यामः
,, म०पु०	क्षेप्स्यसि	क्षेप्स्यथः	क्षेप्स्यथ
,, प्र०पु०	क्षेप्स्यति	क्षेप्स्यतः	क्षेप्स्यन्ति

नीचे दिये हुए धातुओं का उच्चारण भी क्षि की तरह होगा ॥

जि – उ० पु०	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः
हि – उ० पु०	हेष्यामि	हेष्यावः	हेष्यामः
श्रु – उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः
भी – उ० पु०	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः
इ – उ० पु०	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः
परस्मैपद–नी–उ०पु०	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः
आत्मनेपद-,, उ०पु०	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे
,, म०पु०	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
,, प्र०पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
परस्मै०क्री-उ० पु०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः
आत्म० ,, उ० पु०	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

परस्मैपद–दृश–उ०पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः
,, म०पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
,, प्र०पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति

इसी तरह सृज और स्पृश का उच्चारण भी होता है ॥

सृप्—	उ० पु०	स्रप्स्यामि	स्रप्स्यावः	स्रप्स्यामः
सृज्—	उ० पु०	स्रक्ष्यामि	स्रक्ष्यावः	स्रक्ष्यामः

आत्मनेपद-रभ्—	उ०पु०	रप्स्ये	रप्स्यावहे	रप्स्यामहे
,,	म०पु०	रप्स्यसे	रप्स्येथे	रप्स्यध्वे
,,	प्र०पु०	रप्स्यते	रप्स्येते	रप्स्यन्ते
लभ्—	उ०पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

स्मैपद-क्रुध्—	उ०पु०	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः
,,	म०पु०	क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथः	क्रोत्स्यथ
,,	प्र०पु०	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	क्रोत्स्यन्ति
वेट्—	उ० पु०	वेत्स्यामि	वेत्स्यावः	वेत्स्यामः
अद्—	उ० पु०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः
त्मनेपद-युध्—	उ०पु०	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे
,,	म०पु०	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
,,	प्र०पु०	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
रस्मैपद रुध्—	उ०पु०	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः
आत्मनेपद ,,	उ०पु०	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे
रस्मै०-भिद्—	उ०पु०	भेत्स्यामि	भेत्स्यावः	भेत्स्यामः
आत्मनेपद ,,	उ०पु०	भेत्स्ये	भेत्स्यावहे	भेत्स्यामहे
स्मैपद-बन्ध्—	उ०पु०	भन्त्स्यामि	भन्त्स्यावः	भन्त्स्यामः
,,	म०पु०	भन्त्स्यसि	भन्त्स्यथः	भन्त्स्यथ
,,	प्र०पु०	भन्त्स्यति	भन्त्स्यतः	भन्त्स्यन्ति

APPENDIX.

EXAMINATION PAPERS.

PANJAB.

1913.

I. What Sandhi changes have taken place in आच्छादित and हवींषि ? Give rules.

II. Write out the declensions in all cases and numbers of—

अनडुह्, गौ, and युष्मद् ।

III. Give the feminine forms of the following words :—पचत्, कान्त, इन्दु and ब्राह्मण ।

IV. Write out, in the three persons and numbers the second preterite (लिट्) of the root पा, the present tense (लट्) of the root जन्, the imperative (लोट्) of the root दृश् and the third preterite (लुङ्) of the root सेव् ।

V. Write out, in the three persons and numbers, the conjugations, in the present tense (लट्) of the causative (णिजन्त) and desiderative (सन्नन्त) forms of the root हन् ।

1914.

I. Point out the Sandhi-changes in the following, and give rules for these changes :—

पचेरम्, हरि वन्दे, पिनाकिन्त्रायस्व, and भ्रातॄणाम् ।

II. Write out the declensions, in all cases and numbers of परिव्राज्, शुचि (f.) and अस्मद् ।

परस्मैपद-तिप्—	उ० पु०	तैप्स्यामि	तैप्स्यावः	तैप्स्यामः
"	म० पु०	तैप्स्यसि	तैप्स्यथः	तैप्स्यथ
"	म० पु०	तैप्स्यति	तैप्स्यतः	तैप्स्यन्ति
स्वप—	उ० पु०	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः
आप—	उ० पु०	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

१११८

APPENDIX.

EXAMINATION PAPERS.

PANJAB.

1913.

I. What Sandhi changes have taken place in स्वाहित and इवांदि ? Give rules.

II. Write out the declensions in all cases and numbers of—

अनडुह्, गौ, and युष्मद्।

III. Give the feminine forms of the following words :—पचत्, कान्त, तनु and ब्राह्मण।

IV. Write out, in the three persons and numbers the second preterite (लिट्) of the root कृ, the present tense (लट्) of the root अद्, the imperative (लोट्) of the root दृश् and the third preterite (लुङ्) of the root सेव्।

V. Write out, in the three persons and numbers, the conjugations, in the present tense (लट्) of the causative (णिजन्त) and desiderative (सन्नन्त) forms of the root दृश्।

1914.

I. Point out the Sandhi-changes in the following, and give rules for these changes :—

एकैकम्, हरि वन्दे, लिमांशितलक्षण, and प्राङ्मुखम्।

II. Write out the declensions, in all cases and numbers of परिव्राज्, द्युति (f.) and अस्मद्।

III. Give the feminine forms of the following :—

कान्त, अनुचर, अज and सिंह ।

IV. Define Determinative (तत्पुरुष) and Relative (बहुव्रीहि) compounds, and give one example of each.

V. Comment on the use of the sixth (षष्ठी) and seventh (सप्तमी) cases (विभक्तयः) in the following sentences :—

(a) ऋषीणां भृगुर्वरिष्ठः । (b) कविषु कालीदासः श्रेष्ठः ।

VI. Write out, in the three persons and numbers, the present tense (लट्) of the root विद् (to exist), the second preterite (लिट्) of the root स्था, the first preterite (लङ्) of the root छिन्द्, and the third preterite (लुङ्) of the root ज्ञा ।

VII. Form the present tense, third person singular, from the desiderative form (सन्नन्त) of the root पठ् ।

VIII. Turn the following active into passive and vice versa :—रामो गच्छति ग्रामम् (b) येन शास्त्रमधीयत ।

IX. Form the past passive participle (क्तान्त) and the infinitive of purpose (तुमुन्नन्त) from the following roots:—दृश्, पच्, and सेव् ।

X. When are the verbal affixes शतृ and शानच् used ? Give one example of each.

1915.

I. Give rules for the underlined Sandhi-changes in the following :—हरेऽव, पुनारमते and रामायणम् ।

II. Write out the declension, in all cases and numbers, of अनडुह्, मातृ and युष्मद् ।

III. Give the feminine forms of the following :—प्रिय, विद्वस्, स्थिर and सहचर ।

IV. What cases do सह and विना govern ?

V. Write out the Comparative and Superlative degrees of गुरु and लघु ।

VI. Write out, in the three persons and numbers, the conjugations of the root पा (to drink) in the present tense (लट्) of लस्, in the first preterite (लङ्) of दा (Parasmaipadi) in the second future (लृट्), and of गम् in the third preterite (लुङ्) ।

VII. Form the present tense (लट्) third person singular from the causative (णिजन्त) and desiderative (सन्नन्त) forms of the root घा ।

VIII. Turn the following passive into active and vice versa :—

(a) कृष्णेन लभ्यते स्थानम् । (b) यद् मूर्खो नाधिगच्छति ।

IX. Define Indeclinable (अव्ययीभाव) and Copulative (द्वन्द्व) compounds, and give one example of each.

X. Form the past passive participle (क्तान्त from the following roots :—पठ्, मज्ज्, हन् and धा ।

XI. Name the affixes (प्रत्यय) used in formin the following words:-दातृ,मोक्तुम्, ददत् and सेव्यमानः

1916.

I. Introduce Sandhi-changes in the follow ing and give rules for them :—लिह्+ङः, हरे+एहि ।

II. Write out the declensions, in all case and numbers, of आत्मन् , स्त्री and अदस् ।

III. Give the feminine forms of the follow ing :—अज, व्याघ्र, कोकिल and हंस ।

IV. What cases are used to select one out of many (निर्धारणे) ? Give one example of each.

V. Write out the comparative and superlative degrees of पटु and प्रिय ।

VI. Name, expound and define the following samasas :—सुखार्थः and पटुभ्रातृका ।

VII. Write out, in the three persons and numbers the conjugations of the root दृश् (Parasmaipadi), in the present tense (लट्), of the root आप् in the Imperative (लोट्), of the root स्था in second preterite (लिट्), and of the root सेव् in the third preterite (लुङ्) ।

VIII. Form the past passive participle (क्तान्त) and the infinitive of purpose (तुमुन्त) from पच्, ... गम्, and सेव् ।

1917.

I. Introduce Sandhi-changes in the following and state rules that you apply :—

तद्+हितम्; शम्भुः+राजते।

II. Write out the declensions, in all cases and numbers, of राजन्, पितृ, and इदम् (पुंलिङ्ग)।

III. Give the feminine forms of विद्वस्, इन्द्र, राजन्, and अश्व।

IV. Write out the Comparative and Superlative forms of लघु and दूर।

V. Expound, name and define the following compounds :—पितृसमः and पुस्तकमजम्।

VI. Conjugate, in all persons and numbers, the root दृश् in the Present Tense (लट्), बुध् in the Imperative (लोट्), कृ (परस्मैपदी) in the Second Preterite (लिट्) and वद् in the Aorist (लुङ्)।

VII. Turn the following Active into Passive, and vice versa :—

(a) अहं ग्रन्थं पठामि।

(b) बुद्धिः शास्त्रैः संस्क्रियते।

VIII. Write out the Sanskrit words for 16, 13, 70, 6th, 33rd, 54th.

IX. Give the Present Participle (शत्रन्त) and the Past Passive Participle (क्तान्त) of गम्, पा, दृश्, and कृ।

MISCELLANEOUS.

1. Correct (१) रामस्तिसृन् मातृन् समर्चयित्वा वनं प्रतस्थौ, (२) ब्राह्मणान् धनान् वस्त्रांश्च ददाहि, (३) सीता भर्तृणा सह वनं गच्छती रुरुदे: (४) सर्वस्य कर्मस्य फलस्य दीयः (५) शरीरं तेजेन स अस्त्रशस्त्रान् वर्माश्चावृणोत्, (६) सम्राजस्याभिवन्दनाय अनेका एव महाराजानो दिल्लीनगरमुपतस्थुः ।

2. Apply the rules of सन्धि in हरे आयाहि, महान् शब्दः, भ्रातः पाहि, हरिः राजते ।

3. Give the causative forms of प्री, भी and पा ।

4. Give desiderative of जि, गुध्, मृ ।

5. Substitute single words for सखा इव आचरति, सख्यायीमिवाचरति, वैरं करोति ।

6. Correct (१) दण्डके वसन् रामलक्ष्मणौ रक्षांसि सहस्रान् अहताम्, (२) राजानो धर्मेण वसुधां शशास, (३) भर्तुः सह पितुः गृहं गच्छन्ती वधूर्जिहेमि, (४) ओदनं शाकांश्च सूदा पचन् अतोऽधुना सर्वेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः भोजय, (५) अनन्तरं किञ्चित् कालं वायुना तस्मिन्नाश्रमेऽधितष्ठौ, (६) चत्वारी विचादधतुः पष्टिकपादश्च चन्द्रापीडोऽशिक्षत । (७) कृष्णवर्मा पुत्रेण ब्राह्मणेभ्यः शतं गावः दापयति, (८) सर्वाभ्यो नदीभ्यो गङ्गा द्राघिष्ठा, (९) तव च मे च सख्यमस्ति, (१०) अहं ह्यः पथि महाप्तं भुजङ्गं ददर्श (११) सा विधवा मन्दुपापार्थं अटन्, (१२) यूयं वयं वा ग्रामं गमिष्यथ, (१३) पथाऽपपाठिनं ग्राम्यः कपकाः दण्ड्याः, (१४) समागतेषु पार्थेषु तान् फलानि दातुं समारेभे, (१५) अस्य पर्वतस्य पूर्वं महाप्रापी वर्तते ।

7. Apply the rules of सन्धि to दुहितः पाहि, ति इच्छति, अग्नी पतौ ।

8. Form compound words out of (१) त्रिपः आ यस्य सः । (२) त्रयाणां लोकानां समाहारः । (३) शोभनो यो यस्य सः ।

9. Write the following sentences, using the rresponding participles in the places of finite rbs (a) भोजनं जग्धेत्यतिथिर्भजति । (b) यमः प्रथमे सेतु न्ध ततो लङ्कां ददाह । (c) यो मिते पदं च मुंचे स चिरे धेन् ।

10. Give examples of (1) Genitive-absolute,) accusative of time and space.

11. Classify the personal endings of verbs to strong and weak.

12. Trace the various steps in making redu- ication in the following—चकार, ददर्श, अवीवदत्, इस्पन्दे, जुहोति. What are the steps for reduplica- on in general ?

13. How do you form the various ordinals rm cardinals ? What method is followed if the umber exceeds hundred ?

14 What are the meanings of the adverb रतम् and what cases does this govern ? Give xamples.

(१) Dissolve the following compounds—अनु- शोभनः, दुर्निरुद्ध, कार्योत्सवह । Madras 1912.

(२) Give the second person singular forms of perfect (लिट्) of अस्, वस्, गम्, पा। (M. 1913).

15. (a) Point out the peculiarity of सन्धि in जाये उत्तानपादस्य। (b) Give positive forms of प्रेयसी, गरीयसी। (M. 1914)

16. What forms of verbs are चेद, चिकीर्षमाणः, आह, वसानः, आसीनः। (M. '14).

17. Give Compounds of the following :—

१ कपोतानां राजा। २ मम सखा। ३ चित्रपाणि अर्थानि यस्य सः। ४ पूर्वम् अह्नः। ५ माता च पिता च। ६ महान् उपायः।

18. Account for the double न् in सन्नच्चैत् and the elision of अ in पतेऽस्मत्पुत्राः। Calcutta, 1910.

19. Correct the grammatical errors in—(a) सम्राट्स्य आज्ञा माननीया। (b) तपोद्यायामुपविश। (c) प्राते भ्रमणं कुरु। (d) गुणमान् अयं युवा। (e) कथं बालको रुदति। (f) रे नृशंस धिक् तव। (g) बलवान् मे लज्जा। (h) मां सर्वे समर्पय। (i) रामः रावणं हतः। C. 1910.

20. Give the compound-words for (a) सती शुद्धिः (b) निर्मलं जलं यस्याः, (c) शक्तिमनतिक्रम्य, (d) पुत्रेण सह वर्त्तमानः, (e) तमसा छन्नः। C 1910.

21. (1) Change the voice in (1) (a) सोऽधुनं गच्छति, (b) युवा पुस्तकं गृह्णाति, (c) मया शानवन्तः पूज्यन्ते, (d) द्विषद्भिः पुर्यधिक्रियते। (2) Show the use of a द्विकर्मकधातु। (3) Illustrate the use of a णिजन्त धातु। C. 1910.

22. Explain and illustrate the principle rule by which a dental स् is changed into ष् । C. 1910.

23. (a) Compound the following (i) सुन्दरीणां बुद्धिः (i) सुन्दरी बुद्धिर्यस्य सः । (b) Expound त्रिभुवनम्, हंसकोकिलम्, (c) Show by two different sentences that the word पीताम्बर can be taken both as a कर्मधारय and as a बहुव्रीहि । Explain and illustrate the अपादानकारक । C 1910.

24. Give कृदन्त words for (1) वचनादनन्तरम्, (2) मानस्य अर्थे, (3) करोति यः सः, (4) वक्तुमुचितम् । C. 1911.

25. (a) Cite and illustrate the rule for the use of य instead of त्वा; (b) Explain and illustrate the distinction between कर्मधारय and बहुव्रीहि ।

26. What is an अव्यय ? show the use of any three of the following—पृथक्, मिथ्या, नमस्, उच्चैस्, शनैः ॥

27. Indicate clearly by illustrations how to use क्त and तव्यत् । C. 1911.

28. Use the following अव्ययाः in short sentences अलम्, किम्, बहिस्, मृषा ।

29. Correct (a) महातेजोऽसौ बालः, (b) दधिना स न तृप्यति, (c) हसञ्चलति असौ युवा (d) दिके लोकाः पलायन्ते, (e) अहं वेत्ति शुको वेत्ति, (f) गुरं पृच्छयते शिष्येण, (g) एतन् न गृहीतव्यम्, (h) अत्र क्रीडन्ति सुन्दरीरमणीगणः, (i) आसमुद्रस्य क्षितितलस्य अहं शासकः, (j) नवघासं कुञ्जलतायेषु एकमपि नास्ति, (k) दक्षिणां प्रतिगृहीत्वा ब्राह्मणः प्रस्थितः. 1912.

30. Give the कृदन्त words for the following—दातुं योग्यम्, प्रणामात् अनन्तरम्, पानात् अनन्तरम् । Give तद्धितान्त of यशः यस्यास्ति सः, शाद अवयवः यस्य तत्, इत्थेन प्रकारेण, कस्मिन् काले । C. 1912.

31. (a) Conjugate the roots of any two of the following in लट्, लोट् and लङ्, दृश्‌, नीतः, हृतः । (b) Decline the bases of the following in Accu. Dative and Locative राजा, सुपाध्याय, भ्राता, गोः । C. '13.

32. (a) Derive the following—आकर्ण्य, आहूय, अभिहितम्, गन्तव्यम् । (b) Disjoin the Sandhis in तन्नृतम्, सुद्विदंश, भोयुक्तम्, ततोऽसौ, यावस्वाह । (c) Use the following in short Sanskrit sentences धिक्, विना, मासेन, पलाय, बहिस्, पृथक्, नमः, अलम् । C. '13.

33. Define सन्धि and समास । How many kinds of समास are there ? Name them and give one example of each. C. '13.

31. (a) What are the general rules that bear upon the change of स into ष ? Give examples. (b) Decline वृत्रहन्, प्रत्यच् and अदस् । (c) Give the comparatives and superlatives of उग्र, स्थिर, बलवत्, पाप । (d) Give Sanskrit equivalents for—39, 105 horses, 10th boy, with 40 men. C. '13.

35. (a) Give the corresponding feminine forms of गोप, आचार्य्य, अश्व, शूद्र, धातृ, विद्वस् । C. '13.

36. Give—(a) acc. sing. of पतद्, अदस्, and x in all genders, (b) Inst. plu. of अहन् (f.,) and

[illegible] and दिव् (c) dat. sing. of मति, स्वसृ and स्वर् (d) Loc. sing. of वारि, दधि, श्री and स्त्री । Bombay. 1912.

37. What forms are the following—[illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] । B. 1912.

38 Correct the following—(a) [illegible] [illegible] । (b) [illegible] (c) [illegible] । (d) [illegible] । B. 1912.

39 Name and dissolve the following compounds—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] । B. 1912.

(1) Illustrate the use of—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] and [illegible] । B. 1913.

(2) (a) Decline—[illegible], [illegible], [illegible] (f.), [illegible] and [illegible] in nom. Inst. and loc. (b) [illegible], [illegible] (f) in Dat. Gen., and voc. (c) [illegible]. (f). [illegible] (n). [illegible] in acc. abl. and loc. B. 1913.

(3) What are the comp. and the sup. of [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]' Have these forms any meaning?

(4) Give—(a) Imper. 2nd pers. sing. of [illegible], [illegible] with [illegible], (b) Imperat. 2nd Sing. of [illegible], [illegible], [illegible], (c) Perfect 3rd sing. of [illegible], and [illegible]. (d) 2nd. Future 2nd. Plu. of [illegible], [illegible], [illegible]. (e) Aorist 1st. sing. of [illegible] and [illegible] । B. 1913.

43 Resolve the following compounds into their separate parts—[illegible] [illegible], [illegible] ।

41. (a) Give, कृदन्त words for—घासं कृत्वा, नस्य अर्थे, अध्ययनादनन्तरम् । (b) Give तद्धितान्त for काष्टेन निर्मितम् । लक्ष्मीर्यस्यास्ति, सुहृदोभावः ।

42. (a) What is the difference in the past forms, लङ्, लुङ् and लिट् ? Illustrate by examples. Conjugate the following roots in लङ् आशीर्लिङ् वह्, दह्, मह्, ह । C. '13

43. Change the voice of the following पक्षिणो वृक्षे वसन्ति, (२) मयेदं कृतम्, (३) द्वौ बालक दृष्टवान्, (४) स इमं विषयं न जानाति । C. '13.

44. Write out the Sanskrit words for the following cardinal and ordinal numbers—14, 20, 6th, 25th, 85, P. 1911.

45. What Sandhi-changes have taken place in विष्णु इहागच्छ, पुराणेतिहासौ पठ ? Give rules. P.

46. What cases does विना govern ? examples. P. 1911.

-अकण्टक, वि० unobstructed.
खिल, वि० entire.
गद, पु० medicine.
ग्र, न० tip, front.
ग्रज, वि० an elder brother
ग्रिम, वि० first.
ङ्ग, न० the body, a limb.
ङ्गीकृत, कृ० accepted.
जा, स्त्री० she-goat.
चिन्तनीय, वि० unthinkable
तिकृच्छ्र, वि० very difficult.
तिप्रसङ्ग, पु० prolixty.
तीव, अ० very much.
त्र, अ० here
द्भुत, वि० wonderful.
नष्टव्य, कृ० which should not be asked
अधिकार, पु० office, power.
अध्यापक, पु० a teacher.
अध्यस्य कृ० having placed on
अध्रुव वि० uncertain.
अनर्थ पु० a calamity, misfortune.

अनाथ वि० helpless.
अनामय वि० healthy.
अनाहूत कृ० not called.
अनित्य वि० not everlasting.
अनुभव पु० experience.
अनुरक्त कृ० devoted.
अनुसरण न० following.
अनेक वि० many, more than one.
अनेकविध वि० various.
अन्त, पु० end.
अन्तःपुर न० harem.
अन्तर, न० difference.
अन्न न० food.
अप्, स्त्री० water.
अपठित पु० not learned.
अपर वि० aucther.
अपराध पु० an offence.
अपहरण न० stealing.
अब्द, पु० न० a year.
अमन्यमान वि० not devoid of.
अभाव पु० non-existence.
अभाविन् वि० what is not destined to be

अभितप्त कृ० heated.
अभिधान नं० name.
अभिभव पु० defeat, contempt.
अभिभूत वि० despised.
अभिमततर वि० desired.
अभियुक्त वि० attentive.
अभीष्ट कृ० desired, dear.
अभ्यनुज्ञा स्त्री० permission.
अमात्य पुं० a minister.
अमुत्र अ० hereafter.
अमृत न० Nectar, immortal.
अमृतसरस्, न० N. of a city
अयस्, न० iron.
अरण्य न० a forest.
अर्घ्य वि० valuable, न० an offering.
अर्जुन पु० अर्जुन
अर्थ पु० object, use, wealth
अर्थिन्, वि० needy.
अर्दित, कृ० troubled.
अलङ्कार, पुं० ornament.
अवन्तिसुन्दरी, स्त्री० N. of a woman.
अवशिष्ट, कृ० remaining.
अवसर, पु० occasion.
अवस्थान, न० standing, remaining

अविलक्षण, वि० not un
अविवेकिता, स्त्री० indi ...minat
अविषय, वि० beyond.
अव्यापृतता, स्त्री० being employe
अशुद्ध, वि० impure.
अशुभ, वि० inauspicio ...e
अश्रोतव्य कृ० which shou not be hea
अश्वा, स्त्री० a mare.
असज्जन, पु० not good m
असत् वि० not good,
असमर्थ वि० not able.
असंख्य, वि० innumerabl
असंभव, वि० impossibl unlikel
असाध्य कृ० difficult to ma
अस्त्र न० a weapon.
अहन्, नं० a day.
अहित वि० harmful.
अहोरात्र पु० day and nigh
आकाश पु० न० the sky.
आकृष्टि स्त्री० attraction.
आगन्तु पु० a stranger.

र्य पु० a teacher.	आश्रित्य कृ० resorting to.
र पु० sunshine.	आश्विन पु० N. of a month
त्र न० an umbrella.	आस्तरण न० a covering.
थ्य न० reception of a guest.	आस्पद न० a seat, abode.
: वि० afflicted, sick	आहार पु० food.
त्र पु० a son.	आहूत कृ० called.
र पु० self.	आह्लादक वि० pleasing.
दैविक वि० supernatural	इ-इन्द्रप्रस्थ पु० N. of a town.
भौतिक वि० relating to beings.	इन्द्राणी स्त्री० the wife of Indra.
त्मिक वि० spiritual.	इन्धन न० fuel.
गिन पु० a traveller.	इष्टदेवता, स्त्री० deity.
र पु० happiness.	ईदृश वि० such, of this kind
न न० bringing.	ईश्वर पु० God.
त कृ० brought.	उ-उचित वि० proper.
स्त्री० misery.	उत्तरायण वि० the summer-solstice.
यितुम् कृ० to accomplish	उत्पात पु० a jump, calamity
न० flesh, bait.	उदक न० water.
पु० beginning.	उदधि पु० the ocean.
वि० worthy, honourable.	उद्गन्धि वि० smell-less.
वि० repeated.	उद्गम पु० going up, rising
पु० intention, gist.	उद्धर्तुम् कृ० to raise, lift up.
पु० न० a hermitage.	उद्धृत्य कृ० having taken up.
	उद्भूत कृ० born.
	उद्यम पु० effort, exertion.
	उद्यमिन् वि० diligent, active.

उद्वाह पु॰ marriage.
उन्मार्ग पु॰ a wrong path.
उपकृति स्त्री॰ favour.
उपदेश पु॰ advice.
उपवास, पु॰ a fast.
उपसर्ग, पु॰ a preposition.
उपाध्यायानी, स्त्री॰ wife of a preceptor.
उपार्जन, न॰ acquiring.
उपाहृत्य कृ॰ performing, praying.
उपेक्ष्य कृ॰ having neglected
उभ, स॰ both.
उरु वि॰ great, wide.
उषित्वा कृ॰ having dwelt.
ऊर्ध्वम्, अ॰ upwards, after-[wards.
ए-एकाकिन् वि॰ alone.
एकान्त पु॰ retired place.
एडका स्त्री॰ a wild goat.
एरण्ड पु॰ the castor-oil plant.
ऐ-ऐक्ष्वाक वि॰ descendant of इक्ष्वाकु.
ऐन्द्रजालिक पु॰ a juggler.

ओ-ओदन पु॰ न॰ boiled rice, food.
औ-औरस वि॰ born of one's sel[f]
औषध (धि) न॰ a herb medicine.
क-कङ्कण पु॰ न॰ a bracele[t]
कतम, who or which o[f] many
कतर, who or which o[f] two.
कतिचित् वि॰ a few, some.
कतिपय वि॰ some, several.
कथा स्त्री॰ a story,
कदाचित् अ॰ once.
कदापि अ॰ ever.
कायिक वि॰ belonging to [body.
कारक वि॰ doer.
कपिञ्जल पु॰ N. of a sage,
कपोल पु॰ a cheek. [golden.
कमलयोनि पु॰ the lotus-born
करटक पु॰ N. of a jackal.
कर्पूरद्वीप पु॰ N. of an [Island.
कलह पु॰ strife.
कलि पु॰ (युग न॰) कलियुग

कलिङ्ग पु॰ N. of a country and its people.
कल्प पु॰ a proposal, प्रलयादिन
कल्याण न॰ welfare.
कविता स्त्री॰ poetry.
कवीन्दु पु॰ like a moon among the poets.
कश्चित् वि॰ some.
काक पु॰ a crow.
कादम्बरी स्त्री N. of a princess
कान्ता स्त्री॰ beloved wife.
काम, पु॰ wish, love.
कामम् अ॰ at will, granted.
कामिनी स्त्री॰ lustful, desirous.
कनिष्ठ (ष्ठा) वि॰ youngest.
कन्या स्त्री॰ a girl.
कार्तवीर्य पु॰ N. of a king.
कार्पण्य न॰ wretchedness.
काल पु॰ time, death, black
कालकूट न॰ a poison.
कासार पु॰ न॰ a pond, lake
कीट पु॰ an insect.
कीलक, पु॰ a wedge, pin.
कुतूहल, न॰ desire, curiosity
कुण्डल, न॰ ear-ring.
कुतः अ॰ whence ?
कुमार पु॰ a boy, prince.
कुम्भकर्ण पु॰ brother of रावण
कुम्भकार पु॰ a potter.
कुरङ्गी, स्त्री॰ a deer.
कुर्वाण कृ॰ doing.
कुलीन, वि॰ of a good family
कुसुम, न॰ a flower.
कूजित, न॰ cooing.
कूप, पु॰ a well.
कूल, न॰ a bank.
कृच्छ्र, पु॰ न॰ difficulty.
कृतयुग, पु॰ first of the four [ages.
कृति, स्त्री॰ an action.
कृत्य, न॰ duty, function.
कृत्स्न, वि॰ whole, entire.
कृपा, स्त्री॰ favour.
कृपणा, स्त्री॰ a miserly woman.
कृष्ण (वि) black, पु॰ कृष्ण.
केवलम् अ॰ only.
कोकिल पु॰ the cuckoo.
कोटर पु॰ न॰ the hollow of a tree.
कौतुक न॰ curiosity.
कौशल, न॰ welfare, skill.

कौशेय वि० silken.
क्रमशः, अ० in order.
क्रमेण अ० by and by
क्रीत, कृ० bought
क्रुञ्चा, स्त्री० a heron.
क्रोध, पु० anger.[depressed.
क्लान्त, न० fatigued,
क्लेश, पु० pain, suffering.
क्षण, न० a moment.
क्षणिक, वि० momentary.
क्षत्रिय पु० क्षत्रिय.
क्षम, वि० capable.
क्षमा, स्त्री० forgiveness.
क्षमिन्, वि० forgiving, patient.
क्षयिणी, स्त्री० decreasing.
क्षुध स्त्री० hunger.
ख-ख, न० the sky.
खल, पु० a fool
खनित्र वि० a digger
ग-गज पु० an elephant
गण, पु० a class.
गीत, न० a song
गदा स्त्री० a mace, club.
गमनाभ्यनुज्ञा स्त्री० permission for going.
गम्भीर वि० deep, grave
गरिष्ठ वि० heaviest
गरुत्मत्=गरुड, a bird
गर्ता स्त्री० a hole, cave
गर्वित वि० proud, haught
गल, पु० the throat, nec
गलित वि० fallen
गहन वि० dense, hard
गाङ्गेय वि० son of गङ्गा
गायक पु० a singer
गाली (लि) स्त्री० abuse
गीति स्त्री० a song
गुण, पु० a quality, virtue
गुणज्ञ वि० appreciating merits.
गुह्य कृ० to be concealed
गृह न० a house
गोष्ठी स्त्री० an assembly
ग्राहयितुम् कृ० to make catc
ग्रीष्म, पु० the summer
ग्रैष्म, वि० relating to summe
घ-घर्म, पु० summer, heat
च-चकोर पु० the partridge
चटकी, स्त्री० a sparrow
चतुरा स्त्री० clever
चतुर्गुण, वि० four times

চতুষ্টয়, ক্লী a group of four.
চন্দন, পুং ক্লী sandal. [disc
চন্দ্রবিম্ব পুং ক্লী the moon-
চন্দ্রিকা স্ত্রী the moon-light
চপল (তা) বি restless
চণ্ডাল পুং of lowest caste
চিন্তিত ক্লী thought
চৈত্র পুং N. of a lunar month
চোর পুং a thief
ছাত্র পুং a pupil
ছায়া স্ত্রী a shade
জঠর পুং, ক্লী the belly
জঠরাগ্নি পুং stomach-fire
জনক the father of Sita,
জনতা স্ত্রী people. [a father
জনয়িতৃ, বি producer.
জন্তু, পুং a creature
জমদগ্নি, the father of
Parshurama.
জলচর বি living in the
জলাশয়, পুং pond. [water.
জাড্য, ক্লী sluggishness.
জিগীষু, পুং desirous of [illegible]
জিজ্ঞাসা, স্ত্রী inquiry [illegible]
জিহ্বা, স্ত্রী the tongue
জীবৎ বি living

জীবন, ক্লী life, exis
জীবিত, বি alive.
জাতি, স্ত্রী caste
জ্যেষ্ঠা, স্ত্রী oldest.
জ্যোতির্বিদ্, পুং an ast
mer or astro
তক্ষক, পুং a carpe
জ্ঞ, বি knowing
ততঃ অ thence, afte
তত্ত্ববিদ্, (বিদ্) পুং
[lo
তনয়, পুং a son.
তনুজা, a daughter.
তন্তুবায়, পুং a weav
তপস্বিনী, স্ত্রী a fem

তপ্ত, বি heated, pa
তল পুং, ক্লী surface,
তস্কর, পুং a thief.
তাত a father, a [illegible]
[illegible]
তাবৎ, অ so much, [illegible]
তিরস্কৃত বি disgra
তিমির, পুং, ক্লী a [illegible]
[illegible]
তীক্ষ্ণ, বি sharp, [illegible]

तीर, न० a bank, margin.
तीर्थ, न० a holy place, ford.
तुरीय, वि० the fourth.
तृतीया, स्त्री० third.
तृष्णा, स्त्री० thirst, desire.
त्रय, न० triple, three-fold.
त्रिगुण, वि० three-times
त्रिविध, वि० of three kinds.
त्रेता, the third age, युग.
त्याग, पु० abandoning
त्वरितम्, अ० soon.
त्वादृश (श), वि० similar to you.

द-दक्षिणा स्त्री० south, a gift
दक्षिणायन, न० the winter-[solstice
दग्धुम्, अ० to burn.
दण्ड पु० punishment.
दमनक, पु० N. of a jackal
दया, स्त्री० kindness.
दरिद्र, वि० poor man.
दर्शन न० sight, a school of [philosophy
दशा स्त्री० state.
दुष्ट वि० wicked.
दास पु० servant. [sLow.
दित्सुविषु. वि० wishing to
दिव
दिव्य, divine, wonder
दुःखदा, स्त्री० giver of m
दुःखभाज वि० miserable.
दुरात्मन् वि० wicked-hea [
दुर्गा स्त्री० the goddess.
दुर्जन, पु० a wicked man
दुर्लभ, वि० difficult to ge
दुश्चरित, वि० ill-behaved
दुर्विनीत वि० impudent.
दुःशासन, पु० a brother o Duryodhana. [do
दुष्कर, वि० difficult to be
दुष्कृति स्त्री० a bad action.
दुष्ट वि० wicked, evil.
दुस्सह वि० unbearable.
दूरीकृत, क० removed, sen
देय कृ० to be given. [away
देवदत्त, पु० a proper name
देवी स्त्री० a goddess.
देश, पु० a country.
दैनिक, वि० daily.
दैव न० fate, destiny.
दोष, पु० fault, blame.
द्रव्य न० an ob

द्राघिष्ठ पु० longest.
द्रोण, पु० the greatest warrior-preceptor.
द्वन्द्व न० a pair.
द्वापर, पु०, न० N. of the 2nd
द्वार, न० a door, gate. [Yuga
द्विगुण, वि० two-fold
ध-धनपति, पु० master of wealth.
धनाढ्य, वि० wealthy.
धनिन् वि० wealthy.
धर्म पु० religion, law, duty
धातु पु० an element, a metal a verbal root.
धात्रीभाव पु० being a
धारण न० wearing. [nurse.
धावमान वि० running.
धीर वि० bold, steady.
धूर्त, वि० cunning, rogue.
ध्रुव वि० certain.
न-नकुल पु० the mungoose.
नख पु०, न० nails [mountain
नगरन्ध्र, न० cavity of a
नन्दन, पु० a son, rejoicer.
नद पु० a stream.
नयन, न० leading, an eye.
नवरात्र, पु० nine days sacred to the goddess. [barber
नापिती, स्त्री० a female-
नाम (नि०) certainly, possibly
नाश, पु० destruction.
नास्तिकता, स्त्री० atheism.
निकृष्ट, वि० low, mean.
निज, वि० innate, one's own
नितराम्, अ० wholy, entirely
नित्य, वि० everlasting.
निपातन, न० a fall.
निरत, कृ० busy. [cessant.
निरन्तर, वि० constant, in-
निरर्थक, वि० meaningless.
निरस्तपादप वि० devoid of [trees.
निर्जन, वि० lonely, desolate
निर्धन, वि० poor.
निर्माण. न० formation, being
निर्वृति, स्त्री० bliss, happiness
निवास, पु० a dwelling place
निषण्ण, कृ० seated, at rest.
निष्क पु०, न० a gold coin.
निषादी, स्त्री० a huntress.
निष्पन्न, कृ० accomplished
निस्तेजस्, वि० lustreless.

निहत्य कृ० having killed
नीच, वि० low-born.
नीत, कृ० led.
नीलिमन् पु० blueness.
नूपुर, पु० न० an anklet.
नेतृ, वि० a leader.
नेदिष्ठ, वि० nearest.
नेदीयस्, वि० nearer
न्याय, a school of philosophy
न्याय्य, वि० just, right.
न्यून वि० deficient.
प-पक्ष, पु० side, a fortnight, [wing.
पक्षिन् पु० a bird.
पंगु, वि० lame.
पञ्चवटी, स्त्री० N. of a forest
पटु, वि० clever, sharp.
पण्डितम्मन्य, वि० fancying
one-self learned.
पथ्य, वि० wholesome.
पद, न० a seat, foot.
पदक, न० a position, पु० a
medal.
पर स० another.
परकीय, वि० another's,
परमेश्वर, पु० God.
... अ० mutually.
परार्द्ध, पु० the latter pa
परिभव पु० disgrace.
परिमार्गण, न० searching
परिवार पु० retinue, atter
an
परिहार्य, वि० what shou
be avoid
परीताप, पु० grief, pain.
पर्ण, न० a leaf.
पर्यन्त, वि० as far as.
पर्वत, पु० a mountain.
पल्लव, पु० न० a leaf, bloss
पवन, पु० the wind.
पश्चात्ताप, पु० remorse
पाक्षिक वि० fortnightly.
पाठ, पु० a lesson.
पादप, पु० a tree.
पानीय, न० water.
पान्थ, पु० a traveller.
पाप, वि० sinful, evil; न०
sin
पारितोषिक, न० a reward.
पार्थ, पु० a son of Prithu, a
पार्थिव, पु० a king. [king
पार्वती, स्त्री० wife of शिव
पिक, पु० the cuckoo.

पिट, पु० a box, basket.
पिण्ड पु०, न० a lump, morsel
पिपासा स्त्री० thirst.
पिशुन, वि० malignant.
पीठ, न० a seat.
पुत्री, स्त्री० a daughter.
पुत्रेष्टि, स्त्री० a sacrifice per-formed to obtain a son.
पुरुष, पु० a man.
पुरुषपुर, न० Peshawar.
पुस्तक, न० a book.
पूज्य, वि० respectful.
पूर्ण, वि० full.
पूर्व, न० east.
पूर्वार्द्ध, वि० first half.
पृष्ट, कृ० asked.
पैतृक, वि० ancestral, pater-nal
पोत, पु० a cub, a boat.
पौरुष, पु० manhood, valour
प्रकाश (श) न०, पु० light, clear
प्रकृति, स्त्री० disposition, subjects.
प्रच्युत, वि० fallen.
प्रज्ञा, स्त्री० wisdom.
प्रति, अव्य० towards.
प्रतिवर्षं, न० every year.
प्रतिश्रुत, कृ० promised.
प्रतिषिद्ध, कृ० prohibited.
प्रतिहत, वि० impeded.
प्रत्यहम्, अ० every day.
प्रत्यानिनीषु, वि० wishing to bring back.
प्रत्येक, every one.
प्रथम, वि० first.
प्रथित, वि० famous.
प्रथिष्ठ, वि० largest.
प्रदान, न० gift.
प्रदेश, पु० direction.
प्रपतित, वि० fallen.
प्रबल, वि० strong, powerful.
प्रभा, स्त्री० light.
प्रभाकर, पु० the sun.
प्रभात, न० day-break, dawn.
प्रभुत्व, न० dignity, might.
प्रमोद, पु० joy, delight.
प्रभूत, कृ० much, abundant.
प्रयोग, पु० application, prac-tice.
प्रवहण (क) न० a carriage, litter.
प्रविश्य, कृ० having entered.

प्रवृत्ति, स्त्री० news, flow,
प्रश्न, पु० a question. [origin
प्रसव पु० birth, child, fruit.
प्रसादयितुम्, कृ० to propitiate.
प्रसृत, कृ० spread.
प्रसूत कृ० born.
प्रहित कृ० sent.
प्राकार पु० a fence.
प्राच् वि० eastern.
प्राण, पु० ब० breath, life.
प्राप्य, पु० having obtained.
प्रार्थना, स्त्री० request.
प्रिय, वि० dear.
प्रीति, स्त्री० affection.
प्रेङ्खा, स्त्री० a swing.
प्लवङ्ग (म) पु० monkey.
फाल्गुन, पु० N. of a lunar month.
बन्धन, न० binding, a bond, tie.
बन्धु पु० a relative.
बल, न० strength, power.
बलवत्तर, वि० stronger.
बलाका, स्त्री० a crane.
बाल(ला) पु० स्त्री० a boy, girl.
बालिका, a girl.

बिल, न० a hole, cavity.
बुध पु० a wise man.
बुद्धिजीविन्, वि० living on intellect.
बुद्धिमत्, वि० wise.
बुभूषु, कृ० desirous of being.
बृहत्, वि० great, extensive.
भ-भक्त, वि० devoted.
भक्ति, स्त्री० devotion.
भय न० fear.
भार, पु० load.
भरत, N. of a great monarch.
भ्रमरी, स्त्री० a female bee
भवत्, स० your honour.
भागीरथी = गङ्गा.
भाजन न० a vessel, a fit person.
भारत पु० an Indian, न० India
भारतवर्षीय वि० Indian.
भार्या स्त्री० wife.
भाषित, न० speech.
भित्ति, स्त्री० wall.
भिन्न, वि० different.
भीम, वि० fearful, dreadful
भीरुत्व, न० timidity, fear.
भुवन, न० abode, world.
भूति स्त्री० prosperity.

भूमिप, पु० a king.
भूयस् अ० again.
भूषण, न० an ornament.
भृति, स्त्री० service for hire.
भृत्य पु० a servant.
भेषज, न० a medicine, remedy.
भोग, पु० eating, enjoyment
भ्रातृव्य, पु० a brother's son.
म-मक्षिका, स्त्री० a fly.
मङ्क्तुम्, कृ० to sink.
मञ्जु, वि० lovely, charming.
मञ्जूषा, स्त्री० a box, chest.
मण्डन न० ornament.
मण्डल न० a disc, circle, group.
मण्डूक, पु० a frog.
मत्स्य (स्त्री), पु० स्त्री० a fish.
मद, पु० pride.
मद्य न० wine.
मधुर, वि० sweet.
मधुराक्षर, वि० sweet-worded.
मध्य, पु० न० middle.
मध्यम, वि० middling.
मध्याह्न, वि० noon.
मनस्विन्, वि० high-minded.
मनुज, पु० a man.
मनुष्य पु० a man.
मनोहर. वि० charming.
मनोहारिणी, स्त्री० charming
मन्त्र, पु० spell, advice.
मन्दता, स्त्री० dulness.
मन्दम्, अ० slowly, gently.
मन्दौत्सुक्य, वि० disinclined
मन्वन्तर, न० age of a Manu.
मही स्त्री० the earth.
महीपति, पु० a king.
महीयस्, वि० greater.
महोत्सव, पु० a great festival.
माणिक्य, न० a ruby.
मातुलानी, स्त्री० the wife of a maternal uncle.
मानसिक, वि० mental.
मानुषी, स्त्री० a woman.
मास पु० a month.
मारीच, पु० N. of a demon.
मारुत, वि० relating to wind.
मार्ग, पु० a way, road.
मार्दव, न० softness.
मित्रता, स्त्री० friendship.
मीमांसा स्त्री० a system of philosophy
मुख, न० the mouth.

सुमोषयिषु वि० wishing to.
मूक न०dumb, silent[leave.
मूर्ख पु० a fool.
मूल न० a root, basis.
मूषिका स्त्री० a female rat.
मृग पु० a quadruped, a deer.
मृगया, स्त्री० hunting, chase.
मृत कृ० dead, perished.
मृत्यु पु० death.
मेल पु० meeting, union.
मेघवर्ण पु० N. of a crow.
मेघनाद पु० a son रावण
मैत्री स्त्री० friend-ship.
मौक्तिक न० a pearl.
म्रदिष्ठ वि० softest.
य-यतम वि० which of many
यतमान वि० striving.
यथेष्टम् अ० at will.
यावत् वि० अ० as much as, as far as.
यमुना स्त्री० N. of a river.
याम, a watch of night.
यावज्जीवम् अ० for life.
युग न० a pair, a peiod.
युवति (ती) स्त्री० a young woman.
युनी स्त्री० a young woman.
योग पु० use, meditation
योजन न० eight miles.
यौवन न० youth.
र-रक्त कृ० red, attached.
रक्षण न० protection.
रजत न० silver.
रज्जु स्त्री a rope.
रजनी स्त्री० night.
रण पु० न० fight, battle-field
रथ पु० a chariot.
रन्ध्र न० a hole.
रम्य वि० lovely.
राक्षस पु० a demon.
राग पु० colour, love, passion
राजमार्ग पु० the royal road
राज्ञी स्त्री० a queen.
राज्य न० kingdom.
रामायणी स्त्री० belonging to रामायण
रुज् स्त्री pain, suffering.
रुत न० a note of a bird.
रोग पु० disease.
ल-लक्षण न० mark.
लघ्वी स्त्री० little.
लवणाम्भस् पु० the ocean.

लवपुर न० Lahore.
लाभ पु० gain.
लावण्य न० beauty, loveliness
लोक पु० people, the world
लोकवाद पु० public rumour
वं-वकी स्त्री० a female crane
वक्तृ वि० a speaker.
वक्तव्य न० speech.
वचन न० speech.
वटु पु० a boy, lad, chap.
वत्सा स्त्री० a female calf.
वदन न० the mouth.
वनौकस् वि० dwelling in a forest.
वर वि० good.
वरिष्ठ वि० best.
वरीयस् वि० better.
वरुणानी स्त्री० wife of वरुण
वर्ण, पु० a colour, caste.
वर्धयितृ, वि० who increases.
वर्ष, पु० न० year, rains.
वर्षण, न० rain.
वस्तु, न० a thing.
वस्तुजात, न० a collection of things.
वाक्य, न० speech, words, talk
वाग्मिन्, वि० eloquent.
वाचाल वि० talkative.
वाचिक वि० pertaining to speech.
वाच्यता, स्त्री० speech.
वानप्रस्थ, पु० third of the four Ashramas.
वात, पु० wind.
वाराङ्गना, स्त्री० a prostitute.
वाराणसी, स्त्री० Benares.
वार्ता, स्त्री० news.
वाल्मीकि, N. of a sage.
विप्र पु० वैद्य.
विशुद्धि स्त्री० purity.
विश्राम, पु० repose, cessation.
विष न० poison.
विषय, पु० the objects or pleasures of senses, a topic.
विषाण पु० न० a horn.
विष्णु पु० the God विष्णु
विस्तार पु० extension.
विह (ङ्ग) म, पु० a bird.
विहित वि० done.
वीर वि०, पु० heroic, a hero.
वीर्य न० heroism, valour.
वृत्त न० news, account.

शक्ति, स्त्री० power
शत, न० hundred
शयान, कृ० sleeping.
शय्या, स्त्री० a bed.
शर, पु० an arrow, a kind of grass.
शरीरिन्, पु० having a body
शशक, पु० a hare
शाक, पु०, न० a vegetable
शान्ता, स्त्री० proper name
शाप, पु० a curse, an oath.
शावक, पु० the young of an animal.
शासन, न० command.
शास्त्र, न० a sacred book.
शिलापट्ट, पु० stone-slab.
शिरोवेदना, स्त्री० headache.
शिष्य, पु० disciple.
शीत (ल), वि० cool, cold.
शुक्ल, वि० white, pure.
शुचि, वि० pure.
शुनी, स्त्री० a bitch.
शुभ, वि० good, auspicious
शूद्र (द्रा) पु० a fourth caste
शृङ्ग, न० a horn.
शैल, पु० a mountain.
शोक, पु० sorrow.
श्यामिका, स्त्री० impurity.
श्रवण पु०, न० the ear, hearing
श्रम, पु० fatigue.
श्रुति स्त्री० hearing, the Veda.
श्रुत्वा कृ० having heard.
श्रेयस्, वि० better.
श्रेष्ठ, वि० best.
श्रोतृ, वि० hearer.
श्वश्रू, स्त्री० mother-in-law
श्वापद, पु० a wild beast.
स-सकल, वि० whole, all, full
सकाश, पु० to-wards.
सगर, पु० N. of a king.
सङ्गति, स्त्री० company.
सङ्ग (म), पु० meeting, company.
सङ्घर्ष, पु० friction, rivalry, clash.
सचकित, वि० bewildered
सचिव, पु० a minister.
सज्जन, पु० a good man.

सञ्चय, पु० collection, hoard
सञ्चित, वि० collected.
सत्, वि० existent, good
सत्य, वि० न० true, honest, truth.
सत्याभिसन्ध, वि० true to his word.
सत्वरम् अ० quickly
सत्सङ्ग, पु० company of the good
सदृश, वि० like
सन्ताप, पु० heat, remorse
सन्तोष पु० contentment
सन्देश, (क) पु० a message
सन्ध्या, स्त्री० evening
सन्निहित, वि० near, at hand
सन्यासिन्, पु० an ascetic
सम्पत्ति, स्त्री० prosperity
सम्भूत, वि० born
सम्मोह, पु० stupification.
संयम, पु० self-control
संशय, पु० doubt
संसर्ग, पु० touch
संसार पु० the world
संहिता, स्त्री० compilation, combination (of letters).
सपौर वि० with the citizens
सप्ताह, पु० a week.
सभ्य, वि०, न० refined, civilised.
सम, वि० equal
समक्ष. वि० visible, present
समभ्यर्चित, कृ० worshipped
समस्त, कृ० compounded, [all.
समागम. पु० union.
समाप्ति, स्त्री० end, fulfilment
समास, पु० a componnd, collection.
समीप, वि०, न० near.
समुदाय, पु० a collection
सम्पर्क, पु० union, touch
सम्भव, पु० birth, possibility.
सम्मति स्त्री० agreement
सरयू, स्त्री० N. of a river
सरस्तीर, न० bank of a pond.
सर्प पु० a snake
सर्वतः, अ० on all sides
सरल, वि० straight-forward
संवत्सर, पु० year

सशोक, वि० sorrowful
सलिल, न० water
सहस्रधा, अ० a thousand-fold
सहस्रधामन्, पु० the sun
सहाय, पु० a helper, friend
सागर, पु० the ocean
साहृदय, पु० न० साहृदयशास्त्र
साधन, न० fulfilment
साधयितुम्, कृ० to occomplish
साधुवृत्त, वि० of good character
सान्निपातिक, वि० pertaining to सन्निपात, a disease
साप्ताहिक, वि० weekly
सामर्थ्य, न० ability
सारमेय, पु० a dog
साहस, पु० adventure
सिंहासन, न० throne
सिंही, स्त्री० a lioness
सुकृत (त्य), न० a good act
सुकृति, स्त्री० good action
सुगुप्ति, स्त्री० protection
सुचरित्र,वि०, well-behaved, न० good conduct.

सुजन, पु० a good man
सुत, पु० a son
सुतराम्, अ० better
सुता, स्त्री० a daughter
सुप्त, कृ० slept
सुप्रतिष्ठित, कृ० well-esta[lish
सुभिक्ष, न० abundance co
सुयोग्य वि० able
सुरभि, वि० fragrant
सुरापान, न० drinking wi
सुवृष्टि, स्त्री० good rain
सुहृद्भेद, पु० disunion among frien
सूक्ति, स्त्री० good speec
सूद, पु० a cook
सूनु, पु० a son
सूर्य, पु० the sun
सूर्योदय, पु० sun-rise
सेतु, पु० a bridge, dam
सौजन्य, न० kindne generosity.
स्तन, पु० the female

स्थान, न० a place.
स्नेह, पु० love, greese, oil
स्वकीय, वि० one's own
स्वभाव, पु० disposition
स्वर्ग, पु० heaven
स्वस्ति, अ० hail, adieu
स्वामिन्, पु० a master, owner
स्वीकृत्य, पू० having agreed
स्वेद, पु० sweat, vapour
हृ-हत, पू० killed, done up
हतभाग्य, वि० unfortunate
हन्तृ, वि० killer

हंसी, स्त्री० a female goose
हरिस्तोत्र, न० praise of God
हर्ष, पु० delight, joy
हित, न० welfare
हितकर, न० useful, friendly
हितकाम, वि० wishing well
हितवादिन्, वि० friendly councillor
हिमालय, पु० the Himalaya
हीन, वि० devoid of
हेतु, पु० cause, reason
हृदय, न० heart